श्रमणोपासक

धर्मपाल–विशेषांक

१० मार्च १९८४

विशेष सम्पादक

डॉ. नरेन्द्र भानावत

सम्पादक मंडल

श्री जुगराज सेठिया

डॉ. शान्ता भानावत

प्रकाशक :

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ,

समता भवन, बीकानेर–३३४००१

□ श्रमणोपासक

(धर्मपाल विशेषांक)

★ १० मार्च १९८४ वीर निर्माण स० २५१०

★ वर्ष २२ अंक ५

★ रजिस्ट्रेशन संख्या : आर. एन. 7387/63

★ रजि. नं. आर. जे. 1517; पहले डाक व्यय बिना दिये अंक भेजने की अनुमति सं. BIk-2

□ शुल्क

★ आजीवन सदस्यता : २५१ रुपया

★ वार्षिक शुल्क : २० रुपया

★ वाचनालय एवं पुस्तकालय के लिये

वार्षिक शुल्क : १५ रुपया

★ इस अंक का मूल्य : १० रुपया

□ प्रकाशक

★ श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन रामपुरिया मार्ग, बीकानेर–३३४००१ (राजस्थान)

★ तार–साधुमार्गी; फोन : ४५२७

□ मुद्रक

★ जैन आर्ट प्रेस, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर (राज.)

धर्मपाल प्रतिबोधक

परम श्रद्धेय

आचार्य श्री नानालाल जी महाराज

के

युगान्तरकारी कृतित्व

एवं

ओजस्वी व्यक्तित्व

को

सादर

सविनय

समर्पित

प्रकाशकीय

धर्म जब फलित होता है तो व्यक्ति और समाज रूपान्तरित होते हैं। धर्मपाल प्रवृति इस युग में धर्म के चमत्कारी फलितार्थ और समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण का एक अप्रतिम उदाहरण है।

यह क्रान्ति घटित हुई युगद्रष्टा, युगस्रष्टा तपोनिष्ठ समतादर्शी आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के प्रखर तेजस्वी व्यक्तित्व एवं धर्म प्रेरक मर्म-स्पर्शी ओजस्वी व्याख्यानों और संवादों से।

मालवा के 600 गांवों में फैली हुई एक विशाल जनमेदिनी ने मांस-मदिरा आदि दुर्व्यसनों का त्याग कर सम्यक संस्कारों के पथ पर चलने का संकल्प ग्रहण किया, पिछड़े हुओं ने ऊपर उठने और आगे बढ़ने की अलख जगाई। व्यक्ति बदले। स्थिति बदली। परिस्थितियों ने मोड़ लिया। गांव-गांव में नवोन्मेश की लहर व्याप गई। जाति, वर्ग समुदाय प्रभावित हुए। नव समाज की रचना साकार होने लगी। एक ऐसा समाज जहां विषमता के संकोच और समता के विस्तार की गूंज मुखर हो उठे। जहां अनैतिकता और दुराचरण पर नैतिकता और सदाचरण का वर्चस्व स्थापित होने लगे। जहां विकृति भी प्रकृति की ओर मुड़ने का उपक्रम करे। सुविधाभोगी शहरवासी ग्रामांचलों के कंटकाकीर्ण पथरीली पगडंडियों पर पदयात्रा करने निकल पड़े।

यह धर्म क्रान्ति ही 'धर्मपाल-प्रवृति' की बुनियाद है। 'धर्मपाल-विशेषांक' इस प्रवृति के उद्भव और विकास का एक जीता-जागता चित्रण है। इ[illegible] पाठकों के हाथ में सौंपते हुए हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। य

अंक समता समाज रचना की मुहिम को आगे बढ़ाने के यदि यत्किंचित भी सहायक बना तो हम अपना प्रयत्न सफल मानेंगे।

इस विशेषांक के सत्वर और श्रेष्ठ प्रकाशन में श्री नरेन्द्रजी भानावत तथा श्री भंवरलाल जी कोठारी का विशेष सहयोग रहा है। श्रमणोपासक के सह-सम्पादक श्री जानकीनारायण श्रीमाली एवं जैन आर्ट प्रेस के मैनेजर श्री सरल विशारद व उनके सहयोगियों ने अनथक श्रम कर इस विशेषांक के सामयिक मुद्रण के लक्ष्य को प्राप्त कराया है।

देश भर में फैले संघ-निष्ठ महानुभावों ने अहमदाबाद, कलकत्ता, बैंगलोर, दिल्ली, जयपुर, रतलाम, मद्रास, आसाम, बीकानेर तथा अन्य क्षेत्रों से प्रभूतमात्रा में विज्ञापन प्रदान कर व कार्यकर्ताओं ने एकत्रित कर जो सहयोग प्रदान किया है, वह अभिनन्दनीय एवं प्रशंसनीय है।

हम इन सभी के प्रति हृदय से आभारी हैं।

दीपचन्द भूरा	चम्पालाल डागा	पीरदान पारख
अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	मंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

□

यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से संघ एवं संपादक की सहमति हो।

□

धर्म आत्मा का स्वभाव है। सभ्यता का विकास इन्द्रिय-सुख और विषय-सेवन की ओर अधिकाधिक होने से आत्मा अपने स्वभाव में स्थित न होकर विभावाभिमुख होती जा रही है। फल स्वरूप आज संसार में चहुं ओर हिंसा. तनाव. अनास्था और विषमता का वातावरण बना हुआ है.

विषमता से समता, दुख से सुख और अशान्ति से शान्ति की ओर बढ़ने का रास्ता धर्ममय ही हो सकता है। पर आज का सबसे बड़ा संकट यही है कि व्यक्ति धर्म को अपना मूल स्वभाव न मानकर उसे मुखौटा मानने लगा है। धर्म मुखौटा तब बनता है जब वह आचरण में प्रतिफलित नहीं होता। कथनी और करनी का बढ़ता हुआ अन्तर व्यक्ति को अन्दर ही अन्दर खोखला बनाता रहता है।

व्यक्ति अनन्त शक्ति और निस्सीम क्षमताओं का धनी है। धर्म की सम्यक् आराधना उसकी शक्ति और क्षमता को शतोमुखी बनाती है जबकि धर्म की विराधना उसे अधोगामी बनाकर कहीं का नहीं रखती।

संसार में चार बातें अत्यन्त दुर्लभ कही गई हैं—मनुष्य जन्म, शास्त्र-श्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम। आज मनुष्य जन संख्या के रूप में तो तीव्र गति से बढ़ते जा रहे हैं पर मनुष्यता घटती जा रही है। मनुष्य जन्म पाकर भी लोग सत्संग और विवेक के अभाव में हीरे से अनमोल जीवन को कौड़ी की भांति नष्ट किये जा रहे हैं। यही कारण है कि जीवन और समाज में निरन्तर नैतिक ह्रास और सांस्कृतिक प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, इसे रोकने का उपाय है—सही जीवन-दृष्टि का विकास और विवेक पूर्वक धर्म-पालन

परम श्रद्धेय, जिनशासन प्रद्योतक, समता विभूति आचार्य श्री **नानालाल** जी म. सा. ने आज से लगभग **20** वर्ष पूर्व धर्म की नैतिक और सामाजिक शक्ति को पहचाना और उसे सामूहिक क्रांति के रूप में जीवन निर्माणकारी युग-प्रवर्तक मोड़ दिया। मालवा क्षेत्र के हजारों अस्पृश्य कहे जाने वाले लोग जो मद्य, मांस, शिकार आदि दुर्व्यसनों से ग्रस्त थे वे आचार्य श्री की अमृतवाणी से प्रभावित/प्रेरित होकर निर्व्यसनी सात्विक जीवन जीने के लिए संकल्पबद्ध हुए, दृढ़-प्रतिज्ञ बने। धर्म को सही अर्थों में धारण करने की उनकी प्यास जगी। वे धर्मपाल बने। उनका जीवन क्रम बदला, व्यवहार बदला दृष्टि बदली। अब उनमें क्रूरता नहीं रही, वे करूण और संवेदनशील बने, श्रमनिष्ठ और स्वावलम्बी बने, सुसंस्कारी और धर्मपरायण बने।

'धर्मपाल-प्रवृत्ति' का वह बीज आज अंकुरित होकर पल्लवित पुष्पित और फलित हो उठा है। इसके रख-रखाव, सिंचन आदि में अनेक संत-सतियों समाजसेवियों, श्रीमन्तों और [illegible] का विविध आयामी सतत सहयोग रहा है। धर्मपाल प्रवृत्ति [illegible] के स्वभाव/चरित्र निर्माण की महत्वपूर्ण प्रवृति है। [illegible]

से जन साधारण अधिकाधिक परिचित होकर अपने को सुसंस्कारी और धर्मनिष्ठ बनाये, इसी उद्देश्य से इस विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

यह विशेषांक चार खण्डों में विभक्त है । प्रथम खण्ड **'धर्म : धारणा और धरातल'** में धर्म के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है । द्वितीय खण्ड में धर्मपाल प्रवृति के उद्‌गम एवं विकास की कथा तथा तृतीय खण्ड में इस प्रवृति से सम्बन्ध विभिन्न कार्यकर्त्ताओं, विद्वानों, समाजसेवियों और धर्मपालकों की संस्मरणात्मक अनुभूतियों को प्रस्तुत किया गया है । चतुर्थ खण्ड में संस्कारी जीवन जीने की सचित्र कथाएँ दी गई है । और साथ में धर्मपाल प्रवृति की चित्रमय झांकी भी प्रस्तुत की गई है । आशा है यह विशेषांक धर्मपालना के प्रति जनमानस को प्रेरित/प्रोत्साहित करने में अपनी विशेष भूमिका निभायेगा ।

हम अपने सभी विद्वान् लेखकों विज्ञापनदाताओं एवं सहयोगियों के प्रति उनके मूल्यवान योगदान के लिए हार्दिक आभार प्रकट करते है।

—डॉ. भानावत

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
बीकानेर

एक परिचय
१९८४

□

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना वि. सं. २०१९ मिति आश्विन शुक्ला २ को हुई। संघ का उद्देश्य सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र की अभिवृद्धि करते हुए समाजोन्नति के कार्यों को करना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति एवं प्राप्ति हेतु वर्तमान में संघ की निम्न मुख्य प्रवृत्तियां चालू हैं—

सम्यक् ज्ञान :

सम्यक् ज्ञान के अन्तर्गत हमारी निम्न प्रवृत्तियां संचालित हो रही हैं—

प्रकाशन :

१. साहित्य प्रकाशन
२. 'श्रमणोपासक' पाक्षिक-पत्र का प्रकाशन

शिक्षण :

१. धार्मिक परीक्षा बोर्ड का संचालन
२. धार्मिक शिक्षण शालाओं को अनुदान
३. प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति

४. श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर का संचालन
५. श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार, रतलाम का सचालन
६. श्री सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा समिति के माध्यम से सम्यक् शिक्षण
७. विश्वविद्यालयों में जैनोलॉजी शिक्षण व शोध का प्रयत्न
८. श्री धर्मपाल जैन छात्रावास, रतलाम का संचालन
९. समता प्रचार संघ, उदयपुर का संचालन

साहित्य प्रकाशन ।

संघ द्वारा श्री गणेश स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत साहित्य प्रकाशन का कार्य हो रहा है, जिसमें अब तक लगभग ४० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं । कुछ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के ग्रन्थों में—प्राकृत पाठमाला, समराइच्च—कहा प्रथम खण्ड (प्रथम व द्वितीय भव), लार्ड महावीर इन दी रिलेवेन्स ऑफ टुडे, लार्ड महावीर इन हिज टाइम्स तथा सुगम पुस्तकमाला के अन्तर्गत श्रीमद् जवाहराचार्य जीवन और व्यक्तित्व,समाज,शिक्षा सूक्तियां व राष्ट्र-धर्म-उल्लेखनीय हैं ।

इन में से कुछ ग्रन्थों को भारत और विदेश (फ्रैंकफुर्त के पुस्तक मेले आदि) में विशेष रूप से समादृत किया गया है ।

जैन दर्शन साहित्य संस्कृति पुरस्कार योजना :

संघ ने जैन दर्शन-साहित्य-संस्कृति को प्रोत्साहन देने एव इसके भंडार को श्रेष्ठ कृतियों से सुसज्जित करने हेतु एक अभिनव योजना अपने हाथ में ली है । जैन दर्शन-साहित्य एवं संस्कृति की विविध विधाओं में रचित कृतियों में से चयनित सर्वश्रेष्ठ कृति को प्रतिवर्ष ५१००) रु० के प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाता है । यह पुरस्कार स्व० प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति पुरस्कार हेतु प्राप्त राशि से प्रदत्त किया जाता है ।

श्रमणोपासक पत्र-प्रकाशन :

'श्रमणोपासक पत्र' के प्रकाशन की दिशा में विशेष प्रयास जारी है। इसके आकार एवं बाह्य आवरण को अधिकाधिक सुरुचि-पूर्ण तथा कलात्मक बनाने के साथ ही साथ इसकी सामग्री की उत्कृष्टता श्रमण संस्कृति के अनुरूप विचार-सरणी तथा सम्यक् ज्ञान, दर्शन चारित्र की अभिवृद्धि करने वाले लेखों को इसमें वरीयतापूर्वक स्थान देने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

श्रीमद् जवाहराचार्य शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में हमने श्रीमद् जवाहराचार्य विशेषांक के प्रकाशन से शुभारम्भ किया जाकर इसी प्रेरणा के सम्बल पर सन ७८ में 'समता-विशेषांक' एवं सन ७९ में 'बाल–विशेषांक' सन ८१ में "बाल-शिक्षा संस्कार संगोष्ठी विशेषांक" का प्रकाशन भी किया गया है और 'धर्मपाल–विशेषांक' का आज दि. २ मार्च ८४ को विमोचन हो रहा है।

श्रमणोपासक का प्रत्येक विशेषांक हमारे ऐतिहासिक संग्रहणीय विशेषांकों की शृंखला में एक उत्कृष्ट अङ्क के रूप में स्मरण किया जाए, यही हमारा प्रयत्न है।

शिक्षण :

शिक्षण की दृष्टि से हमारी अनेक बहु उद्देश्यी बहु-आयामी प्रवृत्तियां हैं, जिनके द्वारा समाज शिक्षण और लोक-शिक्षण के अभिनव भागीरथ प्रयत्नों को मूर्तरूप प्रदान करने के प्रयास चल रहे हैं।

धार्मिक परीक्षा बोर्ड :

धार्मिक परीक्षा बोर्ड का कार्य निरन्तर प्रगति कर रहा है प्रति वर्ष इसकी परीक्षाओं में लगभग तीन हजार से भी अ

विद्यार्थी प्रविष्ट होते हैं।

धार्मिक शिक्षण शालाएं :

संघ द्वारा १६ धार्मिक शिक्षण शालाओं को अनुदान दिया जा रहा है। इन शालाओं के निरीक्षण हेतु 'निरीक्षक-मण्डल' का भी गठन किया गया है। इस दिशा में विशेष प्रगति के लिये हमारा निवेदन है कि सभी स्थानों पर बालक-मण्डलियों एवं धार्मिक शिक्षण-शालाओं का गठन अवश्य किया जाए।

छात्रवृत्ति :

प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति देने की योजना का लाभ उठाने के लिये अधिकाधिक छात्र आगे आए हैं और उनकी अपेक्षाओं की पूर्ति का प्रयास किया जा रहा है। यह दायित्व हमारी महिला समिति ने सहर्ष स्वीकारा है।

छात्रावास :

श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर के नव-निर्मित भवन से द्विगुणित क्षमता का लाभ उठाने के प्रयास किये जा रहे हैं। यहां लौकिक शिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक रहे छात्रोंके निवास,भोजन तथा धार्मिक-शिक्षण की सुव्यवस्था पुनः स्थापित करने हेतु हम यत्नशील हैं।

विश्वविद्यालयों में जैनोलाजी की शिक्षा :

उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर में जैनोलॉजी एवं प्राकृत शिक्षण विभाग की स्थापना हेतु संघ द्वारा दो लाख रूपये की राशि भेंट की गई है। एक लाख रूपये की राशि सरकार ने अनुदान स्वरूप दी है। इस तीन लाख रूपये की राशि पर प्राप्त ब्याज से

उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर में 'जैनोलॉजी एवं प्राकृत शिक्षण विभाग' प्रारम्भ हो गया है। एम. ए. प्राकृत की नियमित कक्षाएं प्रारम्भ करने के लिये इस विभाग में प्राकृत के एक सहायक प्रोफेसर की पांच वर्ष की नियुक्ति के प्रस्ताव को स्वीकार कर संघ ने इस दिशा में एक स्तुत्य एवं अनुकरणीय कदम उठाया है।

विश्वविद्यालय के पत्राचार-पाठ्यक्रम में बी. ए. में प्राकृत विषय प्रारम्भ करने के लिये भी संघ द्वारा विश्वविद्यालय से अनुरोध किया गया है एवं आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक अनुदान देने का प्रस्ताव विचाराधीन है।

शोध :

प्रकाशन व शिक्षण की उपादेयता को पूर्णता के स्तर तक पहुंचाने के लिये शोध का महत्व निर्विवाद है। इस दृष्टि से रतलाम में स्थापित श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार प्राचीन अलभ्य पुस्तकों के संकलन और उपयोग की योजना को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु श्री रखबचन्द जी सा. कटारिया के नेतृत्व में उत्साहपूर्वक जुटा हुआ है।

श्री धर्मपाल जैन छात्रावास :

श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीपनगर, रतलाम संघ की बहुआयामी प्रवृत्ति-शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। प्रकृति के सुरम्य प्रांगण में स्थित यह छात्रावास दलित वर्ग विशेषतया 'धर्मपाल जैन' के उत्थान की आधार शिला सिद्ध होगा। प्राचीन एवं अर्वाचीन वातावरण का संगमस्थल यह छात्रावास समाज एवं देश को सुनागरिक प्रदान करने में सक्षम होगा, ऐसा विश्वास है।

श्री सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा सोसायटी, नोखा :

उपर्युक्त शिक्षण प्रवृत्तियों के साथ ही संघ की यह सहयोगी संस्था अध्ययनरत पूज्य संत-सतियां जी म.सा. एवं वैरागी भाई-बहिनों के धार्मिक शिक्षण की व्यवस्था करती है।

दर्शन और चारित्र्य :

सम्यक् दर्शन व सम्यक् चारित्र्य की आराधना करने हेतु संघ ने भगवान् महावीर के परिनिर्वाण वर्ष और श्रीमद् पूज्य जवाहराचार्य जी के जन्म शताब्दी वर्ष के स्वर्णिम सन्वियोग में जीवन और व्यवहार में समभाव साधना की ओर जन-जन को उन्मुख करने हेतु विविध प्रयास किए, जिनमें से उल्लेखनीय हैं, जीवन-साधना, संस्कार-निर्माण एवं धर्मजागरण पदयात्राएं तथा स्वाध्याय एवं साधना-शिविर।

यात्रा और शिविर की इन जीवनोन्नायक प्रवृत्तियों को प्रत्येक वर्ष के कार्यक्रम में स्थायी रीति से सम्मिलित करने हेतु संघ संकल्पित है।

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति :

संघ की सहयोगी संस्था के रूप में 'महिला समिति' नारी-जागरण हेतु विशेष रूप से कियाशील है। समिति द्वारा रतलाम में 'श्री जैन महिला उद्योग मन्दिर' की स्थापना की गई है, जिसके माध्यम से बहिनें घरेलु उद्योग का प्रशिक्षण एवं रोजगार प्राप्त कर रही हैं।

जैन आर्ट प्रेस :

संघ का यह निजी प्रेस अब फिर कार्यक्षम एवं सुसंगठित रीति से कार्य कर रहा है, जिससे पिछले कुछ समय में प्रकाशन की गति व स्तर में सन्तोषजनक सुधार हुआ है।

स्वधर्मी सहयोग :

स्वधर्मी सहयोग के क्षेत्र में संघ अपने साधन-सामर्थ्य के अ

सार यथाशक्य सहयोग करने में प्रवृत रहा है तथा हम इस दिशा में और आगे बढ़ने को उत्सुक हैं ।

जीवदया-प्रवृत्ति :

संघ द्वारा इस क्षेत्र में सघन प्रयास किये जा रहे हैं । केन्द्र तथा राज्य सरकारों से 'पशु-पक्षी बलिवध निषेध विधेयक' पारित करने हेतु समय-समय पर पत्राचार किया जाता है ।

श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति :

इस समाजोन्नति एवं राष्ट्र जागृति मूलक प्रवृत्ति द्वारा पिछड़े हुए वर्गों के व्यसनयुक्त, अशिक्षित व असंस्कारित लोगों को व्यसन मुक्त, शिक्षित एव संस्कारित करके उनकी सामाजिक स्थिति को समुन्नत बनाने का एक महान् युगप्रवर्त्तनकारी कार्य सम्पन्न किया जा रहा है । प्रवृत्ति कार्य का वैज्ञानिक विभाजन किया गया गया है तथा नियमित प्रवासों द्वारा इसे द्रुत गति प्रदान करने के प्रयास किये गये हैं । धर्मपाल-शालाओं में सस्कारों के साथ ही साक्षरता का अभिनव, लोकशिक्षणकारी, जनोपयोगी कार्य चल रहा है ।

यह प्रवृत्ति (१) सर्वेक्षण (२) शिक्षण (३) प्रशिक्षण (४) निरीक्षण एवं (५) परीक्षण की सुनियोजित कार्य पद्धति से अपने ६ विभागों (१) रतलाम (२) जावरा (३) खाचरौद (४) नागदा (५) मक्सी और (६) मन्दसौर में सुयोग्य निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से सतत प्रगति कर रही है ।

संघ कार्यक्रम :

संघ ने युगसृष्टा, युगद्रष्टा ज्योतिर्धर स्व. श्री [illegible] जी म. सा. के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में [illegible]

युग-निर्माणकारी योजनाएँ एवं कार्यक्रम हाथ में लिये और उन्हें क्रियान्वित किया है।

वीर संघ :

संघ की शताब्दि वर्ष कार्यक्रमों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही वीर संघ का निर्माण। श्रमण संस्कृति के उच्चस्थ शिखर पर आसीन आत्म-साधक, साधुत्व एवं गृहस्थी के दायित्वों में फंसे हुये गृहस्थी-जनों के बीच निवृत्ति, स्वाध्याय, साधना और सेवा का अपने जीवन में क्रमिक विकास करने वाले सम्यक् आचरण युक्त सच्चे श्रावकों का यह संघ 'वीर-संघ' एक महान चारित्रिक क्रांति के सूत्रपात का प्रतीक है। सभी क्रियाशील धर्मानुरागी जनों से इस संघ की सदस्यता ग्रहण करने का आत्मिक अनुरोध है।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर :

मालवा की धर्मभूमि के दलित पिछड़े जनों के बीच चिकित्सा और स्वास्थ्य के लिये स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन विगत ३ वर्ष से प्रारम्भ किया गया है। सुप्रसिद्ध चिकित्सक पद्मश्री डा. नन्दलाल जी बोरदिया की पुण्य स्मृति में 'पद्मश्री डा. नन्दलाल बोरदिया स्वास्थ्य परीक्षण शिविर' का आयोजन प्रतिमाह किया जाता है जिसमें सुयोग्य एवं सेवाभावी चिकित्सकों का दल स्वास्थ्य परीक्षण कर तत्काल चिकित्सा करता है। इस योजना से सहस्त्रों-जन लाभान्वित हो रहे हैं। इस सतत गतिमान चिकित्सा और स्वास्थ्य की योजना से संघ-गौरव में अप्रतिम वृद्धि हुई है।

सुगम पुस्तकमाला :

पूज्य श्री जवाहराचार्य जी के साहित्य को सहज बोधगम्य रीति से प्रचारित करने के लिए 'श्रीमद् जवाहराचार्य सुगम पुस्तक माला' के अन्तर्गत उनके जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाल वाली आठ प्रकाश्य पुस्तकों में से पांच प्रकाशित कर दी गई हैं, शे तीन शीघ्र प्रकाशित की जा रही हैं।

युवासंघ :

युवासंघ हमारी महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। अभी यह प्रारम्भिक अवस्था में है किन्तु हमारा युवावर्ग अत्यन्त उत्साही, सेवाभावी एव कार्यक्षम है। आगामी वर्षों में इसका रूप और अधिक निखरेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

पदाधिकारी मण्डल

अध्यक्ष

श्री दीपचन्द जी भूरा

❀

उपाध्यक्ष

श्री मोहनराज जी बोहरा
श्री उत्तमचन्द जी गेलड़ा
श्री लूणकरण जी हीरावत
श्री भंवरलाल जी बैद

❀

मन्त्री

श्री पीरदान जी पारख

❀

सहमन्त्री

श्री उगमराज जी मूथा
श्री विनयचन्द जी कांकरिया
श्री मगनलाल जी मेहता
श्री हस्तीमल जी नाहटा

❀

कोषाध्यक्ष

श्री चम्पालाल जी डागा

❀

ट्रस्ट मण्डल

श्री गणपतराज जी बोहरा
श्री पारसमल जी कांकरिया
श्री मदनराज जी मूथा
श्री महावीरचन्द जी धारीवाल
श्री दीपचन्द जी भूरा
श्री पीरदान जी पारख
श्री चम्पालाल जी डागा

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

पदाधिकारी मण्डल

संरक्षिका

श्रीमती यशोदा देवी बोहरा
श्रीमती उमराव बाई मूथा
श्रीमति केशर बहिन झवेरी

❀

अध्यक्षा

श्रीमति सूरजदेवी चोरड़िया

❀

उपाध्यक्षा

श्रीमति सौरभदेवी मेहता
श्रीमति स्वर्णलता बोथरा
श्रीमति नीलादेवी बोहरा
श्रीमति शांती देवी मेहता

❀

मन्त्री

श्रीमति प्रेमलता जैन

❀

सहमन्त्री

श्रीमति रोशनदेवी खाबिया
श्रीमति शान्तिदेवी मिन्नी
श्रीमति घीसीबाई आच्छा
श्रीमति शान्ता भानावत

❀

कोषाध्यक्ष

श्रीमति प्रेमलता गोलछा

❀

श्री जैन महिला उद्योग मन्दिर, रतलाम
श्रीमति शान्ता देवी मेहता, संचालिका

भूतपूर्व अध्यक्ष

श्री छगनलाल जी बैद (१९६२-६५)
श्री गणपतराज जी बोहरा (१९६५-६८)
श्री पारसमल जी कांकरिया (१९६८-७१)
स्व. हीरालाल जी नांदेचा (१९७१-७३)
श्री गुमानमल जी चोरड़िया (१९७३-७७)
श्री पूनमचन्द जी चौपड़ा (१९७७-८०)
श्री जुगराज जी सेठिया (१९८०-८२)

□

भूतपूर्व मन्त्री

श्री जुगराज जी सेठिया
श्री भंवरलाल जी कोठारी
श्री सरदारमल जी कांकरिया

श्री सु. सां. शिक्षा सोसायटी, नोखा

अध्यक्ष

श्री भंवरलाल जी कोठारी

□

मन्त्री

श्री धनराज जी बेताला

उपाध्यक्ष

श्री मोहनलाल जी मूथा
श्री करनीदान जी लूणीया

सहमन्त्री

श्री जयचन्द लाल जी सुखानी

कोषाध्यक्ष

श्री मोतीलाल माल

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन नाना बालक मंडली

अध्यक्ष
श्री कपूर कोठारी
उपाध्यक्ष
श्री पूनमचन्द भूरा   श्री चन्द्रप्रकाश मूणोत
मन्त्री
श्री विजयराज सुखलेचा
सहमन्त्री
श्री दिनेश महेश नाहटा   श्री चित्रेश मेहता
कोषाध्यक्ष
श्री विमल छाजेड़
विनियोजन मण्डल
मद्रास
श्री मीठालाल जी छल्लानी संयोजक
अहमदाबाद
श्री मोतीलाल जी मालू संयोजक

श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार, रतलाम
श्री रखबचन्द जी कटारिया, संयोजक
साहित्य प्रकाशन समिति
श्री गुमानमल जी चोरड़िया, संयोजक
श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा

धर्मपाल जैन छात्रावास, दिलीप नगर (रतलाम)
श्री पी. सी. चौपड़ा, संयोजक

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

अध्यक्ष
श्री हस्तीमल जी नाहटा
उपाध्यक्ष
श्री मनसुख लाल जी कटारिया   श्री विनयचन्द जी कांकरिय

मन्त्री
श्री मदनलाल जी कटारिया
सहमन्त्री

श्री कमलचन्द जी लुनिया | श्री सुभाषचन्द जी गाबिया
श्री मणीलाल जी घोटा | श्री आनन्दीलाल जी संचेती

श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति

केन्द्रीय-समिति

श्री समीरमल जी कांठेड़, संयोजक
श्री पी. सी. चौपड़ा सदस्य
श्री मगन लाल जी मेहता सदस्य
श्री समाजसेवी मानवमुनि सदस्य
श्री भंवरलाल जी कोठारी सदस्य

व्यवस्था-समिति

श्री गणपतराज जी बोहरा अध्यक्ष

स्व. पद्मश्री डॉ. नन्दलाल बोर्दिया स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

श्री पी. सी. चोपड़ा संयोजक

वीर संघ

श्री गुमानमल जी चोरड़िया प्रधान

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

श्री प्रतापचन्द जी भूरा संयोजक
श्री पूर्णचन्द जी रांका पंजीयक

श्री समता-प्रचार संघ, उदयपुर

श्री गणेशलाल जी वय्या, संयोजक

आगम अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर

श्री गणपतराज जी बोहरा	अध्यक्ष एवं परम संरक्षक सदस्य
श्री दीपचन्द जी भूरा	उपाध्यक्ष
श्री सरदारमल जी कांकरिया	महामन्त्री
श्री फतहलाल जी हींगड	मन्त्री

शुल्क

	रू०
आजीवन स्तम्भ सदस्य	५,००० व इससे अधिक
आजीवन संरक्षक सदस्य	१,००० से ५,००० तक
मूथा योजना आजीवन सदस्यता शुल्क	१,०००
आजीवन साहित्य सदस्यता शुल्क	१,०००
संघ की आजीवन सदस्यता शुल्क	५०१ से १००० तक
श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता शुल्क	२५१
आजीवन साधारण सदस्यता शुल्क	५१
साधारण वार्षिक सदस्यता शुल्क	५

खंड १

धर्म धारणा और धरातल

जरा जावरण पीडेई,
वाही जावरण वड्ढ़ई ।
जाविंदिया णहायंति,
ताव धम्मं समायरे ।।

दशवैकालिक सूत्र ८/३६

जब तलक आये बुढ़ापा, देह का कंचन गलाये,
व्याधियों की फौज चढ़कर, शक्ति सारी लील जाये ।
जब तलक है इन्द्रियों में शक्ति विषयों के ग्रहरण की,
जब तलक ही जमा करलें, सम्पदा धर्माचरण की ।।

अनुवा : डॉ. हरिराम आचार्य

पतितोद्धार बनाम धर्मपाल

आचार्य श्री नानालाल जी म. सा.

★

शांति जिन एक मुझ विनंति, सुनो त्रिभुवन रायरे।
शांति स्वरूपे केम जाणिये, कहो मन केम पर खायरे।

मानवीय धरातल पर जीने वाला मानव, मानवीय गुणों का समुचित विकास कर सकता है। अन्य कोई ऐसा धरातल नहीं कि जिससे अभीष्ट लक्ष्य की सिद्धि कर सके। मानवीय धरातल पर रहने वाला मानव भी मनोवांछित सिद्धि तभी कर सकता है जबकि उसका मानसिक स्वास्थ्य उसके अनुरूप हो, शारीरिक स्वास्थ्य का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। एवं मानसिक संस्कारों का असर शरीर पर होता है, इसको अन्योन्या सम्बन्ध भी कहा जा सकता है। मानसिक वृत्तियां कई दृष्टिकोणों से उन्नत या अवनत होती रहती है। इसमें कई हेतु रहते हैं। कुछ तो पूर्व जन्म कृत अशुभ कर्मों का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य को विकृत करता है। लेकिन शुभ कर्मों के उदय होने पर मानसिक स्वस्थता वृद्धिगत होती है। इसके अतिरिक्त परिस्थितियों की अपेक्षा मनुष्य के विचार–उच्चार और आचार का भी सम्बन्ध मानसिक स्वास्थ्य को न्यूनाधिक बनाने में निमित भूत ह.ता है।

विचारों की सर्जना बाह्य परिवेश में भी होती है। वाह्य परिवेश व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र एवं कृत्रिम जाति आदि से विशेष सम्बंधित रहता है, जब मानवीय तन में रहता हुआ चैतन्य देव अपने आपकी गरिमा को न समझकर बाहरी परिवेश को ही सब कुछ मानकर के चलता है। तब उसके विचारों में विविधता आती है, एक रूपता नहीं रह पाती। क्षण-क्षण में रुष्ट-तुष्ट की स्थिति बनी रहने

से सही दिशा में मानव कार्यकारी नहीं हो पाता । सामाजिक परि-स्थितियां समय-समय पर परिवर्तित होती रहती है । किसी समय सामाजिक वातावरण मानवीय जीवन के अनुरूप चल पाता है तो कभी कभी प्रतिकूलता भी उपस्थित हो जाती है । अनुकूल वातावरण की अवस्था में पुरुष अभिमान का अनुभव करता है तथा प्रतिकूलता की अवस्था में न्यूनता–निम्नता महसूस करता है । अनुकूलता और प्रति-कूलता की सर्जना कुछ व्यक्ति ही कर पाते हैं चाहे वह अच्छी हो या बुरी । वहुल भाग अनुसरण शील/गतानुतिक होता है। उसी संदर्भ में यदि जीवन का सर्वांगीण ज्ञान रखने वाला तटस्थ पुरुष है तो वह समता के धरातल पर मानवी मूल्यों का विशेष मूल्यांकन करता है और मानव को यह अहसास करा देता है कि तुम्हारे भीतर में समातीत की शक्तियां छिपी पड़ी है । यदि तुम उच्चतम आदर्श को सामने रख कर के चलते हो तो सुषुप्त शक्तियां भी अंगड़ाई लेकर उठ खड़ी हो जाती है और यदि न्यून लक्ष्य को लेकर के चलते हो तो जागृत शक्तियां भी सुषुप्ति में पहुंच जाती है ।

उच्चतम लक्ष्य का तात्पर्य ज्ञानवान तटस्थ दृष्टा परिणामी शाश्वत आत्मिक तत्व से है । यह तत्व विकास की तारतम्यता के साथ सभी प्राणियों में विद्यमान रहता है जितना मानवीय तन में विकास का सुन्दर अवसर रहता है उतना अन्य तन में नहीं रहता । मनुष्य जीवन में भी इस तथ्य को समझने का बहुत स्वल्प माध्यम रहता है । अधिकांश मानव तो यंत्रवत ही जीने की स्थिति में रहते हैं । उस अवस्था में यदि भौतिक पिंड की प्रचुरता वाले नाश्वान शारीरिक सम्वन्धों से युक्त जो इन्द्रियां हैं उन इन्द्रियों की तृप्ति में जो जीवन समाप्ति समझने लगते हैं तो वे न्यूनतम दशा को सन्मुख रखकर कुछ व्यक्तियों को उन्नत मानते हैं और कुछ व्यक्तियों को अधम मान लेते हैं । तथा अपनी अहं वृति का पोषण करने के लिये जन साधारण के सन्मुख मनुष्य-मनुष्य में छुआ-छूत की वीमारी पैदा करने का प्रयत्न करते हैं । जव ये संस्कार मानवीय जीवन में अधिक स्थान वना लेते हैं तो फिर स्पृश्यता–अस्पृश्यता की भेद रेखा खींच जाती है परिणाम यह होता है कि अमुक व्यक्ति क्षुद्र है इनको छूना अपने आप में अपवित्र वनना है । उस व्यक्ति से सम्वन्ध रखना हमारी कुल पर-

म्परा से विपरीत है। यह सदा क्षुद्र ही रहेंगे उन्नत बन नहीं पाएंगे इत्यादि संस्कारों का वातावरण निर्मित कर दिया जाता है भद्रिक स्वभावी इन संस्कारों को पकड़ करके चल पड़ते हैं। जिनको अस्पृश्यता की संज्ञा दी जाती है वे भी अपने आपमें यह महसूस करने लगते हैं कि हम निम्न-अछूत हैं। हमारी उन्नति कभी हो नहीं पाएगी। हम तो अशौच आदि को साफ करने में ही रहेंगे। ये लोग बड़े हैं इनको हम छू लेंगे तो ये अपवित्र बन जाएंगे, क्यों कि हम अपवित्र हैं। इत्यादि अनेक प्रकार की हीन भावनाओं से ग्रस्त हो जाते हैं। परन्तु जब कभी आधुनिकता के प्रवाह में बहने वाले मानव सोचते हैं कि ये अच्छा अवसर है कि जिससे इन अछूत समझे जाने वाले लोगों को अपने अन्दर मिलाकर अपने विचारों के अनुरूप [हिंसक धर्मी] बनालें। इन्हीं प्रयासों में वे विविध प्रकार के प्रलोभन देते जाते हैं। ये दृश्य मध्य प्रदेश की मालव भूमि में मुझे देखने को मिला।

जब रतलाम नगर का चातुर्मास करके विचरण करता हुआ नागदा जंक्शन पर पहुंचा तो वहां पर हरिजन [बलाई]जाति का मुखिया सीताराम भाई मिला व्याख्यान के पश्चात भारी मन से वह बोलने लगा कि महाराज सा० [आचार्य प्रवर] हमारे गुजराती बलाई जाति के एक लाख घर इस प्रांत में हैं और हमारे में एक प्रकार का संगठन भी है। जिधर मुड़ते हैं उधर प्रायः सभी मुड़ जाते हैं। हम इतने समय तक गौरक्षक के रूप में हिन्दु जाति के अन्तर्गत अपने आपको लेकर चल रहे थे पर हमारे साथ हिन्दु जाति का व्यवहार छुआ-छूत एवं घृणा का रहा है हमारे लिये महात्मा गांधी ने बहुत प्रयत्न किये पर आखिर हमको हरिजन जाति के रूप में ही रखा गया। विशेष कोई रूपान्तरण सामने नहीं आया। अब हमारे साथी इस काले तिलक की अवस्था में रहना पसंद नहीं करते हैं। कई सदस्य तो इस्लामी धर्म में परिणीत होकर रहना चाहते हैं। उसी धर्म के समानन्तर एक वाहला जाति है उसमें भी कई मिलने की चेष्टा करते हैं, तो कई ईसाई धर्म को अंगीकार करने में तत्पर हो रहे हैं। इन परिस्थितियों से हमें बड़ा दुःख है परन्तु क्या किया जाय कोई उपाय नहीं सूझता। तब उनसे मैंने कहा कि आपने यह कैसे सोच लिया कि हिन्दुस्तान में रहने वाले सभी इस छुआछूत की दृष्टि से ही चलते हैं।

इस विषय में अढ़ाई हजार वर्ष से भी पूर्व में प्रभु महावीर ने क्षत्रिय जाति में जन्म लेकर के भी आध्यात्मिक साधना की परिपूर्णता पाकर के समग्र विश्व के प्राणियों को आत्मीय दृष्टि से अवलोकित किया ।

शारीरिक न्यूनाधिकता का हेतु मनुष्य के शुभाशुभ कर्म बताए तथा ये उद्घोषणा की कि मनुष्य जाति में नही पर अन्य प्राणी वर्ग में भी जो शारीरिक उपलब्धि है वह कर्मजनित है । आत्मा उन कर्मों से दबती है तथा कर्म के हटने पर विकसित होती है इस तथ्य को संक्षिप्त में स्पष्ट करते हुए प्रभु महावीर ने फरमाया—

कम्मुणा बंभणो होई, कम्मुणो होई खत्तिओ ।
वइसो कम्मुणा होई, सुद्धो हवई कम्मुणा ।

मानव कर्म के अनुसार ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, क्षुद्र होता है ।

जिसने अच्छे कर्त्तव्य कर्म का पालन किया उसके परिणाम स्वरूप वह उन्नत बना तथा जिसने बुरे कार्य किये वह अवनत बना । लेकिन आत्मीय मौलिक स्वरूप में उनकी अवस्था एक समान रही, इस मानवीय तन में रहता हुआ प्राणी मानवीय धर्म के साथ ऊंचे कर्त्तव्य कर्म करता है तो वह वर्तमान में साधारण लोगों की दृष्टि में निम्न माना जाने वाला भी उन्नत बन जाता है एवं उन्नत कहलाने वाला भी निम्न आचरण करने से ज्ञानियों की दृष्टि में निम्न समझा जाता है । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और क्षुद्र की संज्ञा भी इन्हीं शुभाशुभ कर्त्तव्य कर्म पर मुख्यतया निर्भर है । अतएव आप लोग अपने हीन भावों को छोड़े एवं दुर्व्यसनों का परित्याग कर आगे बढ़ने का दृढ़ संकल्प करें । जिससे कि आपके साथ जो खटकने वाला व्यवहार होता है वह स्वतः ही समाप्त हो जाय ।

[आचार्य प्रवर के विचारों को सुनकर] भाई सीताराम कहने लगा कि हमको लगा कि हमको ऐसा मार्ग दर्शन आप दें तो हमारी जाति का उद्धार हो सकता है । तव उनसे कहा गया कि मार्ग दर्शन की तो कमी नहीं रहेगी परन्तु आप सभी को उसके अनुरूप चलने में दृढ़ संकल्पी वनना होगा ।

यह सुनकर सीतारामजी ने कहा कि गुरुदेव मुझे तो आप अभी ही सातों कुव्यसनों का त्याग करा दीजिये। ऐसा कहते हुए हाथ जोड़कर वह (सीतारामजी) खड़ा हो गया और उनको संस्कारित जीवन की शिक्षा देते हुए दुर्व्यसन का त्याग कराया। तब वह कहने लगा कि गुराड़िया गांव में विवाह प्रसंग है इस प्रसंग पर अनेक गांवों के हमारी जाति के लोग आएंगे उस वक्त आप वहां पधार कर मार्ग दर्शन दे तो हमारा बहुत अधिक भला होगा।

मैंने कहा भाई हम तो साधु हैं। घुमक्कड़ बनकर इधर उधर घूमते रहते हैं वहां आने में मेंरी कोई रूकावट नहीं है समय पर पहुंचने का विचार करता हूं। तदनुसार मैं गुराडिया गांव में पहुंचा। उनके मध्य में जाकर कुछ उद्‌बोधन दिया परिणाम स्वरूप जितने गांवों के प्रतिनिधि उपस्थित थे उन सभी ने संस्कारित जीवन जीने का संकल्प लिया एवं दुर्व्यसनों का परित्याग किया। तदनुसार बोले हमें तो आपने संस्कारित कर दिया पर हमारी बलाई जाति का यह काला तिलक कैसे समाप्त हो। हम किस रूप में सम्बोधित किए जाऐंगे। तब उनसे कहा गया कि तुम लोगों इस लोक और परलोक को सुखी बनाने में समर्थ धर्म को अपने जीवन में स्थान दे रहे हो जिसको कि 'अहिंसा परमोधर्म' आदि के नामसे पुकारा जाता है। इसको पालन करने के लिये आप अपने जीवन को संस्कारित बना रहे हो तो गुणानुरूप आपकी जाति का 'धर्मपाल' के रूप में रूपान्तर कर लिया जाय। तदनुसार तभी से वे लोग धर्मपाल के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे। परिणाम स्वरूप उत्तमकुल में अपने आपको स्थापित करने वाले ओसवाल आदि पुरुषों ने भी उनको मानवीय स्नेह दिया। इसी सिलसिले में से अन्यान्य गांव में जब यह कार्यक्रम चल रहा था तब अखिल भारतवर्षीय जैन संघ के पदाधिकारी भी उस प्रसंग पर पहुंचे, और उनके तत्कालीन मंत्री श्री जुगराजजी सेठिया ने तो एक धर्मपाल को अपनी बांहों में लेकर उठालिया और बोल उठे कि तुम हमारे भाई हो। इस प्रकार निम्न जाति मानी जाने वाली जाति संस्कारित होकर धर्मपाल के रूप में प्रख्यापित हुई।

इस प्रकार मानव जाति का प्रत्येक सदस्य अपने हृदय को आत्मीय भावना से पवित्र बनाकर छुआ छूत की इस बीमारी को दूर

करें, जिससे कि व्यक्ति परिवार समाज एवं राष्ट्र में शांति का वायु-मंडल तैयार हो सके और मानव जाति की परिकल्पित विविध जातियां समता समाज के रूप के समन्वित होकर सभी मानवों को अपने अपने समान अस्तित्व रूप में स्वीकार कर सकें। जिससे कि राष्ट्रीय धर्म की गरिमा के साथ-साथ विश्वव्यापी विषमताओं को समाहित करने के लिये समता दर्शन को अमोघ अस्त्र मानकर विश्व शांति की भव्य सिद्धि मानव जाति कर सकें। ऐसा प्रयत्न सतत हर क्षेत्र में होना नितान्त आवश्यक है।

यह सर्वमान्य शाश्वत सत्य है कि जब कभी भी विश्व शांति का भव्य प्रसंग उपस्थित होगा तो इस प्रकार समता के धरातल पर ही हो सकेगा। इस तथ्य को मानव आज समझे या कभी भी। जब भी इस तथ्य को सही रूप में मानकर आदमी तुच्छ अहं वृतियों का परित्याग करेगा और आत्मीय समता के साथ चरम लक्ष्य को सन्मुख रखकर चलेगा तो एक रोज परमात्मीय समकक्षता को पा सकेगा।

(संपादित प्रवचनांश)

"निर्गुणिया सन्तों कबीर व दादू आदि ने धार्मिक शिथिलता दूर की। प्रत्येक संत ने एक विशेष क्षेत्र व जाति का उत्थान किया। उसी कड़ी में आचार्य श्री नानालाल जी म. सा हैं जिन्होंने मालव क्षेत्र से बलाई जाति का उद्धार किया।"

[जून ८१ के धर्मपालों के बीच दिए भाषण से उद्धृत]

जुगराज सेठिया,
भूतपूर्व अध्यक्ष
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैनसंघ, बीकानेर

धर्मपाल बन्धुओं के आध्यात्मिक विकास हेतु समता विभूति आचार्य नानेश द्वारा प्रदत्त नव सूत्र

१— धर्मपाल दिवस को समता दिवस के रूप में मनाना चाहिये जिसके निम्न सूत्र पाले जाय—

(अ) इस दिन (चैत्र सुदी १०) अगता रखे ।

(ब) किसी से लड़ाई झगड़ा न करें कटु शब्द का प्रयोग न हो तथा किसी से मन मुटाव हो जाय तो क्षमा याचना कर ले ।

(स) यथा शक्ति उपवास रखा जाय या एकाशन किया जाय।

(द) नशीले पदार्थ का सेवन तथा धूम्र पान नहीं करें ।

(य) दिन भर धार्मिक क्रियाओं में प्रवृति रखी जाय ।

२— इस चैत्र सुदी १० से आगामी चैत्र सुदी १० तक प्रत्येक सदस्य नये ५–५ धर्मपाल सदस्य बनावे ।

३— प्रत्येक माह की शुक्ला १० को सारे ग्राम वासी सामूहिक रूप से धार्मिक क्रियाओं की आराधना करे ।

४— समस्त धर्मपाल परस्पर भ्रातृभाव रखे और फिर भी किन्हीं के बीच कोई विवाद हो जाय तो उसे शांति से सुलझा लें ।

५— जब भी किसी से मिलने का प्रसंग आवे तब हाथ जोड़कर उनको जय जिनेन्द्र कहें ।

६— प्रातः काल उठते ही ग्यारह नवकार मंत्र का जाप करना तथा देव गुरू धर्म का स्मरण करते हुए घुटने टेक कर वन्दन करना ।

७— अपने यहां जब कभी सन्त सतियों का पधारना हो तब दर्शन व्याख्यान का लाभ लेना ।

८— अपने बालकों में नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों की वृत्ति हेतु उन्हें धार्मिक शालाओं में अध्ययन हेतु प्रेरणा देना ।

९:— नित्य प्रति नमस्कार महामंत्र की माला जपकर निम्न सूत्रों का अन्तःकरण में चिन्तन करना ।

(अ) हे आत्मन् तुम्हारे देव अरिहंत हैं, गुरु निर्गन्थ हैं और वीतराग भगवान द्वारा बतलाया तुम्हारा धर्म है जिन पर दृढ़ श्रद्धा बनी रहे ।

(आ) हे चैतन्य देव जगत् में जितनी भी आत्माएं हैं उन सब में मेरे जैसा ही चैतन्य स्वरूप रहा हुवा है अतः किसी को कष्ट न दें ।

(इ) हे ज्ञान पुंज आत्मन् तेरा स्वरूप अजर, अमर और शाश्वत हैं किन्तु कर्मो के संजोग से संसार में जन्म मरण हो रहा है । यह अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य भव जो मिला है, इसमें उस मूल स्वरूप को प्राप्त करने का सत्पुरुषार्थ करता हूं ।

अपवित्रता ?

□ **श्री मनोज आंचलिया**

आचार्य रामानुज एकबार मन्दिर की परिक्रमा कर रहे थे । अभी पहली परिक्रमा कर रहे थे कि उनके मार्ग में एक चाण्डाल आ गया । आचार्य का परिक्रमा क्रम टट गया और वे क्रोधित हो उठे और कठोर शब्दों में बोले—

"हट जा चाण्डाल, तूने मेरी परिक्रमा खण्डित की है ।"

"किधर जाऊं ? आचार्य प्रवर ।" चाण्डाल ने विनम्रता पूर्वक कहा—"मेरे चारों ओर अपवित्रता है फिर अपनी अपवित्रता किधर ले जाऊं ?"

जो ज्ञान उन्हें वेद नहीं दे सकते थे, एक शूद्र ने दे डाला । आचार्य प्रसन्न होकर बोले, "तात! तुमने मेरा अद्वैत दर्शन साकार किया है । मेरी आँखें खोल दी हैं ।"

११६ देवाली, उदयपुर—३१३००१

पंचव्रत

□ डॉ. सियाराम सक्सेना 'प्रवर'

परम आराधना ।
पंचव्रत–साधना ।।
दुख हरण, सुखकरण, धर्म की धारणा,
परम आराधना ।
पंचव्रत–साधना ।।१।।
प्रबल क्रोध मत्सर 'अहिंसा' भगवती,
काम के कष्ट सब 'ब्रह्मचर्या' मिटाती ।
जलाती है मद 'सत्य' नीराजना,
परम आराधना,
पंचव्रत–साधना ।।२।।
क्रिया भाव 'अस्तेय' से लोभ छूटे,
'अपरिग्रह'–व्रती के सभी मोह टूटे ।
मल धुले, हो गयी शुद्धि की भावना,
परम आराधना,
पंचव्रत–साधना ।।३।।
बनाती प्रवर मानव दानवों को,
बनाती महामानव मानवों को ।
अनासक्तिमय दिव्यता–वर्त्तना,
परम आराधना,
पंचव्रत–साधना ।।४।।
दुख हरण, सुख करण, धर्म की धारणा
परम आराधना ।
पंचव्रत–साधना ।।

प्र
बिड़ला महावि
भवानीमन्डी,

धर्म क्या ह

● श्री कन्हैयालाल

धर्म शब्द "धृ" धातु से बना है जिसका अर्थ, धारण कर
होता है। जो धारण किया जाय या धारण करने योग्य है, वह ध
है। धारण वही बात की जाती है जो अच्छी, इष्ट और हितकार
हो। इस दृष्टि से जो हमें इष्ट लगे, हितकारी लगे उसे स्वीकार
करना, धारण करना वही धर्म है। जो हमें इष्ट या हितकारी न
लगे वह अधर्म है। इस दृष्टि से विचार करें तो हम देखते हैं कि कोई
हमें ताड़ना–पीटना करे हमें बुरा–भला कहे, गाली–गलौच करे, नुक–
सान पहुंचावे, हमारे साथ झूठ बोले, हमारी चोरी करे, हमसे धोखा–
घड़ी करे तो हमें अच्छा नहीं लगता है। उसके इन कामों को अनि–
ष्ट, अहितकारी और बुरा समझते हैं। और ऐसा करने वालों को हम
बुरा मानते हैं। ये सबके अनुभव की बात है। अतः जिस कार्य को
हम अपने अनुभव, ज्ञान से बुरा मानते हैं, अधर्म मानते हैं, वैसा व्य-
वहार अगर हम दूसरों के साथ करेंगे तो हमारा वह कार्य भी बुरा
और अधर्म ही होगा। और हम बुरे ही होंगे। अतः ऐसा व्यवहार
दूसरों के साथ न करना ही अधर्म से बचना है। तथा कोई व्यक्ति
हमारे मन की बात पूरी करे, मधुर वचन बोले, दुःख में साथ देवे वह
हमें अच्छा लगता है। उस कार्य को हम अच्छा समझते हैं। उसे दूसरों
के साथ करें तो यह हमारा कार्य धर्म का कार्य होगा।

आशय यह कि हिंसा, झूठ, चोरी आदि व्यवहारों को कोई
हमारे साथ करे तो हम उसे बुरा समझते हैं। उन व्यवहारों को
सरों के साथ करने का त्याग करना ही धर्म है और जिन व्यवहारों
हमारे प्रति करने पर हम उन्हें अच्छा समझते हैं, जो हमें प्यारे
र इष्ट लगते हैं, वैसे व्यवहार दूसरों के साथ करना धर्म है। इस
ट से हिंसा, झूठ, चोरी, निन्दा, धोखा और शोषण, दुष्ट वचन

आदि का त्याग करना, दूसरों की सेवा करना, दूसरों के साथ सद्व्य-करना धर्म है। यह कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य रूप धर्म हुआ।

धर्म की दूसरी परिभाषा है 'वत्थु सहावो धम्मो" अर्थात् वस्तु का स्वभाव धर्म है। जैसे अग्नि का स्वभाव उष्णता अग्नि का धर्म है, जल का स्वभाव शीतलता जल का धर्म है। स्वभाव के विपरीत अवस्था विभाव कहा जाती है। विभाव की उत्पत्ति पर या विजातीय द्रव्य के संयोग या संग से होती है। जैसे जल का स्वभाव शीतलता का है परन्तु जब जल के साथ विजातीय द्रव्य अग्नि का सयोग होता है तो अग्नि के सग से जल उष्ण हो जाता है। यह जल की उष्णता विभाव अवस्था है। विभाव अवस्था का नाम ही अधर्म है, विकार है, पाप है।

स्वभाव को प्राप्त करने के लिए विभाव का त्याग करना होता है। जैसे अग्नि के संयोग का, संग का त्याग होते ही जल स्वतः शीतल होने लगता है। इसी प्रकार चेतना का स्वभाव शान्ति, स्वाधीन (मुक्त) प्रसन्न रहने का है। परन्तु जब चेतना का शरीर, संसार भोग्य सामग्री आदि अचेतन, विजातीय पदार्थों से संयोग होता है तो उनके प्रति आकर्षण पैदा होता है। आकर्षण से बंध होता है। आकर्षण उसी के प्रति होता है जिससे सुख भोगना है। अतः आकर्षण या बंध का कारण विषय–सुख का भोग है। जो संसार के पदार्थों से सुख का भोग नहीं करना चाहता है, वह संसार में रहते हुए भी ससार के पदार्थों से अलग हो जाता है, परे हो जाता है उस पर संसार के पदार्थों, अवस्थाओं व स्थितियों का कोई प्रभाव नही पड़ता है अर्थात् विभाव का अभाव हो जाता है। अपने से भिन्न नश्वर पदार्थों से प्रभावित होना ही विभाव है व उनसे बंधना है। अतः जा नश्वर पदार्थों से सुख नहीं भोगना चाहता, उसमें राग–द्वेष उत्पन्न नहीं होता। राग द्वेष नहीं होने से वह कर्त्ता–भोक्ता नहीं होता, मात्र ज्ञान–दृष्टा रहता है।

संसार या लोक के समस्त पदार्थों के प्रति राग–द्वेष रहित हो उदासीन, असंग रहना ही लोक से परे होना है। लोकातीत होना

है। इसी प्रकार शरीर या देह से सुख न भोगना, देह से परे होना है, देहातीत होना है। देह से सुख नहीं भोगना है उसके लिए देह का संग, उसकी आवश्यकता की पूर्ति, उसकी रक्षा करना वैसा ही है जैसे राज्य या बैंक के कोष के धन को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना है, अथवा सम्भाल व रक्षा करनी है। जिस प्रकार धनरक्षक सिपाही को अपने इस दायित्व से मुक्ति पाने से प्रसन्नता होती है, उसी प्रकार देहातीत, व्यक्ति को देह के सम्भाल व रक्षा के भार से मुक्ति पाने में प्रसन्नता होती है। प्रकृति का यह नियम है कि जो व्यक्ति शरीर के जिस अंग का उपयोग करना बन्द कर देता है, वह अंग निर्बल, शक्तिहीन हो, निष्क्रिय हो जाता है। तथा जो वस्तु जिसके लिए उपयोगी होती है वह दूसरे के लिए व्यर्थ हो जाती है। व्यर्थ वस्तु को सम्भालना, रक्षा करना भार रूप ही होता है। व्यर्थ भार कोई ढोना नहीं चाहता। इसलिए जिसे देह से सुख नहीं भोगना है, उसके लिए देह व्यर्थ व भार रूप होती है। अत: उसे भविष्य में देह की प्राप्ति नहीं होती। देह की प्राप्ति या जन्म न होना जन्म भव से छुटकारा पाना है। भवातीत होना है। भवातीत होना अर्थात संसार, शरीर, जन्म–मरण से मुक्ति पाना ही सच्ची मुक्ति है। भवातीत चेतना स्वभाव में स्थित हो जाती है। उसमें विभाव लेशमात्र भी नहीं रहता। अत: स्वाधीन हो, स्वभाव रूप धर्म को प्राप्त हो जाती है।

आशय यह है कि जिसने अपने से भिन्न, शरीर, संसार आदि पदार्थों से सुख भोगने का त्याग कर दिया वह लोकातीत और देहातीत होकर भावातात हो जाता है। भवातीत होना ही मुक्ति है। अर्थात् विषय-सुख का त्याग ही मुक्ति है। विषय सुख के त्याग से हिंसा, झूठ, चोरी आदि अकर्त्तव्य स्वत। छूट जाते हैं और सेवा रूप कर्त्तव्य स्वत: होने लगता है। यह धर्म का व्यावहारिक रूप है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि विषय सुख क्यों छोड़ा जाय? तो कहना होगा कि विषय सुख वस्तुत: सुख है ही नहीं, सुखाभास है, दुःख रूप ही है। कारण कि विषय सुख (१) काल्पनिक है

विक नहीं है (२) क्षणिक है, नश्वर है (३) पर के आधीन होने से पराधीन बनाता है। (४) विषय सुख प्रवृत्तिपरक होने श्रम से होता है, श्रम से शक्ति का ह्रास होता है। (५) विषय सुख का अन्त नीरसता में होता है। इस सुख से उकलाहट होती है जो नवीन सुख भोग की कामना को जन्म देती है इत्यादि विषय सुख में असंख्य कमियां व दोष हैं। यह कहा जा सकता कि संसार में जितने भी दुःख हैं वे सब विषय सुख की ही देन हैं। अतः इस सुख के त्याग में ही सच्ची शान्ति, स्वाधीनता, प्रसन्नता आदि दिव्य गुणों की उपलब्धि सम्भव है। इस सुख का त्याग ही विभाव का त्याग है, धर्म है।

ऊपर कह आये हैं की हिंसा, झूठ, चोरी आदि दुष्प्रवृत्तियों एवं विषय सुख का त्याग ही धर्म है। त्याग करने में संसार की किसी वस्तु की यहां तक कि शरीर की भी आवश्यकता नहीं है। अतः त्याग करने में मानव मात्र समर्थ एवं स्वाधीन है। त्याग रूप धर्म किसी भी काल में किया जा सकता है। अतः उसके लिए विषय-भोग के समान किसी समय विशेष की आवश्यकता नहीं होती अतः धर्म सर्वकालिक है, सनातन है। त्याग रूप धर्म भारतीय, यूरोपियन, रसियन, अमेरिकन किसी भी देश का पुरुष कर सकता है। अतः धर्म सार्वदेशिक है। त्याग रूप धर्म बालक, वृद्ध, युवा, रोगी, निरोगी, सबल, दुर्बल शिक्षित अशिक्षित कोई भी जन कर सकता है अतः धर्म सार्वजनीन है। ऐसे सार्वकालिक, सार्वदेशिक, सार्वजनीन त्याग रूप धर्म का पालन क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शुद्र, ओसवाल, पोरवाल, माहेश्वरी, रेगर, चमार बलाई, खटीक आदि सब ही जाति वाले कर सकते हैं अर्थात सभ जाति वाले धर्म पालन कर अर्थात् धर्मपाल बनकर अपना जीव उन्नत कर सकते हैं।

स्वभाव में स्थित होना स्व में स्थित होना है, स्वस्थ होन है। अतः स्वस्थता धर्म है। जिस प्रकार शरीर का स्वस्थ रहन शरीर का धर्म है। शरीर में जब कोई बिष आदि विजातीय द्रव प्रवेश कर जाता है तो शरीर अस्वस्थ हो जाता है। अफीम आ विषैले पदार्थों का वमन करने से शरीर पुनः स्वस्थ हो जाता है।

इसी प्रकार कषाय व विषय रूप से चेतना विषैली-विकारी हो जाती है। जिसके वमन अर्थात् त्याग करने से चेतना स्वस्थ होती है। स्वस्थ होना ही स्वभाव को प्राप्त होना है। स्वभाव को प्राप्त होना ही धर्म है। आशय यह है कि धर्म से स्वस्थता, निर्विकारिता की प्राप्ति होती है। धर्म है स्वभाव में आना, पर के सम्बन्ध से छुटकारा पाना। पर के सम्बन्ध से छुटकारा मिलने से पराधीनता मिटती है और स्वाधीनता आती है। स्वाधीनता का नाम मुक्ति है। शरीर और संसार रूपी पर पदार्थों से छुटकारा पा जाना ही सच्ची स्वाधीनता है। शरीर और संसार से छुटकारा तभी मिलता है जब हम उनसे सुख न चाहें। जो सुख चाहता है उसे शरीर और संसार का दास बनना पड़ता है। जहां दासता है वहां स्वाधीनता नहीं है, वहां मुक्ति नहीं है। इसलिए मुक्ति चाहने वाले को शरीर और संसार की दास्ता छोड़नी होगी। जो तभी सम्भव है जब शरीर और शरीर का सुख न चाहें। इसलिए भगवान ने विषय-सुख के त्याग में ही मुक्ति बताई है। मुक्ति का पाना ही, स्वभाव में स्थित होना ही धर्म है। ०

अधिष्ठाता श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान
बजाजनगर, जयपुर

धर्म: सार्वभौम चेतना का सत्संकल्प

● डॉ० महावीर सरन जैन

'धर्म' शब्द की निष्पत्ति 'धृञ धारणे' से हुई है। 'धृञ-धारणे' धातु का अर्थ है धारण करना। 'धर्म' धर्मी का प्राण, सार एवं अस्तित्व है। मानवीय सत्ता रूपी द्रव्य में धर्म रूपी गुण अनुस्यूत है। मनुष्य को जो धारण करना चाहिये, पालन करना चाहिये, वही धर्म।

धारण करने योग्य क्या है? हिंसा, क्रूरता, कठोरता, अपवित्रता, असत्य, असंयम, व्यभिचार, परिग्रह—ये सब धारण करने योग्य हैं?

इस दृष्टि से हमें धर्म का महत्त्व केवल व्यक्तिगत साधना या व्यक्तिगत आत्मोदय की दृष्टि से ही नहीं अपितु उसके सामाजिक महत्त्व की दृष्टि से भी आंकना चाहिये। शास्त्रों में कोई बात कही गई है, इसी कारण हम धर्म का पालन करें, इस बात को आज के वैज्ञानिक युग में व्यक्ति स्वीकार नहीं कर पा रहा है। इस कारण हमें धर्म को सामाजिक सन्दर्भों में रखकर देखना होगा। केवल कामना की दृष्टि से नहीं अपितु इसी धरती पर, इसी जीवन में, धर्म हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों प्रकार के जीवन को किस प्रकार प्रेरित कर सुख और आनन्द प्रदान करने में सहायक होता है, इस दृष्टि से विवेचना करना होगी।

यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति हिंसक बन जाये तो संसार चार दिन भी नहीं चल सकता और न इसका अस्तित्व ही कायम रह सकता है। यदि समाज के सभी व्यक्ति झूठ बोलने लगें तो इसका परिणाम क्या होगा? परस्पर का विश्वास समाप्त हो जायेगा और इस के कारण हमारा सामाजिक जीवन ही नष्ट हो जायेगा। यदि समाज के सभी व्यक्ति यौनाचार के सामाजिक अथवा नैतिक

बन्धनों को तोड़ देंगे तो क्या कुपथ नहीं बन जायेगा ? क्या उस स्थिति में परिवार की कल्पना की जा सकेगी ? सामाजिक सम्बन्धों की स्थापना हो सकेगी ? यदि सभी व्यक्ति असंयमी, व्यभिचारी एवं परिग्रही हो जावेंगे तो उस स्थिति में क्या होगा ? प्रत्येक व्यक्ति कोई वस्तु दूसरे के पास देखेगा तो उसे बिना सोचे-बिचारे क्रूर से क्रूर साधनों के द्वारा छीनने का प्रयास करेगा ।

मन की कामनाओं को नियंत्रित किये बिना समाज-रचना सम्भव नहीं है । संयम की लगाम लगाये बिना मानव-जाति का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा । उपनिषद् साहित्य में आत्मा को रथी, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथी, मन को लगाम, विषयों को मार्ग एवं इन्द्रियों को घोड़ों के रूप में चित्रित किया गया है । घोड़ों को यदि लगाम न लगाई जाय तो वे जिस पथ पर उन्हें चलना चाहिये, उसे छोड़कर स्वच्छन्द रूप में किसी भी कुमार्ग की ओर भाग सकते हैं और उस स्थिति में रथी, सारथी एवं रथ सभी नष्ट हो सकते हैं ।

हमारी कामनाओं को नियंत्रित करने की शक्ति या तो धर्म से है अथवा सरकार की शासन-व्यवस्था में । धर्म का अनुशासन आत्मा का है जिसे आत्मानुशासन कहते हैं । जब यह अनुशासन समाप्त हो जाता है तो व्यवस्था बनाये रखने के लिये राज्य शक्ति निर्ममता के साथ दण्ड व्यवस्था के द्वारा शासन व्यवस्था स्थापित करती है । यदि मानवीय सत्ता, सामाजिक रचना एवं शासन व्यवस्था कायम रखनी है तो संयम की लगाम लगाना आवश्यक है । धर्म के द्वारा व्यक्ति यह लगाम अपने आप अपने ऊपर लगाता है । शासन के द्वारा यह लगाम विधि-विधानों के द्वारा लगाई जाती है । जिस समाज के व्यक्ति धर्म की चेतना से प्रेरित होते हैं वहां शासन व्यवस्था की जकड़न कमजोर हो जाती है और उस स्थिति में व्यक्ति [illegible] स्वतंत्रता एवं सद्भाव के साथ सामाजिक जीवन जीता है । [illegible] के जो धारण करने योग्य नहीं है, उन्हें अपनाने लगते [illegible] में राज्य-शक्ति व्यवस्था कायम करने के लिये अधिक [illegible] निर्मम हो जाती है । इस प्रकार धर्म हमारे सामाजिक

स्वतन्त्रता तथा परस्पर प्रेम एवं विश्वास के लिये एक अनिवार्य शर्त है ।

प्रश्न उठता है कि जीवन में धारण करने योग्य क्या है ? ये कौन से मूल्य है जिनका हम पालन करें ? इस दृष्टि से उस उमास्वामी ने आत्मा के दस भाव वतलाये हैं जिनको उन्होंने धर्म कहा है (मोक्ष शासत्र ९/३)

आचार्य कुंदकुंद ने भी कहा है कि धर्म की उत्तम, क्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य शौच संयम, तप, त्याग, अकिंचन और वहमचर्य ये दस, विधियां है (बारस अणवेक्खा ७०)

इन दो व्याख्याओं में धर्म को दो दृष्टियों से देखा गया है। एक दृष्टि से "वस्तु का स्वभाव धर्म है" (धम्मो वत्थु सहावो कार्तिकेयानुप्रेक्ष-४७८)"

दूसरी दृष्टि से समता स्वभाव वाली आत्मा के विविध अंग ही धर्म है जो संख्या में बतलाये गये हैं । यह दूसरी दृष्टि धर्म के अंगों को अलग-अलग विश्लेषित करके देखने की दृष्टि है । पहली दृष्टि धर्म को समग्र दृष्टि से देखने की अथवा सामूहिक दृष्टि से विचार करने की प्रक्रिया है । पहली दृष्टि में आत्म-दर्शन, आत्म-रमण अथवा आत्म स्वभाव प्राप्ति की विश्लेषित विधियां हैं । दोनों में से किसी भी दृष्टि से विचार करें, हम यह कह सकते हैं । कि धर्म कोई सम्प्रदाय नहीं है । मनुष्य और मनुष्य को विभाजित करने वाला संगठन नहीं है । यह आत्म-दर्शन का मार्ग है । यह एक ऐसा पवित्र अनुष्ठान है जिससे आत्मा का शुद्धिकरण होता है ।

(एगा धम्म पंडिया, ज से आया पज्ज बजाए-स्थानाड़ग १. १. ४०)

धर्म इस दृष्टि से नैतिक नियमों से संवादित स्थायी एवं अर्जित प्रवृत्ति है । यह समग्र आत्मा के उच्चतम शुभ के विचार के ८। चरित्र गुण है, अंतस्थ चरित्र का प्रकाशन है ।

विश्व के सभी धर्म जिस धर्म के विविध पहलू अथवा प्रकाशन है, वह धर्म सार्वभौम चेतना का सत संकल्प है। आत्म-सवित् का पथ है, यही आध्यात्मिक दृष्टि का निचोड़ है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि भौतिकवादी दृष्टि आत्मा की सत्ता में विश्वास नहीं करती। इस कारण जीवविज्ञानीय नियम के प्रतिपादकों ने शक्ति-प्राप्ति को ही मनुष्य का धर्म बतलाया है। मार्क्स ने धर्म की ही अवहेलना की है तथा उसे एर्वहारा वर्ग की सिसकियों के रूप में चित्रित किया है। मार्क्स की विचारधारा का कारण यह है कि वे भौतिकवादी विचारक हैं और इस कारण वे आत्मचेतना में विश्वास नहीं करते।

प्रश्न यह उठता है कि आत्मचेतना के अस्तित्व में विश्वास करने की क्या आवश्यकता है? इस दृष्टि से शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इन्द्रियां आदि सभी जड़ प्रकृति के विकार हैं किन्तु जड़ और चेतन में अन्तर है। मनुष्य तथा अन्य जीव-प्राणी, लकड़ी, लोहा आदि पदार्थों की भांति केवल जड़ नहीं है अपितु उनमें चेतना शक्ति भी है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वे जानते हैं कि वे हैं। जब कोई व्यक्ति यह कहता है कि मैं हूं तो जिस शक्ति के कारण वह यह बात कह रहा है, वही चेतना शक्ति है, आत्मा है। कोयला, पानी आदि के विशेष परिणमन से शक्ति तो पैदा की जा सकती है, किन्तु चेतना नहीं। इसी दृष्टि से अरविन्द ने चैत्य पुरुष के मार्ग से अधिमानस और उसके भीतर से अति-मानस की ओर आरोहण करने की भावना क्रम वतलाया है। वास्तव में कोई जड़ता एव भौतिकता मानव जाति के लिये अभिशाप है। चिन्मुख मानवतावाद ही आज के कुण्ठाग्रस्त मानव की समस्याओं का समाधान है। अन्य महापुरुषों की भांत गौतम बुद्ध ने भी इस सत्य को पहिचाना था। इसी कारण उन्होंने केवल बुद्ध एवं संघ की शरण में जाने की ही बात नहीं कही अपितु बुद्ध तथा सघ के साथ-साथ धर्म की भी शरण में जाने की बात का उपदेश दिया। इस प्रकार धर्म आत्मलोक की महायात्रा का महायान, मनुष्य को अपूर्णता से पूर्णता की ओर ले जाने

वाली एक सात्विक अन्तर-यात्रा, जड़ पर चेतन के विजय की साधन-परंपरा और जीव एवं पुद्गल के संबध-विच्छेद की सीढ़ी, आत्मा का कर्मों से संबंध विश्लेषण कराने की साधन-प्रक्रिया, आत्मा का अपने स्वरूप में आवास कराने का अन्तर पथ तो है ही, वह सामाजिक शान्ति एवं परस्पर सद्भाव एव प्रेमभाव उत्पन्न करने का महामंत्र भी है।

प्राणी मात्र में आत्म-शक्ति है। इसी कारण जीव मात्र में उच्चतम विकास करने की सम्भावनाएं विद्यमान हैं। संसार में एक नहीं, अनन्त प्राणी हैं। प्रत्येक में जीवात्मा है। कर्मबंध के फल से वे जीवात्मायें जीवन की नाना दशाओं, नाना योनियों नाना प्रकार के शरीरों एवं अवस्थाओं में परिलक्षित हैं। सभी में ज्ञानात्मक विकास के द्वारा विकास करने की असीम शक्तियां हैं और तत्वत: कोई किसी की प्रगति में बाधक नहीं है। हम अपने ही राग-द्वेष के कारण किसी को अपना साधक तथा किसी को बाधक मानकर मित्र एव शत्रु भाव का निर्माण करते हैं। तत्वत: आत्मदर्शन के लिये स्व-प्रयत्नों द्वारा की गयी तैयारी एवं उसके लिये सम्यक् ज्ञान के आधार पर सम्यक् चारित्रय का पालन ही विकास की वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

इस विकासात्मक साधना के दो स्तर हैं—

(१) निवृत्ति प्रेरित साधना का साध्य मोक्ष है। यह मुनि धर्म है। दूसरे शब्दों में लोक निरपेक्ष मोक्ष साधना का मार्ग कह सकते हैं। यह व्यक्तिगत साधना का चरम पथ है।

(२) साधना का दूसरा स्तर 'गृहस्थ साधना' का है जो समाज सापेक्ष्य एवं समाज के व्यक्तियों की प्रवृत्तियो का उदात्तीकरण है। जैन दर्शन में मुनि साधना के लिये महाव्रतों एवं गृहस्थों के लिये अणुव्रतों का विधान है।

समाज में परस्पर सम्बन्धों के कारण व्यक्ति के मन में राग और द्वेष की वृत्तियां उत्पन्न होती है जिसके कारण क्रोध, अभिमान, कुटिलता, लोभ, मलिनता, काम, मोह आदि अधार्मिक भाव, पनपते विकसित होते हैं। इनके शमन के लिये तथा धार्मिक आचरण के

पालन के लिये जैन दर्शन में दश लक्षणों का विधान किया गया है जिन्हें दस धर्मों के नाम से पुकारा जाता है। ये दस धर्म हैं। (१) क्षमा (२) मार्दव (३) आर्जव (४) सत्य (५) शौच (६) संयम (७) तप (८) त्याग (९) अकिंचन और (१०) ब्रह्मचर्य। वास्तव में ये धर्म आत्मा के अपने गुण हैं। पर्युषण पर्व के अवसर पर हम इन्हीं गुणों को स्मरण करते हैं तथा उनको अपने जीवन में विकसित करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इनमें से कुछ गुण व्यक्ति के परिष्कार की, आत्मोदय की वे विविध सीढ़ियां हैं जिनका पालन कोई व्यक्ति समाज से अलग रहकर इकाई के रूप में भी कर सकता है। इस प्रकार के गुण या धर्म हैं, आर्जव, शौच, संयम, तप, आकिंचन्य, एवं ब्रह्मचर्य। "आर्जव" के द्वारा व्यक्ति अपने कषायों के बन्धनों को ऋजु करता तथा मन, वचन, एवं क्रिया की एक रूपता स्थापित करता है। कषायों के बंधन ऋजु करने के उपरान्त भी लोभ के कारण व्यक्ति अपने पथ से विचलित हो सकता है। इस कारण व्यक्ति को यह सतत् प्रयास करते रहना चाहिये कि हमारे मन में कोई मलिन भाव उत्पन्न न हो। अपनी आभ्यंतर शुद्धि करते रहना ही शौच गुण हैं। मन की प्रवृत्ति होती है कि वह वार-वार इन्द्रियों के सुख की ओर उन्मुख होता है। इस कारण आभ्यंतर शुद्धि के मार्ग में इन्द्रियों की लोलुपात के अवरोध के लिये संयम आवश्यक है।

व्यक्ति को साधनापथ में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। साधना पथ की जटिलताओं, एवं दुरूहताओं से घबराकर वह अपने पथ से विचलित न हो, इसके लिये तप का पालन आवश्यक है। तप के पश्चात् "आकिंचन्य" है जिसमें व्यक्ति समस्त भौतिक उपकरणों एवं अंततः अपने शरीर के ममत्व का भी त्याग कर देना है। ब्रह्मचर्य अंतिम मंजिल है जिसमें वह समस्त प्रकार के पापों का परित्याग कर अपने को आत्मब्रह्म में लीन कर लेता है। इस प्रकार आर्जव, शौच, संयम, तप आकिंचन्य एवं ब्रह्मचर्य व्यक्तिगत साधना के परस्पर बढ़ते हुए चरण हैं।

क्षमा, मार्दव, सत्य और त्याग में भी यद्यपि व्यक्तिगत साधना के गुण हैं किन्तु इनका पालन व्यक्ति मुख्य रूप से समाज में

वाली एक सात्विक अन्तर-यात्रा, जड़ पर चेतन के विजय की साधन-परंपरा और जीव एवं पुद्गल के संबंध-विच्छेद की सीढ़ी, आत्मा का कर्मों से संबंध विश्लेषण कराने की साधन-प्रक्रिया, आत्मा का अपने स्वरूप में आवास कराने का अन्तर पथ तो है ही, वह सामाजिक शान्ति एवं परस्पर सद्भाव एव प्रेमभाव उत्पन्न करने का महामंत्र भी है।

प्राणी मात्र में आत्म-शक्ति है। इसी कारण जीव मात्र में उच्चतम विकास करने की सम्भावनाएं विद्यमान हैं। संसार में एक नहीं, अनन्त प्राणी हैं। प्रत्येक में जीवात्मा है। कर्मबंध के फल से वे जीवात्मायें जीवन की नाना दशाओं, नाना योनियों नाना प्रकार के शरीरों एवं अवस्थाओं में परिलक्षित हैं। सभी में ज्ञानात्मक विकास के द्वारा विकास करने की असीम शक्तियां हैं और तत्त्वतः कोई किसी की प्रगति में बाधक नहीं है। हम अपने ही राग-द्वेष के कारण किसी को अपना साधक तथा किसी को बाधक मानकर मित्र एवं शत्रु भाव का निर्माण करते हैं। तत्वतः आत्मदर्शन के लिये स्व-प्रयत्नों द्वारा की गयी तैयारी एवं उसके लिये सम्यक् ज्ञान के आधार पर सम्यक् चारित्र्य का पालन ही विकास की वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

इस विकासात्मक साधना के दो स्तर हैं—

(१) निवृत्ति प्रेरित साधना का साध्य मोक्ष है। यह मुनि धर्म है। दूसरे शब्दों में लोक निरपेक्ष मोक्ष साधना का मार्ग कह सकते हैं। यह व्यक्तिगत साधना का चरम पथ है।

(२) साधना का दूसरा स्तर 'गृहस्थ साधना' का है जो समाज सापेक्ष्य एवं समाज के व्यक्तियों की प्रवृत्तियो का उदात्तीकरण है। जैन दर्शन में मुनि साधना के लिये महाव्रतों एवं गृहस्थों के लिये अणुव्रतों का विधान है।

समाज में परस्पर सम्बन्धों के कारण व्यक्ति के मन में राग और द्वेष की वृत्तियां उत्पन्न होती है जिसके कारण क्रोध, अभिमान, कुटिलता, लोभ, मलिनता, काम, मोह आदि अधार्मिक भाव, पनपते एवं विकसित होते हैं। इनके शमन के लिये तथा धार्मिक आचरण के

पालन के लिये जैन दर्शन में दश लक्षणों का विधान किया गया है जिन्हें दस धर्मों के नाम से पुकारा जाता है। ये दस धर्म हैं। (१) क्षमा (२) मार्दव (३) आर्जव (४) सत्य (५) शौच (६) संयम (७) तप (८) त्याग (९) अकिंचन और (१०) ब्रह्मचर्य। वास्तव में ये धर्म आत्मा के अपने गुण हैं। पर्युषण पर्व के अवसर पर हम इन्हीं गुणों को स्मरण करते हैं तथा उनको अपने जीवन में विकसित करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इनमें से कुछ गुण व्यक्ति के परिष्कार की, आत्मोदय की वे विविध सीढ़ियां हैं जिनका पालन कोई व्यक्ति समाज से अलग रहकर इकाई के रूप में भी कर सकता है। इस प्रकार के गुण या धर्म हैं, आर्जव, शौच, सयम, तप, आकिंचन्य, एवं ब्रह्मचर्य। "आर्जव" के द्वारा व्यक्ति अपने कषायों के बन्धनों को ऋजु करता तथा मन, वचन, एवं क्रिया की एक रूपता स्थापित करता है। कषायों के बंधन ऋजु करने के उपरान्त भी लोभ के कारण व्यक्ति अपने पथ से विचलित हो सकता है। इस कारण व्यक्ति को यह सतत् प्रयास करते रहना चाहिये कि हमारे मन में कोई मलिन भाव उत्पन्न न हो। अपनी आभ्यंतर शुद्धि करते रहना ही शौच गुण हैं। मन की प्रवृत्ति होती है कि वह बार-बार इन्द्रियों के सुख की ओर उन्मुख होता है। इस कारण आभ्यंतर शुद्धि के मार्ग में इन्द्रियों की लोलुपात के अवरोध के लिये संयम आवश्यक हैं।

व्यक्ति को साधनापथ में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। साधना पथ की जटिलताओं, एवं दुरूहताओं से घबराकर वह अपने पथ से विचलित न हो, इसके लिये तप का पालन आवश्यक है। तप के पश्चात् "आकिंचन्य" है जिसमें व्यक्ति समस्त भौतिक उपकरणों एवं अंततः अपने शरीर के ममत्व का भी त्याग कर देता है। ब्रह्मचर्य अंतिम मंजिल है जिसमें वह समस्त प्रकार के पापों का परित्याग कर अपने को आत्मब्रह्म में लीन कर लेता है। इस प्रकार आर्जव, शौच, संयम, तप आकिंचन्य एवं ब्रह्मचर्य व्यक्तिगत साधना के परस्पर बढ़ते हुए चरण हैं।

क्षमा, मार्दव, सत्य और त्याग में भी यद्यपि व्यक्तिगत साधना के गुण हैं किन्तु इनका पालन व्यक्ति मुख्य रूप से समाज में

रहकर करता है। इस प्रकार ये सामाजिक व्यक्ति के गुण हैं। सामाजिक जीवन के ये अनिवार्य जीवन-मूल्य हैं। समाज के व्यक्तियों में इनका जितना अधिक विकास होगा, समाज में उतना ही अधिक परस्पर सद्भाव, विश्वास प्रेम एवं अनुराग बढ़ेगा तथा अहिंसात्मक पद्धति से पूंजी का विकेन्द्रीकरण होगा। सत्य से समाज के छल एवं कपटपूर्ण वातावरण का अंत होता है। आज का व्यक्ति जिस मानसिक अशान्ति से पीड़ित है, उसका एक बहुत बड़ा कारण है कि वह जीवन में झूठ बोलने को कला मान बैठा है इसका दुखद परिणाम यह है कि मित्रों के बीच भी अनस्था एवं अविश्वास पनप रहा है। क्षमा, मार्दव एवं त्याग, सामाजिक व्यक्ति की क्रमशः विकासोन्मुख धार्मिक प्रवृत्तियां हैं क्षमा के कारण व्यक्ति अपने क्रोध का शमन करता है तथा अपने व्यवहार में सहनशील, धैर्यवान तथा विनयशील होता है। मार्दव के के कारण व्यक्ति अपने अहंकार का परित्याग करता है तथा दूसरों के प्रति मृदुता का व्यवहार करता है। इससे आगे बढ़कर जब व्यक्ति में अपने पास से दूसरों को प्रदान करने की भावना का विकास होता है तो वह प्रवृत्ति त्याग है।

इस प्रकार से दस धर्म किसी सम्प्रदाय के स्वप्निल आदर्श न होकर वास्तविक जीवन में व्यवहार के नैतिक विधान हैं। ये सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक हैं। कुछ विचारक इन धर्मों के पालन की व्यवहारिकता के सम्बन्ध में प्रश्न उपस्थित करते हैं तथा कभी-बाहरी दृष्टि से देखने पर इन विविध धर्मों के पालन में अंतर्विरोध की स्थितियां भी उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिये यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि यदि हमारे सत्य-भाषण करने से किसी नृशंस हत्यारे द्वारा अन्य प्राणी की हत्या संभावित हो तो क्या उस स्थिति में सत्य बोलना धर्म है?

इस दृष्टि से शास्त्रों में यह व्यवस्था है कि जो लघु धर्म महत् धर्म को बाधित करता है, वह धर्म नहीं है। यदि सत्य बोलने से निरपराधी प्राणी की हत्या हो तो उस स्थिति में मौन रहना ही धर्म है।

इसी संदर्भ में, मैं यह बात चाहूंगा कि इन सभी धर्मों की व्यवस्था एवं विवेचना का महत्त्व व्यक्ति की कलुषता मिटाना है तथा उसकी आत्म-चेतना का विकास करना है। इस दृष्टि से ये गुण एवं धर्म व्यक्ति के चित्त को अंदर से बदलने की प्रक्रियाएं हैं और इनका सम्बन्ध व्यक्ति की मानसिकता के साथ जुड़ा हुआ है। इसी पृष्ठ भूमि के साथ इन्हें समझना चाहिये तथा इनका पालन करना चाहिये। ०

– हिंदी प्रोफेसर, जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर

❀❀❀

-आचरण-

एक बार भगवान महावीर को एक चाण्डाल ने छू लिया तो उपस्थित जन-समूह चाण्डाल को गालियां देने लगा। इस पर महावीर ने कहा, "सज्जनो ! जन्म से न कोई व्यक्ति ब्राह्मण है और न कोई चाण्डाल। मैं तो उसी व्यक्ति को चाण्डाल समझता हूं जो बुरे कर्म करता है भले ही वह का जाति ब्राह्मण क्यों न हो। जो अच्छा कार्य करता है, वही सच्चा ब्राह्मण है चाण्डाल या ब्राह्मण सभी में एक आत्मा है। फिर घृणा कैसी ?" और भगवान ने उस चाण्डाल को गले लगा लिया। ०

कल्पना आंचलिया
११६ देवाली, उदयपुर (राज.)

धर्म की अवधारणा

● श्री कृष्णदत्त शर्मा

★

"जिन्दगी खा-पीकर ऐश- आराम करने के लिए है, इससे अधिक उदात्त भावना का स्पर्श ही जिन्हें नहीं हो सकता, उनके लिए मुझे कुछ नहीं कहना है।" —किशोरलाल मशरूवाला

'धर्म' शब्द की व्युत्पत्ति कई प्रकार से की जाती है। यह शब्द 'धृधातु' और 'मन्' प्रत्यय के संयोग से सिद्ध होता है। 'ध्रियते लोकीऽनेन, धरति लोकं' आदि व्युत्पत्तियां इसके धारण करने के गुण और स्वभाव की ओर इंगित करती हैं।

मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु वृत्ति का है। वह प्रकृति पर विजय प्राप्त करना चाहता है, जब तक उसे विजय मिलती है वह प्रसन्न होता है, आत्मविश्वास से भरता है परन्तु जब परास्त होता है तो प्रकृति का ही पूजक बन जाता है। इसी क्रम में उसे अलौकिकता का भान होता है। जितने अंशों में वह अलौकिक शान्ति पर विजय प्राप्त कर लेता है, वहां तक उसे चमत्कार-दर्शन होता है, वहां धर्म नहीं होता है, वहां जादू होता है। कल्पना द्वारा होने वाली दुःख निवृत्ति और सुखानुभव के अनुरूप मनुष्य के मन में अलौकिक शक्ति के विषय में प्रेम और कृतज्ञता के भाव पैदा होते हैं और इससे कल्पना का पर्यवसान भावना में होकर ईश्वर-सम्बन्धी मूल कल्पना 'भावना' का रूप ले लेती है। मेरी दृष्टि में धर्म को ईश्वर से अलग करके नहीं देखा जा सकता। इस प्रकार 'धारणा' से सम्बद्ध दो स्तर धार्मिक विश्वास और भावना हमारे समक्ष आते हैं। ये दोनों आन्तरिक हैं। दृष्टि की सिद्धि होने तक टिकी रहने वाली दृढ़ और प्रबल भावना ही श्रद्धा है। श्रद्धा से उत्पन्न होने वाली समर्पण वृत्ति में से भक्ति का उद्‌भव हुआ और कैसी भी विपरीत स्थिति में विचलित न होने वाली श्रद्धा ही निष्ठा हुई। इन भावों की तृप्ति से ही धर्म,

नैतिकता और मानवता का विकास होता है।

धर्म का आदिकालीन स्वरूप 'टोटम' में है, जिसके अनुसार कुछ विश्वासों के आश्रित हो कुछ नैतिक नियमों का पालन किया जाता है तथा पशु-पक्षी अथवा प्रकृति को पूजा जाता है। टोटम व्यक्तियों के भी हो सकते हैं और किसी-किसी पूरी जाति के भी होते हैं। आदिवासी जातियों में अभी ऐसे विश्वास जीवित हैं।'टेबु' कुछ निषेधात्मक प्रतिक्रियाए हैं जिनका पालन होता है जैसे रजस्वला स्त्री का रसोईघर में न जाना। ये भी विश्वास के अन्तर्गत ही हैं। इन विश्वासों का सम्वन्ध अलौकिक माना जाता है।

धार्मिक भावना सतही नहीं होती है उसका वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। धर्म इतना सूक्ष्म है कि इसे अपरिभाषित कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति अलौकिक शक्ति की अपनी कल्पना के अनुसार प्रार्थनाओं, गुणानुवादों, प्रशंसाओं, आरतियों, स्त्रोतों, मन्त्रों आदि के रूप में हुई। संसार के सभी धर्मों के इस रूप में आश्चर्यजनक रूप में साम्य है। धर्म का तीसरा रूप व्यवहार है। यह रूप अति विस्तृत, परिवर्तन या विकासशील है। सदाचार, समुदाचार, नैतिक नियम इसी के अन्तर्गत है। इस प्रकार धर्म तीनों भागों में विश्वास, भावना और व्यवहार के रूप में हमारे समक्ष आता है। केवल बाह्याचारों से या अनुष्ठानों से या संकल्पों से धर्म का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। फिर भी धर्म की परिभाषाएं हुई हैं। महाभारतकार का कहना है—

" धारणात् धर्म इत्याहुधर्मो धारयते प्रजा" अर्थात् प्रजा जिसे सार्वजनीन रूप में धारण करे तथा धारण कर ऐसी व्यवस्था करे जिससे दूसरों की तथा उसकी ऐहिक एवं आत्यन्तिक सुख और कल्याण की प्राप्ति हो, वह धर्म है कणाद का कहना है—"यतोऽभ्युदयनि: श्रेयस सिद्धि: स धर्म:।" अभ्युदय नि: श्रेयस के लक्ष्य को पूर्ति जिससे हो, वही धर्म है विदुरनीति का कथन है—"एकोधर्म: परं श्रेय:" एक धर्म ही परम कल्याणकारी है गोस्वामी तुलसीदास भी इसी की घोषणा "परहित सरिस धर्म नहीं भाई," कहकर करते हैं।

उपर्युक्त सभी विद्वान धर्म को कल्याण करने वाला तथ धारण करने से सम्बद्ध करते हैं। धर्म प्राणी की मूल प्रवृत्ति आहार, निद्रा, भय, मैथुन, स्वार्थपरता आदि से ऊपर है तथा इनक शास्ता है। विदुर-नीति धर्म के ८ मार्ग बताती है यज्ञ, अध्यय दान, तप, सत्य, क्षमा, दान तथा अलोभ। धर्म दभ की वस्तु नह है। इनमें से प्रथम चार यज्ञ, अध्ययन, दान तथा तप दंभ-प्रदर्शन क पूर्ति के लिए भी किए जा सकते हैं। यदि धर्म दभ होता है तो ध भीतरी तत्व न होकर बाह्य हो जाता है तथा आडम्बर की श्रेणी आकर धर्म ध्वंसी रूपी हो जाता है। केवल बाह्याचार ही तो ध नहीं है। सत्य, क्षमा, दया तथा अलोभ व्यक्ति की अन्तर्धारा सम्बद्ध हैं। जब तक व्यक्ति इन्हें अनुभव में नहीं लाएगा, तब तक वा इनका व्यवहार भी नहीं कर सकता। इनमें भी विदुरनीति ' असौ धर्मः यत्र न सत्यमस्ति' कहकर एक रूप सत्य का पक्ष अविव ऊंचा करती है।

श्रीमद् भागवत में धर्म के चार चरणों के अन्तर्गत ३९ अप्राकृत गुण बताए गए हैं—सत्य, पवित्रता, दया, क्षमा, त्याग, संतोष, सरलता, शम, दम, तप, समता तितिक्षा, उपरति, शास्त्र विचार, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, वीरता, तेज, बल, स्मृति, स्वतत्रता, कौशल, कान्ति, धैर्य, कोमलता, निर्भीकता, विनय, शील, साहस, उत्साह, बल, सौभाग्य गंभीरता, स्थिरता, आस्तिकता, कीर्ति, गौरव, निरहंकारता।

[श्लो. २६-२८ अ. १६ प्रथम स्कन्ध।]

ये सब गुण जीवन, धर्म, व्यक्ति समाज, देश आदि के लिए समान रूप से उपयोगी हैं।

धर्म समाज के कल्याण का, व्यक्ति के आध्यात्मिक उत्थान का, व मुक्ति का साध्य रहा है परन्तु आजकल तथाकथित स्वार्थी लागों ने धर्म को उल्लू सीधा करने का साधन बना लिया है। भारतीय संस्कृति के पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जिन्हें क्रमशः जीवन के जड़, शाखा, पुष्प और फल कहा जाता है, का आज क्रम ही बदला हुआ लगता है। जड़ और पुष्प को लोग भूलकर शाखा और पुष्प के भ्रम में ही घूम रहे हैं। भौतिकवादी संस्कृति के ये तमाशे

हम पहले भी देख चुके हैं । हिरण्यकशिपु अर्थात् धन और शैया की भोगवादी संस्कृति शाघ्र ही नष्ट हो जाती है । हिरण्यकशिपु का स्वयं को विष्णु घोषित करना अर्थात् स्वर्ण की व्यापकता स्पष्ट करना, उसका परिणाम होलिका अर्थात् विनाश के रूप में, हम सब के सामने है । व्यापक हिरण्य नहीं, धर्म ही है । इसलिए तो पहले स्थान पर धर्म रखा गया है । धर्म की व्यापकता को सिद्ध करने के लिए यम-यमी संवाद अथवा ब्राह्मण बरूथिनी संवाद ही पर्याप्त है । एकान्त, सुरम्य और गहन निर्जन वन प्रांतर में यम को यमी से परिरंभण करने से कौन रोक रहा था ? निश्चय ही धर्म रोक रहा था । विदुर तो ऐसे लोगों को ही श्रेणी बद्ध कर देते हैं जो धर्म को नहीं जानते-नशे में मतवाला, असावधान, पागल, थका हुआ, क्रोधी, भूखा, जल्दबाज लोभी, भयभीत, और कामी । नागसेन तो मिलिन्द को धार्मिक मंत्रणा करने के स्थान तथा धार्मिक विषयों पर मत्रणा करने के अयोग्य व्यक्ति भी बता देते हैं । धर्म एक अनुशासन है जो व्यक्ति को दुर्गति से बचाता है । "दुर्गति प्रयत्त प्राणिधारणात् धर्म उच्यते ।"

जैन धर्म वस्तु के स्वभाव को धर्म तथा पूर्ण वीतराग होना परम धर्म मानता है । जैन ६ द्रव्य मानते हैं धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव । ये परस्पर परिणमन करते हैं । जिसे जानना चाहते हैं, वह मुख्य धर्म होता है, जिसे जानते हैं वह गौण रह जाता है । धर्म को जानने के लिए आगम को जानना आवश्यक है । व्यक्ति को धर्म में लगाने के लिए उसे संसार की विचित्रता, पापपुण्य का फल, महन्त पुरुषों की प्रवृत्ति जीवों के कर्म व उनके द्वारा रचना, एक वस्तु के भिन्न-भिन्न गुणों का पर्याय व उनका निरूपण करना कार्यकारी ज्ञान अर्थात् बुद्धिगोचर धर्म का आचरण, दृष्टान्त, हेतु युक्ति और प्रमाण आदि के द्वारा धर्म की प्रतीति कराई जा सकती है परन्तु वे उपचार को धर्म नहीं मानते । उपचार या व्यवहार साधन है, साध्य उन्होंने मुक्ति माना है जो बिना धर्म के संभव नहीं ।

नास्तिक भी समाज के स्थायित्व के लिए नैतिक नियमों की पालना पर जोर देते हैं । धर्म का भाव बने रहने समाज में वैचारिक

बौद्धिक एकता बनी रहती है। इस प्रकार धर्म लोक का धारणकर्त्ता है। नैतिक, सदाचार के नियमों के पालन से कल्याणकारी है। इस प्रकार संसार में धर्मविहीन व्यक्ति कोई हो नहीं सकता। सब अपने अपने विश्वास से जुड़े रहते हैं। स्वेच्छाचार धर्म नहीं है। यह अच्छे से अच्छे धर्म को भी ले डूबता है। स्वेच्छाचारिता को मिटाने के लिए समय-समय पर नियम बनते हैं। इससे धर्म के अनुशासन का विकास होता रहता है। बौद्धों की तीन संगीतियां इसी बात का ज्वलन्त प्रमाण है। बहुत से मांगलिक कार्य व्यक्ति अपने शुभ लाभ के लिए करता रहता है। परन्तु आवश्यक नहीं, वे धर्म के कार्य भी होते हों। धर्म जीवन का कर्त्तव्य भी हैं परन्तु कर्त्तव्य की कसौटी सद् होना आवश्यक है। अशोक ने एक स्तम्भ लेख में खुदवाया "धर्म करना अच्छा है, पर धर्म क्या है ? धर्म यही है कि पाप से दूर रहें, बहुत से अच्छे कार्य करें, दया, दान, सत्य, शौच का पालन करें। मैंने अनेक प्रकार से लोगों को 'चक्खुदान' अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टि का दान दिया है।" इस प्रकार बौद्ध नैतिक, सामाजिक आचार को धर्म मानते हैं।

पौर्वात्य धर्म में वैयक्तिक प्रधानता है जबकि पाश्चात्य धर्म में सामाजिक। पौर्वात्य धर्म व्यक्ति की मुक्ति की ओर बढ़ता है, पाश्चात्य धर्म सामाजिक कल्याण की ओर बढ़ता है। इसलिए अस्पताल जैसे सेवा केन्द्रों की अवधारणा पाश्चात्य देन ही है व्यक्ति व्यक्त है, समाज अव्यक्त। व्यक्ति से समाज बनता है। यदि सिद्धान्त वैयक्तिक व्यवहारोन्मुखी हो तो आवश्यक नहीं कि सभी व्यक्ति बराबर उसे चरित्र में उतार कर सामाजिक स्तर पर पहुंच ही जायेंगे। इसलिए सामाजिक जीवन के अस्तित्व के लिए नियमों, मूल्यों, आदर्शों, व प्रतिमानों का अनुपालन पारलौकिक नियन्त्रण, कर्मफल, स्वर्ग—नरक का भय, दण्ड आदि के भय से कराया जाता है। धर्म के बुनियादी स्वरूप का कोई विरोध यहीं करता परन्तु उनका प्रयोग भी युग पुरुष ही करता है। धर्म की रक्षा करने पर ही धर्म व्यक्ति या समाज की रक्षा करता है। यह वैसी ही बात है किसी स्त्री का शील ही स्त्री के शील की रक्षा करता है कोई सरक्षक या भाई आदि ऐसा दावा

करें तो झूठा है । कुछ धर्म विशिष्ट धर्म हो सकते हैं परन्तु वे सर्व-व्यापक नहीं हो सकते । वे अवसरानुकूल, सामयिक, परिस्थितिजन्य हो सकते हैं । व्यक्ति धर्म, स्त्री धर्म, परिवार धर्म, समाज धर्म, राष्ट्र धर्म आदि इसी प्रकार धर्म का वृत्त बढ़ता जाता है । विभिन्नांशी धारणा शक्ति के कारण धर्म वैयक्तिक है । सामूहिक धर्म शासन के प्रावधान हैं ।

कुछ स्वास्थ्यकारी धर्म उपवास आदि भी हैं परन्तु यह रूढ़ि और दुरुपयोग दोनों में ही आ रहे हैं । भूखे पेट के लिए उपवास का कोई अर्थ नहीं । परन्तु अपनी शर्तें मनवाने के लिए भूख-हड़ताल पर बैठना धर्म कहां है ? वहां तो वह शस्त्र है । बाह्याचार खतरनाक बन गया । धर्म का मूल कारण आरोग्य तो है ही परन्तु उपवास यदि शस्त्र ही बन गया तो शरीर धर्म जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि से तो बच नहीं सकता ।

धर्म के मामले में मार्क्स एक निराश व्यक्ति के रूप में ही सामने आता है । धर्म जैसी वैचारिक एकता का वह दोहन नहीं कर सका । वह आस्थाहीन पलायनवादी है । वर्गहीन समाज की कल्पना क्या किसी स्वर्ग-नरक की कल्पना से कम है । पूर्ण स्वतन्त्रता जंगल में तो क्या समुद्र में भी नहीं मिलती । धर्म हिंसा का कभी समर्थन नहीं करता जबकि मार्क्स क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए हिंसा का सम-र्थन करता है । उसने सामान्य जन से भय, आशा तथा घृणा का दोहन किया है । मार्क्सवादी प्रत्येक क्षण अपने सिद्धान्तों की घोषणा करता फिरता है । यह किसी संकीर्ण सम्प्रदाय से कम भयानक बात नहीं है । धर्म अफीम नहीं है । शासन धर्म ही पंगु होगा तो वैयक्तिक आकांक्षाएं ही उबरेंगी । भारत में धर्म निरपेक्षता का ढिंढोरा पीटा जाता है । संविधान में वर्जित निदेशक सिद्धान्त धर्म के मूल सिद्धान्तों से कहां खार खाते हैं ? क्या शासन धर्म कोई एक व्यक्ति का धर्म है । मैकयावली तो कहता है कि आडम्बर के लिए ही सही, शासना-ध्यक्ष को धर्म का आचरण करना चाहिए । पार्टियों के विश्वास
क्ति विश्वास को खाये जा रहे हैं । गांधीजी ने कहा है बिना धर्म

राजनीति नहीं हो सकती । भारत के तिरंगे में भी तो २४ आरों वाला चक्र अशोक का धर्म चक्र ही है । फिर धर्म निरपेक्ष क्या चीज है ?

धर्म विज्ञान का विरोध नहीं करता । धर्म शाश्वत है तो विज्ञान प्रयोगधर्मी है । विज्ञान के सभी परिणाम अनंतिम ही होते हैं। धर्म भावना प्रधान है, विज्ञान भावना रहित । धर्म, व्यक्तिगत, सामाजिक सदाचार पर जोर देता है । मूर्खों की तो कमी कहीं नहीं है परन्तु धर्म भाग्यवादी नहीं बनाता, न विज्ञान भाग्यवादी बनाता है । धर्म चेतना से सम्बद्ध है । विज्ञान उपयोग, दुरुपयोग पर कोई अंकुश नहीं रखता । वह तो धर्म ही रखता है ।

एक द्रोणाचार्य द्वारा सदाचार का उल्लंघन करने से समुदाचार का उल्लंघन हुआ । इसी का परिणाम था महाभारत । आज भी विज्ञान को धर्म के अनुशासन की आवश्यकता है । निःशस्त्रीकरण की बात करना धर्म के अनुशासन में ही है । धर्म विनाशक नहीं है । आध्यात्मिकता का सम्पादन सबको दिखाकर नहीं किया जा सकता है। भौतिकता व्यक्ति को विश्वास व आस्था से दूर भले ही कर दे, नैतिक नियमों से दूर नहीं करती अन्यथा समाज का अस्तित्व ही कहां रहेगा ?

वैज्ञानिक विकासवाद का भी धर्म विरोध नहीं करता धर्म विचारक भी है । हिन्दू धर्म में माने जाने वाले अवतारों के क्रम में हम इसे भलीभांति देख सकते हैं । मत्स्य अवतार जलचर प्राणी है, कच्छप-जल-थल वाले कछुए जैसे प्राणियों का प्रतीक है । वराह ऐसे पशु का प्रतीक है जो भूमि पर रहते हैं परन्तु आवश्यता पड़ने पर जल में तैर भी जाते हैं, नृसिंह–मनुष्य और पशु के बीच की स्थिति है । वामन अपूर्ण मानव का प्रतीक है । परशुराम व्यक्ति का तो प्रतीक है परन्तु तामसी, राम पूर्ण सात्विक मनुष्य के प्रतीक हैं । कृष्ण सत, रज, तम तीनों गुणों से ऊपर योगीराज हैं । योग के बाद शक्ति आती है । ज्ञान होने पर बुद्ध भी अवतार माने गए । इस प्रकार ये

मील के पत्थर विकास के रास्ते को नापते हैं। भौतिकवादियों के पलायन का नमूना हिरण्यकशिपु (अर्थ+काम) है। जिस पर पहले विचार किया जा चुका है।

देशीय एकता के लिए प्राचीन तीर्थ-संस्कृति की रक्षा देशाटन द्वारा सम्भव है। देश यह शरीर है तथा स्कन्द पुराण में सत्य, क्षमा, इन्द्रिय, निग्रह, सर्वभूत दया, सत्यवादिता, ज्ञान और तप को ही तीर्थ बताया गया है। आत्मनिरीक्षण करना ही देशाटन है।

स्कूल, कॉलेजों में दिन-दिन बढ़ती अराजकता पर नैतिक नियम ही प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं इसलिए उनकी पाठ्यचर्या पर विचार किया जाना चाहिये। धर्म मानसिक तनाव व संवेग से मुक्ति दिलाता है। प्रार्थना करने के बाद शान्ति मिलती है, यह जानना जरूरी नहीं कि इनमें मनोविज्ञान का कौन-सा सिद्धान्त काम करता है। धर्म ही सामाजिक मूल्यों व मान्यताओं की रक्षा करता है। समाज में नैतिकता बनाये रखने के लिए धर्म सहायक है। धार्मिक उत्सवों के माध्यम से सामाजिक एकता बनी रहती है। आचरण प्रधानधर्म परिवार आदि में कर्त्तव्यबोध जगाता है। संस्कार उत्पन्न करता है। सामाजिक सन्तुलन बनाए रखता है।

Flat No./12, *रिजर्व बैंक स्टाफ कालोनी*
गांधीनगर, जयपुर ३०२१५

卐

धर्म और जीवन

● डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया

★

संसार की प्राचीन धार्मिक मान्यताओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। यथा—

१—कृत
२—प्राकृत

कृतकारी धार्मिक मान्यता के अन्तर्गत वे सभी धर्म मत हैं जिनका कोई न कोई व्यक्ति अथवा विभु कर्त्ता है। ऐसी मान्यताओं में धर्म का कर्त्ता सर्वोपरि सत्ता है। वैदिक, बौद्ध, इस्लाम तथा ईसाई आदि धर्म इसी वर्ग में आते हैं। यहां भक्त अथवा अनुयायी सदा-सर्वदा उस कर्त्ता के अधीन रहता है। धार्मिक मान्यताओं का दूसरा भेद है प्राकृत जिसका कोई कर्त्ता नहीं। वह स्वयंजात है। इस कोटि में जैन धर्म आता है।

गुणों के समूह का नाम द्रव्य है और द्रव्य-समूह का नाम है संसार। द्रव्य शाश्वत है। अविनाशी है। उनकी पर्याय नित्य-निरन्तर बनती-बिगड़ती रहती है। पर्याय परिवर्तन में एक विशेष आकर्षण होता है। संसार इसी आकर्षण से जीवंत है।

कृत-कारी धर्म में सत्ता की उपासना आवश्यक है, फलस्वरूप भक्त अथवा अनुयायी सर्वदा पराधीन रहता है जबकि प्राकृत धर्म में व्यक्ति—सत्ता की अपेक्षा गुणों की वंदना का विधान है। यहां मान्यता है कि प्रत्येक आत्मा में अनन्त गुण समाहित हैं परन्तु कर्मों के आवरण से वे प्रच्छन्न रहते हैं, उन्हें निरावरण करना पुरुष का सच्चा और अच्छा पुरुषार्थ कहलाता है। संयम और तप-साधना से कर्म-कुल क्षय किए जाते हैं। कर्म क्षय होने पर अक्षय आत्मा प्रकट होता है।

जीवन का लक्षण है जीना । जागतिक जीवन भी दो प्रकार से जिया जाता है । यथा—

१—मूर्च्छित जीवन जीना ।
२—जाग्रत जीवन जीना ।

ऐन्द्रिक-व्यापारों से लिप्त हो जाने पर प्राणी मूर्च्छित जीवन जीता है । इसी को प्रमाद भी कहा गया है । मूर्च्छित जीवन-चर्या सांसारिक चक्रमण को गति प्रदान करता है जबकि जाग्रत जीवन-चर्या आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करती है ।

धर्म की परिभाषाएं प्रायः दो प्रकार से स्थिर हुई है । यथा-

१—क्रियाजन्य
२—स्वभावजन्य

क्रियाजन्य परिभाषा में 'धारयति धर्मः' कहा गया है । प्रश्न क्या धारण किया जाए ? जो हमारे लिए हमारे विकास के लिए पयोगी हो उस चर्या तथा सिद्धान्त को धारण करना वस्तुतः धर्म । विचार करें कि उपयोगिता का क्या आधार है ? मूर्च्छित जीवन ी उपयोगिता अथवा जाग्रत जीवन का सम्बल । आज जागतिक ीवन-उत्कर्ण को ही उपयोग माना जा रहा है । शुभ उपयोग और ुद्धोपयोग का प्रश्न ही नहीं उठता । इसका अर्थ यह है कि जागतिक ीवन के लिए धर्म की कोई आवश्यकता है ही नहीं । प्रत्येक-जीवन चर्या में होश की परम आवश्यकता है । हमारी प्रत्येक चर्या होश के ाथ सम्पन्न होना चाहिए । बेहोश जीवन चर्या का परिणाम मदहोश ोगा जो सांसारिक चक्रमण को चिरंजीवी बनाता है, विबर्द्धित करता है ।

देखना—सुनना, सूंघना-चखना तथा स्पर्श करना ये पांच प्रकार ऐन्द्रिक क्रिया के प्रक्रिया द्वारा हैं । यदि प्राणी किसी भी पदार्थ को देखने में मात्र दृष्टा की भूमिका निर्वाह करता है तो उ: देखना सार्थक है और यदि इस दृष्टि में राग-द्वेष का आधार है

वह देखना सम्यक् नहीं कहा जा सकता । इसी प्रकार अन्य क्रियाएं हैं । विचार कीजिए कि जब हम जूते उतारते हैं तब सावधानी पूर्वक निर्णय लें कि क्या यह क्रिया जाग्रत अवस्था में की गई है ? यदि की गई है तो जूते जहां उतारे गए हैं, उतारने से पूर्व उस स्थान विशेष को देखा गया है । ऐसा तो नहीं कि जूते उतारने के स्थान पर कहीं कोई कीट हो और वह हमारी लापरवाही से जूता पड़ने पर मर गया हो । इसी प्रकार जूते पहिनने में हमें जूते और उसके चारों ओर देखना-पड़ताल करना चाहिए और तब जूता पहिनना वस्तुत: जूता पहिनने की ऐसी क्रिया सार्थक कहलाएगी । इस प्रकार की जूता पहिनने और उतारने की क्रिया जाग्रत क्रिया कहलाएगी । और तब इस अवस्था अवधि की चर्या धार्मिक कहलाएगी । इस प्रकार की जीवन-चर्या हमें कालान्तर में क्रियाजन्य धर्म से स्वभावजन्य धर्म की ओर अग्रसर किया करती है ।

कहते हैं 'वत्थु सहावो धम्मो' अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही धर्म है । प्रत्येक वस्तु में अनन्त धर्म होते हैं और इन सभी धर्मों का जानना धार्मिक होता है । ज्ञान से मूर्च्छा का विसर्जन होता है । आज का जीवन मूर्च्छित जीवन है । इसीलिए प्राणी-प्राणी घोर-घनघोर संत्रास से भरा हुआ है । पीड़ित है । चलने में अनेक दुर्घटनाएं हो रही हैं । ईर्ष्या का हमें बोध नहीं है । इस प्रकार यदि हमें सुखी और समृद्ध जीवन जीना है तो हमारी जीवन चर्या धर्ममय होना चाहिए । जाग्रत-चर्या ही धार्मिक चर्या कहलाता है । इसीसे व्यक्ति, समूह, समुदाय और समाज सुखी और समृद्ध होता है ।

अधर्म को यदि कोई धर्म माने अथवा जाने तो यह उसकी जानकारी मिथ्या कहलाएगी और उसका परिणाम सर्वदा अशुभ होगा । अज्ञान आकुलता को जन्म देता है । अधार्मिक जीवन सदा आकुल-व्याकुल रहता है । अधर्मी के दर्शन कर प्राणी प्राय: भय और आकुलता का अनुभव करता है । धार्मिक प्राणी के दर्शन करने से प्रमोद-मोद होता है । कहा—"गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम आवें ।" वह धार्मिक जीवन-चर्या के मंगल दर्शन करने का सुपरिणाम है । धर्म हमारे जीवन में समता का संचार करता है और ममता का विसर्जन । समभाव की उत्पत्ति भी इसी का परिणाम है । समभाव

और समत्व से प्राणी मात्र के प्रति सौहार्द की भावना अन्तरंग में उदय होती है फलस्वरूप समाज में विरोध-क्रोध की अपेक्षा बोध-अनुरोध की उदात्त भावना प्रकट होती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि धार्मिक जीवन स्वयं सुखी और समृद्ध होता है और दूसरों को सुखी समृद्ध होने का वातावरण जुटाता है। तब क्या हमें धार्मिक जीवन-चर्या जीने के लिए अग्रसर नहीं होना चाहिए? ०

संचालक जैन, शोध अकादमी मंगल कलश,

३६४, सर्वोदय नगर, आगरा रोड, अलीगढ़ (उ. प्र.)

दयालुता

हजरत अयूब मुसलमानों के बहुत माने हुए बन्दों हुए हैं। वे बड़े दयालु थे। एक बार उनके सीने में जख्म हो गए थे। जख्मों में कीड़े पड़ गए। एक रोज यह मदीने में एक स्थान पर खड़े हुए थे कि चन्द कीड़े जख्म से निकल कर जमीन पर गिर पड़े। उन्होंने उन कीड़ों को जमीन से उठाकर दुबारा अपने जख्म में रख लिए। लोगों ने पूछा तो हजरत ने फरमाया –

"कुदरत ने इन कीड़ों की खुराक यही दी है। अलहदा होने पर मर जाएंगे। जब हम किसी में जान नहीं डाल सकते तब हमें उसकी जान लेने का क्या हक है?"

जैनागमों में श्रावक धर्म

● आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

स्वभाव च्युत आत्मा को जो पुनः स्वभाव-स्थित कर और गिरते हुए को स्वभाव में धारण करे, वैसे आचार-विचार को शास्त्रीय भाषा में धर्म कहते हैं। 'एगे धम्मे' अर्थात् धारण करने के स्वभाव से वह एक है। स्थिति भेद, क्षेत्रभेद और पात्र भेद की अपेक्षा मूल में वह एक होकर भी जैसे पानी विविध नाम और रूपों से पहचाना जाता है, वैसे धर्म भी अधिकारी भेद और साधना भेद से अनेक प्रकार का कहा जाता है। 'स्थानांग-सूत्र' के दूसरे स्थान में धर्म के श्रुतधर्म और चारित्रधर्म के रूप से दो प्रकार बतलाये हैं फिर चारित्र धर्म को भी आगारधर्म और अणगार धर्म के भेद से विभक्त किया है। आगार का अर्थ है घर। घर के प्रपंचमय वातावरण में रहकर जो धर्म साधना की जाये उसे आगार धर्म और घर के सम्पूर्ण आरम्भ-परिग्रह से विरत होकर जो धर्म-साधना की जाय उसको अणगार धर्म कहा गया है। आगार धर्म का ही दूसरा नाम श्रावक धर्म है। त्यागी-श्रमणों की उपासना करने से गृहस्थ को श्रमणोपासक का उपासक भी कहा गया है। जैनागम और साहित्य में प्राप्त श्रावक धर्म का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

दशाश्रुतस्कंध में सम्यग्दर्शनी गृहस्थ को व्रत-नियम के अभाव में दर्शन श्रावक कहा है। आचार्य कहते हैं कि जो व्रत-नियम रहित होकर भी जिन शासन की उन्नति के लिये सदा तत्पर रहता है और चतुर्विध संघ की भक्ति करता है वह अविरत सम्यग् दृष्टि भी प्रभावक श्रावक होता है, जैसा कि कहा है—

जो अविरओवि संघे, भत्तितित्थुन्नई सया कुणई।
अविरय-सम्मदिट्टी प्रभावगो, सावगो सोऽवि ॥

आगमों में प्रायः बारहव्रतधारी श्रावकों का ही निर्देश मिलता है। एक आदि व्रतधारी देशविरती होते हैं, पर आगमों में वैसा कोई उदाहरण नहीं मिलता है। इस समय में राज्य शासन के पालक चेटक और उदायी जैसे राजा और सुबाहु जैसे राजकुमारों के भी द्वादश व्रतों के धारण का उल्लेख आता है। परन्तु पूर्वाचार्यों ने श्रावक धर्म को भी जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट ऐसी तीन श्रेणियां निर्धारित की हैं।

जघन्य श्रावक

जघन्य श्रावक के लिये तीन बातें आवश्यक बताई हैं, जो निम्न प्रकार हैं।

१. मारने की भावना से प्रेरित होकर किसी त्रस जीव की हत्या नहीं करना। (२) मद्य-मांस का त्यागी होना।

(३) नमस्कार मन्त्र पर पूर्ण श्रद्धा करना (रखना)

कहा भी है—आउट्टि थूल-हिंसाई, मज्ज मंसाई-चाइओ।
जहन्नओ सावगो होइ, जो नमुक्कार धारओ॥

मध्यम श्रावक :

मध्यम श्रावक की विशेषताएं इस प्रकार हैं :

देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा रखता हुआ जो बड़ी हिंसा नहीं करता।

२. मद्य, मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों का त्यागी होकर जो धर्म-योग्य लज्जालुता, दयालुता, गंभीरता और सहिष्णुता आदि गुण युक्त हो।

३. जो प्रतिदिन षट्कर्म का साधन करता है और द्वादश व्रतों का पालन करता हो। कहा गया है—

देवार्चा गुरु-शुश्रुषा स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दान चतिगृहस्थाना षट् कर्माणि दिने दिने॥

षट्कर्म। छह दैनिक कर्म इस प्रकार हैं:–

१. देव भक्ति :

वीतराग और सर्वज्ञ देवाधिदेव अरिहंत ही श्रावक के आराध्य देव हैं।

श्रावक की प्रतिज्ञा होती है–"अरिहंतो महदेवो" अर्थात् अरिहत मेरे उपास्य देव हैं। उनके लिये कहा गया है–दसट्ठ दोसा न जस्स सो देवो" जिनमें दस और आठ (अठारह) दूषण नहीं हैं, वे ही लोकोत्तर पक्ष के आराध्यदेव हैं।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय इन चार कर्मों के क्षय से जिनमें अठारह दोष नहीं होते वे अरिहंत कहलाते हैं। अठारह दोष निम्न प्रकार हैं–

१. अज्ञान २. निद्रा ३. मिथ्यात्व ४. अविरति ५. राग ६ द्वेष ७. हास्य ८. रति ९. अरति १०. भय ११. शोक १२. जुगुप्स १३ काम १४. दानान्तराय १५. लाभान्तराय १६. भोगान्तराय १७ उपभोगान्तराय और १८. वीर्यान्तिराय।

कुछ आचार्य अठारह दोषों में 'कवलाहार' को एक मानक केवली भगवान् के 'कवलाहार' नहीं मानते, पर आहार का संबं शरीर से है। वह 'गमनागमन' और श्वास की तरह शरीर धर्म हो से आत्म गुण का घातक नहीं बनता अत: यहां उसका ग्रहण नहीं कि गया। इस प्रकार अठारह दोष-रहित, बारह गुण सहित अरिहंत दे ही आराध्य हैं, देव, त्यागी, विरागी एवं वीतराग हैं अतः त्या विराग और वीतराग भाव की ओर बढ़ना एवं तदनुकूल करए करना ही उनकी सच्ची भक्ति हो सकती है जैसा कि सन्तों ने क है:–

ध्यानं धूपं मनः पुष्पं, पचेन्द्रिय-हुताशनं।
क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं॥

२. गुरु सेवा :

दूसरा कर्म गुरूसेवा है । "जावज्जीवं सुसाहुणों गुरूणों" के अनुसार श्रावक, आरंभ-परिग्रह के त्यागी, सम्यक्ज्ञानी, मुनि एव महासतियों को ही गुरु मानता है । सच्चे संत छोटी-वड़ी किसी प्रकार की हिंसा करते नहीं, करवाते नहीं, करने वाले को भला भी समझते नहीं । इस प्रकार वे झूठ, चोरी कुशील, और परिग्रह के भी तीन करण, तीन योग से सर्वथा त्यागी होते हैं । श्रावक प्रतिदिन ऐसे गुरुजनों के दर्शन व वंदन कर उपदेश ग्रहण करते हैं और उनके संयम गुण के रक्षण व पोषण हित वस्त्र, पात्र, आहार, औषध एवं शास्त्रादि दान से सेवाभक्ति करते हैं ।

जैसा कि 'उपासकदशंग' सूत्र में आनन्द श्रावक ने कहा, 'कप्पई में समणे निग्गंथे फासुय-एसणिज्जेणं असण,पाण, खाइम, साइम, वत्थ पडिग्गह, कंमल पायपुंच्छणेणं, पीढ, फलग, सिज्जा, संथारएणं ओसहभेसजजेणं पडिलाभेमाणस्स विहरितए अर्थात् मुझे श्रमण, निर्ग्रंथों को प्रासुक और निर्दोष अशनानिद चारों अहार, वस्त्र, पात्र, कंवल पादपोंछन, पीठ, फलक, शैय्या, संस्तारक और औषध-भेषज से प्रतिलाभ देते हुए विचरण करना योग्य है । अन्य तीर्थ के देव या अन्य तीर्थ-परिगृहीत चैत्य का वंदन नमस्कार करना योग्य नहीं, वैसे ही उनके पहले बिना बतलाये उनसे आलाप-संलाप करना तथा उनको अशनादि देना नहीं कल्पता ।

३. स्वाध्याय :

सद्गुण का संयोग सर्वदा नहीं मिलता और मिलने पर भी उनकी शिक्षा का लाभ बिना स्वाध्याय के नहीं मिलता । अत: गुरु-सेवा के पश्चात् स्वाध्याय कहा गया है । श्रावक-गुरु की वाणी सुनकर चिंतन, मनन और प्रश्नोत्तर द्वारा ज्ञान को हृदयंगम करता है । शास्त्र में वर्णित श्रावक के लिये निग्रन्थ प्रवचन का "कोविद" विशेषण दिया गया है । स्वाध्याय के द्वारा ही शास्त्र का कोविद पंडित हो सकता है । अत प्रत्येक श्रावक-श्राविका को वाचना, पृच्छा,पर्यटना, अनुपेक्षा और धर्मकथा द्वारा धर्म शास्त्र का स्वाध्याय करना चाहिये । सद्गुरु की अनुपस्थिति में उनके प्रवचनों का स्वाध्याय गुरू सेवा का आन·

प्रदान करता है । कहा भी है–"स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान बिना ।"

४. संयम

जितेनिन्द्रय, संयमशील पुरुष का ही स्वाध्याय शोभास्पद होता है । अतः स्वाध्याय के वाद चतुर्थ कर्म संयम वतलाया है । श्रावक को प्रतिदिन कुछ काल के लिये संयम का अभ्यास करना चाहिये । अभ्यास–बल से चिरकाल संचित भी काम, क्रोध और लोभ का प्रभाव कम होता है और उपशम भाव की वृद्धि होती है । अतः श्रावक को पाप से बचने के लिये प्रतिदिन संयम की साधना करनी चाहिये ।

५. तप

गृहस्थ को संयम की तरह प्रतिदिन कुछ न कुछ तप भी अवश्य करना चाहिये । तप-साधन से मनुष्य में सहिष्णुता उत्पन्न होती है, अतः आत्म-शुद्धि के लिये अनशन, अणोदरी, रस परित्याग आदि में से कोई भी तप करना आवश्यक है । तप से इन्द्रियों के विषय क्षीण होते हैं और पर दुःख में समवेदना जागृत होती है । रात्रि-भोजन और व्यसन का त्याग भी तप का अंग है । आवश्यकताओं से दबा हुआ । गृहस्थ तप द्वारा शान्ति-लाभ प्राप्त करना है ।

६. दान

श्रावक–जीवन के मुख्य गुण दान और शील हैं । श्रावक तप की तरह अपने न्यायोपार्जित वित्त का प्रतिदिन दान करना भी आवश्यक मानता है । जैसे शरीर विभिन्न प्रकार के पक्कवान ग्रहण कर फिर मल रूप से कुछ विसर्जन करता है । स्वस्थ शरीर की तरह श्रावक भी प्रतिदिन प्राप्त द्रव्य का देश, काल एवं पात्रानुसार उचित वितरण कर दान धर्म की अराधना करता है । पूणिया श्रावक के लिये कहा जाता है कि उसने धर्मी भाई को प्रीतिदान करने के लिये एकान्तर व्रत करना प्रारम्भ किया । पूणी के धन्धे में तो घर का खर्च मात्र चलता था । अतः वह तपस्या से अपना खाना बचा कर स्वधर्मी वन्धुओं की सेवा करता था ।

मध्यम श्रावक षट् कर्म की साधना के समान द्वादश व्रत का भी पालन करता है।

द्वादश व्रत :

आनन्द श्रावक ने भगवान् महावीर का उपदेश श्रवण कर प्रार्थना की–प्रभो। जैसे आपके पास बहुत से राजा, ईश्वर, तलवर, मांडवी, कोटुम्वी और सार्थवाह आदि मुण्डित होकर अणगार धर्म की प्रव्रज्या ग्रहण करते हैं। वैसे मैं अणगार धर्म ग्रहण करने में समर्थ नहीं हूं। मैं आपके पास पंच अणुव्र, सात शिक्षा व्रत रूप द्वादशविध गृहस्थ धर्म को ग्रहण करूंगा। मालूम होता है प्राचीन समय श्रावक आरम्भ से ही सम्यग्दर्शन पूर्वक बारह व्रत ग्रहण करते थे। वे बीच के जघन्य मार्ग में अटके नहीं रहते थे। आनन्द ने जिन श्रावक व्रतों को स्वीकार किया था उनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

१. स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत :

इस व्रत के अनुसार गृहस्थ त्रस जीवों की संकल्प पूर्वक हिंसा करने व करवाने का दो करण, तीन योग से त्याग करता है। चलते फिरते जीवों की दुर्भावनावश हिंसा करनी नहीं, करवानी नहीं, जीवन भर मन, वचन, काय से।

२. स्थूल मृषावाद विरमणव्रत :

इसके अनुसार श्रावक स्थूल झूठ का त्याग करता है। दूसरे का जानी माली नुकसान हो, ऐसा झूठ ज्ञानपूर्वक बोलना नहीं, बोलाना नहीं, मन, वचन, काय से। बड़ा झूठ पांच प्रकार का है, जैसे:—१, कन्या २. गोआदि पशु सम्बन्धी ३. भूमि सम्बन्धी ४. जमा रकम या धरोहर दबाने सम्बन्धी तथा ५. झूठी साक्षी या मिथ्या लेख सम्बन्धी। श्रावक को इनका त्याग करना होता है। तभी वह समाज राष्ट्र और परिवार में विश्वास पात्र माना जाता है।

३. स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत :

इसके अनुसार श्रावक बड़ी चोरी का त्याग करता है।

स्वयं चोरी नहीं करता । जानकर चोरी का माल नहीं लेता । एक देश का माल दूसरे देश में बिना स्वीकृति नहीं भेजता । बिना अनुमति के राज्य-सीमा का अतिक्रमण नहीं करता । कम ज्यादा तोल माप रखना और माल में मिलावट कर ग्राहकों को धोखा देना, श्रावक अपने अचौर्य व्रत का दूषण मानता है । इस तरह वह चोरी का दो करण, तीन योग से त्याग करता है । "जाइजो लाय रहीजो सास" के अनुसार वह इतना विश्वस्त होता है कि यदि राज-भंडार में भी चला जाय तो अविश्वास का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । यही अचौर्यव्रत की महिमा है ।

४. स्वदार संतोष परदार विवर्जन व्रत :

इसके अनुसार गृहस्थ परस्त्री का त्यागी होता है । पाणिगृहीत स्त्री पुरुष अपने क्षेत्र में मर्यादाशील होते हैं । वह भोग को आत्मिक दुर्बलता समझकर शनैः शनैः अभ्यासबल से काम वासना पर विजय मिलाना चाहता है । वह यथाशक्य एवं आहार, विहार और वातावरण में रहना पसंद करता है जहां वासना को प्रोत्साहन नहीं मिलता । हस्त मैथुन, अनंग-क्रीड़ा, अश्लील नृत्य गान और नग्न चित्रपटों से रूचि रखना इस व्रत के दूषण माने गये हैं । श्रावक नसबंदी जैसे कृत्रिम उपयोगों में संततिनिरोध को इष्ट नहीं मानता । वह इन्द्रिय-संयम द्वारा गर्भ निरोध को ही स्वपरहितकारी मानता है ।

५. इच्छा परिणाम व्रत :

इस व्रत में श्रावक हिरण्य-सुवर्ण्य-भूमि और पशुधन का परिमाण कर तृष्णा की बढ़ती आग को घटाता है । वह धन को शरीर की भौतिक आवश्यकता पूर्ति का साधन मात्र मानता है । जीवन का साध्य धन नहीं, धर्म है । अतः धनार्जन में धर्म और नीति को भूलकर तन-मन से अस्वस्थ हो जाना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं कहा जाता । वृद्ध और दुर्बल को लाठी का तरह गृहस्थ को धन का सहारा है । लाठी चलने में मदद के लिये है पर वह पैरों से टकराने लगे तो कुशल पथिक उसे वहीं छोड़ देगा । श्रावक इसी भावना से परिग्रह

का परिणाम करता है। आनन्द ने भगवान महावीर के पास हिरण्य सुवर्ण, चतुस्पद और भूमि का परिणाम किया था। वर्तमान में जो सम्पदा थी उन्होंने उसको सीमित कर इच्छा पर नियंत्रण किया। परिणाम स्वरूप करोड़ों की संपदा होकर भी उनका मन शांत था। समय पाकर उन्होंने प्राप्त सम्पदा से किनारा कर एकान्त साधन किया और निराकुल भाव से अवधिज्ञान की ज्योति प्राप्त की। इस प्रकार परिग्रह का परिमाण करता इस व्रत का लक्ष्य है।

६. दिग्व्रत :

अहिंसादि मूल व्रतों की रक्षा एवं पुष्टि के लिये दिग्व्रत, भोगोपभोग परिमाण और सामायिक आदि शिक्षाव्रतों की आवश्यकता होती है। जितना जिसका देश-देशान्तर में भ्रमण होगा उतना ही उसका आरम्भ परिग्रह भी बढ़ता रहेगा। अतः इस व्रत में गृहस्थ के भ्रमण को सीमित किया गया है। सारंभी गृहस्थ जहां भी पहुंचेगा आरभ का क्षेत्र भी उतना ही विस्तृत होगा। अतः श्रावक को पूर्व आदि छहों दिशा में आवश्यकतानुसार क्षेत्र रखकर आगे का भ्रमण छोड़ना है। इस प्रकार दिशा–परिणाम लालसाओं को कम करने का प्राथमिक प्रयोग है।

७. उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत :

मनुष्य हिंसा, असत्य आदि पाप आवश्यकतानुसार और भोग्य सामग्री के लिये ही करता है। जब तक शारीरिक आवश्यकता पर अंकुश नहीं किया जाता, अहिंसा एवं अपरिग्रह का पालन संभव नहीं अतः इस व्रत में खान पान-स्नान-यानादि सामग्रियों को सीमित करना आवश्यक बतलाया है। श्रावक आनन्द ने दातुन से लेकर द्रव्य तक २६ वोलों की मर्यादा की और महारंभ के १५ खरकर्म-हिंसक धंधों का भी त्याग किया था। आवश्यकता वृद्धि के साथ मनुष्य का खर्च वढ़ेगा और उसकी पूर्ति के लिये उसे आरंभ-परिग्रह भी बढ़ाना होगा। अतः कहा गया कि भोगोपभोग के पदार्थों की मर्यादा करो। मर्यादा करने से जीवन हल्का होगा और आरम्भ-परिग्रह भी सीमित रहे

८. अनर्थदंड विरमण व्रत :

हिंसादि पापों को घटाने के लिये जैसे आवश्यकताओं का परिमाण करना आवश्यक है, वैसे व्यर्थ–विना खास प्रयोजन के होने वाले दोषों से बचना भी आवश्यक है। अज्ञानी मानव कितने ही पाप नासमझी से करता रहता है। शास्त्र में अनर्थ दण्ड के चार कारण बताये हैं। (१) अपध्याय (२) प्रमाद (३) हिंस्रप्रदान और (४) मिथ्याउपदेश। विना प्रयोजन आर्त-रोद्र के बुरे विचार करना, द्रोह करना, भविष्य की व्यर्थ चिन्ता करना, नाच, सरकस एवं नशा से प्रमाद बढ़ाना, हिंसाकारी अस्त्र-वस्त्र अग्नि विष आदि अज्ञात व्यक्ति को देना, पापकारी आदेश देना मेढ़े तीतर आदि लड़ाके खुश होना, तेल, पानी आदि खुले रखना, विना प्रयोजन हरी तोड़ना या दूव आदि पर चलना, अनर्थ दंड है। श्रमणोपासक को विना प्रयोजन की हिंसादि प्रवृत्ति से बचना नितांत आवश्यक है।

९. सामायिक व्रत :

अनर्थ के कारणभूत राग, द्वेष एवं प्रमाद को घटाने के लिये समता की साधना आवश्यक है। सामायिक में सम्पूर्ण पापों को त्याग कर समभाव को प्राप्त करने की साधना की जाती है। सामायिक के समय श्रावक श्रमण की तरह निष्पाप जीवन वाला होता है। उस समय आरम्भ-परिग्रह का सम्पूर्ण त्याग हो जाता है। अतः गृहस्थ को बार-बार सामायिक का अभ्यास करना चाहिये जैसा कि कहा है—

सामाइयम्मिउकए समणो, इव सावओ हवई जम्हा।
एएण कारणेण बहुसो, सामाइयं कुण्ज [वि. आ.]

प्रतिदिन प्रातःकाल गृहस्थ को द्रव्य, क्षेत्रकाल और भावशुद्धि के साथ सम्पूर्ण पापों का परित्याग कर स्थिर आसन से मुहूर्त भर सामायिक का अभ्यास अवश्य करना चाहिये। इससे तन, मन वाणी में स्थिरता प्राप्त होती है।

१०. देशावकाशिकव्रत :

जीवन में आरम्भ-परिग्रह का संकोच करने और पूर्वगृहीत

व्रतों को परिपुष्ट करने के लिये दैनिक व्रत ग्रहण को देशावकाशिक कहते हैं। इसमें गृहस्थ हिंसादि आश्रवों का द्रव्य क्षेत्र, काल की मर्यादा से प्रतिदिन संकोच करता है। प्रतिदिन अभ्यास करने से जीवन संयत और नियमित बनता है और वृत्तियां स्वाधीन बनती हैं।

११. पौषधोपवास व्रत :

दैनिक अभ्यास को अधिक बलवान बनाने के लिये गृहस्थ पर्वतिथि में पौषधोपवास की साधना करता है। इसमें आहार-त्याग के साथ शरीर, सत्कार और हिंसादि पाप कार्यों का भी अहोरात्र के लिये दो करण, तीन योग से त्याग होता है। पौषधव्रती, हिंसादि पाप कर्मो को मन, वाणी और काय से स्वयं करता नहीं और करवाता नहीं। इस दिन ज्ञान-ध्यान से आत्मा को पुष्ट करना मुख्य लक्ष्य होता है। प्राचीन काल के श्रावक अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा को प्रतिपूर्ण पौषध का सम्यक् पालन करते थे। जैसा कि 'भगवती सूत्र' के प्रकरण में कहा है-चाददसट्ठ मुदिट्ठ पुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसहं सम्मं अणु पालेमाणा विहरन्ति श्रावक चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या और पूर्णिमा में प्रतिपूर्ण पौषध का सम्यक् पालन करने विचरते हैं। दिन रात आरंभ-परिग्रह में फंसा रहने वाला गृहस्थ जब पूरे दिन-रात हिंसा, झूठ, परिग्रह से बचकर चल लेता है तो उसे विश्वास हो जाता है कि हिंसा, झूठ, कुशील और क्रोध आदि को छोड़कर जीवन शान्ति से चलाया जा सकता है। पौषधोपवास श्रमण-जीवन की साधना का पूर्व रूप है। श्रावक को अनुकूलतानुसार हर माह में पौषध व्रत की साधना अवश्य करनी चाहिये।

१२. अतिथि संविभाग व्रत :

इस व्रत के द्वारा श्रावक भोजन के समय श्रमण निर्ग्रन्थों का संविभाग करता है। शास्त्र में उसके लिये "असिमफलिहा अवंगुय दुवारे" कहा है, अर्थात् उसके द्वार की आगल उठी रहती है। श्रावक के गृहद्वार खुले रहते हैं। साधु-साध्वी का संयोग मिलने पर निर्दो आहार-पानी, वस्त्र-पात्र और औषध आदि से उनको प्रतिलाभ

[श्र]ावक अपना आवश्यक कर्तव्य समझता है । वह मन, वचन काय की [श]ुद्धि से विधिपूर्वक विशुद्ध आहारादि प्रतिलाभित कर अपने आपको [कृ]तकृत्य मानता है ।

साधु के अभाव में देशविरति श्रावक और सम्यक्दृष्टि भी [स]त्पात्र माना गया है । दान गृहस्थ का दैनिक कर्म है। वह यथायोग्य [गृ]हागत हरएक का सत्कार करता है । 'भगवती सूत्र' विच्छड्डिया [प]उर भत्तपाणे' विशेषण से गृहस्थ के यहां दीन-हीन, भूखे-प्यासे-पशु-[प]क्षी और मानव, को प्रचुर भात-पानी डाला जाना कहा गया है । वह अनुकम्पा दान को पुण्यजनक मानता है ।

उत्कृष्ट श्रावक :

वैदिक परम्परा में जैसे गृहस्थाश्रम के पश्चात् वानप्रस्थ का विधान है । जैन परम्परा में ऐसा ही व्रती जीवन के बाद पडिमाधारी साधक का उल्लेख है । यह श्रावक जीवन की उत्कृष्ट साधना है । पडिमाओं का वर्णन दशाश्रुतस्कंध सूत्र की छट्टी दशा में विस्तार से किया गया है । इस विषय पर लेखकों ने स्वतन्त्र विचार भी किया है, अतः यहां संक्षिप्त परिचय मात्र ही प्रस्तुत किया जाता है ।

अभिग्रह विशेष को पडिमा या प्रतिमा कहते हैं । श्रावक की ११ और साधु के लिये मुख्य १२ पडिमाएं कही गयी हैं । श्रावक की ग्यारह पडिमाएं निम्न प्रकार हैं....

१. **दर्शन पडिमा** : निर्दोष सम्यग्दर्शन का पालन करना ।

२. **व्रत पडिमा** : निरतिचार सम्यक्रूप से श्रावक व्रतों की अराधना करना ।

३. **सामायिक पडिमा** : त्रिकाल सामायिक का अभ्यास करना ।

४. **पौषध पडिमा** : प्रतिमास पर्वतिथि के छः पौषध करना ।

५. **एक रात्रिक पडिमा** : इसमें अस्नान आदि पांच बोलों का पालन करते हुए जघन्य एक दो तीन दिन, उत्कृट पांच मास तक विचरता है ।

६. **ब्रह्मचर्य पडिमा :** पूर्वोक्त नियमों के साथ इसमें दिनरात पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है। इसका उत्कृष्ट काल ६ मास का ।

७. **सचित आहार वर्जन पडिमा :** पूर्व पडिमा के नियमों का पालन करते हुए सचित्ताहार का त्याग रखना। इसका उत्कृष्ट काल ७ मास का है।

८. **आरंभ त्याग पडिमा :** इसमें स्वयं आरंभ करने का त्याग होता है। इसका उत्कृष्ट काल ८ मास है।

९. **आरम्भ त्याग पडिमा :** इसमें पडिमाधारी दूसरे से आरम्भ करवाने का त्याग रखता है। इसका उत्कृष्ट काल नव मास का कहा गया है।

१०. **उद्दिष्ट त्याग पडिमा :** इस पडिमा में अपने उद्देश्य से किये हुए आरंभ का त्याग करता है। शिर पर शिखा रखता या क्षुरमुंडन करता है। इसका उत्कृष्ट काल दस मास का है।

श्रमणभूत पडिया : इसमें श्रमण निर्ग्रन्थों के धर्म का पालन किया जाता है। वह साधु वेष में रखकर अपनी शान्ति के कुल में भिक्षाचर्या लेकर विचरता है। पूछने पर अपना परिचय श्रमणोपासक रूप से 'देता है इसका काल ११ मास का है।

जघन्य हर प्रतिमा का एक दिन, दो दिन या तीन दिन का साधन काल माना गया है। तप आदि का विशेष वर्णन मूल सूत्र में उपलब्ध नहीं होता। पडिमा-साधन से साधु जीव में प्रवेश सरलता से हो सकता है।

इस प्रकार जीवन-सुधार के पश्चात् श्रावक मरण-सुधार का लक्ष्य रखता और उसके लिये अपच्छिम मारणांतिक संलेखना द्वारा जीवन निरपेक्ष होकर पूर्ण समाधि के साथ देह-विसर्जन करता है। यही श्रावक धर्म की साधना का संक्षिप्त परिचय है

श्रावक प्रथम महारम्भी-अल्प परिग्रही होकर अनारंभ-अपरिग्रही जीवन की साधना में अग्रसर होता हुआ आत्म शक्ति का अधिकारी बनता है। श्रमण की तरह उसका लक्ष्य भी आरम्भ-परिग्रह से होकर शुद्ध, बुद्ध, निज स्वरूप को प्राप्त करता है।

जैन दर्शन में वीरभाव की अवधारणा

● डॉ० नरेन्द्र भानावत

★

जैन दर्शन अहिंसा प्रधान दर्शन है। अहिंसा को न मारने तक सीमित करके लोगों ने उसे निष्क्रियता और कायरता समझने की भ्रामक कल्पनाएं की हैं। तथाकथित आलोचकों ने अहिंसा धर्म को पराधीनता के लिए जिम्मेदार भी ठहराया। महात्मा गांधी ने वर्तमान युग में अहिंसा की तेजस्विता को प्रकट कर यह सिद्ध कर दिया है कि अहिंसा वीरों का धर्म है, कायरों का नहीं। इस सन्दर्भ में सोचने पर सचमुच लगता है कि अहिंसा धर्म के मूल में वीरता का भाव रहा हुआ है।

वीरभाव का स्वरूप :

काव्य-शास्त्रियों ने नवरसों की विवेचना करते हुए उसमें वीररस को एक प्रमुख रस माना है। वीर रस का स्थायी भाव उत्तम प्राकृतिक उत्साह कहा गया है। किसी कार्य को सम्पन्न करने हेतु हमारे मानस में एक विशेष प्रकार की सत्वर क्रिया सजग रहती है, वही उत्साह है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उत्साह में प्रयत्न और आनन्द की मिलीजुली वृत्ति को महत्व दिया है। उनके शब्दों में "साहसपूर्ण आनन्द की उमंग का नाम उत्साह है।" मनोविज्ञान की दृष्टि से वीरभाव का एक स्थायी भाव (Sentiment) है जो स्नेह, करूणा, धैर्य, गौरवानुभूति, तप, त्याग, रक्षा, आत्मविश्वास, आक्रोश, प्रभुता आदि संवेगों (Emotion) के सम्मिलित प्रभाव का प्रतिफल है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'वीर' शब्द में मूल धातु 'वृ' है जिसका अर्थ है छांटना, चयन करना, वरण करना, अर्थात् जो वरण करता है, वह वीर है। इसी अर्थ में वर का अर्थ 'दूल्हा' होता है क्योंकि वह वधु का वरण करता है, वरण कर लेने पर ही वह वीर बनता है

इसमें श्रेष्ठता का भाव भी अनुस्यूत है। इस दृष्टि से वीरभाव एक आदर्श भाव है। जिसमें श्रेष्ठ समझे जाने वाले मानवीय भावों का समुच्चय रहता है।

वीरभाव और आत्म स्वातन्त्र्य :

वीर भावना के मूल में जिस उत्साह की स्थिति है वह पुरुषार्थ प्रधान है। पुरुषार्थ की प्रधानता व्यक्ति को स्वतन्त्र और आत्म-निर्भर बनाती है। वह अपने सुख-दुःख, हानि-लाभ, जीवन-मरण आदि में किसी दूसरे पर निर्भर नहीं रहता। आत्मकर्तृत्व का यह भाव जैन दर्शन का मूल आधार है :—

अप्पा, कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममितं च, दुपट्ठिअ सुप्पट्ठिओ ॥ १

अर्थात आत्मा ही सुख-दुख करने वाली तथा उनका नाश करने वाली है। सत् प्रवृत्ति में लगी हुई आत्मा ही मित्र रूप है जबकि दुष्प्रवृत्ति में लगी हुई आत्मा ही शत्रु रूप है।

इस वीर भावना का आत्म स्वातन्त्र्य से गहरा सम्बन्ध है। जैन मान्यता के अनुसार जीव अथवा आत्मा स्वतन्त्र अस्तित्व वाला द्रव्य है। अपने अस्तित्व के लिए न तो यह किसी दूसरे द्रव्य पर आश्रित है और न इस पर आश्रित कोई अन्य द्रव्य है। इस दृष्टि से जीव को अपना स्वामी स्वय कहा गया है। उसकी स्वाधीनता और पराधीनता उसके स्वयं के कर्मों के अधीन है। रागद्वेष के कारण जब उसकी आत्मिक-शक्तियां आवृत्त हो जाती हैं तब पह पराधीन हो जाती है। अपने सम्यक्ज्ञान-सम्यक् दर्शन, सम्यक्चारित्र और तप द्वारा जब वह ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्मों का नाश कर देता है तब उसकी आत्मशक्तियां पूर्ण रूप से विकसित हो जाती हैं और वह जीवन मुक्त अर्थात् अरिहन्त बन जाता है। अपनी शक्तियों को प्रस्फुटित करने में किसी की कृपा या दया कारण-भूत नहीं बनती। स्वयं उसका पुरुषार्थ या वीरत्व ही सहायक वनता

१. उत्तराध्ययन २०/३७

है। अपने वीरत्व और पुरुषार्थ के बल पर साधक अपने कर्म-फल में परिवर्तन ला सकता है। कर्म-परिवर्तन के निम्नलिखित चार सिद्धान्त इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण हैं :—

१. उदीरणा— नियत अवधि से पहले कर्म का उदय में आना।

२. उद्वर्तन —कर्म की अवधि और फल देने की शक्ति में अभिवृद्धि होना।

३. अपवर्तन—कर्म की अवधि और फल देने की शक्ति में कमी होना।

४. संक्रमण— एक कर्म प्रकृति का दूसरी कर्म प्रकृति में संक्रमण होना।

उक्त सिद्धान्त के आधार पर साधक अपने पुरुषार्थ के बल से बन्धे हुए कर्मों की अवधि को घटा-बढ़ा सकता है और कर्मफल की शक्ति मन्द अथवा तीव्र कर सकता है। यही नहीं, नियत अवधि से पहले कर्म को भोगा जा सकता है और उनकी प्रकृति को बदला जा सकता है।

वीरता के प्रकार:

वीर भावना का स्वातन्त्र्य भाव से गहरा सम्बन्ध है। वीर अपने पर किसी का नियन्त्रण और शासन नहीं चाहता। मानव सभ्यता का इतिहास स्वतन्त्र भावना की रक्षा के लिए लड़े जाने वाले युद्धों का इतिहास है। इन युद्धों के मूल में साम्राज्य-विस्तार, सत्ता-विस्तार, यशोलिप्सा, और लौकिक समृद्धि की प्राप्ति ही मुख्य कारण रहे हैं। इन बाहरी भौतिक पदार्थों और राज्यों पर विजय प्राप्त करने वाले वीरों के लिए ही कहा गया है–'वीर भोग्या वसुन्धरा।'

ये वीर शारीरिक और साम्पत्तिक बल में अद्वितीय होते हैं। जैन मान्यता के अनुसार चक्रवती और वासुदेव इस क्षेत्र में आदर्श वीर माने गये हैं। चक्रवती चौदह रत्नों के धारक और छह खण्ड पृथ्वी के स्वामी होते हैं। वासुदेव भरत क्षेत्र के तीन खण्डों और सात रत्नों के स्वामी होते हैं। इनका अतिशय बतलाते हुए कहा गया है कि वासुदेव अतुल बली होता है। कुए के तट पर बैठे हुए वासुदेव को जंजीर से बांध कर हाथी, घोड़े, रथ और पदाति रूप चतुरंगिणी सेना सहित सोलह हजार राजा भी खींचने लगें तो वे उसे नहीं खींच सकते। किन्तु उसी जजीर को बायें हाथ से पकड़कर वासुदेव अपनी तरफ बड़ी आसानी से खींच सकता है। वासुदेव का जो बल बतलाया गया है उससे दुगुना बल चक्रवर्ती में होता है। तीर्थंकर चक्रवर्ती से भी अधिक बलशाली होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वीरता के दो प्रकार हैं—एक बहिर्मुखी वीरता और दूसरी अन्तर्मुखी वीरता। बहिर्मुखी वीरता की अपनी सीमा है। जैन दर्शन में उसके कीतिमान माने गये हैं। चक्रवर्ती जो भरत क्षेत्र के छ: खण्डों पर विजय प्राप्त करते हैं। लौकिक महाकाव्यों—रामायण, महाभारत, पृथ्वीराज रासो आदि में बहिर्मुखी वीरों के अतिरंजनापूर्ण यशोगान भरे पड़े हैं। जैन साहित्य में भी ऐसे वीरों का उल्लेख और वर्णन आता है पर उनकी यह वीरता जीवन का ध्येय या आदर्श नहीं मानी गई है। जैन इतिहास में ऐसे सैंकड़ों वीर राजा हो गये हैं पर वे वन्दनीय, पुजनीय नहीं हैं। वे वन्दनीय पूजनीय तब बनते हैं जब उनकी बहिर्मुखी वीरता अन्तर्मुखी बनती है। इन अन्तर्मुखी वीरों में तीर्थंकर, केवली, श्रमण, श्रमणिया आदि आते हैं। बहिर्मुखी वीरता के अन्तर्मुखी वीरता में रूपान्तरित होने का आदर्श उदाहरण भरत-बाहुबली का है। भरत चक्रवर्ती बाहुबली पर विजय प्राप्त करने के लिए विराट् सेना लेकर कूच करते हैं। दोनों सेनाओं में परस्पर युद्ध होता है। अन्ततः भयंकर जन-सहार से बचने के लिए दोनों भाई मिलकर निर्णायक द्वन्द्व-युद्ध करने के लिए सहमत होते हैं। दोनों में दृष्टि युद्ध, वाक् युद्ध, बाहु-युद्ध होता है और इन सब में भरत पराजित हो जाते हैं।

भरत सोचते हैं क्या बाहुबली चक्रवर्ती है जिससे कि मैं कमजोर पड़ रहा हूं ? इस विचार के साथ ही वे आवेश में आकर बाहुबली के सिरच्छेदन के लिए चक्ररतन से उस पर वार करते हैं। बाहुबली प्रतिक्रिया स्वरूप क्रुद्ध हो चक्र को पकड़ने का प्रयत्न करते हुए मुष्टि उठाकर सोचते हैं—मुझे धर्म छोड़कर भ्रातृवध का दुष्कर्म नहीं करना चाहिये। ऋषभ की सन्तानों की परम्परा हिंसा की नहीं, अपितु अहिंसा की है। प्रेम ही मेरी कुल परम्परा है। किन्तु यह उठा हुआ हाथ खाली कैसे जाये ? उन्होंने विवेक से काम लिया, अपने उठे हुए हाथ को अपने ही सिर पर दे मारा और बालों का लुंचन करके वे श्रमण बन गये। उन्होंने ऋषभदेव के चरणों में वहीं से भावपूर्वक नमन किया, और कृत अपराध के लिए क्षमा प्रार्थना की और उग्र तपस्या कर अहं का विसर्जन कर, मुक्ति रूपी वधु का वरण किया।

भगवान ऋषभ, अरिष्टनेमी, महावीर आदि अन्तर्मुखी वीरता के सर्वोपरि आदर्श हैं। भगवान महावीर के समय में वर्ण व्यवस्था विकृत हो गई थी। ब्राह्मणों और क्षत्रियों का आदर्श अत्यन्त संकीर्ण हो गया था। ब्राह्मण यज्ञ के नाम पर पशु-बलि को महत्व दे रहे थे तो क्षत्रिय देश-रक्षा के नाम पर युद्धजनित हिंसा सौर सत्ता लिप्सा को बढ़ावा दे रहे थे। महावीर स्वयं क्षत्रिय कुल में पैदा हुए थे। उन्होंने क्षत्रियत्व के मूल आदर्श रक्षा-भाव को पहचाना और विचार किया कि रक्षा के नाम पर दूसरों की कितनी हिंसा हो रही है, पीड़ा मुक्ति के नाम पर दूसरों को कितनी पीड़ा दी जा रही है। सच्चा क्षत्रियत्व दूसरे को जीतने में नहीं, स्वयं अपने को जीतने में है। पर-नियन्त्रण नहीं स्वनियन्त्रण ही सच्ची विजय है। उन्होंने सम्पूर्ण राज्य-वैभव और शासनसत्ता का परित्याग कर आत्म-विजय के लिए प्रयाण किया। वे सन्यस्त होकर कठोर ध्यान-साधना और उग्र तपस्या में लीन हो गये। साढ़े बारह वर्षों तक वे आन्तरिक विकारों शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते रहे। अन्ततः वे आत्मविजयी बने और अपने महावीर नाम को सार्थक किया। सच्चे क्षत्रियत्व और सच्चे वीर को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा—"एस वीरे प्रससिए, जे बद्धे पडिमोयए।" अर्थात् वह वीर प्रशसनीय है जो

स्वयं बन्धनमुक्त तो है ही, दूसरों को भी बन्धन मुक्त करता है। वीर वह है, जो स्वयं तो पूर्णत स्वतन्त्र है ही, दूसरों को भी स्वतन्त्र करता है। वीर वह है जो दूसरों को भयभीत नहीं करता अपनी सत्ता से, बल्कि उनको सत्ता के भय से ही सदा के लिए मुक्त कर देता है, चाहे वह सत्ता किसी की भी हो, कैसी भी हो।

वीर का व्यवहार और मनःस्थिति :

वीरता के स्वरूप पर ही वीर का व्यवहार और उसकी मनःस्थिति निर्भर है। बहिर्मुखी वीर की वृत्ति आक्रामक और दूसरों को परास्त कर अपने अधीन बनाने की रहती है। दूसरों पर प्रभुत्व कायम करने और लौकिक समृद्धि प्राप्त करने की इच्छा का कोई अन्त नहीं। ज्यों-ज्यों इस ओर इन्द्रियां और मन प्रवृत्त होते हैं त्यों-त्यों इनकी लालसा बढ़ती जाती है, हिंसा प्रतिहिंसा में बदलती है क्रोध बैर का रूप धारण करता है और युद्ध पर युद्ध होते चलते हैं। युद्ध और सत्ता में विश्वास करने वाला वीर प्रतिक्रियाशील होता है, क्रूर और भयंकर होता है। दूसरों को दुःख, पीड़ा, और यन्त्रणा देने में उसे आनन्द आता है। बाहरी साधनों—सेना, अस्त्र-शस्त्र, राजदरबार, राजकोष आदि को बढ़ाने में वह अपनी शौर्यवृत्ति का प्रदर्शन करता है। इसकी वीरता का मापदण्ड रहता है दूसरों को मारना न कि बचाना, दूसरों को गुलाम बनाना, न कि गुलामी से मुक्त करना, दूसरों को दबाना, न कि उबारना। ऐसा वीर आवेश-शील होने के कारण अधीर और व्याकुल होता है। वह अपने पर किसी क्रिया के प्रभाव को झेल नहीं पाता और भीतर ही भीतर संतप्त और त्रस्त बना रहता है। मनोविज्ञान की दृष्टि से ऐसा वीर सचमुच कायर होता है, कातर होता है, क्रोध, मान, माया और लोभ की आग में निरन्तर दग्ध बना रहता है। बाहरी वैभव और विलास में जीवित रहते हुए भी आन्तरिक चेतना और सवेदना की दृष्टि से वह मृतप्राय होता है। उसके चित्त के संस्कार कुन्ठित और संवेदना रहित बन जाते हैं।

जैन दर्शन में बहिर्मुखी वीर भाव को आत्मा का

न मानकर मन का विकार और विभाव माना जाता है। अन्तर्मुखी वीर ही उसकी दृष्टि में सच्चा वीर है। यह वीर वाहरी उत्तेजनाओं के प्रति प्रतिक्रियाशील नहीं होता। विपम परिस्थितियों के वीच भी वह प्रसन्नचित्त वना रहता है। वह संकटों का सामना दूसरों को दबाकर नहीं करता। उसकी दृष्टि में सुख-दुःख, सम्पत्ति-विपत्ति का कारण कहीं वाहर नहीं, उसके भीतर है। वह शरीर से सम्वन्धित उपसर्गों व परिषहों को समभाव पूर्वक सहन करता है। उसके मन में किसी के प्रति घृणा, द्वेष और प्रतिहिंसा का भाव नहीं होता। वह दूसरों का दमन करने के वजाय आत्म-दमन करने लगता है। यह आत्मदमन और आत्मसंयम ही सच्चा वीरत्व है।

भगवान् महावीर ने कहा है :—

> अप्पाणमेव जुज्झहि, किं ते जुज्झेण वज्जओ।
> अप्पाणमेवं अप्पाण, जइता सुहमेइए ॥[1]

आत्मा के साथ ही युद्ध कर, वाहरी दुश्मनों के साथ युद्ध करने से तुझे क्या लाभ? आत्मा को आत्मा के द्वारा ही जीतकर मनुष्य सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है।

जिन वीरों ने मानवीय रक्त बहाकर विजय यात्रा आरम्भ की, अन्त में उन्हें मिला क्या? सिकन्दर जैसे महान् योद्धा भी खाली हाथ चले गये। वस्तुतः कोई किसी का स्वामी या नाथ नहीं है। 'उत्तराध्ययन सूत्र' के 'महानिर्ग्रन्थीय' नामक २०वें अध्ययन में अनाथी मुनि और राजा श्रेणिक के बीच हुए वार्तालाप में अनाथता का प्रेरक वर्णन किया गया है। राजा श्रेणिक मुनि से कहते हैं—मेरे पास हाथी, घोड़े, मनुष्य, नगर, अन्तःपुर तथा पर्याप्त द्रव्यादि समृद्धि है। सव प्रकार के कामभोगों को मैं भोगता हूं और सव पर मेरी आज्ञा चलती है, फिर मैं अनाथ कैसे? इस पर मुनि उत्तर देते हैं—सब प्रकार की वाह्य भौतिक सामग्री, मनुष्य को रोगों और दुखों से नहीं वचा सकती। क्षमावान और इन्द्रियनिग्रही, व्यक्ति ही दुखों और रोगों से

१. उत्तराध्ययन ९ ३५

मुक्त हो सकता है । आत्मजयी व्यक्ति ही अपना और दूसरों का नाथ है—

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जय जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ।।[1]

जो पुरुष दुर्जय संग्राम में दस लाख सुभटों पर विजय प्राप्त करता है और एक महात्मा अपनी आत्मा को जीतता है । इन दोनों में उस महात्मा की श्रेष्ठ विजय है ।

आदर्श वीरता का उदाहरण क्षमावीर है । क्षमा पृथ्वी को भी कहते हैं । जिस प्रकार पृथ्वी बाहरी हलचल और भीतरी उद्वेग को समभाव पूर्वक सहन करता है, उसी प्रकार सच्चावीर शरीर और आत्मा को अलग:अलग समझता हुआ सब प्रकार के दुखों और कष्टों को समभाव पूर्वक सहन करता है । सच तो यह है कि उसकी चेतना का स्तर इतना अधिक उन्नत हो जाता है कि उसके लिए वस्तु, व्यक्ति और घटना का प्रत्यक्षीकरण ही बदल जाता है । तब उसे दुःख दुःख नहीं लगता, सुख-सुख नहीं लगता । वह सुख-दुःख से परे अक्षय अव्याबाध, अनन्त-आनन्द में रमण करने लगता है । वह क्रोध को क्षमा से, मान को मृदुता से, माया को सरलता से और लोभ को सन्तोष से जीत लेता है :—

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणौ ।
मायं चज्ज भावेण, लोभं संतोसओ जिणौ ।[2]

यह कषाय-विजय ही श्रेष्ठ विजय है । क्षमावीर निर्भीक और अहिंसक होता है । प्रतिशोध लेने की क्षमता होते हुए भी वह किसी से प्रतिशोध नहीं लेता । क्षमाधारण करने से ही अहिंसा वीरों का धर्म बनती है । 'उत्तराध्ययन' सूत्र के २९वें 'सम्यक्त्व पराक्रम' अध्ययन में गौतम स्वामी भगवान् महावीर से पूछते हैं—खमावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणायई ?

१. उत्तराध्ययन, ९/३४
२. दशवैकालिक, ८/३९

हे भगवन् ! अपने अपराध की क्षमा मांगने से जीव को किन गुणों की प्राप्ति होती है ?

उत्तर में भगवान् फरमाते हैं–

खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ, पल्हायण भावमुवगए य सव्वश्राणमूय जीव सत्तेसु मित्तीमावमुप्पाएइ, मित्ती भावमुवगए पावि जीवे भावविसोहिं काऊस्ण णिब्भए भवई ।।१७।।

अर्थात् क्षमा मांगने से चित्त में आह्लाद भाव का संचार होता है, अर्थात् मन प्रसन्न होता है । प्रसन्नचित्त वाला जीव सब प्राणी, भूत, जीव और तत्वों के साथ मैत्रीभाव स्थापित करता है, समस्त प्राणियों के साथ मैत्रीभाव को प्राप्त हुआ जीव अपने भावों को विशुद्ध बनाकर निर्भय हो जाता है ।

निर्भीकता का यह भाव वीरता की कसौटी है । बाहरी वीरता में शत्रु से हमेशा भय बना रहता है । उसके प्रति शासक और शासित, जीत और हार, स्वामी और सेवक का भाव रहने से मन में संकल्प-विकल्प उठते रहते हैं । इस बात का भय और आशंका बराबर बनी रहती है कि कब शासित और सेवक विद्रोह कर बैठें । जब तक यह भय बना रहता है तब तक मन बैचेनी और व्याकुलता से घिरा रहता है । पर सच्चा वीर निराकुल और निर्वैर होता है । उसे न किसी पर विजय प्राप्त करना शेष रहता है और न उस पर कोई विजय प्राप्त कर सकता है । वह सदा समताभाव–वीतरागभाव में विचरण करता है । उसे अपनी वीरता को प्रकट करने के लिए किन्हीं बाहरी साधनों का आश्रय नहीं लेना पड़ता । अपने तप और संयम द्वारा ही वीरत्व का वरण करता है ।

जैन धर्म वीरों का धर्म :

जैन धर्म के लिए आगम ग्रन्थों में जो नाम आये हैं, उनमें

मुख्य हैं–जिन धर्म अर्हत् धर्म और श्रमण धर्म । ये सभी नाम वीर भावना के परिचायक हैं 'जिन' वह है जिसने अपने आन्तरिक विकारों पर विजय प्राप्त कर ली है । 'जिन' के अनुयायी जैन कहलाते हैं । 'अर्हत' धर्म पूर्ण योग्यता को प्राप्त करने का धर्म है । अपनी योग्यता को प्रकटाने के लिए आत्मा पर लगे हुए कर्म पुद्गलों को नष्ट करना पड़ता है । ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना द्वारा । 'निर्ग्रन्थ' धर्म वह धर्म है जिसमें कषाय भावों से बन्धी गांठों को खोलने-नष्ट करने के लिए आत्मा के क्षमा. मार्दव, आर्जव, त्याग, सयम, ब्रह्मचर्य जैसे गुणों को जाग्रत करना होता है । 'श्रमण धर्म' वह धर्म है जिसमें अपने ही पुरुषार्थ को जाग्रत कर विषम भावों को नष्ट कर, चित्त की विकृतियों को उपशांत कर समताभाव में आना होता है ।

स्पष्ट कि इन सभी साधनाओं की प्रक्रिया में साधक का आन्तरिक पराक्रम ही मुख्य आधार है । आत्मा से परे किसी अन्य परोक्ष शक्ति की कृपा पर यह विजय आत्मजय आधारित नहीं है । भगवान् महावीर की महावीरता बाहरी युद्धों की विजय पर नहीं, अपने आन्तरिक विकारों की विजय पर ही निर्भर है । अतः यह वीरता युद्धवीर की वीरता नहीं, क्षमावीर की वीरता है ।

सी २३५ ए तिलक नगर
जयपुर ३०२००४

सन्देश

● कल्पना आंचलिया

संत राबिया बसरी ने एक सूफी सन्त के पास तीन चीजें भेजीं—मोम, सूई और बाल । साथ में यह सन्देश भी: 'मोम की तरह दूसरों को रोशनी दो । 'सूई खुद नंगी रहती है, मगर दूसरों को कपड़े सीकर पहनाती है । उसी तरह तुम भी जनता की निःस्वार्थ सेवा करो ।

'तब तुम बाल की तरह लचीले, हलीम और बेखतरा हो जाओगे ।'

धर्म के प्रति अनास्था :
कारण और उसे दूर करने के उपाय

● श्री सुन्दरलाल बी. मल्हारा

★

अनास्था व्यापक है :

वैसे तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनास्था का बोलबाला है। फिर भी धर्म के क्षेत्र में आज जो अनास्था दिखाई दे रही है, वह बहुत ही ज्यादा गहरी है। व्यापार, व्यवसाय, सर्विस अथवा उत्पादन क्षेत्र में भी यह सत्य है कि आस्था कम दिखाई देती है। फिर भी निश्चित रूप से इन क्षेत्रों में कुछ अंशों में आस्था दिखाई देती है। इसके कुछ कारण हैं। इन सभी का मनुष्य की रोजी, रोटी तथा उसके जीवन के लिए आवश्यक अन्य सुविधाओं के साथ सीधा सम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में मनुष्य का पूरा व्यवहारिक जीवन इन्हीं पर टिका हुआ है। अतः कुछ न कुछ मात्रा में मनुष्य को इन क्षेत्रों में आस्था दिखानी ही पड़ती है अन्यथा उस पर भूखे मरने की नौबत आ पड़ेगी।

धार्मिक अनास्था गहरी है :

जब हम धर्म के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि इसका सम्बन्ध हमारी आत्मा से है। धर्म आत्मा के विकास का साधन है। पर पारम्परिक रूप में धर्म का सम्बन्ध पर लोक से जोड़ दिया गया है अर्थात् इस जन्म में अगर हमने पुण्य किया तो उसका फल हमें अगले जन्म में मिलेगा। मनुष्य ने न तो अपनी आत्मा का कभी साक्षात्कार किया है और न ही परलोक को देखा है। ऐसी अवस्था में यदि वह इनसे स्वयम् को अलग कर ले तो कोई आश्चर्य नहीं। यही कारण है कि आज हमें चारों ओर धर्म के प्रति बहुत ज्यादा अनास्था दिखाई दे रही है। यह अनास्था बड़ी गहरी है।

यह अनास्था क्यों ?

धर्म के प्रति इस गहरी अनास्था पर विचार करना जरूरी है। क्योंकि इस अनास्था के गम्भीर मूल्य मनुष्य को चुकाने पड़े हैं। ऊपर-ऊपर से मनुष्य भले ही हमें कुछ संतुष्ट, कुछ सुखी दिखाई दे पर वह अन्दर ही अन्दर से खोखला हो गया है। उसकी जड़ें सूख गई हैं। यही कारण है कि उसके जीवन में कितनी निराशा, कितना दुख और कितनी परेशानियां हैं। धर्म से मुंह मोड़कर मनुष्य ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी चलाई है। उसने अपने ही हाथों अपने विनाश के बीज बो दिये हैं। जिसके कारण विषवृक्ष चारों ओर उभर रहे हैं और मनुष्य के जीवन को विषाक्त किये जा रहे हैं। इसलिए मनुष्य को यदि एक सुन्दर जीवन चाहिये या उसे समग्र जीवन की आवश्यकता महसूस हो तो उसे फिर से धर्म को अपनाना होगा।

धर्म का फूल खिलना सम्भव है :

धर्म के प्रति जो अनास्था हमें चारों ओर दिखाई दे रही है उसके कुछ ठोस कारण हैं। यदि इन कारणों को गहराई से समझा जाए और उन्हें दूर किया जाए तो मनुष्य फिर धर्म से सहज जुड़ सकता है। धर्म तो मनुष्य का सहज स्वभाव है। वह आरोपित नहीं है। वह तो मनुष्य के स्वभाव में ही समाया हुआ है। इसलिए अगर हमने उन कारणों को दूर कर दिया, जो आस्था को मटयामेट किये जा रहे हैं तो निश्चित ही धर्म का फूल मनुष्य के जीवन में खिल सकता है। अब हम उन कारणों पर विचार करें जो इस अनास्था के जिम्मेदार हैं।

भौतिकतावादी विचारधारा :

सबसे पहला कारण यह है कि आज का मनुष्य ज्यादा से ज्यादा भौतिकता से सम्बन्धित हो गया है। इसी जीवन को उसने सब कुछ मान लिया है। इसलिए इस जीवन को बनाये रखने और

उसे अधिकाधिक सुविधामय बनाने में मनुष्य लगा हुआ है। यदि मनुष्य यह समझ सके कि आज वह जो कुछ है वह उसके पूर्व कर्मों का फल है और आज के उसके कार्यों में उसका भविष्य छिपा है और यह समझना बहुत कठिन भी नहीं है। इसीलिए यह जरूरी है कि मनुष्य को इस कार्य कारण परम्परा के विज्ञान से सही ढंग से परिचित कराया जाय। यदि वह अपने भूत तथा भविष्य के समय से जुड़ सका तो उसके जीवन में एक धार्मिक क्रान्ति हो सकती है और यही क्रान्ति उसके जीवन में धर्म के प्रति आस्था पैदा कर सकती है।

विज्ञान का परिणाम :

विज्ञान का ज्यों-ज्यों विकास होता जा रहा है त्यों-त्यों मनुष्य के मानसिक जगत् में एक महान क्रान्ति घटित हो रही है। इस क्रान्ति का परिणाम यह हुआ कि मनुष्य प्रत्येक कार्य का कारण जानना चाहता है। वह प्रत्येक परम्परा और प्रत्येक रुढ़ि के हेतु को ढूंढना चाहता है। वह प्रत्येक बात को विज्ञान की कसौटी पर कसना चाहता है। जो बात विज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है उसे वह स्वीकार करता है और दूसरी बातों को अस्वीकार। यह तो हमें मानना होगा कि शास्त्रों में वर्णित बहुत सी बातें विज्ञान की कसौटी पर खरी नहीं उतरती है। इसलिए आज का युवक यदि उन बातों को अस्वीकार कर दे तो आश्चर्य नहीं है। अतःयह जरूरी हो गया है कि वैज्ञानिक दृष्टि से इन शास्त्रों का अध्ययन किया जाए तथा शास्त्रीय सिद्धान्तों को वैज्ञानिक आधार दिये जाएं।

यह निश्चित है कि महावीर जैसे केवल ज्ञानी जो कुछ कहेंगे वह सच होगा ही, वैज्ञानिक होगा ही परन्तु काल के प्रवाह में कई प्रक्षिप्त अश भी यदि शास्त्रों में जुड़ जायें तो कोई आश्चर्य नहीं।

सत्य का सतत अनुसन्धान जरूरी है :

यह सत्य है कि जैन धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए

काफी प्रयत्न किये जा रहे हैं । हजारों संत, विद्वान इस कार्य में लगे हुए हैं । कई संस्थाएं इस प्रयत्न में हैं कि यह वीर की वाणी सही-सही रूप में सर्वसाधारण तक पहुंचे । फिर भी यह निश्चित कहा जा सकता है कि जरूर इस प्रचार-व्यवस्था में बहुत कुछ कमियां हैं अन्यथा इतने प्रचार के माध्यमों के होते हुए भी आज धर्म की व्यापक स्थिति नहीं बनी है । ऐसा लगता है कि पूरे जैन जगत् में स्वतन्त्र चिन्तन की प्रक्रिया का ह्रास हो रहा है । उपदेशक शास्त्रों के वचनों को विना स्वयम् समझे और हृदयगम किये दूसरों को समझाते चले जा रहे हैं । श्रोता भी जो कुछ कहा जा रहा है उसे मात्र कर्तव्य समझकर चुपचाप सुनते चले जा रहे हैं । चिंतन का श्रम करने के लिए कोई तैयार नहीं । सत्य कोई रेडिमेड वस्तु नहीं है कि एक बार कहा गया कि हमेशा के लिए बन गया । उसे बार-बार खोजना पड़ता है । उसका पुन: पुन: अनुसन्धान करना पड़ता है । बार-बार खोजा गया सत्य ही सत्य होता है । 'रेडिमेड' स्वीकार किया गया सत्य कालान्तर में असत्य सिद्ध हो सकता है । सत्य केवल वही नहीं है जो शास्त्रों में संकलित है । हां, यदि हम अपने अनुभवों और प्रयोगों के आधार पर उसे सत्य सिद्ध कर दें तो वह हमारे लिए सत्य हो सकता है । अत: सतत चिंतन और अनुसन्धान की प्रक्रिया जरूरी है।

धर्म और हमारा दैनिक जीवन :

धार्मिक अनास्था का एक बहुत बड़ा कारण यह है कि धर्म हमारे व्यवहारिक जीवन से अलग हो गया है । हमारा रोजाना का जीवन अत्यन्त महत्वपूर्ण है । क्योंकि यही हमारा वास्तविक प्रत्यक्ष जीवन है । लेकिन ऐसा लगता है कि धर्म का इस जीवन से कोई सरोकार नहीं रहा । वह तो स्वर्ग-नरक, लोकपरलोक और पापपुण्य से ही पूर्णतया सम्बन्धित है ।ऐसी अवस्था में यदि व्यक्ति की आस्था कमपड़ जाए तो आश्चर्य नहीं । व्यक्ति के लिए तो उसका जीता-जागता स्थूल जीवन ही महत्वपूर्ण है । धर्म को चाहिये कि मनुष्य के इस जीते-जागते जीवन को सुन्दर और सुसंस्कृत वनाए । जब हमारा

जीवन सुन्दर होगा तो हम धार्मिक भी हो सकेंगे और हमारी आस्था भी गहरी हुए विना न रहेगी। इसलिए यह वहुत जरूरी हो गया है कि धर्म हमारे दैनिक जीवन को सुन्दर वनाने में सहयोगी वने। यदि धर्म यह कर पाया तो निश्चित यह मनुस्य के लिए परम श्रद्धा का विषय वन सकेगा।

धर्म का प्रयोगात्मक पहल :

धर्म के दो पहल हैं। एक सैद्धान्तिक, दूसरा प्रयोगात्मक दोनों ही पहलुओं का समान महत्व है। धर्म में यदि सिद्धान्तों की भरमार रही तो धीरे-धीरे वह कालान्तर में मृत हो जाता है। धर्म के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है। अधिकांशतया हम सव सिद्धान्तों के पटन-पाठन में उपदेश देने में लग गये और यह उपदेश का दौर दिन-व-वढ़ता जा रहा है। उपदेशकों की वाढ़ सी आ गई है। कोई उपदेश देना अपना कर्त्तव्य समझता है तो कोई उपदेश सुनने में जीवन की सार्थकता समझते हैं। सैद्धान्तिक पहलू के साथ-साथ प्रयोगात्मक पहलू पर भी वल रहे तव विसंगति पैदा नहीं होती। पर आज प्रयोगात्मक पहलू पीछे छूट गया है। होना तो यह चाहिए था कि धर्म के सिद्धान्तों का हम अपने जीवन में एक वैज्ञानिक की तरह प्रयोग करते। प्रयोग के विना धर्म लंगड़ा है। यह अत्यन्त आवश्यक है कि धर्म के प्रयोगात्मक पहलू का वैज्ञानिक दृष्टि से अनुसन्धान किया जाए। हमारे देश में कुछ धार्मिक पुरुष इस प्रयोग में लगे हुए हैं। यह आनन्द की बात है।

आवश्यकता है प्रयोग की :

धर्म के वैज्ञानिक पहलू के विकास के ही उद्देश्य से हमने कई धार्मिक अनुष्ठान पुराने समय से शुरु किये जो आज केवल रूढ़ि मात्र वनकर रह गये हैं। जैसे प्रतिक्रमण, सामायिक, व्रत, उपवास आदि। मूलत: ये सव धर्म के प्रयोगात्मक पहलू के अलग–अलग रूप हैं। परन्तु हमने इनके मूल को विसार दिया अत: यह सव अपनी गरिमा

से गिर पड़े। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि या तो इन अनुष्ठानों को पुनर्जीवित किया जाये या ध्यान अथवा कायोत्सर्ग के नये टेकनिक्स का अनुसन्धान किया जाए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो यह धार्मिक अनास्था और भी बढ़ेगी। प्रयोगों से हमें तत्काल सत्य का अनुभव होता है और यह अनुभव हममें आस्था पैदा करता है। वृक्ष की परीक्षा उसके फलों से होती है। किसी धर्म की परीक्षा उसके मानने वालों से होती है। भगवान् महावीर ने अपरिग्रह का उपदेश दिया था जो अपने आप में अत्यन्त कीमती है। परन्तु जैन मतावलम्बी परिग्रह के विस्तार में लग गये। महावीर ने समता का सन्देश दिया और लोग मनुष्य की कीमत उसके धन से करने लगे। हमारे सारे व्यवहार धन-सम्पत्ति की सीमाओं में होने लगे। हम धन और सम्पत्ति के लोभ में फंस गये और साथ-साथ महावीर और जैन धर्म की दुहाई भी देने लगे। हमारे व्यवहार और धर्म में जमीन-आसमान का फर्क पड़ गया। ऐसी अवस्था में युवकों की धर्म के प्रति आस्था कम होनी ही है। यदि सही अर्थों में हम धार्मिक हों तो आस्था कम होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

यांत्रिकता व अनास्था :

आज यांत्रिकता का बोलबाला है। यन्त्रों से पूरा विश्व संचालित हो रहा है। और इस यन्त्र युग में मनुष्य भी एक यन्त्र बन कर रह गया है। यह आज का यांत्रिक मनुष्य यन्त्र की तरह ही भाग-दौड़ में लगा हुआ है। वह अत्यधिक व्यस्त है। अपनी अनेकों समस्याओं से परेशान है। वह इस छोटे से जीवन में बहुत कुछ कर लेना चाहता है। उसकी महत्त्वाकांक्षा अनन्त है। धर्म के लिए समय निकालना उसके लिए कठिन है। ऐसी अवस्था में वह कैसे अपनी आस्था बनाये रखे? यह एक बड़ा सवाल है। इसके लिए, तो एक महान् वैचारिक क्रान्ति की आवश्यकता है। यदि मनुष्य ने अपनी इस यांत्रिकता की जबरदस्त गुलामी को गहराई से महसूस किया और सृजन के आनन्द को समझने की कोशिश की तो वह यांत्रिकता की काराओं से मुक्त हो सकता है। यांत्रिकता धर्म की प्रबल शत्रु है।

धर्म एक महान् सृजन है ।

मनुष्य को मनुष्य बनाने का कार्य एक मात्र धर्म कर सकता है । एक ऐसा धर्म जो विज्ञान पर आधारित हो, एक ऐसा धर्म जो मनुष्य के दैनिक जीवन से सम्पृक्त हो-एक ऐसा धर्म जो प्रयोग को प्रधानता दे-एक ऐसा धर्म जो हमारी दैनिक समस्याओं के प्रति हमें सजग करे, जो हममें प्रेम और करुणा के बीजों को अंकुरित करे, जो हममें सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के प्रति आदर पैदा करे । केवल ऐसा ही धर्म हमें सही अर्थों में आनन्दित कर सकता है । हमारे इस लोक और परलोक को सुन्दर बना सकता है । धर्म का ऐसा रूप भला किसे पसन्द न होगा ? किसकी आस्था ऐसे धर्म के प्रति बलवती न होगी ? कौन ऐसे धर्म को अपनी आत्मा से न चाहेगा ? जिस प्रकार स्वभाव हमारा अविभाज्य अंग है, उसी प्रकार धर्म भी तो हमारा एक मात्र सहारा है, एक मात्र प्रदीप है । उसके प्रकाश में ही हम गति कर सकते हैं । वह हमारी सहज भूख है । जैन धर्म ने वस्तु के स्वभाव को धर्म कहा है । यह एकदम सही है । धर्म मनुष्य को गरिमा प्रदान करता है । धर्म उसकी आत्मा का अलंकार है ।

—६४, जिल्हापेठ, जलगांव-४२५००१

—

सन्त

● श्री रमेश 'मयंक'

जिसके
मन में
हो जाता है
सांसारिक तृष्णाओं का
अन्त
वही है—सन्त ।

—बी. ८, मीरानगर; चित्तौड़गढ़

धर्म : व्यक्ति और समाज के सन्दर्भ में

डॉ० भागचन्द्र जैन

धर्म सार्वजनीन और चिरन्तनशीलता को अपने पवित्र अंक में समाहित किये व्यष्टि और समष्टि के कल्याण में रत रहने वाला एक आध्यात्मिक तत्त्व है। उसकी व्यापकता और असीमितता उसकी प्रकृति को स्पष्ट करती हुई नजर आती है। जीवन और समाज के हर कोने को अपनी मुस्कान से सुवासित कर वह अपने मानवता गुण को उजागर करने वाला एक लैम्पपोस्ट है जिसका अवलम्बन लेकर दर-दर भटकने वाला व्यक्तित्व भी प्रशस्त पथ पा जाता है।

धर्म की गहनता और रहस्यात्मकता ने उसे विविध परिभाषाओं में बांध रखा है। उसकी मीमांसा भी बहुआयामी रही है। विवादग्रस्त भी इसीलिए रहा है और इसीलिए धर्म और सम्प्रदाय खड़े होते रहे हैं। विवादग्रस्तता व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित और स्वार्थपरक बना देती है। संघर्ष के मूल में ऐसे ही तत्त्व काम करते हैं।

धर्म को संक्षेप में दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है- एक व्यक्ति या वस्तुपरक और दूसरा समाजपरक। तीसरा प्रकार यह भी हो सकता है कि जो व्यक्ति परक भी हो और समाजपरक भी। सारी परिभाषाएं इन तीनों परिभाषाओं के आसपास मंडराती रहती हैं। मार्क्सवादी परिभाषा विरोधात्मक स्वर लिए हुए अवश्य है पर समाजपरक ही है।

१. व्यक्ति या वस्तु परक धर्म :

वस्तु या व्यक्ति का धर्म उसके मूल स्वभाव पर अवलम्बित है। धर्म की इस परिभाषा को विस्तार से निम्नलिखित गाथा में [illegible] जा सकता है—

वत्तु सहावो धम्मो, खन्ती पभु हो दसविहो धम्मो ।
जीवाणं रक्खणं धम्मो, रचनायं च धम्मो ॥

—जैन सिद्धान्त बोल संग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ १४

इस गाथा में धर्म के चार स्वरूप दिये हैं– (१) वस्तु के स्वभाव को धर्म कहते हैं, (२) क्षमा आदि दस लक्षण रूप धर्म हैं, (३) जीवों का संरक्षण करना धर्म है, और (४) सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यगचरित्र रूप रत्नत्रय धर्म है। इसी को स्वामी कार्तिकेय ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

धम्मो वत्थु सहाओ, खमादिभावो दसविहो धम्मो ।
रयणनयं च धम्मो, जीवाण रक्खयं धम्मो ॥[1]

'दशवैकालिक' सूत्र में अहिंसा, संयम, और तप को धर्म कह है और इसी को उत्कृष्ट मंगल अर्थात् कल्याणकारी बताया है। आचार्य कुन्दकुन्द ने आगमज्ञान, तत्त्वार्थश्रद्धान और संयम इन ती तत्त्वों को निर्वाण प्राप्ति में कारण माना है।[3] 'दशवैकालिक के कर्त्ता शय्यंभव और कुन्दकुन्द के विचारों में कोई अन्तर नहीं मात्र कथन के प्रकार में अन्तर है। अहिंसा और तप एव आगमज्ञा एवं तत्त्वार्थश्रद्धान एक दूसरे के परिपूरक हैं। जैन धर्म का समूचा-आचार-विचार इन तत्त्वों पर आधारित है। इन तीनों तत्त्वों का सम्यग्ज्ञान और सम्यक् आचरण भी आत्मज्ञान और भेदविज्ञान की प्राप्ति में मूल कारण बनते हैं।

प्रत्येक वस्तु का अपना एक स्वभाव होता है और वह स्व-

१. कत्तिगेयाणवेक्खा गाथा ४७६
२. धम्मा मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा, संजमो, तवो-अध्ययने, गाथा १
३. ण हि आगमेण सिज्झदि, सद्दहणं जदि ण अत्थि अत्थेसु सद्दहमाणे अत्थं असंजदो वा ण णिव्वादि ॥ प्रवचन सार ३. ३७.

भाव सदैव अपरिवर्तनीय होता है । यदि परिवर्तन आता भी है तो वह अस्थिर होता है । जल का स्वभाव शीतल है । पर पदार्थ अग्नि आदि के संयोग से उसमें जो उष्णता आती है, वह यथासमय दूर हो जाती है । मानव का स्वभाव मानवता है । राग द्वेषादि कारणों से वह अभिभूत अवश्य हो जाती है पर तिरोहित नहीं होती । अतः आत्मा अथवा जीव का मूल स्वभाव रागादिक विकार नहीं है । उसका स्वभाव तो समभाव में स्थिर रहना और स्व स्वरूप में रमण करना है । मोह-क्षोभ से विरहित आत्मा का यही परिणाम समत्व भाव कहलाता है ।

चारित्तं खलु धम्मो यो धम्मो जो सो समो ति णिहिहो ।
मोहक्खोहविहीणो परिणामो अप्पणो हि समो ।।[४]

आम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिञ्चन्य, और ब्रह्मचर्य ये देशधर्म जीव किंवा अनन्य के विधेयात्मक तत्त्व हैं, जिनका आचरण कर वह शाश्वत सुख की ओर अपने चरण वढ़ाता है ।

साधना की सफलता के लिए जैन धर्म में तीन कारणों का निर्देश किया है– सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र । इन तीनों तत्वों को 'त्रिरत्न' कहा जाता है । दर्शन का अर्थ श्रद्धा अथवा व्यावहारिक परिभाषा में आत्मानुभूति कह सकते हैं । श्रद्धा और आत्मानुभूति पूर्वक ज्ञान और चारित्र का सम्यग् योग ही मोक्ष रूप साधना की सफलता में मूलभूत कारण है । मात्र ज्ञान अथवा मात्र चारित्र से मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती । इसलिए इन तीनों की समन्वित अवस्था को ही मोक्षमार्ग कहा गया है ।[१] जैन ग्रन्थों में इस विषय पर गहन तत्व चर्चा हुई है ।

जीवों का संरक्षण करना रूप अहिंसा धर्म यद्यपि सामाजिक धर्म

४. प्रवचनसार १. ७.

१. सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग.—तत्वार्थ सूत्र. १. १

की परिधि में आता है पर अहिंसा जब तक संभव नहीं जब तक व्यक्ति करुणार्द्र न हो, हिंसक भावों से मुक्त न हो। प्रमाद और कषाय के वशीभूत होकर व्यक्ति हिंसक बनता है। कषायादिक की तीव्रता के फलस्वरूप उसके आत्मघात रूप द्रव्य प्राणों का भी हनन संभव है। इसके अतिरिक्त दूसरे को मर्मान्तक वेदनादान अथवा परद्रव्यव्यपरोपण भी इन्हीं भावों का कारण है[२]। द्रव्य–भाव हिंसा से मुक्त हो जाने पर स्वभावतः अहिंसा भाव जाग्रत हो जाता है। दूसरे शब्दों में समस्त प्राणियों के प्रति संयम भाव ही अहिंसा है—"अहिंसा निउणं दिट्ठा सव्वभूयेसु संजमो"[३] अहिंसा और संयम की ही पृष्ठभूमि में सुख–प्राप्ति के साधन जुटाये जाने चाहिए।

अहिंसा के एक देश का पालन गृहस्थ वर्ग करता है और सर्व देश का पालन मुनि वर्ग करता है। उसीको जैन शास्त्रीय परिभाषा में क्रमशः अणुव्रत और महाव्रत कहा गया है। सकल चारित्र और विकल चारित्र इसी के पर्यायार्थक शब्द हैं। गृहस्थ वर्ग संकल्पी आरंभी उद्योगी और विरोधी रूप स्थूल हिंसा का त्यागी नहीं रहता जब कि मुनि वर्ग सूक्ष्म और स्थूल, दोनों प्रकार की हिंसा से दूर रहता है।

मन, वचन और काय से संयमी व्यक्ति स्व-पर का रक्षक तथा मानवीय गुणों का आगार होता है। शील संयमादि गुणों से आपूर व्यक्ति ही सत्पुरुष है। जिसका चित्त मलीन पापों से दूषित रहता है वह अहिंसा का पुजारी कभी नहीं हो सकता। जिस प्रकार घिसना, छेदना, तपाना और ताड़ना इन चार उपायों से स्वर्ण की परीक्षा की जाती है, उसी प्रकार श्रुत, शील, तप और दया रूप गुणों के द्वारा धर्म एवं व्यक्ति की परीक्षा की जाती है।

जीवन का सर्वांगीण विकास करना संयम का परम उद्देश्य रहता है। 'सूत्रकृतांग' में इस उद्देश्य को एक रूप के माध्यम से सम-

२. पुरुषार्थ सिद्धचुपाय, ४३
३. दशवैकालिक, ६, ८,

झाने का प्रयत्न किया गया है । वहां[1] यह बताया गया है कि जिस प्रकार कछुआ निर्भय स्थान पर निर्भीक होकर चलता फिरता है किन्तु भय की आशंका होने पर शीघ्र ही अपने अंग–प्रत्यंग प्रच्छन्न कर लेता और भय–विमुक्त हो जाने पर पुनः अंग–प्रत्यंग फैलाकर चलता फिरना प्रांरभ कर देता है, उसी प्रकार संयमी व्यक्ति अपने साधना मार्ग पर बड़ी सतर्कता पूर्वक चलता है । संयम की विराधना का भय उपस्थित हो जाने पर पंचेन्द्रियों व मन को आत्म-ज्ञान–अंतर में ही गोपन कर लेता है ।[2]

धर्म की ये व्याख्याएं आत्मपरक, व्यक्तिपरक और वस्तुपरक हैं । यहां व्यक्ति या वस्तु को केन्द्र में रखकर धर्म के मर्म को समझाया गया है । यही निश्चय धर्म है ।

२. समाज परक धर्मः

समाजपरक धर्म की व्याख्या व्यक्ति परक धर्म की व्याख्या से असंबद्ध नहीं है । यह धर्म अपेक्षाकृत अधिक व्यापक और व्यावहारिक है । मैत्री, प्रमोद, काषाय और माध्यस्थ्य भाव मूलक धर्म को समाजपरक धर्म कहा जा सकता है । सभी सुखी रहें, निरोग रहें, किसी को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो, ऐसा प्रयत्न करें[3] । इसमें साधक कल्याण मित्र बन जाता है ।

विशिष्ट ज्ञानी और तपस्वियों के शम, दम, धैर्य, गांभीर्य आदि गुणों में पक्षपात करना अर्थात् वन्दना, विनय, स्तुति आदि द्वारा आन्तरिक हर्ष व्यक्त करना प्रमोद भावना है ।[4] इस भावना का मूल साधन विनय है । जिस प्रकार मूल के बिना स्कंध, शाखाएं पत्ते, पुष्प, फल आदि नहीं हो सकते । उसी प्रकार विनय के बिना धर्म व

१. भ्रेस पाहुड़ गाथा १४३ की टीका
२. सूत्रकृतांग, १, ८, १६
३. यशस्तिलक चम्पू, उत्तरार्व
४. योगशास्त्र, ४, ११

प्रमोद भावना में स्थैर्य नहीं रह सकता ।[1]

कारुण्य अहिंसा भावना का केन्द्र है । उसके विना अहिंसा जीवित नहीं रह सकती । समस्त प्राणियों पर अनुग्रह करना इसकी मूल भावना है । हैयोपादेय ज्ञान से शून्य दीन पुरुषों पर, विविध सांसारिक दुःखों से पीड़ित पुरुषों पर, स्वयं के जीवन-याचक जीव जन्तुओं पर, अपराधियों पर, अनाथ, वाल, वृद्ध, सेवक आदि पर तथा दुःख पीड़ित प्राणीयों पर प्रतीकात्मक वुद्धि से उनके उद्धार की भावना ही कारुण्य भावना है ।

माध्यस्थ्य भावना के पीछे तटस्थ वुद्धि निहित है । निःशं होकर क्रूरकर्मकारियों पर, देव, धर्म, गुरू के निंदकों पर तथा आत्म प्रशंसकों पर उपेक्षा भाव रखने को माध्यस्थ्य भावना कहा गया है । इसको समभाव भी कहा है । समभावी व्यक्ति निर्मोही, निरहंकार निस्परिग्री और समद्ष्टा होता है । समभावी व्यक्ति ही मर्यादाओं नियमों का प्रतिष्ठापक होता है । यही उसकी समाचारिता है। अनेकान्त-वादी और स्याद्वादी का होना भी इस संदर्भ में उल्लेखनी है । जीवन की वास्तविकता, धर्म की अन्तस्तलता तथा अहिंसा क सत्यता को इन्हीं भावनाओं के आचरण से पाया जा सकता है ।

जीवन में प्रदोष, निह्नव, मात्सर्य, अन्तराय, आसादन, उप धान आदि दोषों से वचकर, मन-वचन-काय में सामंजस्य रखना, मद्य मांसादि से दूर रहकर, विशुद्ध भोजन करना वध, वंधन, भारारोपण कुशील, परिग्रह आदि से मुक्त रहकर सामाजिक धर्म का पालन किय जा सकता है ।

जीवन की यथार्थता प्रमाणिकता से परे होकर नहीं हो पाती

१. दशवैकालिक. ३—७.
२. योगाशास्त्र, ४, १२१, ३, दशवैकालिक, ५, १३, मूलाचार १२३ मज्झिम, २, ५, ३.
३. दशवैकालिक, ५, १३, ५. मूलाचार गाथा १२३.

आज प्रायः हर क्षेत्र में व्यक्ति अप्रामाणिकता के कैंसर से इतना ग्रस्त और त्रस्त हो गया है कि वह प्रामाणिकता किंवा सचाई की बात भी नहीं सोच पाता। उसे प्रामाणिकता में भी अप्रामाणिकता की गंध आती रहती है। अप्रामाणिकता का उत्स गरीबी है, यह साधारणतः मान लिया जाता है। पर विडंबना यह है कि आज गरीब समाज अपेक्षाकृत अधिक ईमानदार है और धनिकवर्ग शोषण के माध्यम से अहर्निश और धनिक बनता चला जाता है। लोभ और तृष्णा को शांत करने के लिए वह सभी तरह के पाप करता है और फिर यह आशा करता है कि उसे मानसिक शान्ति मिले। पैसे से पैसा बढ़ता है, यह सत्य है। पर यह भी सत्य है कि साध्य के साथ साधनों की भी पवित्रता आवश्यक है। साधन यदि पवित्र और विशुद्ध नहीं होंगे, बीज यदि सही नहींहोंगे तो उससे उत्पन्न होने वाले फल मीठे कैसे हो सकते हैं ? आश्चर्य यह है कि व्यक्ति भौतिकवाद की चकाचौंध में जीवन के यथार्थ स्वरूप को अपने ज्ञान चक्षुओं से ओझल कर देता है। स्वार्थ की मिठास से, आकर्षित होकर मानवता को भी अपने क्रूर प्रहार से पद दलित करने में संकोच नहीं करता है। फिर भी समाजवादी होने का दावा करता है, समाज के अभ्युत्थानी करण में अपने को अत्यादमग्न बताता है। पर वास्तविक तथ्य-सत्य कोसों दूर ही रहता है। वह अपनी वृत्ति से राजनीतिक लाभ लेकर प्रच्छन्न रूप में घनघोर अप्रामाणिक जीवन व्यतीत करता है, स्मगलिंग करता है, कृतघ्नता पूर्वक अनाचार और अत्याचार करता है, शोषण करता है, फिर भी पैसे और शक्ति के वल पर समाज और राजनीति के महत्वपूर्ण पदों पर अपने शिकारी हाथ रखे रहता है। यही उसके वचाव के उपाय हैं जिन्हें वह किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहता।

जीवन और धर्म की सत्यता / तथ्यता इस स्वांग से परे है। धोखा, प्रवंचना जैसे असामाजिक तत्त्वों का उसके साथ कोई सामंजस्य नहीं। धर्म और है भी क्या ? धर्म का वास्तविक संवंध खान-पान और दकियानूसी विचार धारा से जुड़े रहने से नहीं है। वह तो ऐसी विचार क्रान्ति से संवद्ध है जिसमें मानवता और सत्य का स्वरूप कूट-कूटकर भरा है।

आत्मविकास और राष्ट्रविकास के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति जीवन के महत्त्व को समझे और अधिक से अधिक प्रामाणिक बने, नैतिक बने, सत्यानुगामी बने। अन्यथा मृत्यु की भयंकर छाया हमेशा सिर पर भटकती रहेगी। हम जानते हैं, दवाओं और खाद्य वस्तुओं में मिश्रण के कारण कितने लोग काल के कराल गाल में समा- जाते हैं। सीमेंट में रेत, पत्थर आदि मिलाने से बड़े-बड़े मकान ध्वस्त हो जाते हैं, बांध फट जाते हैं, पुल गिर जाते हैं फिर भी तृष्णा के उदर से डकार भी नहीं आती।

इस विकट परिस्थिति का लेखा-जोखा करना इसलिए आवश्यक हो गया है कि आज धर्म किंवा शाश्वत सत्य की पहिचान से व्यक्ति दूर हटता चला जा रहा है और अनुशासन हीनता इतनी अधिक बढ़ती चली जा रही है कि एक दूसरे के प्रति एक दूसरे की आंखों में घृणा, भय, क्रोध आदि भाव उबाल ले रहे हैं। चेहरे पर मनहूस थकावट, आंखों में निराशा, मन में अविश्वसनीयता इतनी अधिक घर कर गई है कि दो वर्गों के बीच बनी हुई खाई और गहरी हो गई है

अतः समाज और राजनीति के इस दूषित स्वरूप को स्वच्छ और विशुद्ध करने का उत्तरदायित्व निश्चित ही बुद्धि-निष्ठ धार्मिक समुदाय पर आ गया है। वह यदि वैयक्तिक और सामाजिक धर्म का सही ढंग से पालन करे, कर्त्तव्य निष्ठ और क्रियानिष्ठ हो जाये तो ये दोनों क्षेत्र आमूल परिवर्तित किये जा सकते हैं। उनमें एक नयी जिन्दगी और नये प्राण फूंके जा सकते हैं। ऐसा धर्म उन्हें कायर बना देगा, यह सोचना बिलकुल गलत होगा। वह तो इन सभी वर्गों में एक सामुदायिक चेतना को जाग्रत करेगा और नैतिक गुणों का विकास करेगा।

निदेशक, जैन अनुशीलन केन्द्र,
राजस्थान, विश्वविद्यालय, जयपुर—३०२००४

वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य और धर्म की अर्थवत्ता

● डॉ. वीरेन्द्रसिंह

☆

विज्ञान और धर्म, मानवीय ज्ञान के दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं जो अपने-अपने तरीके से सत्य और यथार्थ का अनुभव प्राप्त करते हैं। दोनों के केन्द्र में 'मानव' है जिसने इन दोनों ज्ञान-क्षेत्रों को निरन्तर विकसित किया है। विज्ञान एक प्रकार का तार्किक एव व्यवस्थित ज्ञान है, जिससे धर्म की अनेक मान्यताओं एवं प्रत्ययों को वैज्ञानिक दृष्टि के द्वारा नयी अर्थवत्ता ही नहीं प्राप्त होती है, पर उन धार्मिक विश्वासों और प्रतीकों को आधुनिक संदर्भ भी प्राप्त होता है। बर्ट्रेन्ड रसेल ने विज्ञान के दो पक्ष माने हैं—एक उसका 'शक्ति' मूल्य जो उसका तकनीकी पक्ष है; और दूसरा उसका प्रेम या ज्ञान मूल्य[1] जो वैचारिकता के आयामों को गतिशील करता है। यदि गहराई से देखा जाए तो धर्म की आधुनिक अर्थवत्ता प्राचीन प्रत्ययों एवं अवधारणाओं की वैज्ञानिक दृष्टि से, पुनर्व्याख्या है और इस स्तर पर धर्म और विज्ञान दो विरोधी अनुशासन न होकर एक दूसरे के पूरक हैं उदाहरण के तौर पर त्रिमूर्ति की कल्पना एक वैज्ञानिक तथ्य को प्रकट करता है कि प्रकृति में सृजन, स्थिति एवं विलय की शक्तियां निरन्तर गतिशील रहती हैं जिसे ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश के प्रतीकार्थ के द्वारा संकेतित किया गया है। जैन-दर्शन में द्रव्य की धारणा को वैज्ञानिक पदार्थ (मैटर) की धारणा से समानता प्राप्त होती है।[2] इसी प्रकार 'अवतार' की भावना को विकासवाद की सापेक्षता में नया अर्थ प्रदान होता है जो जैविक-विकास के क्रमिक सोपानों का ऊर्ध्वगामी आरोहण हैं।

---

१ वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि, बर्ट्रेन्ड रसेल पृ. ३२

२—देखें मेरा लेख "आधुनिक विज्ञान और द्रव्य विषयक जैन धारणाएं" पृ. २से३ भगवान् महावीर—आधुनिक संदर्भ में, सं० डॉ. नरेन्द्र भानावत ।।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक प्रतीक और प्रत्यय जहां अनुभव की परिधि को स्पर्श करते हैं वहीं वे प्रातिभ-ज्ञान (इन्टयूशन) के द्वारा तत्त्व चिंतन की पृष्ठभूमि भी प्रस्तुत करते हैं। अत: 'दृश्य' जगत से 'अदृश्य' जगत् तक का एक क्रमागत सम्बंध है जिसमें भौतिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानसिक अनुभवों सापेक्ष सम्बंध है। 'दृष्य' का यहां पर नकार नहीं है, पर उसका सार्थक समाहार है। 'सत्य' का स्वरूप इन दोनों क्षेत्रों का सापेक्ष रूप है और उसकी प्रतिष्ठा विश्वास तथा 'आस्था' पर ही सम्भव है। यह आस्था उसी समय आ सकती है जब हम उसके प्रति पूर्णरूप से प्रतिबद्ध हों। यह प्रतिबद्धता ही हमारे कार्यों की सत्यता है। यह प्रतिबद्धता ही मानवीय उत्तरदायित्व की सबसे प्रबल भूमिका है।

कामू का अस्तित्ववादी दर्शन इसी प्रतिबद्धता पर सबसे अधिक बल देता है जो एक व्यापक अर्थ में 'आस्था' का ही रूप है। यह विश्वास या आस्था अन्तर्दृष्टि का विषय है। इसी आत्मज्ञान का विस्तार समस्त विश्व को अपने अन्दर समेटे हुए है और समस्त विश्व उसी ज्ञान से प्रकाशित हो रहा है:—

सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वाद: प्रवदतामहम् ॥[1]

अर्थात् हे अर्जुन ! मैं ही समस्त सृष्टि का आदि, मध्य और अन्त हूं, समस्त विद्याओं में मैं आत्म या आध्यात्मिक विद्या हूं; शब्दों के द्वारा जो सिद्धान्त बनाये जाते है, मैं ही वह सिद्धान्त हूं जो सत्य का प्रतिपादन करते हैं।

सत्य की यही खोज धर्म का ध्येय है (और ज्ञानों का भी यही लक्ष्य है) और यहां पर हम धर्म के सही रूप को प्राप्त करते हैं जो ज्ञान-पारक है। ज्ञान का यह विस्तृत स्वरूप निरपेक्ष न होकर सापेक्ष है, वास्तव में यह विभिन्न आयामों को अपने अन्दर समाविष्ट करता है। धर्म का ज्ञान भी निरपेक्ष नहीं है, उसकी मान्यताएं भी

१—श्रीमद्भगवद्गीता, विभूति योग, पृ. ३३५

नवीन ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में परीक्षित होती हैं। आज के नित्य नये विकसित होते हुए ज्ञान-क्षेत्रों के सन्दर्भ में हम धर्म को केवल उसकी परम्परागत धारणा की प्राचीरों से आबद्ध नहीं कर सकते हैं।

संसार के सभी धर्मों में उपासना का कोई न कोई रूप अवश्य प्राप्त होता है; और यह उपासना धर्म की धारणा का एक अंग है। यहां पर इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है कि जिस प्रकार सौन्दर्य कला की बपौती नहीं है, उसी प्रकार 'उपासना' का सम्बन्ध केवल धर्म से नहीं जोड़ा जा सकता, क्योंकि उपासना तो सभी ज्ञान-क्षेत्रों का एक आवश्यक तत्त्व है।

उपासना एक ऐसी 'मनोदशा' है[1] जो आन्तरिक प्रकाश को प्रकट करती है जिसमें व्यक्ति अपनी 'अस्मिता' को पहचानता है। उपासना एक ऐसी तल्लीनता है जो 'ज्ञान' के रहस्यों का उद्घाटन व 'अस्मिता' का साक्षात्कार कराती है। यही कारण है कि हिन्दू धर्म में इस 'अस्मिता' के प्रति सबसे अधिक बल दिया गया है और आत्म-ज्ञान के साक्षात्कार को अस्मिता का ही साक्षात्कार कहा गया है। धर्म का चाहे और कोई महत्त्व हो या न हो, पर अस्मिता के साक्षात्कार का वह एक सबल माध्यम है। धर्म का इतिहास मानव-मन के इसी अभियान का इतिहास है। धर्म के प्रतीक और [illegible] सभी आत्म-साक्षात्कार के माध्यम हैं और जहां तक प्रतीक का सम्बन्ध है, वह धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान और अन्य ज्ञान-क्षेत्रों का एक अभिन्न अंग है।

प्रतीक का इतिहास ज्ञान के विकास का इतिहास है और ज्ञान का नित्य विकास प्रतीकों का सृजन एवं विस्तार भी है। यहां पर यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि आदिमानव दशा से [illegible] प्रतीकों का एक देश या स्थान में प्रचलन की प्रक्रिया ([illegible] ऐसा सत्य है जो मानवीय इतिहास में अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ [illegible]

१—मार्टिन जॉनसन, आर्ट एण्ड दि साइन्टिफिक थॉट, [illegible]

स्वस्तिक, क्रास, त्रिशूल और अनेक पूजा-प्रतीकों का इतना गहरा सम्बन्ध है कि विद्वानों ने इसके अस्तित्व को एक देशीय न मानकर अन्तर्देशीय माना है ।[2] इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि धर्म, दर्शन विज्ञान, कला, साहित्य और समाज शास्त्र आदि के प्रतीकों का प्रयोग किसी एक ज्ञान-क्षेत्र से ही सम्बन्धित नहीं हैं, वैसे उनका प्रयोग अनेक क्षेत्रों में होता आया है और आज भी होता जारहा है। वह एक ऐसा क्षेत्र है जो विज्ञान, धर्म और कला के आपसी संवादों को एक निश्चयात्मक भावी सम्भावना के रूप में प्रस्तुत करता है। अतः इस सत्य को ध्यान में रखकर जब हम यह देखते हैं कि प्रतीकों को लेकर हम आपस में लड़ते एवं द्वन्द्व करते हैं, तो यह संघर्ष कितना बेमानी होजाता है । धर्म के प्रतीकों को लेकर यह संघर्ष इतना प्रबल रहा है कि इतिहास के पन्ने इसकी प्रत्यक्ष गवाही देते हैं । अतः धार्मिक प्रतीकोपासना का अर्थ उसका संघर्ष नहीं है ।

आज संदर्भ में धर्म का स्वरूप 'वस्तुसापेक्ष' है । यह सम्बंध अत्यंत प्राचीन है जब यातु (मैजिक) का सम्बंध धर्म और विज्ञान दोनों से किसी न किसी रूप में था । यह तथ्य को प्रकट करता है कि धर्म मानव और उसके परिवेश की क्रिया-प्रतिक्रिया का फल है। इस प्रकार, धर्म (मिथक भी) की अर्थवत्ता मानव जीवन सापेक्ष है जो यथार्थ की कठोर भूमि पर धर्म को लाकर खड़ा करता है। यह यथार्थ मानवीय आस्था से प्रतिबद्ध है और यह आस्था, आज के वैज्ञानिक युग में क्रमशः कम होती जा रही, जो धर्म को पुनर्जीवित कर सकती है । आस्था मात्र अंधआस्था नहीं हो सकती है, उसे तार्किकता से पुष्ट करना होगा । यही कारण है कि धर्म की आस्थाएं, जब नवीन ज्ञान के साथ नहीं चल पाती हैं, तो वे स्थिर हो जाती हैं। उनकी गत्यात्मकता समाप्त होने लगती है । जैन-दर्शन और वेदांत-दर्शन की अनेक आस्थाएं एवं विचार इसी गतिशीलता को व्यक्त करते हैं । मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि धर्म एक प्रमुख मानवीय

२—पूरे विवेचन के लिए देखें डॉ. जगदीश गुप्त की पुस्तक प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ. ४००-४००

क्रिया है, और वह इस आस्था को गति देता है जो आज के मानव की आवश्यकता है। डॉ. राधाकृष्णनन् ने इसी आस्था को पुनर्जीवित करने पर बल दिया है जो संस्कृति का प्रेरक तत्त्व है।[2] अतः धर्म एक समाज एवं मानव सापेक्ष क्रिया है, और इस अर्थ में वह मात्र पारलौकिक स्तरों तक ही सीमित नहीं है। वह एक प्रकार से परोक्ष एवं प्रत्यक्ष मंतव्यों की समरसता है। मानव जहां एक ओर सामाजिक एवं भौतिक प्राणी है, वहीं वह एक मानसिक-आत्मिक प्राणी है जो रहस्य और आध्यात्म की ओर भी प्रेरित करता है। मानव का सारा व्यक्तित्व एक जैविक व्यक्तित्व है, वह एकांगी नहीं है। विज्ञान के ब्रह्मांडीय एवं भौतिक अन्वेषण इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि कोई न कोई ब्रह्मांडीय सत्ता है चाहे हम उसका 'कुछ' भी नाम क्यों न दें। धर्म और दर्शन व्यक्ति की इस मांग को किसी न किसी रूप में पूरा करते हैं।

०

५ झ १५, जवाहरनगर जयपुर-४

२—रिकवरी ऑफ फेथ, डॉ. राधाकृष्णन्, पृ. २४

शाकाहार

ललकश्वानवतउदरभर, क्योंखातेपशुकामांस ?
दुःख-द्वंद्व से युद्ध रच, करें जनसंख्या का नाश।
करै जन संख्या का नाश, जगत में फैले महामारी,
विनाशलीला रचा रहे, मांसवृत्ति के भक्षाचारी।
वेर्नार्डशाह की यह अपील, सुनोराजनीति के मठधारी,
जीवित पशु पर दया करो, विश्व बने शाकाहारी॥

[हिन्दी अनुवाद अंग्रेजी से]

—सौभाग्यमल जैन, वकील
६६, घांसबाजार रतलाम

जैन धर्म और धर्मपाल

● पं. कन्हैयालाल दक,

★

संसार के समस्त धर्मों और विचार धाराओं में जैन धर्म एक श्रेष्ठ और उच्च कोटि की विचार धारा वाला धर्म माना जाता है, क्योंकि इस धर्म में प्रत्येक तत्त्व का चिन्तन अत्यन्त सूक्ष्मता और गम्भीरता से किया गया है। जीवन में आचार को प्रधानता दी गई है और विचारों में सन्तुलन बनाये रखना, सबके साथ सामंजस्य स्थापित करके समन्वय करना, इस धर्म की एक विशेषता है।

मनुष्य के जीवन में धर्म का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। धर्म से मनुष्य 'जीने की कला' सीखता है। विद्या, तप, दान, संयम ब्रह्मचर्य और अहिंसा आदि विषयों का चिन्तन मनुष्य तभी कर सकता है, जब धर्म के संस्कार आत्मा में हों। देव-दुर्लभ मनुष्य का जीवन मिलना बहुत कठिन है, ऐसा हमारे धर्म शास्त्र बतलाते हैं, लेकिन मानव शरीर के प्राप्त होने पर भी 'मानवता' के साक्षात् दर्शन होना अति दुष्कर है। जहां क्षमा, दया, प्रेम, सहानुभूति क्षमता आदि गुणों का सहज सद्भाव हो, वहीं मानवता के दर्शन हो सकते हैं और वहीं मानव जीवन की सफलता व सार्थकता का अनुमान लगाया जा सकता है।

वर्तमान युग में धर्म संस्कारों के अभाव में 'सच्ची मानवता' तो दूर, सामान्य नैतिकता व प्रमाणिकता का भी अभाव होता जा रहा है। धर्म के नाम पर दम्भ, आडम्बर और प्रदर्शन ज्यादा किये जा रहे हैं। सारा वाह्य परिवेश, वातावरण और चर्चा धर्म की होती है और अन्दर पाखण्ड, अनीति और अनाचार का आचरण होता है। यह सब देखकर सर्व साधारण जन समूह दिङ्मूढ़ बन जाता है कि धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है? धर्म के दर्शन कहां संभव हैं? कौन से धर्म का आचरण करने से आत्म-शान्ति प्राप्त हो सकती है! वास्तव धर्म स्वान्तः सुखाय होता है।

हमारे परम उपकारी सन्त मुनिराज, आचार्य प्रवर और विद्वान् चारित्र सम्पन्न महात्मा धर्म व सदाचार का स्वरूप नित्य नये तरीके से, अपनी विलक्षण शैली से, अनेक अचक उपमाओं व दृष्टान्तों के द्वारा सार्वजनिक रूप से समझाते हैं, जिसका प्रभाव भव्य व सरल आत्माओं के निर्मल हृदय पर पड़ता है। प्रतिदिन दिया जाने वाला यह कार्योपदेश स्वाति नक्षत्र के पानी की बून्द के समान कभी-कभी निमित्त पाकर एक अनमोल मोती बन जाता है और संसार के समक्ष एक अनूठे उदाहरण का काम करता है।

ऐसा ही एक उदाहरण हमारे समक्ष वर्तमान 'धर्मपाल' बन्धुओं का है। लगभग २० वर्षों पूर्व श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. जव जावरा तथा नागदा के आसपास के क्षेत्रों में विचरण कर रहे थे और अपने सामाजिक व धार्मिक प्रवचनों के माध्यम से जीवन जीने की कला के व्यावहारिक पक्ष पर प्रकाश डाल रहे थे, तव कुछ अनुसूचित जाति के लोग भी उन उपदेशों से प्रभावित हुए। उन उपदेशों ने उनके अन्तस्तल को स्पर्श किया, अपने स्वयं के प्रति आत्म ग्लानी के भाव जागृत हुए और जीवन में आमूल चूल परिवर्तन करने की भावना वलवती हो गई। उपदेश का एक विन्दु भी अमृत का काम कर गया। ये अनुसूचित जाति के लोग मालवा की प्रचलित भाषा में 'वलाई' नाम से सम्वोधित होते थे। मरे हुए पशुओं का चमड़ा उतारना और उसे वेचना, यह उनका आमतौर पर व्यवसाय था। उसके साथ कृषि व पशुपालन भी करते थे। शिक्षा से सर्वथा शून्य थे, संस्कार नाम की कोई वस्तु नहीं थी, लेकिन ऐसे अज्ञानी और ज्ञान शून्य लोगों में भी एक सद्गुण विद्यमान था 'सरलता'। वस इसी गुण ने इनमें यह अहसास पैदा किया कि 'हमें अपने जीवन को वदलना चाहिये, दुर्व्यवसनों का त्याग करना चाहिये, अच्छे पुरुषों की संगति करनी चाहिए, महात्माओं के उपदेशों का आचरण अपने जीवन में करना चाहिए'। वस, इस एक छोटी सी विचार की चिनगारी ने 'क्रान्ति' की ज्वाला का रूप धारण कर लिया।

एक वहुत वड़ा 'मिशन' हमारे सामने आया। जीवन परिवर्तन की तमन्ना रखने वाले समाज के लिए एक नया नाम करण [illegible]

हुआ और आज वह जाना जाता है 'धर्मपाल' नाम से। आज हमारे समक्ष 'धर्मपाल' हमारी एक धार्मिक व सामाजिक प्रवृत्ति वन गई है। धर्मपालों ने अपनी हार्दिक सरलता और सात्विकता का परिचय दे दिया है या यों कहें कि वे अपने धार्मिक व सामाजिक जीवन की दृष्टि से हमारी शरण में आये हैं, अब हमें अपनी जिम्मेदारी को समझना है, उनके प्रति अपने कर्तव्य का पालन पूर्ण निष्ठा व सचाई से करना है, अन्यथा कालान्तर में यह एक 'खतरा' वन जावेगा।

हमारे यहां शरण में आने और शरण में लेने का वहुत वड़ा महत्त्व है। जो हमारी शरण ग्रहण करता है, उसके लिए हमें सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहिये। स्वयं भूखे रह कर उन्हें हार्दिक प्रेम, भाईचारा व बन्धुत्व भाव देकर गले लगाना है। उनकी शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध करना है, उनके धार्मिक जीवन में उनका सहयोगी वनना है, सामाजिक जीवन में सतत मार्ग दर्शन करना है, उनकी वीमारी में, सुख दुःख में, हर समय उन्हें सहकार करके उनका स्वाभिमान वढ़ाना है। जैन धर्म की सारी विशेषताओं से उन्हें परिचित कराके हर महत्त्वपूर्ण धार्मिक व सामाजिक पर्व को मनाने की सच्ची और सात्विक विधि उन्हें बतानी है। उनकी महिलाओं के साथ हमारी महिलाओं को उनके घर में निःसंकोच प्रवेश करके उनके खान-पान व प्रतिदिन के आचार-विचार के तरीकों में किस प्रकार से परिवर्तन आवे और किस प्रका[र] से वे धर्मपाल बहिनें और उनके बालक, उनकी भावी सन्तानें सुसंस्कार[ी] वनें इसका सतत ध्यान रखना सारे जैन समाज का कार्य है। उनके पैतृक संस्कारों में मदिरा, मांस, बीड़ी, होटलें, सिनेमा आदि का समावेश है हमें इन सव दुर्गुणों से उन्हें मुक्त कराके हमारे परम्परागत सात्विक जीवन की तरफ आकर्षित करके एक सच्चे धर्म बन्धु का परिचय देना है। यही जैन धर्म की 'स्व धर्म वात्सल्यता' है।

हमारे यहां तीर्थंकर नाम कर्म को उपार्जन करने के वीस कारण वतलाये गये हैं, उनमें 'स्वधर्म वत्सलता' भी एक कारण माना गया है। हमारा हार्दिक प्रेम और आत्मीय भाव पाकर वे गद्‌गद् हो[ंगे], उनकी सुषुप्त चेतना अवश्य जागृत होगी और हमारे सहयो[ग]

और सहवास से वे अपने आपको धन्य भाग समझेंगे और उनका 'जैन धर्म' को स्वीकार करना अक्षरशः सार्थक होगा ।

किसी भी जाति को शिक्षा और संस्कारों की दृष्टि से नये सांचे में ढ़ालने में एक पीढ़ी जितना अर्थात् ५० से ६० साल जितना समय लगना स्वाभाविक है । उनके अपने पुराने अन्ध विश्वासों व रीति रिवाजों को मिटा देना सरल काम नहीं है । जीवन के नये मूल्य उन्हें सिखाने में, उनके प्रति दृढ़ आस्था पैदा करने में एक लम्बे समय व धैर्य की आवश्यकता है । यह कार्य एक व्यक्ति, एक धर्माचार्य या एक श्रीमन्त व्यक्ति का नहीं है । यह सारे मानव समाज का कार्य है । जो भी प्रबुद्ध साधक, जैन धर्मानुयायी, साधु-सन्त, धर्मोपदेशक, व्यापारी विद्वान् और श्रीमंत यह समझता है कि यह एक श्रेष्ठ कार्य है । उनमें से प्रत्येक को आगे आकर इस कार्य में तन, मन व धन से सहयोग करना चाहिये, बिना किसी प्रकार के प्रतिफल या यश की भावना के एक नई पीढ़ी को बनाने का, नये समाज की रचना करने का दायित्व हमने मोल लिया है । हमें अपने खुद के आचार विचार खान पान, रहन, सहन, तथा जीवन को इतना सादा और सात्विक रखना चाहिये कि वे अनायास हमारा अनुकरण करके अपने जीवन को अनुकरण शील बना सकें ।

हमारे महामंत्र नवकार मंत्र का महत्त्व उन्हें समझाया जाना चाहिये । हमारे व्रत और आचार उन्हें सरल भाषा में सीखाए जाने चाहिये, जिससे 'जैन' कहलाने की सामान्य योग्यता या पात्रता उनमें आ जावे । उनके रग रग में मानवता के संस्कार इस प्रकार से व्याप्त हो जावें कि वे जैन धर्म को ग्रहण करने में अपने आपको सौभाग्यशाली माने और उनमें निम्न गुणों का क्रमिक विकास संभव हो सके:—

(१) उच्च विचार (२) रूपवत्ता (३) प्रकृति सौम्य, (४) लोकप्रियता (५) सहृदयता (६) पाप भीरुता (७) निष्कपटता (८) दाक्षिण्य कुशलता, (९) लज्जावान्, (१०) दयालुता (११) मध्य स्थभाव समता, (१२) सौम्य दृष्टि, (१३) गुणानुरागी, (१४) सत्य-वादी (१५) दीर्घ दर्शिता (१६) विशेषज्ञता (१७) विनीतता (१८)

कृतज्ञता (१९) परोपकारी वृत्ति (२०) लक्ष्य सिद्धि और (२१) धर्मानुयायी ।

जैन धर्म जैसे श्रेष्ठ विचार धारा वाले धर्म को ग्रहण करने के पश्चात, सदगुरुओं का सान्निध्य व उपदेश प्राप्त करने के पश्चात तथा परम्परागत जैन धर्मानुयायियों का सब प्रकार का सहयोग व संरक्षण प्राप्त करने के पश्चात 'धर्मपाल' नाम धारी नये जैन बन्धुओं में उर्पयुक्त सर्व साधारण में पाये जाने योग्य २१ गुणों का विकास हो तो वे 'श्रावक' की कोटि में आ सकेंगे और उनके जैनत्व के संस्कार इतने दृढ़ और स्वाभाविक हो जावेंगे कि उनको दिया गया 'धर्मपाल' नाम भी सार्थक होगा और उनका जैन धर्म को धारण करना कालान्तर में एक ऐतिहासिक सत्य सिद्ध हो जावेगा । उनके पीछे व्यय की जाने वाली जैन समाज की शक्ति श्रम और धन तो सार्थक सिद्ध होंगे ही यह निर्विवाद सत्य है ।

—श्री महावीर जैन रत्न ग्रंथालय, जलगांव—४२५००१

△

कोई मनुष्य ऐसा हो नहीं सकता जिससे घृणा की जाय या जिसे छूने से छूत लगती हो । सभी प्राणियों की आत्मा परमात्मा के समान है और शरीर की बनावट के लिहाज से मनुष्य मनुष्य में कोई अन्तर नहीं है ।

जो गन्दगी फैलाता है वह दोषी नहीं और जो हरिजन गंदगी साफ करता है वह दोषी कहलाये- नीच गिना जाय, यह कहां का अनोखा न्याय है ?

—श्रीमद् जवाहराचार्य

शराब या यमदूत ?

□ अनुवादक-श्री काशीनाथ त्रिवेदी

▽

शराब की बोतल में मौत की परछाई दीख पड़ती है। उसकी एक-एक घूंट में रौरव नरक के कीड़े बिल-बिलाते हैं। आप उसे जरा चखिए भर, बस, वह आपको चोरी करना सिखायेगी, आपसे लूट-पाट करायेगी, व्यभिचार का पाठ पढ़ायेगी और खून करना बतलायेगी। एक बार अपने घर में शराब को आने भर दीजिये, आपकी स्त्री के चेहरे की प्रसन्नता उड़ जायेगी। एक बार शराब को अपने घर में घुसने दिया कि आपके बालक आनन्द से नाचते-कूदते हैं, उसी क्षण से रोने-चिल्लाने लगेंगे। मनुष्य का यह सत्यानाश करती है, स्त्री को चार आंसू रुलाती है और आपके बालकों की कब्र तैयार करती है।

मारकाट में मरने वालों और रण-क्षेत्र में तलवार-बरछे से कटने वालों की अपेक्षा कितनी अधिक जानें एक शराब के प्याले से नष्ट होती होंगी ? भगवान ही जाने। शराब के एक ही प्याले ने लाखों–करोड़ों को जमींदोज किया है, और करोड़ों का सत्यानाश। हरे-भरे खेत उजड़ गये शराब के प्रताप से, बड़े-बड़े महल जमींदोज हो गये शराब के शाप से। और शहंशाह-बादशाह के राज्य जमीन की सतह से उखड़ गये शराब के प्रभाव से पागलों के अस्पताल, बदमाशों और गुण्डों के अखाड़े, वैश्याओं के नरकालय ये सब शराब की ही देन है। आज अपने कमाऊ बेटे को देख कर प्रसन्न होने वाला बाप कल शराब पीता और बेटे पर कुल्हाड़ी तानता है। आज चांद और सूरज की साक्षी में पत्नी को जिंदगी-भर पालने की प्रतिज्ञा करने वाला पति, कल शराब पीकर, पत्नी को मार डालता है। आज अपने नन्हें बालक को चूम-चूम कर खिलाने वाला पिता कल शराब पीता है और बालक को उसकी मां की गोद से छीन कर जमीन पर पछाड़

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] वह बोला—मैं रोज नहीं पीता। मेरे घर-बार है। चार अक्षर पढ़ा हूं। मेरे भी नाक है। यह सुन कर कलवार जरा रौब के साथ, तिरस्कार पूर्वक बोला—राम, राम! देखता हूं, ६ महीने बाद तुम कैसे रहते हो?

एक बरस बीत चुका है। अब तो वह पक्का शराबी है। उसके कपड़े फट गये हैं। घर-बार नहीं रहा। वैसे ही भटका करता है जैसे दूसरे शराबी। कलवरिया के नजदीक बैठ कर भीख मांगता है। एक दिन उसे देख कर कलवार ने कहा—क्योंरे, अपने दोस्त को लेकर आया है न? लेकिन फिर दया दिखला कर कहने लगा—आ भाई, एक प्याली पी जा। लेकिन इतने में तो उस शराबी की आंखें चमक उठती हैं और थोड़ी खुमारी आ जाती है। उसे अपनी पहली दशा याद आती है, घर-बार की स्मृति ताजी होती है, और वह एक लम्बी सांस लेता है। फिर वह अपने बदन पर पहने कपड़ों को देखता है, अपना गिरवी रक्खा हुआ खेत उसे याद आता है, और घर पर बार-बार तकाजे के लिए आनेवाली साहूकारों की टोली उसकी नजर के सामने खड़ी हो जाती है। उसकी आंखें खुल जाती हैं। इतने में उसके हाथों में शराब की प्याली आ पड़ती है। वह चौंक कर चिल्ला

उठता है:—शराव ! शराव ! तू ने ही मेरा सत्यानाश किया है और प्याले को जमीन पर फेंक देता है, दुकान से वाहर निकल जाता है और मुट्ठी वांध कर भाग निकलता है । उस दिन के वाद उसने कलवार का फिर मुंह नहीं देखा ।

लोग कहते हैं कि लड़ाई भयानक चीज होती है । उसके कारण लाखों आदमी लगड़े हो जाते हैं लाखों असहाय विधवाएं वहाती हैं आंसू और लाखों वालक अनाथ वन कर दर-दर भूखे भटकते हैं यह सच है । लेकिन भगवान जानते हैं, कि शराव की लत के कारण लड़ाई की अपेक्षा कहीं अधिक आदमी घल-घुल कर वेमौत मरते होंगे । अनाथों और अपंगों को, लूलों-लंगड़ों को फटे-टटे चीथड़े पहने घूमने वालों को गली, मोहल्ले, हाट और वाजार में मांगने वालों और हृदय-भेदी रूदन करने वाले स्त्री-पुरुषों से पूछो, तो कहेंगे कि शराव के एक प्याले ने हमारी दुर्दशा की है । इसके मुकावले लड़ाई मामूली दिखाई देती है । लेकिन शराव के प्रताप से घर नष्ट होते हैं, शील लुटता है, गरीबी जड़ जमाती है, पापाचार वढ़ता है और खून की तो हद ही नहीं रहती ।

अकाल पड़ने पर हम कांप उठते हैं । लेकिन शराव तो वह अकाल है, जो जमीन को ऊजड़ वनाती है, धन को बरबाद करती है और रोग-शोक को बुलाती है । अकाल तो सिर्फ हड्डी और चमड़े पर ही असर करता है, पर यह शराब तो बरसों तक लाखों आदमियों के जीवन में आग लगाती और उन्हें धन-जन से विहीन करके जिन्दा श्मसान में सुलाती है ।

कहा जाता है, इससे सरकार को आमदनी होती है लेकिन आमदनी कैसी ? आमदनी करने वालों को तो यह निगल जाती है । तो यह कहो न कि शराव से आमदनी नहीं होती, वह तो खून चूस कर धन बढ़ाती है और आमदनी किससे होती है । शराव नया धन थोड़े ही पैदा करती है । शराव की इस आमदनी में तो शरावी के वे-मौत मरने से जो लाखों ोड़ों विधवाएं और अनाथ गरीवी की चक्की में पिसकर सारा

जीवन दुःख और भूख की तप में बिताते हैं, उनकी गरम आहें हैं। इसे आमदनी कहें ? शराब की आमदनी खून का पैसा है जो शराब की आमदनी पर जीना चाहता है, वह खून से अपना पेट भरता है।

आपके गांव में आकर किसी ने शराब की दुकान खोली। एक-दो दिन तो आपने कुतूहल की नजर से उसे देखा। फिर आपके नौजवान उस कलवार से बातें करने लगे। एक-दो दिन उन्हें मुफ्त शराब पिलाई गई बस, उन्हें शराब का चस्का लग गया फिर पूछना ही क्या था ? आप जिन्हें सब गुणों के आगर और नागर मानते थे, वे गुण्डे और बदमाश बन गये। आप जिन्हें देव-दूत समझते थे, वे अब शैतान के चौबदार बन गये इसकी वजह ? जिस दिन उस कलवार ने आपके गांव में शराब की दुकान की नींव डाली उसी दिन उसने आपके धन-दौलत की नींव को हिला दिया, इतने में तो एकाएक आपका जवान-जोधा बेटा गायब हो गया। दूसरे दिन गांव के किनारे उसकी लाश आपको मिली, उधर आपके घर की अंधेरी कोठरी से उसका लिखा एक पत्र भी हाथ लगा। उस पत्र में उसने अपनी वसीयत लिखी थी। यह रहा उसका वसीयतनामा:—

१. समाज को अपनी ये भ्रष्ट आदतें विरासत में दे जाता हूं।

२. शराब के पीछे मैंने जो धन उड़ाया, उसका कर्ज विरासत में मां-बाप को सौंपे जाता हूं।

३. अपने भाइयों और बहनों को शराब की बदबू से भरे हुए अपने जीवन की याद सौंपे जाता हूं।

४. अपनी स्त्री को, जीवनभर रोने और मेहनत मजदूरी करके पेट भरना, विरासत में दिये जाता हूं।

५. अपनी संतान को, यह संदेश विरासत में दिये जाता हूं, कि शराबी बाप के घर पैदा होकर अब तुम अपना जीवन दर-दर भटकते हुए बिताना।

अपने सगे-सम्बन्धियों के लिए कितनी कीमती विरासत

स्त्री नन्हें से सुकुमार बालक को छाती से लगाये बैठी है, लेकिन भूखी माता के स्तनों में दूध सूख गया है और बालक मारे भूख के तड़प-तड़प कर मर रहा है। इस माता के करुण-रुदन के नाम पर और इस बालक की अन्त समय की चीखों के नाम पर मैं तुमसे फिर हाथ जोड़ कर, घुटने टेक कर प्रार्थना करता हूं कि शराब छोड़ो, छोड़ो, छोड़ो।

*हरिजन-सेवा वर्ष १३ अंक ५ जुलाई १९६४ से साभार उद्धृत। संकलनकर्ता : रामचन्द्र नन्दवाना
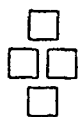
धर्म

महात्मा गांधी रोगियों की सेवा करना अपना धर्म समझते थे। एक बार वे रोगियों की सेवा कर रहे थे कि उनसे मिलने एक अमरीकी मिशनरी आ गया। गांधी जी को एक रोगी की सेवा करते देख उसने व्यंग्य से कहा, "आपका धर्म क्या है?"

गांधी जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मेरा धर्म रोगियों की सेवा करना है।"

यह सुनकर वह मिशनरी शर्मिंदा सा हो गया।

□ श्री मनोज आंचलिया
११६ देवाली, उदयपुर (राज०)

मानव–आहार : शाकाहार ।
मांसाहार : महान् पापाचार

● श्री अशोक श्रीश्रीमाल

☆

शाकाहारी जीवन की महत्ता का सशक्त अनुमोदन करते हुए पाश्चात्य वैज्ञानिक श्री जी. ए. ब्राइट रासायनिक विश्लेषण के आधार पर लिखते हैं, 'आप क्या भोजन करते हैं, जो भोजन करते हैं उसे कैसे प्राप्त करते हैं, इसी पर आपकी संतति एवं मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है ।'

भारतीय संस्कृति ने इसी चिंतन को एक छोटी–सी सूची में यों आवद्ध किया है :

'यादृशं भक्षयेदन्नं बुद्धिर्भवति तादृशी'

आइए, शाकाहार की महत्ता को प्रतिपादित करने वाले विश्व धर्मों और उनके प्रवर्तकों का उद्घोष सुनें !

जैनधर्म में शाकाहार :

महाश्रमण भगवान् महावीर ने कहा 'सव्वेसिं जीवियं पियं नाइवाएज्ज कंवण' अर्थात् किसी भी प्राणी की हिंसा न करो क्योंकि संसार में सभी को जान प्यारी है, मरना कोई नहीं चाहता !

कलिकाल सर्वत्र आचार्य हेमचन्द्र सूरि ने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'योग–शास्त्र' में लिखा है—

सद्यः संभूवितानन्त जन्तु सन्तान दूपितम् ।
नरकाह व निपाथेयं, कोशनीयात् पिशितं सुधी'

अर्थात् जीव को वध करने के तुरंत पश्चात् उसके मांस में असंख्य जीवों की उत्पत्ति हो जाती है । अतः घोर हिंसा के कारण मांस

भक्षण नरक का कारण है ।

यही बात आचार्य अमृत चन्द ने 'पुरुपार्थ सिद्धयुपाय' में बतई है । और बाईसवें तीर्थंकर दयामूर्ति नेमिनाथ ने तो मांसाहारी राजाओं के लिए एकत्रित पशुओं के वध को रोकने के लिए तोरण द्वार छोड़कर प्रवज्या ग्रहण कर ली थी ।

बौद्ध धर्म में शाकाहार :

तथागत महात्मा बुद्ध ने कहा था–'पाणातिपात्र वैरमणी कुसलं (सम्माद्धिद्धि सुतं) किसी प्राणी की हिंसा मत करो ।

हे महामते मैं यह आशाकर चुका हूं कि पूर्व ऋषि प्रणीत भोजन में गेहूं, जौ, चावल, मूंग, उड़द, घी, तेल, दूध, शक्कर, खांड़, मिश्री ही लेने योग्य है । मांस भक्षण से कोढ़ जैसे भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं ।

'अंगुतर निकाय' ५–१७७ में बताया गया है कि बौद्ध उपासकों को मांस, मदिरा, विष एवं सजीव प्राणियों का व्यापार नहीं करना चाहिये ।

सनातन धर्म, वैदिक धर्म में मांसाहार निषेध :

भगवान श्री कृष्ण ने कहा है :

सर्वे वेदा न तस्कुर्य, सर्वे यक्षाश्व भारत
सर्वे तीर्था भिषेकाश्च, यत्कुर्यात प्राणणिनां दया ।

अर्थात् प्राणीयों पर दया करने से शुभ फल प्राप्त होता है।

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रय विक्रयी ।
संस्क्र्ता चोपहर्ता च, खादकश्चेशि घातका ।।
(मनुस्मृति ५/४५।)

अर्थात् मारने का परामर्श देने वाला, बेचने वाला पकाने वाला परोसनेवाला, और खानेवाला ये सब पापी और दुष्ट हैं। जिसका

मांस मैं यहां खाता हूं (मां) मुझको (स:) वह भी अगले जन्म में काट-काट कर खाएगा ! (मनुस्मृति ५/६५)

'हे अग्नि ! मांस खाने वालों को अपने मुख में रख' (ऋग्वेद १०-८७-२)

मांस का प्रचार करने वाले सब राक्षस के समान हैं। वेदों में मांस खाने का कहीं भी उल्लेख नहीं।

(सत्यथार्थ प्रकाश, समुल्लास, पृष्ठ ५४५)

शराबी और मांसाहारी के हाथ का खाने पीने में भी घोर पाप है (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास, पृष्ठ १०/३५४)

'जो लोग अंडे मांस खाते हैं, मैं उन दुष्टों का नाश करता हूं। (अथर्व वेद कांड ८, वर्ग ६, मंत्र १३)

सिक्ख धर्म में मांसाहार निषेध :

सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक ने कहा—मेरे शिष्यों ! तुम मांस और शराब का सेवन मत करना।

'मोहसिन फानी,दविस्तान ए मजाहिव' भाग २ पृष्ठ २४८
मांस खाने वाले सव राक्षस हैं। (नानक प्रकाश, पूर्वाद्ध अध्याय ५५)

जो रत लगे कपड़, जामा होवे पलीत।
जो रत पीवे मानुषा, तिन क्यों निमल चित्त ॥

(गुरु ग्रन्थ साव वार मांझ, महल्ला १, पृष्ठ १४०)

इस्लाम धर्म में मांसाहार विरोध :

'कुरान' के प्रारम्भ में लिखा है—

'विस्मिल्लाहिर रहमानीर्रहीम-यहां खुदा का विशेष रहीम अर्थात् सव पर रहम करने वाला दिया है।

पैगम्बर मोहम्मद साहब ने पवित्र ग्रन्थ 'हदीस' में अपना कलाम फरमाया है 'दूरहमु मनफिल अर्द यरहम कुमुर्रहमामु'

(अर्थात् दुनियावालों पर तुम रहम करो। क्योंकि खुदा ने तुम पर बड़ी मेहरबानी की है।)

'कुरान शरीफ में सुरा हज जिकर' में फरमाया है—'लई यना लल्लाह लुह मुहा वला दिया हो वला की यना लुहत तक्वा।'

(अर्थात् अल्लाहताला को तुम्हारी कुर्बानियों के गोश्त और खून से कोई वास्ता नहीं। उसे केवल तुम्हारे विश्वास की जरूरत है।)

ईसाई धर्म में शाकाहार का महत्त्व :

यह सोचते हुए कि अभी तो दूर जाना है, यह भेड़ का बच्चा थक गया होगा। उसे कंधे पर उठा लेने वाले दया के अवतार ईसा-मसीह ने कहा था—

'शाकाहार सबसे उत्तम भोजन है।'

(जेनीस चेप्टर १ पृष्ठ २९७)

किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो। (१० वीं में ५ वीं आज्ञा

'मेरे शिष्यों, जीव–हिंसा और मांस भक्षण से सदैव दूर रहन और हमेशा शाकाहार भोजन ही करना।' (चेप्टर ३३–६१–१)

ससार के छोटे–बड़े सभी जीव बराबर हैं। अतः सुख–दुः का अनुभव करके जीना चाहते हैं। किसी को दुख मत दो। (महा संत सेंट फ्रांसीस)

'मांसाहारियों के पेट चलते फिरते कब्रिस्तान हैं।' जार्ज बर्नाड शा

पारसी धर्म और जीवदया :

यकीनन दोजख की आग पछतावा उनके लिए हर वक्त तैयार है, जो अपनी ख्वाहिशात बुझाने के लिये और दिल्लगी के लिए बेजु

(वान जानवरों को सताते और तकलीफ देते हैं—जिंदा बस्ता ।

परमात्मा की आज्ञा जीवहिंसा करने वालों और कराने वालों को मौत की सजा है। (इजरने की ३२ वें हाय)

शाकाहार के समर्थन में महान् मनीषियों का चिंतन :

१. मांसाहार से पाशविक वृत्तियों में वृद्धि हो मानव व्याभिचार एवं मदिरापान की ओर प्रवृत्त हो पतन के गर्त से गिर जाता है।
(टालस्टाय)

२. मांसाहार से परहेज सैंकड़ों यज्ञों में आहुति से बढ़कर है
(सन्त तिरुवल्कर)

३. परहित सरिस धर्म नहिं भाई,
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई ।
(सन्त तुलसीदास)

४. जीव हत्या न कर बावरे, सब जीव एक समान ।
हत्या कभी छूटे नहीं, कोटिक सुनो पुराण ।।
(संत कबीर)

५. अपने जीवन में मैं पूर्ण शाकाहारी रहा हूं और इस आहर में मेरी पूर्ण आस्था और विश्वास है - (भारत रत्न एम. विश्वश्वरैया)

६. मांस को किसी भी रूप में जीवन के लिए आवश्यक मानना निरी मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नहीं
(डॉ. अल्वर्ट सितजर नोवल पुरस्कार विजेता)

शाकाहार का पूर्ण समर्थन करते हुए मैं मानता हूं कि मानव के मनो भावों को यह आहार भौतिक रूप से प्रभावित करता है और इसी आहार में मानव का कल्याण निहित हैं-
(डॉ. अल्वर्ट आइस्टीन, नोवल पुरस्कार विजेता)

८. मांस और शराब मानवता के शत्रु हैं ।
(पाइथोगोरस)

९. मांसाहार मानव शरीर की रचना के सर्वथा विपरित तथा खतरनाक हैं। (डॉ. जे. एच. किलांग एम. डी.)

शाकाहार की शक्ति :

अतीत में अमेरिका के देल विश्वविद्यालय में प्रो. फिशन ने ४९ शाकाहारी और ४९ मांसाहारी समवयस्क पुरुषों का परीक्षण किया, तो यह तथ्य उभर कर सामने आया कि हाथ की पकड़ में मांसाहारी मात्र २२ मिनट और शाकाहारी १६० से २०० मिनट तक टिके रहे: मांसाहारी मात्र ३८२ वैठक लगा सका, जबकि शाकाहारी ७३१ वैठकें लगाने में सफल हुए।

ऐसे ही शाकाहारी संघ की मंत्री कु. एक्स. ई. निकलसन ने छः माह तक शाकाहार और मांसाहार पर आश्रित १०-१० हजार बालकों का परीक्षण किया तो हड्डियां त्वचा व पट्ठे तथा वजन में मांसाहारी बालकों से शाकाहारी बालक बढ़कर निकले।

अन्त में एक मनोवैज्ञानिक घटना ! प्रसिद्ध उपन्यासकार वड़ लेड़ काहलर सन् १९४६ में पूज्य बापू की अहिंसा पर लिखी गई एक रचना पढ़ते-पढ़ते गहन चिन्तन में डूब गये कि उन्होंने अपनी जीवन सहचरी को वह रचना सुनाई ! फिर उन्होंने तत्क्षण यह निर्णय लिया कि वे जिंदगी भर मांसाहार नहीं करेंगे। बाद में यह दम्पति भारत आए ! काहलर की धर्मपत्नी ने अहिंसा की विशद जानकारी के लिए जैन साहित्य के प्रति लगाव दर्शाया और साहित्य के साए उनका चिंतन इतना अहिंसक हो गया कि उन्होंने सर्पों तक से मित्रता कर ली। उनका कथन था कि प्रेम-स्नेह के साये से प्राणी मात्र मानव का मित्र बन सकता है।

कामना है, भावना है कि मांसाहारियों का मानस बदले, उनके सोचने का दृष्टिकोण बदले, एक नई सृष्टि का निर्माण हो ! सत्य, संयम अहिंसा, सेवा और समर्पण के साये मानव प्राणी मात्र के प्रति शुभ भावना रखे और जियो और जिने दो की पावन संस्कृति का अभयुदय हों ! कोई किसी से न डरे ! सब सुखी रहें, जन, जन मिल-कर इस नई सृष्टि का सप्रयास निर्माण करें।

—भवानी मंडी (राज.)

श्री भवरलाल कोठारी

खंड २

धर्मपाल-प्रवृत्ति उद्भव, विकास और सम्भावनाएं

अनुक्रम

९. मांसाहार मानव शरीर की रचना के सर्वथा विपरित त
खतरनाक हैं । (डॉ. जे. एच. किलांग एम. डी

शाकाहार की शक्ति :

अतीत में अमेरिका के देल विश्वविद्यालय में प्रो. फिशन
४९ शाकाहारी और ४९ मांसाहारी समवयस्क पुरुषों का परीक्षण कि
तो यह तथ्य उभर कर सामने आया कि हाथ की पकड़ में मांसाहा
मात्र २२ मिनट और शाकाहारी १६० से २०० मिनट तक टिके र
मांसाहारी मात्र ३८२ बैठक लगा सका, जबकि शाकाहारी ७३१ बै
लगाने में सफल हुए ।

ऐसे ही शाकाहारी संघ की मंत्री कु. एक्स. ई. निकलसन
छः माह तक शाकाहार और मांसाहार पर आश्रित १०-१० हज
बालकों का परीक्षण किया तो हड्डियां त्वचा व पट्ठे तथा वजन
मांसाहारी बालकों से शाकाहारी बालक बढ़कर निकले ।

अन्त में एक मनोवैज्ञानिक घटना ! प्रसिद्ध उपन्यासकार व
लेड़ काहलर सन् १९४६ में पूज्य बापू की अहिंसा पर लिखी गई
रचना पढ़ते-पढ़ते गहन चिन्तन में डूब गये कि उन्होंने अपनी जीव
सहचरी को वह रचना सुनाई ! फिर उन्होंने तत्क्षण यह निर्णय लि
कि वे जिंदगी भर मांसाहार नहीं करेंगे । बाद में यह दम्पति भा
आए ! काहलर की धर्मपत्नी ने अहिंसा की विशद जानकारी के लि
जैन साहित्य के प्रति लगाव दर्शाया और साहित्य के साए उनका चि
इतना अहिंसक हो गया कि उन्होंने सर्पों तक से मित्रता कर ली । उन
कथन था कि प्रेम-स्नेह के साये से प्राणी मात्र मानव का मित्र
सकता है ।

कामना है, भावना है कि मांसाहारियों का मानस बदले, उ
सोचने का दृष्टिकोण बदले, एक नई सृष्टि का निर्माण हो
सत्य, संयम अहिंसा, सेवा और समर्पण के साये मानव प्राणी मात्र
प्रति शुभ भावना रखे और जियो और जिने दो की पावन संस्कृति
अभयुदय हों ! कोई किसी से न डरे ! सब सुखी रहें, जन, जन मि
कर इस नई सृष्टि का सप्रयास निर्माण करें ।

—भवानी मंडी (रा

श्री भंवरलाल कोठारी

खंड २

धर्मपाल-प्रवृत्ति उद्भव, विकास और सम्भावनाएं

अनुक्रम

९. मांसाहार मानव शरीर की रचना के सर्वथा विपरित तथा खतरनाक हैं। (डॉ. जे. एच. किलांग एम. डी.)

शाकाहार की शक्ति :

अतीत में अमेरिका के देल विश्वविद्यालय में प्रो. फिशन ने ४९ शाकाहारी और ४९ मांसाहारी समवयस्क पुरुषों का परीक्षण किया, तो यह तथ्य उभर कर सामने आया कि हाथ की पकड़ में मांसाहारी मात्र २२ मिनट और शाकाहारी १६० से २०० मिनट तक टिके रहे: मांसाहारी मात्र ३८२ बैठक लगा सका, जबकि शाकाहारी ७३१ बैठ लगाने में सफल हुए।

ऐसे ही शाकाहारी संघ की मंत्री कु. एक्स. ई. निकलसन छः माह तक शाकाहार और मांसाहार पर आश्रित १०-१० हज बालकों का परीक्षण किया तो हड्डियां त्वचा व पट्ठे तथा वजन मांसाहारी बालकों से शाकाहारी बालक बढ़कर निकले।

अन्त में एक मनोवैज्ञानिक घटना ! प्रसिद्ध उपन्यासकार व लेड़ काहलर सन् १९४६ में पूज्य बापू की अहिंसा पर लिखी गई ए रचना पढ़ते-पढ़ते गहन चिन्तन में डूब गये कि उन्होंने अपनी जीव सहचरी को वह रचना सुनाई ! फिर उन्होंने तत्क्षण यह निर्णय लिय कि वे जिंदगी भर मांसाहार नहीं करेंगे। बाद में यह दम्पति भार आए ! काहलर की धर्मपत्नी ने अहिंसा की विशद जानकारी के लि जैन साहित्य के प्रति लगाव दर्शाया और साहित्य के साए उनका चित इतना अहिंसक हो गया कि उन्होंने सर्पों तक से मित्रता कर ली। उनक कथन था कि प्रेम-स्नेह के साये से प्राणी मात्र मानव का मित्र ब सकता है।

कामना है, भावना है कि मांसाहारियों का मानस बदले, उनके सोचने का दृष्टिकोण बदले, एक नई सृष्टि का निर्माण हो ! सत्य, संयम अहिंसा, सेवा और समर्पण के साये मानव प्राणी मात्र के प्रति शुभ भावना रखे और जियो और जिने दो की पावन संस्कृति का अभयुदय हों ! कोई किसी से न डरे ! सब सुखी रहें, जन, जन मिल कर इस नई सृष्टि का सप्रयास निर्माण करें।

—भवानी मंडी (राज.)

श्री भंवरलाल कोठारी

खंड २

धर्मपाल-प्रवृत्ति उद्भव, विकास और सम्भावनाएं

अनुक्रम

६. मांसाहार मानव शरीर की रचना के सर्वथा विपरित तथा खतरनाक है। (डॉ. जे. एन. किलांग एम. डी.)

शाकाहार की शक्ति :

अतीत में अमेरिका के येल विश्वविद्यालय में प्रो. फिशन ने ४६ शाकाहारी और ४६ मांसाहारी समवयस्क पुरुषों का परीक्षण किया, तो यह तथ्य उभर कर सामने आया कि हाथ की पकड़ में मांसाहारी मात्र २२ मिनट और शाकाहारी १६० से २०० मिनट तक टिके रहे; मांसाहारी मात्र ३८२ बैठक लगा सका, जबकि शाकाहारी ७३१ बैठकें लगाने में सफल हुए।

ऐसे ही शाकाहारी संघ की मंत्री कु. एक्स. ई. निकलसन ने छः माह तक शाकाहार और मांसाहार पर आश्रित १०-१० हजार बालकों का परीक्षण किया तो हड्डियां त्वचा व पट्ठे तथा वजन में मांसाहारी बालकों से शाकाहारी बालक बढ़कर निकले।

अन्त में एक मनोवैज्ञानिक घटना ! प्रसिद्ध उपन्यासकार वड़ लेड़ काहलर सन् १९४६ में पूज्य बापू की अहिंसा पर लिखी गई एक रचना पढ़ते-पढ़ते गहन चिन्तन में डूब गये कि उन्होंने अपनी जीवन सहचरी को वह रचना सुनाई ! फिर उन्होंने तत्क्षण यह निर्णय लिया कि वे जिंदगी भर मांसाहार नहीं करेंगे। बाद में यह दम्पति भा आए ! काहलर की धर्मपत्नी ने अहिंसा की विशद जानकारी के जैन साहित्य के प्रति लगाव दर्शाया और साहित्य के साए उनका चि इतना अहिंसक हो गया कि उन्होंने सर्पों तक से मित्रता कर ली। उ कथन था कि प्रेम-स्नेह के साये से प्राणी मात्र मानव का मित्र सकता है।

कामना है, भावना है कि मांसाहारियों का मानस बदले, उ सोचने का दृष्टिकोण बदले, एक नई सृष्टि का निर्माण हो सत्य, संयम अहिंसा, सेवा और समर्पण के साये मानव प्राणी मात्र प्रति शुभ भावना रखे और जियो और जिने दो की पावन संस्कृति अभ्युदय हों ! कोई किसी से न डरे ! सब सुखी रहें, जन, जन मि कर इस नई सृष्टि का सप्रयास निर्माण करें।

—भवानी मंडी (रा

श्री भंवरलाल कोठारी

खंड २

धर्मपाल-प्रवृत्ति उद्भव, विकास और सम्भावनाएं

अनुक्रम

श्री भंवरलाल कोठारी

खंड २

धर्मपाल-प्रवृत्ति उद्भव, विकास और सम्भावनाएं

अनुक्रम

९. मांसाहार मानव शरीर की रचना के सर्वथा विपरित तथा खतरनाक हैं । (डॉ. जे. एच. किलांग एम. डी.)

शाकाहार की शक्ति :

अतीत में अमेरिका के देल विश्वविद्यालय में प्रो. फिशन ने ४९ शाकाहारी और ४९ मांसाहारी समवयस्क पुरुषों का परीक्षण किया, तो यह तथ्य उभर कर सामने आया कि हाथ की पकड़ में मांसाहारी मात्र २२ मिनट और शाकाहारी १६० से २०० मिनट तक टिके रहे: मांसाहारी मात्र ३८२ वैठक लगा सका, जबकि शाकाहारी ७३१ वैठकें लगाने में सफल हुए ।

ऐसे ही शाकाहारी संघ की मंत्री कु. एक्स. ई. निकलसन ने छः माह तक शाकाहार और मांसाहार पर आश्रित १०-१० हजार बालकों का परीक्षण किया तो हड्डियां त्वचा व पट्ठे तथा वजन में मांसाहारी बालकों से शाकाहारी बालक बढ़कर निकले ।

अन्त में एक मनोवैज्ञानिक घटना ! प्रसिद्ध उपन्यासकार वड़-लेड़ काहलर सन् १९४९ में पूज्य बापू की अहिंसा पर लिखी गई एक रचना पढ़ते-पढ़ते गहन चिन्तन में डूब गये कि उन्होंने अपनी जीवन सहचरी को वह रचना सुनाई ! फिर उन्होंने तत्क्षण यह निर्णय लिया कि वे जिंदगी भर मांसाहार नहीं करेंगे । बाद में यह दम्पति भारत आए ! काहलर की धर्मपत्नी ने अहिंसा की विशद जानकारी के लिए जैन साहित्य के प्रति लगाव दर्शाया और साहित्य के साए उनका [illegible] इतना अहिंसक हो गया कि उन्होंने सर्पों तक से मित्रता कर ली । [illegible] कथन था कि प्रेम-स्नेह के साये से प्राणी मात्र मानव का [illegible] सकता है ।

कामना है, भावना है कि मांसाहारियों का मानस बदले [illegible] सोचने का दृष्टिकोण बदले, एक नई सृष्टि का निर्माण [illegible] सत्य, संयम अहिंसा, सेवा और समर्पण के साये मानव प्राणी [illegible] प्रति शुभ भावना रखे और जियो और जिने दो की पावन संस्कृति [illegible] अभयुदय हों ! कोई किसी से न डरे ! सब सुखी रहें, जन, जन [illegible] कर इस नई सृष्टि का सप्रयास निर्माण करें ।

—भवानी मंडी (राज.)

श्री भंवरलाल कोठारी

खंड २

धर्मपाल-प्रवृत्ति उद्भव, विकास और सम्भावनाएं

अनुक्रम

धम्मे हरए बम्मे सान्तितित्थे,
अणाविले अन्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो-विसुद्धो,
सुसीइभूओ पण हामि दोषं ॥

उत्तराध्ययन १२/६

धर्म मेरा जलाशय है, ब्रह्मचर्य शान्ति तीर्थ है, और कलुष भाव-रहित आत्मा प्रसन्नलेश्या है, जो मेरा निर्मल घाट है, जहां पर आत्मा स्नान कर कर्म-रज से मुक्त होती है ।

हम धरमपाल मतवाले हैं !

☐ डा० इन्द्रराज वैद

△

भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।

(१)

मोहान्ध हुए अज्ञानी–से,
हम भटक रहे थे गली-गली;
प्रभु तुमने आकर जगा दिया,
नव राह दिखा दी है उजली ;

अब मंगल पथ के पंथी हम, उन्मुक्त विचरने वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(२)

पारस को छू कर लोहा ज्यों,
सोना बन जाया करता है;
प्रभु नाम तुम्हारा लेकर नर,
सागर तिर जाया करता है;

गुरुदेव असंभव को भी हम, अब संभव करने वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(३)

हम छोड़ चुके दुर्व्यसनों को,
हैं त्याग चुके सब पापों को;
अब हमने जीना सीख लिया,

है शांत कर दिया तापों को;

हम नहीं स्वयं ही सीखे हैं, औरों को सिखाने वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(४)

कुछ ऐसा हुआ उजियाला कि
जीवन की काया पलट गयी;
हिंसा, झूठ, दुराचारों की
कट काली छाया उलट गयी;

हम बने वीर के आराधक, जिन धर्म दिपाने वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(५)

नवकार मन्त्र को धारा है,
सामायिक के हम पात्र बने;
गुरु नाना की अनुकम्पा से,
आध्यात्म ज्ञान के छात्र बने;

हैं अंग नये समता कुल के, हम जैन सुकर्मों वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(६)

प्रभु दरस तुम्हारे होते ही,
सम्पूर्ण विषमता शांत हुई;
गुरुदेव तुम्हारी वाणी से,
मति सबकी ही निर्भ्रांत हुई;

हम मुक्ति-वरण के इच्छुक हैं, हम दूल्हे बड़े निराले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

हम धरमपाल मतवाले हैं !

□ डा० इन्द्रराज बैद

△

भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।

(१)

मोहान्ध हुए अज्ञानी–से,
हम भटक रहे थे गली-गली;
प्रभु तुमने आकर जगा दिया,
नव राह दिखा दी है उजली ;

अब मंगल पथ के पंथी हम, उन्मुक्त विचरने वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(२)

पारस को छू कर लोहा ज्यों,
सोना बन जाया करता है;
प्रभु नाम तुम्हारा लेकर नर,
सागर तिर जाया करता है;

गुरुदेव असंभव को भी हम, अब संभव करने वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ।।

(३)

हम छोड़ चुके दुर्व्यसनों को,
हैं त्याग चुके सब पापों को;
अब हमने जीना सीख लिया,

है शांत कर दिया तापों को;

हम नहीं स्वयं ही सीखे हैं, औरों को सिखाने वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं हम धरमपाल मतवाले हैं ॥

(४)

कुछ ऐसा हुआ उजियाला कि
जीवन की काया पलट गयी;
हिंसा, झूठ, दुराचारों की
कट काली छाया उलट गयी;

हम बने वीर के आराधक, जिन धर्म दिपाने वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ॥

(५)

नवकार मन्त्र को धारा है,
सामायिक के हम पात्र बने;
गुरु नाना की अनुकम्पा से,
आध्यात्म ज्ञान के छात्र बने;

हैं अंग नये समता कुल के, हम जैन सुकर्मों वाले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ॥

(६)

प्रभु दरस तुम्हारे होते ही,
सम्पूर्ण विषमता शांत हुई;
गुरुदेव तुम्हारी वाणी ने,
मति सबकी ही निर्भ्रांत हुई;

हम मुक्ति-वरण के इच्छुक हैं, हम दूल्हे बड़े निराले हैं ।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं ॥

(७)

गुरुदेव हमारी चाह यही,
हम सदा धर्म के पंथ चलें;
हम बढ़ें उधर ही वीरव्रती,
जिस ओर हमारे संत चलें;

जिन ध्वज फहराने वाले हैं, हम अलख जगाने वाले हैं।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं।।

(८)

जो धार चुके व्रत जीवन में,
वह व्यर्थ न जाने पायेगा;
ये प्राण भले ही जायं निकल,
पर धर्म न जाने पायेगा ;

जिस धर्म ने रक्षा की अपनी, हम उसके अब रखवाले हैं।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं।।

कार्यक्रम अधिकारी,
आकाशवाणी, पटना—८००००१

उद्भव

समता दर्शन प्रणेता, जिन शासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, चारित्र चूड़ामणि, बाल ब्रह्मचारी परमपूज्य आचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म. सा. संवत् २०२० में रतलाम चातुर्मास पूर्ण कर मालवा के मन्दसौर, उज्जैन, इन्दौर, देवास, शाजापुर, आदि क्षेत्रों के वन-बीहड़ों में, दुर्गम पहाड़ी और सपाट मैदानी क्षेत्रों में अपनी पीयूष वर्षिणी वाणी से जिन धर्म के उदात्त और शाश्वत मानवीय मूल्यों को प्रसारित–प्रचारित करते हुए, असह्य परिषहों को सहते हुए विहार कर रहे थे। आचार्यत्व के पावन पथ पर आरूढ़ होने के पश्चात् गुरु गणेशाचार्य के उत्तराधिकारी पट्ट—शिष्य, धीर–वीर–गम्भीर गुणों के सागर आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म. सा. का प्रथम चातुर्मासोपरान्त यह भव्य विचरण देश भर में फैले उनके प्रति अगाध श्रद्धा से युक्त शिष्य वृन्द, श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका हेतु विशेष आकर्षण का कारण था। अतः आचार्य प्रवर जहां भी विचरते श्रमणोपासक उनके श्रीचरणों के दर्शन और पवित्र जिनवाणी के श्रवण हेतु क्रम-क्रम से पहुंचते रहते थे।

आचार्य श्री के प्रशान्त मुखमण्डल, सवल देहयष्टि, और अगाध ज्ञान को सहज वोधगम्य, जनकल्याणकारी अभिव्यक्ति छोटे से कालखंड में मालव के विस्तीर्ण भूभाग में आदर सहित चर्चित हो रही थी। विषम प्रसंगों की सरल निष्पत्ति, निर्णय की दृढ़ता और सर्वोपरि अविचल मन के सिद्धान्त निष्ठ व्यवहार और श्रमणाचारी के शुद्ध श्रद्धान पर अच्युत रह कर आचार्य प्रवर अपने अनुयायी वृन्द को भी आदर्श जिनोपासक के रूप में जीवन साधने का मार्मिक उपदेश और जीवन्त प्रेरणा देने में अहर्निश संलग्न थे। व्यक्ति और राष्ट्र का विवेचन, समाज और व्यक्ति के जटिल एकात्म सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण के साथ युगधर्म के अनुपालन की प्रबल चेतना जागृत करते हुए बढ़ते रहे आचार्य धरती का डगर डगर डग-डग पादविहार से मापते हुए।

(७)

गुरुदेव हमारी चाह यही,
हम सदा धर्म के पंथ चलें;
हम बढ़ें उधर ही वीरव्रती,
जिस ओर हमारे संत चलें;

जिन ध्वज फहराने वाले हैं, हम अलख जगाने वाले हैं।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं॥

(८)

जो धार चुके व्रत जीवन में,
वह व्यर्थ न जाने पायेगा;
ये प्राण भले ही जायं निकल,
पर धर्म न जाने पायेगा ;

जिस धर्म ने रक्षा की अपनी, हम उसके अब रखवाले हैं।
भूपाल नहीं, धनपाल नहीं, हम धरमपाल मतवाले हैं॥

कार्यक्रम अधिकारी,
आकाशवाणी, पटना—८००००१

उद्भव

समता दर्शन प्रणेता, जिन शासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, चारित्र चूड़ामणि, बाल ब्रह्मचारी परमपूज्य आचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म. सा. संवत् २०२० में रतलाम चातुर्मास पूर्ण कर मालवा के मन्दसौर, उज्जैन, इन्दौर, देवास, शाजापुर, आदि क्षेत्रों के वन-बीहड़ों में, दुर्गम पहाड़ी और सपाट मैदानी क्षेत्रों में अपनी पीयूष वर्षिणी वाणी से जिन धर्म के उदात्त और शाश्वत मानवीय मूल्यों को प्रसारित–प्रचारित करते हुए, असह्य परिषहों को सहते हुए विहार कर रहे थे। आचार्यत्व के पावन पथ पर आरूढ़ होने के पश्चात् गुरु गणेशाचार्य के उत्तराधिकारी पट्ट—शिष्य, धीर–वीर–गम्भीर गुणों के सागर आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म. सा. का प्रथम चातुर्मासोपरान्त यह भव्य विचरण देश भर में फैले उनके प्रति अगाध श्रद्धा से युक्त शिष्य वृन्द, श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका हेतु विशेष आकर्षण का कारण था। अतः आचार्य प्रवर जहां भी विचरते श्रमणोपासक उनके श्रीचरणों के दर्शन और पवित्र जिनवाणी के श्रवण हेतु क्रम-क्रम से पहुंचते रहते थे।

आचार्य श्री के प्रशान्त मुखमण्डल, सबल देहयष्टि, और अगाध ज्ञान को सहज बोधगम्य, जनकल्याणकारी अभिव्यक्ति छोटे से कालखंड में मालव के विस्तीर्ण भूभाग में आदर सहित चर्चित हो रही थी। विषम प्रसंगों की सरल निष्पत्ति, निर्णय की दृढ़ता और सर्वोपरि अविचल मन के सिद्धान्त निष्ठ व्यवहार और श्रमणाचारी के शुद्ध श्रद्धान पर अच्युत रह कर आचार्य प्रवर अपने अनुयायी वृन्द को भी आदर्श जिनोपासक के रूप में जीवन साधने का मार्मिक उपदेश और जीवन्त प्रेरणा देने में अहर्निश संलग्न थे। व्यक्ति और राष्ट्र का विवेचन, समाज और व्यक्ति के जटिल एकात्म सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण के साथ युगधर्म के अनुपालन की सजग चेतना जागृत करते हुए बढ़ते रहे आचार्य चरणों का डगर अपने डग-डग पादविहार से मापते हुए।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात :

ऐसे ही एक पुनीत दिवस को इन्दौर से नागदा की ओर अपनी शिष्य मण्डली सहित बढ़ते हुए आचार्य प्रवर से मार्गवर्ती गांव में वयोवृद्ध सुश्रावक, परम पूज्य आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म. सा. की परम्परा के दृढ़ उपासक, समर्थक तथा श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के स्तम्भ स्वरूप श्री नाथूलाल जी सेठिया ने भेंट की। श्री सेठिया जी के मुख से भावो के गर्भ ज्ञान का आभास देने वाले महत्वपूर्ण शब्द सहज ही उच्चरित हुए और उन्होंने कहा कि 'हे आचार्य प्रवर! आपके द्वारा निकट भविष्य में सामाजिक उत्क्रान्ति का कोई अतिमहत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होने वाला है। श्री सेठिया जी की इस श्रद्धा-विश्वास युक्त निष्छल और सहज पूर्व घोषणा पर यद्यपि आचार्य प्रवर ने उस समय यही कहा कि 'आपकी भावना प्रशस्त है' किन्तु उनके निर्विकार हृदयाकाश में कहीं यह विचार प्रवाह विद्यत प्रकाश–सा जगमगा उठा कि अवश्य ही कुछ होनें जा रहा है। बहुधा ऐसा होता है कि जो लोग समाज-जीवन के उन्नयन हेतु समर्पित हो जाते हैं, उनकी समाज जीवन के सुख-दु:ख, भूत-भविष्य और वर्तमान से ऐसी एकात्मकता हो जाती है कि वे अपनी प्रखर संवेदना से भावी के गर्भ में झांककर देख लेते हैं, अनुभव कर लेते हैं, और उसे अभिव्यक्त कर देते हैं। श्री सेठिया जी के एकात्म समाज जीवन और आचार्य श्री के समाज, राष्ट्र और जिनधर्म समर्पित जीवन को लगभग एक ही समय घटना का पूर्वाभास हुआ, किन्तु तब दोनों को ही यह अनुमान नहीं था कि वह युगान्तरकारी महत्व की उत्क्रान्ति इतनी सन्निकट है। शीघ्र ही आचार्य श्री जी दि. १६ मार्च १६६४ को नागदा पधार गए।

नागदा, तब आज से २० वर्ष पूर्व इतना विशाल और जन-संकुल नहीं था। आचार्यश्री जी यहां ५ दिन विराजे और अपनी व्यस्त दिनचर्या के अनुसार प्रातः से सायं तक अनवरत जिज्ञासु जनों को मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। उनकी वाणी का आकर्षण जैन के साथ ही जैनेत्तर जनों को भी अधिकाधिक संख्या में प्रवचन स्थल पर

आकृष्ट करने लगी। नागदा में नीच और अछूत समझी जाने वाली बलाई जाति के लोभ भी प्रचुर संख्या में रहते थे। यद्यपि इनमें से अधिकांश ने अपने पूर्व व्यवसाय को छोड़ दिया था। अनेक निजी व्यवसाय चलाते थे और उनके बहुविध शासकीय व निजी सेवाओं में कार्यरत हो गये थे, किन्तु समाज उन्हें सम्मान और समता नहीं दे सका था। समता की अमर और अतृप्त प्यास, और अपमान की दग्ध कर देने वाली अन्तरज्वालाएं बलाई समाज के समझदार लोगों को चैन नहीं लेने देती थीं। इन बलाई बान्धवों में से ही एक निपुण व्यवसायी श्री सीतारामजी राठौड़, एक दिन अपने कुछ साथियों के साथ स्थानीय जनों श्री मायाचन्द जी कांठेड़ आदि के आग्रह पर संकोच सहित प्रवचन स्थल पर पहुंचे। एक ही जाजम पर जब उन्हें बैठने का अवसर दिया गया तो उनके मन की बांछें खिल गयीं। दत्त-चित्त होकर प्रवचन सुना और उन्हें ऐसा लगा मानो मुंहमांगी मुराद मिल गई हो।

उत्साह और उमंग भरे हृदय से श्री सीताराम जी ने प्रवचन के महान् प्रभाव को अनुभव किया और मध्याह्न होते होते पुनः अपने साथियों के साथ आचार्य चरण में आ पहुंचे। अपने मस्तक से अपने मान की प्रतीक टोपी उतार कर आचार्य श्री के पदकमल में रखते हुए भावभरे हृदय से सीताराम जी ने निवेदन किया कि मालव प्रान्त के उज्जैन, शाजापुर, इन्दौर, देवास, रतलाम व मन्दसौर आदि जिलों के सैंकड़ों गांवों में बसी हमारी बलाई जाति उत्तम कृषि कर्म करती है, मान-मर्यादा से जीवनयापन करती है किन्तु उसके भाल पर काल चिन्ह-सा अछूत का कराल काला तिलक लगा हुआ है। हमें इस अछूत के कलंक से बचावें।

कम्मुणा बम्भणोहोई :

इस आर्त हृदय की गुहार ने करुणा मूर्ति आचार्य प्रवर के नवनीत सम कोमल मानस को उद्वेलित कर दिया। वे आश्वासन के स्वरों में बोल पड़े कि जो स्वयं उठने को तत्पर है, उसे प्रकृति हजार

हाथों से उठाने को लालायित रहती है । आप अपने आचरण को वादातीत बना लीजिये । सप्त कुव्यसनों का परित्याग कर दीजिए । आपका यह त्याग आपको स्वयं ही उठाकर सम्मान और प्रतिष्ठा के उच्चासन पर आरूढ़ कर देगा । दिनांक २० मार्च को आचार्यश्री जी ने उन्हें जैन धर्म का सरल ज्ञान देते हुए कहा कि जैन धर्म वर्ण व्यवस्था को नहीं मानता, जाति–पांति को नहीं मानता । जैन धर्म की स्पष्ट घोषणा है—

कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होई खत्तिओ ।
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवई कम्मुणा ॥
(उत्तराध्ययन सूत्र २५/३३)

अर्थात् व्यक्ति अपने कर्म और आचरण से ही समाज में अपनी स्थिति को निर्धारित करता है । कर्म से ही वह ब्राह्मण, कर्म से ही क्षत्रिय, कर्म से ही वैश्य और कर्म से ही शुद्र बनता है । भगवान महावीर के शासन में ऊंच-नीच और छुआछूत को कोई स्थान नहीं है । आप पूर्णतः कुव्यसन मुक्त और सत्संकल्प से संकल्पित हो जाइए । जिनधर्म की शरण में आकर सम्यक्त्व अंगीकार कर लीजिये । स्वतः आपके कलुष धुल जाएंगे और निष्कलुष जीवन का सम्मान एक कालातीत, ध्रुव सत्य है ।

प्रेरकवाणी के तपःपूत और मंत्रसिद्ध ये शब्द, शुद्ध हृदय, जिज्ञासु और उन्नति की अदम्य कामना वाले बलाइयों के मनों में घर कर गए । उन्होंने सप्त कुव्यसनों १. जुआ २. मांस ३. शराब ४. चोरी ५. पर-स्त्री गमन ६. वेश्यागमन और ७. शिकार के परित्याग कराने और सम्यक्त्व का मन्त्र प्रदान करने हेतु आचार्यश्री जी से करबद्ध निवेदन किया ।

स्वयं अपनी मंगलवाणी से मंगलपाठ पूर्वक आचार्य प्रवर ने उन्हें समकित ग्रहण कराई ।

सीताराम जी के नेतृत्व में नवदीक्षित धर्म दीवाने

नागदा स्थित अपने वान्धवों के वीच गए उन्हें समझाया और केवल १।। घन्टे में समझा-बुझा कर ३० लोगों को ले आये । उन सभी ने भी आचार्यश्री जी से सम्यक्त्व ग्रहण किया और जीवन परिवर्तन का एक चक्र प्रवर्तित हो गया ।

नागदा के उसी प्रवचन स्थल पर दूसरे दिन प्रातः नव समकित वलाई बन्धुओं के अतिरिक्त कुछ अन्य वलाई भी उपस्थित थे । इन वान्धवों को श्री सीताराम जी समीपस्थ गुराड़िया ग्राम से लेकर आये थे । निर्धारित क्रम में प्रवचन के माध्यम से जीवन उत्थान का मन्त्र सुना तो अपने त्राता के प्रति श्रद्धा और विनय से मन भर गया । गुराड़िया से आये प्रमुखों धूलजी आदि और श्री सीताराम जी ने वन्दनपूर्वक निवेदन किया कि हमारे गांव में गोवाजी की सुपुत्री एवं थावर जी की वहिन लीलावाई का विवाह संवत् २०२१ की चैत्र शुक्ला नवमी को है । ये दोनों महानुभाव वलाई समाज में अग्रगण्य हैं । अतः इस विवाह के अवसर पर ७० गांवों के लोग आयेंगे । गुराड़िया में भी वलाई जाति के ४०-५० घर हैं । इस सुअवसर पर आप २ दिन के लिए पधारें तो हमारा उद्धार हो जाएगा । समाज में एक सामूहिक सद्विचार की क्रान्ति हो जायेगी ।

आचार्यश्री जी ने परिषह पूर्ण पथ का भाव जीवन के लिए अणगार बनते ही समय ही मुस्करा कर वरण कर लिया था । अतः उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति दे दी । दूसरे दिन ही मध्याह्न में आचार्य प्रवर ने अपनी शिष्य मण्डली सहित गुराड़िया की ओर विहार कर दिया । नागदा से ४ मील दूर बनवना गांव के हनुमान मन्दिर में रात्रि विश्राम किया । यहां २ जैन घर तथा कुछ ब्राह्मण और कुन्बी परिवार के लोग रहते हैं । गुराड़िया में आहार-पानी की स्थिति नहीं थी । अतः बनवना को ही आधार शिविर बनाने का निश्चय किया गया । गुराड़िया से बनवना ३ मील की दूरी पर है ।

संवत् २०२१ चैत्र शुक्ला षष्टमी दि. २२ मार्च ६४ को प्रातः काल आचार्य प्रवर गुराड़िया पहुंचे । उन्होंने अपनी सुदीर्घ [illegible]

आत्मीयतापूर्वक उपस्थित बलाईयों व अन्य जनों को सम्बोधित किया। सभा के मध्य में विचार-विमर्श की हल्की-सी थरथरी फैली। और ८२ वीर उठ खड़े हुए जो वीरत्व के पथ पर अग्रसर होने को तत्पर थे। आचार्यश्री जी ने उन्हें सप्त कुव्यसन त्याग कराया और फिर समकित का मन्त्र दान कर उन्हें विशाल जैन समाज के अंगीभूत बना दिया।

प्रवचन के समापन के पश्चात् आचार्य प्रवर वापस बनबना की ओर लौट आए।

स्वर्णिम विहान :

चैत्र शुक्ला नवमी संवत् २०२१ तदनुसार दि. २३ मार्च १९६४ को पूर्व क्षितिज पर जो प्रखर भास्कर उदित हुआ, उसने तम की चादर को विदीर्ण कर सर्वत्र शुभ्र वितान तान दिया। आज रवि कुल ने जिस स्वर्णिम विहान को जन्म दिया वह आचार्य श्री की यशः पताका को निरभ्र गगनाकाश में फहरा कर सार्थक हुआ। आचार्य प्रवर बन-बना से गुराड़िया की ओर बढ़ चले थे। ग्राम के चौक में कच्चे छप्पर के बरांडे में अपने शिष्य समुदाय सहित प्रसन्नानन आचार्य प्रव विराजमान थे। और सामने कुछ धर्म जिज्ञासु बैठे हुए चर्चा कर र थे। धीरे-धीरे लोग आते रहे। देखते-देखते गुराड़िया का विस्तीर ताल धर्म पिपासु स्त्री-पुरुषों से भरने लगा और फिर आचार्यश्री ज ने अपना प्रवचन प्रारम्भ किया।

वही वीरोदात्त स्वर ! वही अभयदान ! वही शास्त्र मीमांसा ! वही सुबोध वाणी। दलितों के प्रति अपार संवेदना, पिछड़ों के प्रति अथाह सहयोग और भटकते हुओं के प्रति निर्मल पथ-प्रदर्शन के उदात्त भावों से भरी, हृदय के मर्मस्थल को स्पर्श करती हुई आचार्य प्रवर की वाणी पीड़ित मनों पर सुखद-संलेपन बन कर बरसी। उन्होंने सप्त कुव्यसनों से होने वाली हानियों का मार्मिक चित्रण किया जैनत्व के संस्कारों का विस्तार से विवेचन किया कर्म और पुं

पार्थ का जीवन में महत्व समझाया ।

श्रोता बैठे थे अविचल, अपलक । जैसे ही प्रवचन समाप्त हुआ पारस्परिक विचार-विमर्श की एक तरंग से जन सागर तरंगायित हुआ और ७० गांवों की पंचायतों से आए हुए ५३३ परिवारों के सदस्यों, प्रमुखों व २०० अन्य जन हड़-हड़ कर उठ बैठे । सम्पूर्ण सभा आवेशित हो उठी जन-जन जीवन को सर्वांग सुन्दर बनाने को मचल उठा । उक्त सभी ने आचार्यश्री जी से समकित ग्रहण की । जैन धर्म और भगवान महावीर स्वामी की जय के घोष ग्राम परिधि से पार होकर दिग्दिगन्त को गुंजायमान करने प्रस्तुत हो गए ।

आनन्द की लहर के शीर्ष पर चढ़कर विनयावनत श्री सीताराम जी ने पुनः अपने मन की कसक, अन्तर की वेदना आचार्यश्री जी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा—हे उद्धारक ! आपने हमें समकित का मन्त्र देकर जैन बना दिया किन्तु इससे हमारा बलाई का कलंकित जातीय तिलक नहीं मिटा । कोई ऐसा उपाय करिये जिससे हमारे माथों से अछूत जाति का यह काला टीका मिट जाय ।

स्वर्ण तिलक :

आचार्यश्री जी से सरल भाव से कहा कि मैंने आज का प्रवचन भगवान धर्मनाथ की प्रार्थना से प्रारम्भ किया था । आप सभी लोग भी धर्म की उपासना और पालना के लिए सन्नद्ध हुए हैं । अतः आज से आप स्वयं को बलाई न कहकर 'धर्मपाल' शब्द से अभिव्यक्त करिए । धर्मपाल एक गुण निष्पन्न शब्द है । यह धर्म के दृढ़ व्रत की पालना के संकल्प का परिचायक है । आप स्वयं को 'धर्मपाल—जैन' सम्बोधित करें तथा तदनुसार ही उच्च-उज्जवल आचरण करें ।

समस्त उपस्थित बलाई बन्धु हर्ष से सराबोर हो उठे । गुलाबिया के भूलजी भाई व अन्य प्रमुख हाथों में नवानन्द भरी कुंकुम की थालियों से अपने समाज बान्धवों के गौरवोन्नत भालों पर धर्मपाल का

आत्मीयतापूर्वक उपस्थित बलाईयों व अन्य जनों को सम्बोधित किया। सभा के मध्य में विचार-विमर्श की हल्की—सी थरथरी फैली। और ८२ वीर उठ खड़े हुए जो वीरत्व के पथ पर अग्रसर होने को तत्पर थे। आचार्यश्री जी ने उन्हें सप्त कुव्यसन त्याग कराया और फिर समकित का मन्त्र दान कर उन्हें विशाल जैन समाज के अंगीभूत बना दिया।

प्रवचन के समापन के पश्चात् आचार्य प्रवर वापस बनबना की ओर लौट आए।

स्वर्णिम विहान :

चैत्र शुक्ला नवमी संवत् २०२१ तदनुसार दि. २३ मार्च १९६४ को पूर्व क्षितिज पर जो प्रखर भास्कर उदित हुआ, उसने तम की चादर को विदीर्ण कर सर्वत्र शुभ्र वितान तान दिया। आज रवि कुल ने जिस स्वर्णिम विहान को जन्म दिया वह आचार्य श्री की यशः पताका को निरभ्र गगनाकाश में फहरा कर सार्थक हुआ। आचार्य प्रवर बनबना से गुराड़िया की ओर बढ़ चले थे। ग्राम के चौक में कच्चे छप्पर के बरांडे में अपने शिष्य समुदाय सहित प्रसन्नानन आचार्य प्रवर विराजमान थे। और सामने कुछ धर्म जिज्ञासु बैठे हुए चर्चा कर रहे थे। धीरे-धीरे लोग आते रहे। देखते-देखते गुराड़िया का विस्तीर्ण ताल धर्म पिपासु स्त्री-पुरुषों से भरने लगा और फिर आचार्यश्री जी ने अपना प्रवचन प्रारम्भ किया।

वही धीरोदात्त स्वर ! वही अभयदान ! वही शास्त्र मीमांसा ! वही सुबोध वाणी। दलितों के प्रति अपार संवेदना, पिछड़ों के प्रति अथाह सहयोग और भटकते हुओं के प्रति निर्मल पथ—प्रदर्शन के उदात्त भावों से भरी, हृदय के मर्मस्थल को स्पर्श करती हुई आचार्य प्रवर की वाणी पीड़ित मनों पर सुखद-संलेपन बन कर बरसी। उन्होंने सप्त कुव्यसनों से होने वाली हानियों का मार्मिक चित्रण किया जैनत्व के संस्कारों का विस्तार से विवेचन किया कर्म और पुः

षार्थ का जीवन में महत्व समझाया ।

श्रोता बैठे थे अविचल, अपलक । जैसे ही प्रवचन समाप्त हुआ पारस्परिक विचार-विमर्श की एक तरंग से जन सागर तरंगायित हुआ और ७० गांवों की पंचायतों से आए हुए ५३३ परिवारों के सदस्यों, प्रमुखों व २०० अन्य जन हड़-हड़ कर उठ बैठे । सम्पूर्ण सभा आवेशित हो उठी जन-जन जीवन को सर्वांग सुन्दर बनाने को मचल उठा । उक्त सभी ने आचार्यश्री जी से समकित ग्रहण की । जैन धर्म और भगवान महावीर स्वामी की जय के घोष ग्राम परिधि से पार होकर दिग्दिगन्त को गुंजायमान करने प्रस्तुत हो गए ।

आनन्द की लहर के शीर्ष पर चढ़कर विनयावनत श्री सीताराम जी ने पुनः अपने मन की कसक, अन्तर की वेदना आचार्यश्री जी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा—हे उद्धारक ! आपने हमें समकित का मन्त्र देकर जैन बना दिया किन्तु इससे हमारा बलाई का कलंकित जातीय तिलक नहीं मिटा । कोई ऐसा उपाय करिये जिससे हमारे माथों से अछूत जाति का यह काला टीका मिट जाय ।

स्वर्ण तिलक :

आचार्यश्री जी से सरल भाव से कहा कि मैंने आज का प्रवचन भगवान धर्मनाथ की प्रार्थना से प्रारम्भ किया था । आप सभी लोग भी धर्म की उपासना और पालना के लिए सन्नद्ध हुए हैं । अतः आज से आप स्वयं को बलाई न कहकर 'धर्मपाल' शब्द से अभिव्यक्त करिए । धर्मपाल एक गुण निष्पन्न शब्द है । यह धर्म के दृढ़ व्रत की पालना के संकल्प का परिचायक है । आप स्वय को 'धर्मपाल—जैन' सम्बोधित करें तथा तदनुसार ही उच्च-उज्जवल आचरण करें ।

समस्त उपस्थित बलाई बन्धु हर्ष से सराबोर हो उठे । गुराड़िया के धूलजी भाई व अन्य प्रमुख हाथों में लबालब भरी कुंकुम की थालियों से अपने समाज बान्धवों के गौरवोन्नत भालों पर धर्मपाल का

स्वर्ण तिलक अंकित कर रहे थे । 'जैनाचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की जय' नवदीक्षित धर्मपालों के रोम-रोम से ध्वनित हो रही थी । पूर्व दिशा में प्रदीप्त सूर्य को और फिर अपने मुक्तिदाता के चमकते चेहरे को वे देख रहे थे । घोष गूंजा '"लाल" चमकते भानु समाना' और सभी दुहरा उठें । 'गूंजती रही गूंज और अनुगूंज' ।

आचार्यश्री जी के व्यक्तित्व का चमत्कारिक प्रभाव नागदा और गुराड़िया से निकल कर पूरे मालव प्रान्त में चर्चित हो उठा । धर्मपालों की धर्मज्योति जगमगा उठी । आचार्य श्री जी अपनी साधु-चर्या के अनुसार भ्रमण करते रहे और मार्ग के गांवों में औसर-मौसर के प्रसंगों से एकत्र होने वाले वलाईयों को उद्‌वोधित करते रहे ।

वे गुराड़िया से बनबना होकर फिर नागदा पधारे । जहां से बड़खेड़ा, बड़ावदा होकर लोद पधारे । आचार्यश्री जी के पहुंचने से पूर्व उनके धवल की यश सुवास पहुंच जाया करती थी । लोद में आचार्य-चरण का पदार्पण हुआ है यह जानकर रात्रि में समीपस्थ लिम्वोदिया व गुजरवाड़िया के बलाई आ उपस्थित हुए तथा अपने-अपने ग्राम पधारने का आग्रह करने लगे । लिम्बोदिया की विहार की स्वीकृति मिलने पर गूजरवाड़िया के बन्धु-बहिनें भी वहां पहुंच गये । प्रातः लिम्बोदिया में दोनों गांवों के १०० से अधिक बलाई समकित होकर धर्मपाल वन गये । यहां से आचार्यश्री जी 'ताल' पधारे ।

आक्या में सामूहिक संकल्प :

कहाकि ताल में आक्या ग्राम के बलाई विनंती करने आ पहुंचे । उन्होंने आने वाले कल के दिन हमारे गांव में एक वृहत मृत्युभोज के प्रसंग पर सहस्त्रों वलाई स्त्री-पुरुष एकत्र होंगे । आप अपना पवित्र उपदेश सुनाने के लिए पधारें । दोपहर में ही आचार्यश्री जी आक्या जा पहुंचे वहां वैष्णव मन्दिर में रात्रि विश्राम किया । प्रातः कालीन प्रवचन में जैन धर्म के पवित्र अराधक वनने का आचार्य प्रवर के आह्वान का सकारात्मक और सत्वर उत्तर देने के लिए ८१ ग्रामों के

७६३ परिवारों के प्रमुखों सहित सैंकड़ों लोगों ने 'धर्मपाल जैन' की उपाधि धारण कर सम्यक्त्व अंगीकार किया। इस सामूहिक संकल्प के साथ ही बलाई जाति में सामूहिक व्यसन मुक्ति और सामाजिक सुधारों का अप्रतिहत ज्वार उमड़ पड़ा। इस सैलाब ने देखते ही देखते ३०० वर्गमील क्षेत्र में फैले बलाई जाति के सहस्त्रों जनों के समूह को आप्लावित कर लिया।

विहार और धर्म जागरण :

आक्या में पीयूष वर्षण के पश्चात् आचार्यश्री जी पुनः ताल से उज्जैन की ओर अग्रसर हुए। मार्ग में आलोट, महिदपुर, डेलची, बोरखेड़ा, रानी, पीपलिया, रठड़ा, घमाहेड़ा, आदि गांवों में शत-शत विकल हृदयों में अभिनव आशा और विश्वास जगाते हुए आचार्य प्रवर बरखेड़ा पधारे। यहां पूनाजी नन्दराम जी बलाई के यहां मृत्युभोज में सम्मिलित होने के लिए ५० गांवों से प्रतिनिधि एकत्र हुए थे। बरखेड़ा के चौक में ६०० नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए अपने ५० मिनट के धारा प्रवाही प्रवचन में आचार्य प्रवर ने व्रती जीवन का महत्व समझाया तथा सीताराम जी के अनुरोध पर सभी को गुरु मंत्र प्रदान कर पावन बनाया।

धर्मपालों के संस्कार हेतु इन्दौर चातुर्मास :

इस प्रकार सम्पूर्ण यात्रा मार्ग में दलितोद्धार और धर्मजागरण की लहर प्रस्तुत करते हुए आचार्यश्री जी उज्जैन पधारे। यहां सम्वत् २०२१ के चातुर्मास हेतु विभिन्न संघों की ओर से पुरजोर विनंतियां की गईं। जिनमें से इन्दौर संघ ने विनंती के समय एक मर्मस्पर्शी बात कही। विनंतियों का कार्यक्रम श्री माणकचन्द जी नाहर के संयोजन में चल रहा था तब इन्दौर श्री संघ की ओर से श्री वखतावरमल जी सांड व श्री लाभचन्द जी कांठेड़ ने निववेदन किया कि आपने पिछले १ माह में ५००० वलाईयों को समकित दिलाकर धर्मपाल वनाया है। इन नवदीक्षित धर्म वान्धवों के संस्कारों को स्था-

यित्व प्रदान करने के लिए आप इन्दौर को चातुर्मास प्रदान करने की कृपा करें।

आचार्य प्रवर ने इस निवेदन के अन्तर में छिपे सत्य को दिन के प्रकाश की भांति देखा–अनुभव किया और धर्मपालों के जीवन निर्माण में सहायक होने की दृष्टि से सभी आगारों सहित सं. २०२१ का वर्षावास इन्दौर को प्रदान करने की स्वीकृति दे दी।

महावीर जयन्ती और नागझिरी सम्मेलन :

उज्जैन में महावीर जयन्ती के पुनीत पर्व पर देश भर से श्रावक और संघ प्रमुख एकत्रित हुए थे। इस प्रवचन में प्रभूत संख्या में धर्मपाल बन्धु भी उपस्थित थे। बाहर से आये हुए संघ प्रमुखों को वापस जाने की जल्दी रहती ही है। अतः वे जाने से पूर्व आचार्य प्रवर से चर्चा-विचारणा हेतु समय चाहते थे। प्रवचन समाप्त होते ही सभी सभागत जैन आचार्य श्री की कृपा दृष्टि को प्राप्त करने को आगे बढ़े। श्री सीताराम जी भी आगे बढ़े और पाटे के समीप पहुंच आचार्य प्रवर से निवेदन करने लगे कि आप तो श्रीमंतों से घिरे हैं। आप तक हम कैसे पहुंचें ? सस्मित आचार्यश्री जी ने पूछा–कहो ! बात क्या है ? इस पर श्री सीताराम जी ने कहा कि कल यहां से ५-७ मील पर स्थित नागझिरी गांव में प्रसंगवश बलाईयों का विशाल एकत्रीकरण है। उक्त सुअवसर पर आप पधारें।

आचार्यश्री जी ने हठी निवेदन के पीछे छिपी विनीत धर्म प्रभावना के भाव को हृदयंगम किया और दोपहर में ही शिष्यवृन्द सहित नागझिरी प्रस्थान कर दिया। रात्रि विश्राम बलाईयों के कुलदेवता के मन्दिर के समक्ष किया और वहीं अनौपचारिक चर्चा की। प्रातः प्रवचन भी मन्दिर के सामने प्रांगण में हुआ। प्रवचन प्रारम्भ होने तक उज्जैन से संघ प्रमुख भी पहुंचने लगे। सर्वश्री मोतीलाल जी बरड़िया सरदारशहर, सुन्दर लाल जी तातेड़ बीकानेर एवं पं. श्री लालचन्द जी मुणोत के शुभागमन पर बलाई उन्हें दरी

पर बिठाने के लिए खुद जमीन पर बैठने लगे । इस पर इन तीनों ने कहा कि ऊपर उठने का संकल्प आप लोग ले रहे हैं, अतः ऊपर बैठने के अधिकारी आप हैं । आचार्यश्री जी की कृपादृष्टि से श्रावकों का व्यवहार भी कैसा स्नेह और आत्मीयता युक्त बन गया है, यह अनुभव कर बलाई हर्ष गद्गद् हो गए ।

श्रावकों की यह प्रशस्त भावना और यह स्नेहपूर्ण व्यवहार धर्मपाल समाजोन्नति के लिए नींव की मजबूती बनता चला गया । नागझिरी के इस सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए 'थली के शेर' श्री मोतीलाल जी बरड़िया ने कहा कि धर्मपालों के शील और सदाचार को देखकर मेरा मन हर्ष से गद्गद् हो गया है ।

आचार्यश्री जी के ओजस्वी प्रवचन की समाप्ति के बाद इस सम्मेलन में आए हुए ७० गांवों के मुखियाओं ने खड़े होकर विश्वास दिलाया कि हमारे ७५० परिवारों के ४५०० व्यक्ति धर्मपाल बनेंगे । आचार्य प्रवर यहां से वापस १०–११ बजे तक उज्जैन पधार गये । उज्जैन में श्री मांगीलाल जी सूर्या की अनन्य सेवा ने धर्मपालों के उत्साह को शतगुणा कर दिया ।

घोर-परिषह की ओर :

कर्मठ सेवाभावी श्री इन्द्रमुनि जी म. सा. के पास अध्ययन-रत कुछ संतों को उज्जैन में ही छोड़कर आचार्यश्री जी धर्म-प्रचार के लिए घोर-परिषह के विकट मार्ग पर बढ़ चले । उन्होंने प्रारम्भ में अपने साथ श्री कंवरचन्द जी म. सा., श्री सेवन्तकुमार जी म. सा. एवं श्री अमरमुनि जी म. सा. को लिया किन्तु बाद में सांवर गांव को आधार शिविर बनाकर जब वे अत्यन्त दुर्गम पथ में प्रविष्ट हुए तो साथ में मात्र श्री कंवरचन्द जी म. सा. को लेकर विहार को च पड़े । समीपस्थ क्षेत्रों में अति नगण्य निरामिष भोजी जन थे । अल्पतम आहार-पानी और बहुधा लंघन पर रहकर, कष्टों को पीते हुए, पशुत्व के पाप पंक में जी रहे अज्ञानी जनों को जन

सुधा पिलाते हुए, उन्हें गरिमापूर्ण मानवीय जीवन की ओर उन्मुख करते हुए आचार्यश्री जी एवं कंवरचन्द जी म. सा. विचरण करते रहे ।

इस काल में लक्ष्मणखेड़ी में १७ परिवारों के १५० व्यक्ति धर्मपाल बने । इस गांव के वलाई मुखिया श्री भैराजी पटेल पूरे क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं । अतः उनका अनुगमन करते हुए पूरा क्षेत्र ही धर्मपाल बन गया । इस प्रकार लक्ष्मणखेड़ी का यह विकट प्रवास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा । इसके बाद कजवाना में सभी ७० व्यक्ति, कायस्थखेड़ी में ८०, मालीखेड़ी में १००, गुराज में २६ और जामोदी में ७६ लोग धर्मपाल बनकर हिंसक से अहिंसक बन गये ।

इस काल में आचार्यश्री जी व श्री कंवरचन्द जी म. सा. आश्रय के अभाव में कभी केवल आम्रवृक्षों की छाया में और कभी हनुमान के चबूतरे के जीर्ण-शीर्ण विश्रामालय में रात्रि विताते रहे । यहां से फिर सांवेर आकर श्री सेवन्तमुनि जी म. सा. और श्री अमरमुनि जी म. सा. को भी साथ लेकर आचार्यश्री जी म. सा, ठाणा ४ अक्षय तृतीया हेतु उज्जैन की ओर बढ़े । मार्ग के सिलोदा व महाना गांव में क्रमशः २२६ व १५० बलाईयों ने जैनत्व स्वीकारा ।

गौभक्षक-गौरक्षक :

उज्जैन में अक्षय तृतीया के अवसर तक आचार्यश्री जी के दलितोद्धार के भागीरथ प्रयास ने सम्पूर्ण क्षेत्र में उनको मान-मर्यादा को चार चांद लगा दिये थे । हवा के पखों पर तैर कर उनके यश की सुवास सम्पूर्ण मालव क्षेत्र में व्याप्त हो चुकी थी । अतः उनसे मिलने के लिए वे वलाई आए जो पूर्व में हिन्दू थे पर अस्पृश्य व्यव्हार से व्यथित होकर अव इसाई, वहाउल्ला या मुसलमान वन चुके थे । इन पर वर्म अगीकर्त्ताओ ने अपनी व्यथा आचार्य चरण में प्रस्तुत करते हुए कहा कि सैंकड़ों पीढ़ियों से सभी अपमानों के वावजूद हिन्दुत्व के विरुद को सीने से चिपटाये हम लोग गोरक्षक थे पर अब

अपमान की आग असह्य हो जाने पर विधर्मी और गोभक्षक बन गये हैं। गोरक्षक से गोभक्षक बन जाना हमारे मनों में प्रतिक्षण शूल सा खटकता है। आपने अनेक पीड़ित जनों को राहत पहुंचाई है। क्या आप हमारा भी उद्धार करेंगे।

करुणा निर्झर झर-झर बहने लगा। आचार्यश्री जी ने ऐसे सभी समागतों को उपदेश देकर 'धर्मपाल जैन' बनाया। वे प्रमुदित हो उठे।

वरदान :

इन घटनाओं ने सम्पूर्ण समाज में हलचल मचा दी। उज्जैन आर्यसमाज के प्रमुख नेताओं ने आचार्यश्री से भेंट करके कहा कि आपने भारतीय संस्कृति की महान् सेवा की है। इस क्षेत्र में इसाई, बहाउल्ला, व मुसलमानों की प्रचार गाड़ियों की गति हमारे हृदयों पर हथौड़ों की भांति प्रहारक लगती थी। आर्यसमाज ने अपने सीमित प्रचार साधनों से इस धर्म परिवर्तन को रोकने का प्रयास भी किया पर प्रचुर साधन बल के समक्ष हम सफल नहीं हो सके। आपश्री ने सर्वथा साधनहीन और पादविहरी होकर भी विधर्मी बने जनों को पुनः साधर्मी बनाकर तथा दलितों को गले लगाकर जो महान् कार्य किया है। उससे यह पुनः सिद्ध होता है कि क्रिया सिद्धिः सत्वे भवति, महता नोपकरणे' अर्थात कार्य की सिद्धि उपकरणों के आधिक्य पर नहीं, सत्व से होती है। आप हिन्दुत्व के लिए वरदान स्वरूप हैं। हमें भी संस्कृति की सेवा का अवसर दें।

निरभिमान प्रत्युत्तर :

आचार्यश्री जी ने अपने गुणानुवाद को दुर्लक्ष्य करते हुए अपने निरभिमान प्रत्युत्तर में कहा कि यह सब मात्र एक सहज संयोग है। प्रत्येक भारतीय का जीवन उच्चादर्शों से अनुप्राणित हो, सुसंस्कारी हो, अहिंसक हो, मात्र यही मेरी कामना है। आपके सद्भाव के अनुरूप सहयोग स्नेह धर्मपालों को प्रदान करके आप भी

समाजोन्नति में सहभागी बनें ।

इस प्रकार रतलाम वर्षावास के समापन्न और अक्षय तृतीया के अवसर पर उज्जैन पदार्पण के बीच १४१ दिनों में ८७ गांवों का भ्रमण कर सहस्त्रों जनों के हृदयों से व्यसन का कलुष मिटा, सदाचार की प्राण–प्रतिष्ठा करते हुए आचार्यश्री जी ने जनजागृति का अद्भुत अपूर्व शंखनाद किया ।

चीकली सम्मेलन :

इन्दौर पहुंचने से पूर्व धर्मपाल समाज की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण घटना घटी । यह था उज्जैन से १३ किलोमीटर दूर ग्राम में चीकली में वृहत भोज के अवसर पर ७० गांवों से ११०० गणमान्य बलाई प्रतिनिधियों का ऐतिहासिक सम्मेलन । आचार्य प्रवर आमन्त्रण प्राप्त कर इस सम्मेलन में पधारे और उनके अन्तःकरण से निकले शब्दों ने उत्सुक व जिज्ञासु बलाईयों के भावुक हृदयों पर जादू-सा प्रभाव डाला । इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि—

"इस चीकली गांव में उपस्थित होने वाले ७० गांवों के करीब ११०० प्रतिनिधि लोग मांस, मदिरा, शिकार आदि कुव्यसनों का परित्याग करते हैं और साथ ही यह भी घोषणा करते हैं कि हमारी इस जाति (बलाई) में जो भी इन अभक्ष वस्तुओं का सेवन करेगा, 'जाति का अपराधी' माना जावेगा ।

इस प्रकार चीकली से सामाजिक बन्धन के रूप में इस उत्क्रान्ति ने एक अभिनव दिशा ग्रहण की ।

मक्सी की ओर :

यहां से आचार्यश्री जी गांवों-कस्बों यथा बड़ोद, डग, आगर

शाजापुर और देवास में धर्म जागरण करते हुए 'मक्सी' पधारे। इस तीर्थ स्थल पर अनेक बलाईयों ने धर्मपाल बन, जैनत्व स्वीकारा और यह मक्सी आज भी धर्मपाल की तपो भूमि के रूप में समादृत है।

इन्दौर में महत्वपूर्ण प्रसंग :

चातुमासार्थ नगर प्रवेश के समय वैष्णव, सिख, सिंधी व मुसलमान आदि सभी वर्णों और धर्मों के जैनेत्तर जनों की प्रभूत उपस्थिति ने आचार्यश्री जी के सर्वधर्मसमभाव मूलक चरित्र को उजागर किया। प्रतिदिन प्रवचन में उनकी सात्विक वाणी उनके व्यक्तित्व को निखारती गई। इस वर्षावास में धर्मपालों की दृष्टि से कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग उपस्थित हुए। दलितोद्धार की इस योजना के सरस परिणामों की ओर आकृष्ट होकर मध्यप्रदेश शासन के खाद्य मन्त्री श्री गौतम शर्मा, योजनामन्त्री श्री मिश्रीलाल गंगवाल और यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के मन्त्रिमंडलीय सदस्य इस्पात व खान उपमन्त्री (वर्तमान में गृहमन्त्री, भारत सरकार) श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने आचार्यश्री जी से भेंट की और इस प्रयास हेतु अपने आभार को प्रदर्शित किया।

प्रथम धर्मपाल सम्मेलन ८ अक्टूबर ६४ :

वैसे तो पूरे चातुर्मास काल में धर्मपालों का आवागमन बना रहा। पर संघ अधिवेशन के अवसर पर दि. ८-१०-६४ को आयोजित प्रथम धर्मपाल सम्मेलन प्रवृत्ति के उद्‌भव काल का एक महत्वपूर्ण सीमा चिन्ह सिद्ध हुआ। इस सम्मेलन को सम्बोधित करने के लिए मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री पारस्कर स्वयं पधारे। उन्होंने धर्मपाल की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि जो कार्य शासन नहीं कर पाता उसी असम्भव को सन्त सम्भव बना देते हैं।

इस सम्मेलन से धर्मपालों की स्थिति और स्वरूप के नि रण में भी महत्वपूर्ण दिशा संकेत प्राप्त हुए। इसी समय धर्मप

प्रवृत्ति को व्यवस्थित करने के प्रयत्न प्रारम्भ हुए ।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता कलकत्ता के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री दीचन्द जी कांकरिया ने की । सम्मेलन के पश्चात् राज्यपाल श्री पास्कर जी की आचार्यश्री जी से २० मिनट की अन्तरंग चर्चा हुई, जिसमें शुद्ध संस्कारों के बीजारोपण हेतु आचार्यश्री की प्रशंसा की । इस पर आचार्य प्रवर ने कहा कि यह तो मेरा सात्विक कर्त्तव्य था । बीजारोपण तो हो गया है अब इसके प्रवर्धन में आपका, शासन व सम्पूर्ण समाज का सहयोग अपेक्षित है, जिससे ये नवदीक्षित १५००० धर्मपाल अपने को सुदृढ़ बना सकें ।

इसी वर्षावास में धर्मपालों ने जिस उत्साह, जागरुकता और अदम्य धर्म भावना का प्रदर्शन किया और कार्य ने जैसा व्यापक स्वरूप तब तक धारण कर लिया था उसका अनुमान आप श्री पंचान गुजराती बलाईयान द्वारा जारी निम्न सूचना से सहज ही लगा सकते हैं

आदरणीय समस्त गुजराती बलाई भाईयों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि पूजनीय महात्मा गांधी की प्रेरणा से हमारे रहन सहन और खान-पान में कुछ तबदीली आकर सुधार हुआ, लेकिन फिर भी हम ग्रामीण भाईयों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है यह दुःख की बात है । लेकिन विशेष हर्ष की बात यह है कि हमारे भाग्योदय से आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म. सा. जब नागदा पधारे और नागदा से गुराड़िया पधारे तब यहां के गुजराती बलाई भाईयों ने आचार्य श्री जी के चरणों में प्रार्थना की, हमारा गुजराती बलाई समाज पिछड़ा हुआ माना जाता है । आपश्री इसका उद्धार करें ।

"आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आप मांस, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, आत्महत्या आदि बुरे व्यसनों को प्राणप्रण से पूर्णरुपेण त्याग करें, तो उन्नति हो सकती है । हमने आचार्य प्रवर की आज्ञा के मुताबिक चलने की प्रतिज्ञा ली । साथ ही साथ ही आपश्री से गुरु-दीक्षा लेकर

जैन धर्म स्वीकार किया और यह निश्चय किया कि हमारा समाज अब तक गुजराती बलाई कहलाता था, वह अब "धर्मपाल जैन" के नाम से कहा जावेगा। इसके बाद आचार्य प्रवर गुराड़िया से आक्या, ताल, लोबो दया, डेमचो, नारायण, खेड़ो, बोरखेड़ा, धुमहेड़ा, बरखेड़ा, मक्सी आदि इन्दौर, उज्जैन व रतलाम जिले के ग्रामों में विचरते हुए अनेक गुजराती बलाई भाईयों के दुर्व्यसनों को छुड़ा कर उनको जैन बनाते हुए इन्दौर पधार गये हैं और चौमासे के चार महीनों तक इन्दौर ही बिराजेंगे।

"गुजराती बलाइयान अनेक गांवों में रहते हैं और उनकी संख्या करीब एक लाख से ऊपर है। उन सबकी सेवा में हम नीचे दस्तखत करने वाले धर्मपाल जैन (गुजरात बलाई) प्रार्थना करते हैं के आप भी मांस-मदिरा आदि कुव्यसनों को त्याग कर धर्मपाल जैन ानें। इससे हमारे समाज की हर तरह से उन्नति होगी और हम ाम्मामें की दृष्टि से देखे जावेंगे।

जिला उज्जैन :

धुलजीरामजी, पालखेडी। शंकरलालजी, गनपतजी, उमरना। नन्दरामजी, रूनखेड़ा। कंवरलालजी जीवाजी, उज्जैन। भागीरथजी हीराजी, बोरखेड़ा। धुलाजी, केवलजी, थावरजी, धन्नाजी गुराड़िया। गंगारामजी, सीतारामजी, नागदा। पुनाजी, गंगारामजी, राराणखेडी। रामजी, भूवानजी, ग्राम ढेलची। काजूजी, पीराजी, लक्ष्मीनारायणजी, लेकोडा। हरजी, लसुड़िया। नगजीरामजी, कमटाना। गम्भीरजी, गनपतजी, नाथाजी, लिमवास। शोभारामजी, झलारिया। नानूरामजी, रूगनाथजी, रामाजी, सोनेड़ा। हीरालालजी, अनोपजी, भटेरा। भूवानजी, आकिया। किशनजी, झरादा। भेराजी, गनपतजी, हीड़ो। राधुजी, जागीरपुर नानूरामजी, खेड़ा माजगामडनी, नाथाजी उंकारलालजी, पूनाजी, संडोदा। मांगीलालजी, आडेसिंगा। भैरूलालजी, वालोदा मेराजी, गोपालजी, वालारामजी, नायन। सुखरामजी, पिनली दयारामजी, धुलजी, आकिया। वादीरामजी, नन्दरामजी, व...

लालाजी, हलाणा । वावरुजी, वुचाखेडी । धुलजी, रामजी, पालखेडी । गंगारामजी, शंकरजी, मताना । देवाजी, नागभिरी । किसनजी, मुन्नालालजी, सालारखेडी । अमराजी, कुंवरजी, पुवारिया । वगड़ीरामजी, शंकरजी, वमलावद । शंकरलालजी, कानाजी, पलदुना । गोपालजी, चन्देसरा । धासीरामजी, सकरवासा । आकिया धुलाजीनन्दरामजी, नलवा । भूवानजी, भोकरा । गंगारामजी, रावजी, पीपलिया । पीराजी, रूघनाथजी, टावा । हीडूजी, सावजी, पीपलिया । रूपाजी, सालोदा । नागजीरामजी, ड़नालड़ा । हरीवजी, नाथूजी, मोरना । अमरजी, भीमपूरा । धुलाजी, नानाखेड़ी । धुलाजी, सेमलिया । कालूजी, भेसला । गनपतजी, पासेलोड । धनाजी, जोडूमा ।

जिला रतलाम :

घासीरामजी, करमदी । फकीरचन्दजी, धराड़ । नन्दरामजी, बीबडोद । नारायणजी, नन्दाजी, डेलनपुर । हरिरामजी, गुडखेड़ा । भवपनजी, नाथाजी, वेराखेड़ी । मेराजी, गनवानिया । नरसिंगजी, मोतीजी, रोहल । रजला, रामचन्दजी, धुलाजी, नानखेड़ा । उंकारलालजी, मन्नालालजी, हीरालालजी, पीपलौदा । उमाजी, जैठाना । रूपाजी, मोतीजी, कंवरजी, लिम्वोदिया । नाथाजी, हंसराजजी, गंअरबाड़िया । नागुजी, ताजखेड़ा । अमराजी, तालखजुरिया । कनीरामजी, सरूपजी, नागुंजी, लोगरजी, कडाई, अरनिया । गंगारामजी, किसनाजी, गुराड़िया । बीसनजी, पालखेड़ा ।

जिला इन्दौर देवास :

पटेल पुनाजी, मेराजी, लखमनखेड़ी । जामुदी, मोहनलालजी, सीधाजी, सोलसदा । रूगनाथजी, सकासीरामजी, जेरामजी, पीराजी, बीसाखेड़ी । कालूरामजी, संरूज । हीरालालजी, सालोदा । धुलजीरामजी, पानोड़ । धुलजी, हथुनिया । नाथूलालजी, गनपतजी, दयाखेड़ा । गोरधनलालजी, काजियाखेड़ा । सीवाजी, कुंवरजी हंसाखेडी । शंकरलालजी, खामेदा । परतावजी, रामजी, कासीरामजी, वरखेड़ी । पटेल धुलाजी, दीलाजी,

लसुडिया। पखतजी, सोवाजी, बोलावली। नगाजी, पनालालजी, खातीखेडी। भुवानजी, कालूरामजी टीगोरिया। कंचनजी, बलबनजी, सिधनाजी, परताबजी, बिलाणा। गनपतजी, बडोहिया। छोगालालजी, केलोद। धनालालजी, धनखेड़ी। दोलाजी, वेरागर। पणवलालजी, कालूरामजी, धन्नाजी, जाख्या। हीराजी, हरसिंगजी, आमलीखेड़ा। पीराजी, वावला-जागीर। सेवारामजी, मोड़की।

जिला मन्दसौर, धार, बड़नगर :

तुलसीरामजी, भैरूलालजी, मोडीरामजी, गोविन्दजी, मन्दसौर। देवीलालजी, कन्हैयालालजी, तुलसीरामजी, सीतारामजी, सेरूलालजी, लूधना। भगवानजी, राकोदापलूदना। शंकरलालजी, भागीरथजी, सोभाखेड़ी। सीतारामजी, धुलाजी, सेमलाया। कालूजी, भेसला। गनपतजी, पासलोद। नानुरामजी, सोगड़। रामाजी, ढ़वाला। नागुजी जेलेखेड़ी। नगुजी, मनीरामजी, कन्हैयालालजी, भैरूलालजी, देवची। हमीजी, भील, नागदा। शंकरलालजी, रोजेटा-संडला। डूंगाजी, कुडावन। सालरामजी, कालूरामजी, जावरा।

जिला शाजापुर :

नन्दरामजी, कचरुजी, रूगनाथजी, मक्सी। थावरजी, कासीरामजी, कठासीया। भागीरथजी, करंज। गनपतजी, वणजारी। हमीरजी, गनपतजी, रुड़की, नन्दरामजी, सीधनाथजी, सीरोलिया। हरचन्दजी, भमरी। नानूरामजी, मांगीलालजी चोसला। अमरसिहजी, हीरालालजी, धार। चम्पालालजी, मोतीलालजी, राजगढ़।
नोट :— आचार्य श्री जी म. सा इन्दौर—राजमोहल्ला में स्थित खालसा कन्या-माध्यमिक विद्यालय में विराजते हैं।

गीता-भवन :

इन्दौर के गीता भवन में बाबा बालमुकुन्द जी (अव-

के आग्रह पर आचार्यश्री जी के कुछ प्रवचन हुए । इस काल में बाबा-जी और गीता भवन के साथ स्थापित आचार्यश्री के मधुर सम्बन्धों ने आने वाले समय में धर्मपालों को सर्वप्रथम चल चिकित्सालय की सुविधा सुलभ कराई तथा एक श्रेष्ठ जनाधार प्रदान किया ।

हाट-पीपलिया :

चातुर्मास के पश्चात् वर्ती विहार में भी स्थान-स्थान पर जैन-जैनेत्तर जनों ने धर्मपाल उद्धारक के रूप में आचार्यश्री जी का स्वागत किया । हाट-पीपलिया में तत्कालीन राजनीतिक पार्टियों की ओर से स्थानीय जनसंघ के अध्यक्ष श्री बस्तीरामजी माली ने दलितोद्धार के इस कार्य में सर्व भावेन का सहयोग का विश्वास दिलाया ।

इस प्रकार धर्मपाल प्रवृत्ति का सुपुनीत उद्भव सम्पूर्ण समाज के आत्मिक सहयोग के बीच लगभग १ वर्ष के आचार्यश्री जी के इ मालव विहार में सुसम्पादित हुआ । इस अत्यन्त कठिन कार्य में सभ का सहयोग प्राप्त हो जाना आचार्यश्री नानालाल जी म. सा. के अप्र तिम संगठन कौशल और मानवीय करुणा व सवेदना के सच्ची एका त्म का चमत्कारिक परिणाम था । आचार्यत्व के उषा काल में इ महान् कार्य के बीजारोपण ने जन-जन को उनके असाधारण कृति त्व का विश्वास दिलाया है ।
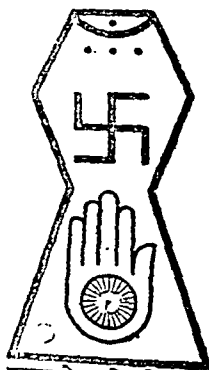
विकेन्द्रित व्यवस्था का चमत्कारिक परिणाम :

△

कार्य क्षेत्र और कार्य को ५ भागों में विभाजित करने और पाचों विभागों की क्षेत्रीय धर्मपाल प्रचार-प्रसार समितियों के निर्माण से कार्यकर्त्ताओं को एक विशाल टोली शीर्षोन्मुख पिरामिड की भांति आकार ग्रहण करने लगी और अत्यल्प काल में ही भव्य कार्यक्रमों ने विकेन्द्रीकरण के निर्णय की दूरदर्शिता को प्रमाणित कर दिया। केन्द्रीय कार्यालय से संघ मन्त्री द्वारा निर्देशित ५ सूत्री योजना १. सर्वेक्षण २. शिक्षण ३. प्रशिक्षण ४. निरीक्षण और परीक्षण को साकार रूप प्रदान करने में क्षेत्रीय संयोजक जुट गये। संघ अध्यक्ष, धर्मपाल समिति अध्यक्ष एवं अन्य प्रमुखों के एक व्यापक प्रवास कार्यक्रम का दि. २७ से २९ दिसम्बर तक आयोजन करने और उससे पूर्व क्षेत्रीय संयोजकों द्वारा अपने क्षेत्र का प्रवास पूर्ण कर लेने के निश्चय ने कार्यकर्त्ताओं की अस्मिता का जो आह्वान किया था, उसका सकारात्मक उत्तर मालव अचल में फैले संघ निष्ठ सुश्रावकों एवं व्रती धर्मपाल वन्धुओं ने दिया।

बहुविध कार्यक्रमों की धूम :

१७ अगस्त ७५ को बदनावर में पद्मश्री (स्व.) डॉ नन्दलालजी बोरदिया की पहल पर निदान, परीक्षण औषध दान हेतु आयोजित चिकित्सा शिविर से १०२ रोगियों ने लाभ उठाया। इससे पूर्व दिनांक २ अगस्त को बिलपांक गांव में रतलाम क्षेत्रीय समिति के ११ सदस्यों ने सामूहिक प्रवास किया।

इन्दौर में मक्सी क्षेत्रीय धर्मपालों को प्रशिक्षित करने हेतु दि. १ अगस्त से ८ अगस्त तक पंडित रत्न श्री [illegible] मुनिजी म. सा.

के सान्निध्य में आयोजित शिविर ने धर्म प्रभावना की आशाती अभिवृद्धि की ।

रतलाम के श्री चम्पालाल जी पिरोदिया और उनकी ध पत्नी श्रीमती धूरी वहिन पिरोदिया ने दि. १० जुलाई से ६ अगस तक पूरे एक माह तक धर्मपालों के ४८ गांवों में पदयात्रा कर ५० धर्मपालों सहित १०३४ लोगों को व्यसन मुक्त वनाया । इस पदया का महत्व इसी बात से आंका जा सकता है कि यात्रा समापन समा रोह मधुर व्याख्यानी श्री कंवरचन्द जी म. सा. के सान्निध्य में सम्प हुआ ।

मन्दसौर क्षेत्र के सीतामऊ, नितरोदा, धमनार व दलौदा तथ खाचरोद क्षेत्र के उमरना, चौकी और बुडावन में नई पाठशाला खोली गईं ।

इन्दौर में अध्यक्ष श्री गणपतराज जी बोहरा की अध्यक्षता मे दि. ३१-८ को समिति बैठक आहूत की गई जिसे पंडित रत्न श्री सम्पत मुनिजी म. सा. के अनुभूत सुझावों का भी लाभ प्राप्त हुआ । केन्द्रीय कार्यालय से संघमन्त्री भंवरलाल कोठारी के अतिरिक्त सर्वश्री गोकुलचन्द जी सूर्या, श्री पी. सी. चौपड़ा, हीरालाल जी नांदेचा, समीरमल जी कांठेड़,समाजसेवी मानवमुनि जी, वीरेन्द्र जी कोठारी, उज्जैन, झमकलाल जी घोटा और श्रीमती कमला चौपड़ा ने बैठक में भाग लिया । इस बैठक में प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए श्री समीरमल जी कांठेड़ ने रतलाम क्षेत्र के कार्य को प्रेरक व आदर्श बताया । उन्होंने मक्सी क्षेत्र के ५० धर्मपाल शिक्षकों को इन्दौर में प्रशिक्षित करने का सुझाव रखा, जिसे स्वीकारा गया ।

संघ मन्त्री भंवरलाल जी कोठारी ने इस वर्ष पर्यूषण काल धर्मपालों के बीच विताया इससे धर्मपालों में संस्कारों को उत्प्रेरण मिला और प्रवृत्ति में सक्रियता की सजीव रूपरेखा उभर कर सामने आई ।

खाचरोद क्षेत्रीय समिति :

दि. ५ सितम्बर को मन्त्री भंवरलाल कोठारी के सान्निध्य में सेठ श्री हीरालाल जी नांदेचा के संयोजकत्व में सर्वश्री सूरजमल जी बरखेड़ावाले, मानकलाल जी बुपक्या, चांदमल जी कोठारी, प्रकाशचन्द्र जी बरखेड़ा, पारसमल जी भटेवरा व हस्तीमल जी दलाल को सदस्य मनोनीत कर क्षेत्रीय समिति का निर्माण पूर्ण किया ।

रतलाम में श्री पी. सी. चौपड़ा की अध्यक्षता में समिति बैठक में यह निश्चय किया गया कि जिस-जिस गांव में धर्मपाल पाठशाला चलती है, एक-एक प्रमुख सदस्य सम्हालने की जिम्मेवारी ले । बैठक के पश्चात् श्री कवरचन्द जी म. सा. का आशीर्वाद ले प्रमुख गण मालव से थार तक समिति गतिविधियों की जानकारी देने निकल पड़े ।

इन्दौर में निर्धारित योजनानुसार दि. २१-९ से २८-९ तक जावरा, मक्सी, मन्दसौर व रतलाम के धर्मपाल शिक्षकों का प्रशिक्षण शिविर पंडित रत्न श्री सम्पत मुनि जी म. सा. के सान्निध्य में आयोजित किया गया, जिसमें ४५ शिक्षकों ने भाग लिया । शिविर को मध्यप्रदेश के राजनेता श्री मिश्रीलाल जी गगवाल, गोकुलचन्द जों सूर्या, हीरालाल जी नांदेचा, समीरमल जी कांठेड़ व अनेक धर्मपालों ने सम्बोधित किया । श्रीमती यशोदा देवी बोहरा ने शिविरार्थियों से परीक्षात्मक प्रश्न पूछे । श्री गणपतराज जी बोहरा ने श्री सम्पत मुनि जी म. सा. के सक्षम मार्गदर्शन एवं अथक परिश्रम के प्रति श्रद्धावनत आभार प्रकट किया ।

जावरा क्षेत्र के धर्मपालों ने तत्कालीन मुख्यमन्त्री मध्यप्रदेश श्री प्रकाशचन्द्र सेठी के प्रवास में 'धर्मपाल स्वागत' के माध्यम से उन्हें प्रवृत्ति से परिचित कराया ।

संघ प्रमुखों के प्रवास की पूर्व तैयारियां :

संघ के लिए यह गर्व और आत्मिक सन्तोष का हेतु है कि प्रधान कार्यालय द्वारा निर्मित योजनाओं को ज्यों का त्यों लागू करने के लिए मालव क्षेत्र में प्रवृत्ति कार्यकर्त्ताओं ने अहर्निश कार्य किया। दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आयोजित प्रवास को सफल बनाने के लिए ३०० वर्ग मील क्षेत्र में विस्तीर्ण भूभाग को कार्यकर्ताओं ने समुद्रमंथन की भांति मथना प्रारम्भ कर दिया।

मन्दसौर के क्षेत्रीय संयोजक श्री कन्हैयालाल जी मेहता, समाजसेवी श्री मानवमुनि जी व श्री अजीत कांठेड़ ने सीतामऊ, डिगांव, बिलांभी आदि का और खाचरोद क्षेत्र में बोरखेड़ा आदि का वयोवृद्ध सेठ श्री हीरालाल जी नांदेचा (संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष) मयाचन्द जी कांठेड़ व मानव मुनिजी ने तथा नई बस्ती, पिपलोदा, सेजावता, व भूनेड़ा, लुहारी व काबुलखेड़ी का प्रवास जावरा क्षेत्र में मानवमुनि जी, श्री कांठेड़ व श्री कर्णावट ने पूरा किया। सभी स्थानों पर शाला निरीक्षण व काबुलखेड़ी में अमृतलाल जी धर्मपाल के यहां मौसर के प्रसंग से सम्मेलन किया गया, जिसमें २५ गांवों के ५०० धर्मपालों ने भाग लिया। भगत अंबाराम जी व कानीराम जी घामड़ी आदि ने अपने विचार रखे। श्री कांठेड़ ने साथियों सहित ४ दिसंवर को पुनः सरसी, उकेड़िया व केरवासा आदि का प्रवास किया।

देशनोक धर्मपाल सम्मेलन :

अगस्त से प्रारंभ हुए कार्यक्रमों में एक प्रेरक आयाम जोड़ा परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के सान्निध्य में संपन्न हुए देशनोक धर्मपाल सम्मेलन ने। सम्मेलन तक क्षेत्र की ६० शालाओं में २००० विद्यार्थी पढ़ने व धर्मज्ञान सीखने लग गए थे। १२ धर्मपाल छात्र कानोड़ में पढ़ने लगे थे व धर्मपालों से प्रेरित हो गुर्जर समाज की भगवान देवनारायण के समक्ष १८ नियमों की शपथ ले चुका था। संघ अधिवेशन के साथ आयोजित सम्मेलन में गुराड़िया की बहनों ने भावपूर्ण भजनों 'गुरुजी आप वेगा पधारो म्हारा मालवा' आदि द्वारा अन्तःकरण की चाह को आचार्य श्री के चरणों में निवेदित किया।

इस अवसर पर अत्यंत प्रभावित हो उड़ीसा संघ ने प्रवृत्ति को ११०० रु. भेंट किए ।

गौरवशाली क्षेत्रीय सम्मेलन :

चिर प्रतीक्षित वर्षान्त आ पहुंचा और दि. २६ से २९ दिसंबर तक के धर्मपाल क्षेत्रीय प्रवास हेतु संघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरड़िया, प्रवृत्ति अध्यक्ष श्री बोहरा, संघमंत्री **भंवरलाल कोठारी** आदि आ पहुंचे । केरवासा में परिचर्चा कर दि. २७. १२ को प्रवासी दल **सरसी के क्षेत्रीय** सम्मेलन में आ पहुंचा । शासकीय माध्यमिक शाला के प्रांगण में विशाल मंच पर रतलाम जिले के जिलाधीश श्री ए. बी. श्री वास्तव, जिला शिक्षाधिकारी शिवशंकर शर्मा, अल्प बचत निदेशक व उपनिदेशक, जावरा खंड अधिकारी सहित जिलास्तरीय प्रमुख शासकीय अधिकारी विराजमान थे। जिलाधीश श्री श्री वास्तव ने सम्मेलन को सामाजिक चेतना के जागरण हेतु बधाई दी । संघ-प्रमुखों ने भी अपने विचार रखे ।

इस गौरवशाली सम्मेलन से प्रवृत्ति की गति को पंख लग गये पंडित रत्न श्री सम्पत मुनि जी म. सा. ने धर्मपालों को अपना मंगल आर्शीवाद प्रदान किया । श्री समीरमल जी कांठेड़ का ओजस्वी संयोजन देखते ही बनता था । ऐसे विशाल आयोजनों की सार्थकता के लिए आयोजकों को कितना श्रम करना पड़ता है, कल्पना की जा सकती है । शाला शिक्षक श्री गोवर्धन शर्मा का सहयोग उल्लेखनीय रहा ।

बोरखेड़ा में दि. २८. १२ को नागदा खाचरोद क्षेत्र का क्षेत्रीय सम्मेलन संयोजक श्री हीरालाल जी नांदेचा के अथक प्रयत्नों का मूर्तिमान रूप था । स्वागत द्वारों, बंदनवारों से प्रवासियों की अगवानी की गई । धर्मपालों सर्व श्री शंकर जी उगरना, [illegible] गिनवानिया, पन्नालाल जी डेलनपुर, [illegible] जी [illegible], [illegible] भीमपुरा हीरालाल मकवाना, रामलाल आदि ने स्वागत में गीत

प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय समितियां बन जाने के बाद पुराने सभी कार्यकर्त्ता पहली बार एक स्थान पर परस्पर मिले थे। अतः स्वागत करते समय श्री घलजी जैन की आंखें छलछला आई उन्होंने कठिन यात्रा मार्ग को लक्ष्य कर कहा 'आवा में संकट आयो, अणी बदले क्षमा चावूं।' श्री वीरन्द्र कोठारी उज्जैन ने अन्य शेष जनों को भी धर्मपाल बनाने हेतु हाथों से प्याली और छुरी छुड़ाने का आह्वान किया। साधुजीवन जय-२, जैन धर्म जय-जय' गीत और मानवमुनिजी के प्रेरक प्रवचन हुए।

श्री समीरमल जी कांठेड़ ने भावुक स्वरों में नागदा क्षेत्र को धर्मपाल की आत्मा और तीर्थभूमि बताते हुए कहा कि यहां कि एक-एक झोंपड़ी से प्यार की आवाज आती है। यहां धर्मपाल सुश्रावकों की अटट श्रृंखला है। सारा भारत यहां मस्तक झुकाता रहेगा।

श्री गोकुल चंद जी सूर्या ने कहा कि धर्म में जाति बंधन नहीं होता। आने वाली पीढ़ीयां आजके धर्मपालों को आदर्श रूप में याद करेगी। हर्ष के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सीतामऊ में में तीसरे क्षेत्रीय सम्मेलन के लिए पहुंचने से पूर्व संघ व धर्मपाल प्रमुखों ने मार्ग में पं. र. श्री सम्पत मुनि जी म. सा. के दर्शन किए और घमनार, धुंधड़का और डिगांव में जन सम्पर्क किया। सीतामऊ पहुंचने पर इस एतिहासिक नगर के मार्गों पर शोभायात्रा निकाली गई। श्री केवलचंद जी मूथा रायपुर की अध्यक्षता में सम्मेलन प्रारंभ हुआ। 'फैलादो जग में जैन धर्म नानागुरु का फरमाना है' एवं 'कदी म्हांनै तारोगा' गीतों के बीच श्री बोहरा जी ने कहा कि कर्त्तव्य ही धर्म है आप भी अपने कर्त्तव्य का पालन करें। सर्व श्री कन्हैयालाल जी मेहता, अशोक नलवाया, श्रीमती कंचन देवी मेहता एवं श्रीमती भंवरी देवी मूथा रायपुर ने भी अपने विचार रखे। श्रीमती यशोदा देवी बोहरा, श्रीमती शांता देवी मेहता, श्री रुघनाथ व अन्य धर्मपालों ने अपने अनुभव सुनाए।

प्रवासों की अन्तहीन श्रृंखला :

प्रवृति कार्य वेग पकड़ कर प्रगति के पथ पर सरपट दौड़ने लगा था और कार्यकर्त्ताओं का उत्साह इस कदर बढ़ चुका था कि इन व्यापक स्तरीय आयोजनों के बाद भी प्रवासों की झड़ी लगी रही। अनेक प्रकार के शुभ कार्य होते रहे। कार्यकर्त्ता प्रवृत्ति क्षेत्र की छोटी से छोटी घटना में सहभागी बनने और उसके माध्यम से प्रवृत्ति की नींव को मजबूत बनाने के लिए कमर कस कर जुट गए। उन्होंने मौसर को 'श्रद्धांजलि सभा' व औसर को 'स्नेह-सम्मेलन', विवाह को 'आशीर्वाद-समारोह' के रूप में परिवर्तित कर उत्तम संस्कार निर्माण के स्वप्न को साकार बनाना प्रारम्भ कर दिया।

इन्हीं निमित्तों से ३१-१२-७५ को बड़ावदा में ५० गांवों के बन्धु-भगिनी, ७-१-७६ को धामेड़ी व रूलकी की शाला का निरीक्षण, १२-१ को सरसी, १६-१ को खोखरा व १८-१ को शिवपुर-रामपुरिया में धर्मपालों के स्नेह सम्मेलन हुए।

७ मार्च ७६ को शीला-भवन रतलाम में समिति बैठक आगामी धर्म जागरण, जीवन साधना और संस्कार निर्माण पदयात्रा की सफलता हेतु आयोजित की गई जिसमें समिति अध्यक्ष श्री बोहरा जी संघ-प्रमुख श्री सरदारमल जी कांकरिया सहित समिति प्रमुख व धर्म-पाल बन्धु उपस्थित थे।

मार्च में ही रुघनाथगढ़ में ४ विवाहों के मौके पर आशीर्वाद समारोह आयोजित किये गये

९ मार्च को श्री वल्लभ कुंवर जी म. सा. एवं श्री हर्ष-कंवर जी म. सा. ने सेजावता गांव से धर्मपालों को धर्मलाभ देने का क्रम प्रारम्भ किया जो एक सप्ताह तक चला।

पदयात्रा :

इसी माह में १५ गांवों जावरा, सेजावता, भूतेड़ा, के

केरवासा, डोडियाणा, सरसी, रुघनाथगढ़, गुणावद, सेमलिया, नामली, पंचेड़, पलसोड़ा एवं डेलनपुर होती हुई पदयात्रा रतलाम पहुंची। यात्रा को सर्वश्री गुमानमल जी चोरड़िया, गणपतराज जी वोहरा, संघ मन्त्री भंवरलाल कोठारी, प्रमुखगण सर्वश्री सरदारमल जी कांकरिया, जयपुर के रत्न व्यवसायी व शास्त्रज्ञाता सरलमना श्री श्रीचन्द जी गोलछा, मानव मुनिजी, समीरमल जी कांठेड़, पी. सी. चौपड़ा, महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती फूलकुमारी कांकरिया व मन्त्री श्रीमती शांता मेहता ने नेतृत्व और मार्गदर्शन प्रदान किया।

यात्रा में डा० बोरदिया जी ने सर्व श्री डा० प्रकाश, डा० सोनी बिरमावल व शांतिलाल जी मूणत की सहायता से १००० रोगियों की चिकित्सा की।

रतलाम क्षेत्रीय समिति :

यात्राकाल में ही रतलाम क्षेत्रीय समिति के चुनाव सम्पन्न हुए तथा श्री पी. सी. चौपड़ा को सयोजक, श्री झमकलाल घोटा को सहकोषाध्यक्ष, श्री चन्दनमल जी पटवा को मन्त्री, श्री आनन्दीलाल जी भुरार को सहमन्त्री व सर्वश्री उमरावमल लोढ़ा, रखबचन्द कटारिया, शांतिलाल जी सीयार, हस्तीमल मुणत, कन्हैयालाल बोथरा, कोमलबाई मूणत, कान्ता कटारिया, जसु बाई घोटा व चन्द्र बाई मुणत को सदस्य मनोनीत किया गया।

महावीर जयन्ती व अक्षय तृतीया सन् ७६ :

महावीर जयन्ती पर खाचरोद-नागदा के कार्यकर्त्ताओं ने मंडावदा, घाड़ी, सोनेड़ा, पलसाड़ाका एवं मक्षी क्षेत्र का ३ भिन्न दलों में विभक्त होकर क्रमश श्री वीरेन्द्र कोठारी, श्री प्रकाशचन्द्र सूर्या और श्री कांतिलाल सूर्या के नेतृत्व में ताजपुर भैंसोदा, बरखेड़ा, दत्तोतर, मक्षी, कायथा, नाहरखेड़ी, लसूलड़ी, बिछरोद, भीमपुरा, रूलकी, चौसला व सरोलिया आदि का व्यापक प्रवास किया गया।

श्री प्रकाश सूर्या ने ताजपुर में कूप निर्माण और श्री कांति-
ाल सूर्या ने रूलकी में समता-भवन निर्माण पर विचार-विमर्श
कया ।

शपुर में अक्षय तृतीया के अवसर पर :

श्री कंवर पंडित रत्न श्री प्रेम मुनि जी म. सा., विदुषी
ाहासती श्री मंगलाकवर जी व महासती श्री चंचलकंवर जी द्वारा
ार्मपालों को प्रबोधित किया गया । इसी सुअवसर पर क्षेत्रीय समिति
ंयोजक श्री कन्हैयालाल जी मेहता ने १५ मई से मन्दसौर में धर्म-
ाल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर लगाने के निश्चय की घोषणा की व श्री
अशोक नलवाया ने व्यवस्था परक विचार किया ।

इन्हीं दिनों बोहरा दम्पत्ति ने जावरा क्षेत्रीय स्नेह सम्मेलनों
ं अपने सात्विक उद्बोधनों द्वारा धर्मपालों को अनमोल प्रेरणा दी ।

६ मई को मक्षी के धर्मपाल मोहल्ले में गीता-भवन इन्दौर
के सहयोग से स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें
सभी समाजों के ६०० स्त्री-पुरुषों के स्वास्थ्य की जांच की गई ।

फिर व्यापक क्षेत्रीय प्रवास :

मात्र ६ माह के अतराल से अर्थात् २७, २८ व २६ दिस-
म्बर ७५ के बाद १०, ११, १२, व १३ जून ७६ की तिथियों में फिर
से संघ-प्रमुखों के व्यापक प्रवास व क्षेत्रीय सम्मेलनों के आयोजनों की
घोषणा कर दी गई । घोषणा को क्रियान्वित करने निर्धारित समय
पर संघ प्रमुख कर्मभूमि धर्मपाल क्षेत्र में आ पहुंचे ।

मूसलाधार वर्षा में क्षेत्रीय सम्मेलन :

दि. १० व ११ जून की तिथियां नागदा क्षेत्रीय ग्रामों

प्रवास हेतु निर्धारित थीं । इस क्षेत्र का क्षेत्रीय सम्मेलन दि. १०-६ को धर्मपाल की उद्भव स्थली गुराड़िया में आयोजित होना था किन्तु निरन्तर मूसलाधार वर्षा से गुराड़िया पहुंचने का कोई मार्ग शेष न रहा । अतः गुराड़िया के स्थान पर नागदा में आयोजन हुआ । यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि भारी वर्षा के बीच भी ५० से अधिक गांवों के धर्मपाल बन्धु सम्मेलन में आ पहुंचे । केवल धर्मपाल ही बरसात में नहीं पहुंचे, प्रवृत्ति अध्यक्ष श्री गणपतराज जी बोहरा भी वर्षा में गिर पड़े । हाथ में नौ टांके आये पर निश्चित समय अपनी प्रशांत व सौम्यमुद्रा में मंच पर उन्हें बैठा पाकर सभा के हर्ष का पार नहीं रहा ।

कवि मन गा उठा :

आंधी क्या है तूफान मिले, चाहे जितने व्यवधान मिले
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है—

इन भावनाओं के आधार पर प्रतिष्ठित होने से ही प्रवृत्ति का भविष्य उज्जवल है ।

सर्वप्रथम अशोककुमार जी दलाल खाचरोद व बापूलाल जी चोरड़िया नागदा, हीरालाल जी नांदेचा, समीरमल जी कांठेड़, मयाचन्द जी कांठेड़, मनोहरलाल जी कांठेड़, विमल चौधरी, धर्मपाल बन्धु सर्वश्री रमेश गुराड़िया, दूधा जी लसूड़िया, पूनाजी पालकी, ओंकार जी नेतवास, शंकर जी, धूलजी बोरखेड़ा, धुल्लाजी अंतरालिया व अम्बाराम जी नागझिरी आदि ने स्वागत किया । श्री धूलजी भाई जैन साहब ने स्वागत करते हुए कहा कि अन्धेरे में सूर्य के प्रकाश की भांति हमें आचार्य श्री जी प्राप्त हुए और अब आप जान जोखम में डालकर भी हमसे मिलने व हमें सम्हालने आते हैं । हम परम सौभाग्यशाली हैं ।

श्री समीरमल जी कांठेड़ ने कहा कि 'जल में रहकर भी

मछली प्यासी है' अर्थात् समाज में रहकर भी आपको सम्मान नहीं मिला। धर्मपाल प्रवृत्ति आपकी सम्मान, समता, व आर्थिक विकास की प्यास मिटायेगी। श्रीमती यशोदा देवी बोहरा ने कहा धर्म कोई नहीं छीन सकता। श्री बोहरा जी ने कार्यकर्त्ताओं व धर्मपालों के महान् सहयोग को सराहा। यहां १५० व्यक्तियों ने व्यसन मुक्ति की शपथ-ग्रहण की।

पांसलोद, बलेड़ी :

यहां से प्रवासी दल ने पांसलोद व बलेड़ी का प्रवास किया। बलेड़ी समाजसेवी श्री मानवमुनि जी की जन्मस्थली है। यहां संघ मन्त्री भंवरलाल कोठारी, डा० सागरमल जी जैन व श्री गुमानमल जी चोरड़िया संघ अध्यक्ष ने अपने विचार रखे। श्री शंकर जी राठौड़ ने स्वागत किया।

ताजापुर गाड़ोली :

दि. १२-६ को ताजापुर ग्राम प्रवेश के समय प्रवासी दल का धर्मपाला शाला बालकों दिलीप, मंगला, कमला, व दिनेश ने तिलक व मंगल गीत पूर्वक स्वागत किया। बालकों की गुरुवन्दना, इच्छाकारेणं व २४ तीर्थंकरों की नामावली आदि सुन सभी को उनके ज्ञान पर हर्ष हुआ।

सेठी जी का शुभागमन :

श्री बाबूलाल जी सोलंकी ने कहा कि केन्द्रीय मन्त्री श्री श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी इसी स्थान पर हम लोगों के बीच पधारे थे। उनका शुभागमन धर्मपाल एकता व शक्ति का प्रमाण है।

श्री सोलंकी ने कहा कि पंडित रत्न श्री सम्पत मुनिजी म. सा. का शुभागमन हमारे लिए अविस्मरणीय है।

यहां से प्रवासी दल गाडोली पहुंचा जहां के धर्मपालों

की स्थिति को श्री वोहरा जी ने 'आदर्श प्रयत्न कहकर सम्मानित किया। यहां के शिक्षक श्री छीतरमल जी की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

प्रवृत्ति इतिहास का नया अध्याय- 'समता-भवन'

दि. १३ जून को मक्षी में श्री वोहरा जी के सहयोग से निर्मित राजमार्ग पर स्थित 'समता-भवन' धर्मपालों को समर्पित किया गया। श्री राजेन्द्रलाल जी दलाल के निवास स्थान से समता-भवन तक शोभायात्रा निकाली गई जो वहां पहुंच कर सभा में बदल गई। भवन का उद्घाटन संघ-अध्यक्ष श्री चोरड़िया जी, मन्त्री कोठारी जी व पचासों स्वधर्मी व धर्मपाल बान्धवों के सामूहिक भक्तामर आदि पाठ व सामायिक पूर्वक हुआ। इस क्रियात्मक अद्भुत उद्घाटन पर धर्मपाल हर्ष से नाच उठे।

सर्वश्री बोहराजी, पी. सी. चौपड़ा, समीरमल जी कांठेड़, चम्पालाल जी सुराणा (अब स्वर्गीय), हीरालाल जी नांदेचा (अब हमारे बीच नहीं रहे), राजमल जी कांठेड़ जावरा, रोशनलाल जी खाबिया, शांतिलाल जी ललवाणी इन्दौर, (स्व.) श्री गेंदालाल जी खाबिया, श्रीमती रोशन देवी खाबिया, वीरेन्द्र जी कोठारी, श्रीमती रसकुंवर जी सूर्या व कमलाबाई कोठारी आदि शोभायात्रा में शामिल थे।

क्षेत्रीय सम्मेलन के प्रमुख अतिथि श्री सरदारमल जी कांकरिया एवं अध्यक्ष श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा थीं। ज्ञान मन्त्री श्री मोहनलाल जी मूथा ने मंगला चरण किया। सर्वश्री रुघनाथ जी, कालूजो, शंकर जो, छीतरमल जो धर्मपाल व रामसिंह जी गूजर ने अपने विचार रखे।

मन्त्री कोठारी ने समता-भवन को स्वाध्याय व धार्मिक क्रियाओं का जीवन्त केन्द्र बताते हुए कहा कि इस निर्माण व समर्पण

के साथ ही अब धर्मपाल प्रवृत्ति व्यसनमुक्ति के बाद विकार मुक्ति के दौर में प्रवृष्ट हो रही है। विकार मुक्ति के लिए सामायिक, सम भाव की साधना आवश्यक है। इस साधना हेतु यह समता भवन है। अब हम व्यक्ति सुधार के क्षेत्र में प्रवेश हो रहे हैं। अतः हमारा उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया है।

श्री व श्रीमती बोहरा ने आत्म चिंतन व बाल शिक्षण पर बल देते हुए धर्मपालों के समुत्कर्षपूर्ण जीवन की कामना की।

धर्मपाल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर मन्दसौर :

मन्सौर में दि. १६ मई से ३० मई ७६ तक यह शिविर पंडितरत्न श्री प्रेममुनि जी म. सा. के सानिध्य एवं पंडितरत्न श्री सरदारमुनिजी म. सा. के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

पं. श्री बसंती लाल जी नलवाया की अध्यक्षता और श्री धनसुखलाल जी भाचावत विधायक की विधि तथा क्षेत्रीय संयोजक सर्व श्री पी. सी चौपड़ा, हीरालाल जी नादेचा, कन्हैयालाल जी मेहता मानवमुनी जी, वीरेन्द्र जी कोठारी, चम्पालाल जी पीरोदिया, कन्हैया लाल जी बोथरा आदि की उपस्थिति में शुभारम्भ हुआ।

रमेश गुराड़िया, लोकेन्द्रतारापुना के गीत, शिविराधिपति श्री चेतनमलजी नागौरी कनोड़ ने प्रतिवेदन में श्री जानकी नारायण श्रीमाली के शिक्षण को सराहा। श्री कालूराम जी शिक्षक वराड़ सर्वप्रथम रहे।

समापन समारोह में श्री यू. एन. भाचावत ने शिविर को 'असांप्रदायिकता का दर्शन', डॉ. वोरदिया जी ने बच्चों में अच्छी आदतें डालने श्रीमती हीराबेन वोरदिया व ए. सी. दिवाकर व मंदसौर की महिलाओं ने भी विचार रखे। सघमंत्री श्री कोठारी का न 'हम वदलेंगे, युग वदलेगा' लोकप्रिय रहा।

जावरा समिति :

इन्हीं दिनों में जावरा क्षेत्रीय ध. प्र. प्र. समिति का श्री समीरमलजी कांठेड़ के मार्गदर्शन में निम्न प्रकार पुर्नगठन किया गया। श्री राजमल कांठेड़, संयोजक एवं सदस्य गण सर्व श्री समीरमल जी कर्णावट, सुरेशकुमार जी कांठेड़ (सचिव), राजमल जी पगारिया व चांदमल जी जैन पीपलोदा। इस समय इस क्षेत्र में सरसी, के खासा, डोडीयाणा, धिनौदा, भूतेड़ा, उकेड़िया, ऐजावता, लौहारी, रांकौदा, रोजाना, रींगनोद, जेठाना, भड़का, असावरी, नई आवादी और मांडवी की शालाएं चलती है। जिनमें से अनेक का श्री राजमल काठौड़ ने निरीक्षण किया।

संघ का नोखा अधिवेशन–चिकित्सा सेवा :

२५ सितम्बर ७६ को नोखामंडी में श्री अ. भा. सा. जैन संघ के १४ वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर श्री गणपतराज जी बोहरा द्वारा अपने अनुज स्व. श्री सम्पतराज जी बोहरा की स्मृति में श्रीमद् जवाहाराचार्य शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक औषध व सुविधायुक्त चल चिकित्सालय वाहन धर्मपाल क्षेत्रों को भेंट किया। वाहन की उपयोगिता व योजना पर डॉ. श्री नंदलाल जी बोरदिया ने प्रकाश डाला।

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री दादा भाई श्री केशरी लाल जी बोरदिया ने चे. चि. वाहन का उद्‌घाटन किया। श्री बोहरा जी ने धर्मपालों हेतु चल रही प्रवृत्तियों में संघ सदस्यों के प्रभूत सहकार को सराहनीय बताया।

अधिवेशन पर चिकित्सालय संचालन हेतु प्रस्तुत संघमंत्री भंवरलाल कोठारी के सुझावों को सर्व श्री चोरड़िया, बोहरा जी डॉ. वोरदिया चौपड़ा जी कांकरियाजी, मानवमुनिजी एवं संघ उपाध्यक्ष श्री केशरीचंद जी सेठिया मद्रास की समिति ने अंतिम रूप देकर निम्न प्रकार संचालन समिति बनाई:-

सर्व श्री चोरड़िया जी, बोहरा जी, कांकरियाजी, चौपड़ा जी, केशरीचंदजी सेठिया मद्रास, भंवरलाल जी बैद, हीरालाल जी नांदेचा, गोकुलचंद जी सूर्या, समीरमल जी कांठेड़, मानवमुनि जी, श्रीमती यशोदा देवी बोहरा, फूलकंवर जी कांकरिया, एवं शान्ता मेहता। प्रधान डॉ. बोरदिया जी व संयोजक भंवरलाल कोठारी।

५० हजार वार्षिक बजट व राशि एकत्रित करने को ५००-पांचसौ रुपयों के कूपन की योजना मंजूर की गई। विशेष उल्लेखनीय है कि तीन धर्मपालों ने तत्काल ये कूपन खरीदे।

धर्मपाल-सम्मेलन :

दि. २४. ६ को सम्पन्न धर्मपाल सम्मेलन की विशेषता यह थी कि स्वयं धर्मपाल वक्ता अधिक थे जिनमें सर्व श्री शंकरलाल जी मुखिया, भैरूंलाल जी धमनार, मानसिंह जी, नानूराम जी बरबोदना आदि नई प्रविष्टी थे। सम्मेलन ने आज आचार्य श्री जी द्वारा प्रदत्त स्वालंबन के मंत्र को वर्ष का ध्येय वाक्य ग्रहण किया। सम्मेलन भव्य और विशाल था। यहां बताया गया कि रतलाम के १११ गांवों में ६२५० धर्मपाल हैं। १२ पाठशालाओं में २३५ विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। जावरा क्षेत्र में ६५०० धर्मपाल हैं।

नागदा खाचरोद क्षेत्रीय समिति का पुर्नगठन :

निम्न प्रकार किया गया—संयोजक श्री मयाचंद कांठेड़, सहसंयोजक-सूरजमल जी बरखेड़ावाले, मंत्री मनोहरलाल जी सदस्य सर्व श्री धूलजी भाई जैन गुरड़िया, आनंदीलाल जी कंठेड़, श्रेणिक लाल जी और शान्तिलाल जी नाहटा और चौथमल जी नकदावाले।

बढ़ते-चरण :

पर्यूषणपर्व प्रवृत्ति संचालित सभी शालाओं में मनाया गया जावरा में वृतादिक, बागरोद, घोसवास में अभयदान व चिकित्सा की। नवंबर माह में चलचिकित्सालय द्वारा २५० रोगी देखे गए

जावरा क्षेत्रीय संयोजक राजमल जी कांठेड़, ने सहयोगियों के साथ रोझाना, झालवा व १२ नंवबर को रिंगनोद अनन्तर केरवासा, पीपलादो भड़का, जेठाना व धमानार आदि शालाओं का निरीक्षण किया गया।

श्री अ. भा. सा. जैन महिला समिति ने पर्यूषण पर्व पर धर्मपाल क्षेत्रों में पूरे ७ दिन विविध कार्यक्रम मंत्री शान्ता मेहता व मामी जी द्वारा आयोजित किए समिति ने ३०. ११. ७६ को मक्सी में धर्मपाल बहिनों के स्वावलबन हेतु सिलाई केन्द्र स्थापित किया, जिसका शुभारंभ श्री बाहरा जी ने किया।

दि. १२. ६. ७६ रिंगनोद में अ. भा. श्री नानेशाचार्य धर्मपाल जैन महिला मंडल की स्थापना की गई जिसमें पदाधिकारी का चुनाव किया गया।

२६. ११ को कलालिया में पं. रत्न श्री प्रेममुनि जी म. सा. का प्रेरक प्रवचन हुआ।

दि. २ व ४ दिसंबर को मन्दसौर क्षेत्र के डिगांव, बिलांत्री, तुमड़ा, दलौदा, साखतशी धमनार व धुंधड़का का प्रवास श्री मेहता ने किया।

श्री धर्मपाल प्र. प्र. समिति बैठक के महत्त्वपूर्ण निर्णय :

रतलाम में दि. २७. ११. ७६ को अध्यक्ष श्री बोहरा जी की अध्यक्षता में चौपड़ा जी के निवास स्थान 'शील-भवन' में मानव मुनि जी के संयोजन में सम्पन्न बैठक में क्षेत्रीय संयोजकों सहित ३३ उत्साही कार्यकर्त्ता ने महत्वपूर्ण निर्णय लिए तीसरी पदयात्रा का मार्ग निर्धारण मानवमुनि जी के प्रतिवेदन के अनुसार किया जावेगा।

धर्मपाल शालाओं में सहायक शिक्षण सामग्री वितरित की जावे।

रतलाम में १ मई से २६ मई ७७ तक सभी क्षेत्रों के धर्म-
पाल शिक्षकों का शिक्षण शिविर आयोजित किया जावे ।

कार्य विस्तार पर सन्तोष व प्रसन्नता अनुभव करते हुए ५
के स्थान पर ७ क्षेत्रों में प्रवृत्ति का पुर्न विकेन्द्रीकरण किया गया ।
नए क्षेत्र क्रमशः नागदा एवं मक्सी निर्धारित किए गए ।

संघ अधिवेशन के समय धर्मपाल युवकों का सम्मेलन आयो-
जित किया जाय ।

प्रवास :

समिति बैठक से प्राप्त उत्साह को संजोए प्रवास व सम्मे-
लनों की नवीन धूम मचादी गई । परथाजी धर्मपाल के आमंत्रण पर
जावरा क्षेत्र के ठीकरिया ग्राम में श्री समीरमलजी व रामकरण जी
लढ़ा के सान्निध्य में विशाल सम्मेलन हुआ ।

रतलाम समिति ने श्री पी. सी. चौपड़ा, मानवमुनिजी, एवं
मामा-मामी के नेतृत्व में ३ पृथक दलों में संगठित होकर नवंबर में
डेलनपुर, सेजावता, शिवपुर, बड़ोदिया, धोंसवास व बांगरोद आदि
गांवों का प्रयास किया । अनेक नई पाठशालाएं प्रारंभ की गई ।

डॉ. प्रकाश के नेतृत्व में चल चि. द्वारा चिकित्सा सेवा जारी
थी ही ।

दिसंबर १७-१८ को चौपड़ा जी, मुनि जी, धूलजी व देवजी
धर्मपाल सहित यात्रा के पड़ावों का देर रात तक प्रवास किया गया,
जिससे संबद्ध गांवों में उत्साह की नई लहर छा गई ।

दि. १४-१५-१६ दिसंबर को ही नव नियुक्त संयोजक
भयाचंद जी कांठेड़ ने मुनिजी, धुल्लाजी आदि के साथ गु
लेकोड़ा, घूमापेड़ा, मऊ, वोरखेड़ा, आक्या व सोनेड़ा का प्रवा
किया, जिसमें गुराड़िया के समता-भवन निर्माण को शीघ्र पू

शाला निरीक्षण व ग्रामसभाएं की गई।

चिकित्सालय की उपलब्धियां :

श्रीमद् जवाहराचार्य चल चिकित्सालय का शुभ प्रारंभ ए एक युगान्तरकारी कार्य रहा। चिकित्सालय ने अपने कार्यकाल प्रथम पक्ष में ही रतलाम-जावरा के १८०७ किलोमीटर क्षेत्र के गांवों के ३६२ पुरुषों, २१८ स्त्रियों एवं २७५ वालकों की चिकित्स की गई। प्रभारी डॉ. प्रकाश व सहयोगियों ने ४० तरह के रोगों निदान किया। डॉ. बोरदिया ने इसका २०.१२ को निरीक्षण क सन्तोष व्यक्त किया।

मक्षी में नव उत्साह की लहर :

मक्षी में नव नियुक्त संयोजक श्री राजेन्द्रलाल जी दला समाज सेवी श्री मानवमुनिजी के नेतृत्व में दि. १६. १. ७० को स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की बैठक सम्पन्न हुई। कार्यकर्त्ता प्रमुख सर्व श्री रुघनाथ जी, हीरालाल जी मकवाना, वाबूलाल व रामलाल जी मौजूद थे। बन्द सिलाई केन्द्र, धर्मपाल शाला व समता-भवन में नव जीवन प्रारंभ करने का निर्णय किया गया। मक्षी क्षेत्र की सभी शालाओं के शिक्षकों की कठिनाइयों के निराकरण पर भी विचार किया गया।

इसी दिन ग्राम बण्डवा का प्रवास किसा गया जहां के सरपंच श्री रामलाल ने वताया कि १ वर्ष पूर्व इस गांव में शराव की २० भट्टियां थी आज उसका नामोनिशान मिट गया। गांव सामली के प्रवास में श्री कामली खां भी सामिल थे। श्री हीरालाल जी मकवाना और नानालालजी मठ्ठाने गडौली, झोंकर, सरोलिया, चांसला रूलकी, वल्लिया, लालपुर, पातनाखेड़ी, ताजपुर, मक्सी व शाजापुर का प्रवास पैदल, रेल व बस में पूरा किया।

इन्हीं दिनों ताजपुर में श्री मोतीलाल जी पंडा के पिता श्री

भीकाराम जी ८५ वर्ष के निधन पर समीपस्थ क्षेत्रों के धर्मपालों ने श्रद्धांजलि सभा आयोजित की । स्व. श्री भीकाराम जी ने नोखा संघ अधिवेशन के अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. से शीलव्रत अंगीकार किया था।

इस क्षेत्र में चिकित्सालय ने ३१ जनवरी से १५ फरवरी ७७ तक रानी, हरसोदन, नैनावद सहित अनेक गांवों में जन सेवा की ।

मक्षी की नवगठित समिति निम्न प्रकार है—मुख्य संयोजक श्री गोकुलचंदजी सूर्या, संयोजक श्री राजेन्द्रलाल जी दलाल, सदस्य सर्व श्री वीरेन्द्र कोठारी, हुकमसिंह पटेल, सरपंच, नंदराम भावसार, रामसिंह गूजर, रघुनाथ, रामलाल, हीरालाल, इन्द्रमल जैन व धल जी भाई भावसार ।

जावरा क्षेत्र में ६ से १० जनवरी तक शालाओं का निरीक्षण, दरी पट्टी आदि वितरण व ग्राम सभाएं की गईं । १५० विद्यार्थियों में से ११२ परीक्षा में उत्तीर्ण हुए । **नागदा क्षेत्र** की गुराड़िया शाला आदर्श घोषित की गई । जहां ४५ छात्रों में से २१ सामायिक व प्रतिक्रमण सीख चुके हैं, शेष की भी प्रगति संतोष जनक है । गांव के सभी ४७ परिवार सामायिक के प्रति विशेष सचेष्ट हैं । शिक्षक श्री रमेश चंद्र के प्रयास प्रशंसनीय है । रठड़ा के नानेश समता मंडल में श्री मोतीलाल जी अध्यक्ष, श्री दयाराम जी मंत्री, श्री घूल जी कोषाध्यक्ष व सर्व श्री पन्नालाल जी, नाथूलाल जी, नरसिंहलाल जी, अम्बाराम जी, कालूराम जी व भैरा जी (सभी धर्मपाल) सदस्य निर्वाचित हुए। शाला में १९ बालक हैं, अध्ययन प्रशंसनीय । इस क्षेत्र की अन्य शालाएं भी संस्कार क्षम हैं ।

श्री मन्नाचंद जी साथियों सहित बराबर प्रवास कर रहे हैं । गुराड़िया में महासती श्री शायर कुंवर जी म. सा. ठा. ३ के पधारने पर धर्म गंगा प्रवाहित हो उठी ।

खाचरौद क्षेत्र में भी नव नियुक्त संयोजक श्री सूरजमल जी ने भी केशरिया, दीवेल, भुंवासा, वेठावास व मडावदा आदि का प्रवास किया। वयोवृद्ध सेठ श्री हीरालाल जी नांदेचा स्वय अपनी केशरिया पगड़ी से सुशोभित गौरव से दीप्त मुखमंडल से प्रेरणा प्रदान करते हुए कड़कड़ाती शीत में भी चिकित्सा वाहन के साथ जनसेवा प्रवास में पधारे।

रतलाम क्षेत्र में भी जागरण का यह शंख गूंज रहा था। डेलनपुर, पलसोड़ा पंचेड़ व नामली शाला बालकों के शिक्षण व धर्म-ज्ञान को देख दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती थी। रिंगनोद शाला छात्रों के संस्कार निर्माण की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए श्री शैतान मल मन्नालाल जी बरड़िया ने ४८ स्लेटें वितरित की। मानवमुनि जी ने सभी को आर्शीवाद दिया।

समिति बैठक श्री बोहरा जी की अध्यक्षता में २८ फरवरी को श्री समीरमल जी कांठेड़ के निवास स्थान पर हुई।

धर्मपाल नवयुवक रैली : पांच दिवसीय रैली का समापन शाजापुर में महासती श्री रमणीक कंवर जी म. सा. के सान्निध्य में हुआ। महासती ने धर्मपालों की चेतना, श्रद्धा, उत्साह व संयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री बोहरा जी ने कहा कि निःस्वार्थ भाव से रात-दिन जुटे हुए प्रवृत्ति के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं को इस प्रगति का श्रेय है। संघ अध्यक्ष श्री चोरड़िया जी ने इसे **जैन धर्म** का उद्योत बताते हुए धर्मपालों का अभिनन्दन किया। श्री चुन्नीलाल जी ललवानी जयपुर व शाजापुर संघ अध्यक्ष श्री केशरीचंद जी बैद सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

१०० धर्मपाल युवकों की यह रैली दि. २७. १०. ७६ को रणथभंवर से प्रारंभ होकर बोरछा मंडी, तिलावद, लिजामड़ी, खोरिया, विकलाखेड़ी, आला उमरोद, होते हुए ३०-१० को शाजापुर में प्रवेश किया। शिक्षक रूप में श्री जानकीनारायण श्रीमाली बीकानेर का

सान्निध्य प्रेरक रहा। रैली को मध्य प्रदेश के मंत्री श्री शेखर जी ने 'एक महान यज्ञ' कहकर पुकारा।

बढ़ते–चरण : अनवरत प्रवासों से कार्य चला गया। १३ फरवरी को रूनखेड़ा में ४० गांवों का सम्मेलन व १ मार्च रिंगनोद में सिलाई केन्द्र का उद्घाटन यशोदा माता ने किया। २० मार्च को माण्डवी में बोहरा जी के सान्निध्य में धर्मसभा हुई। इस बीच सभी क्षेत्रों में प्रवास जारी थे ही। ग्राम पंचेड़ में भी महिला समिति सहयोग से सिलाई केन्द्र व पुस्तकालय प्रारंभ किये गए जिनकी संचालन समिति में श्री मोहन लाल धर्मपाल व यूसुफ खां को सामिल किया।

संघ प्रमुखों का त्रिदिवसीय प्रवास :

लगभग ६ माह के अंतराल से धर्मपाल क्षेत्रों को सम्हालनें के लिए आयोजित होने वाले संघ प्रमुखों के दि. ६ से ८ मई के प्रवास ने फिर से प्रवृत्ति गौरव में वृद्धि की। ६ मई ७७ को प्रातः खाचरौद में श्री नांदेचा जी के यहां समाज बैठक, दोपहर में उमरना में १० गांवों के धर्मपालों का श्री शंकरलाल जी धर्मपाल के आतिथ्य में सम्मेलन, रात्रि को बिरला ग्राम नागदा की दादा वाड़ी में समाज सभा हुई। दि. ७ को प्रातः मक्षी में धर्मपालों से चर्चा, दोपहर को गूजर समाज प्रतिनिधि-सम्मेलन व रुलकी में समता-भवन का मुहूर्त्त व सभा, तिलावद में पाठशाला खोलने की घोषणा के बाद प्रवासी दल सिरोल्या पहुंचा।

दि. ८ मई को प्रातः उज्जैन में श्री महेन्द्र मुनि जी का प्रवचन सुना व दोपहर में श्री गोकुलचंद जी सूर्या के निवास पर समिति बैठक की गई। रिंगनोद प्रवास का नेतृत्व श्री चोरड़िया जी व श्री बोहरा जी ने किया। बैठक में दि. २६ सितंबर से १४ अक्तूबर तक भीनासर में धर्मपाल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर परम पूज्य आचार्य श्री जी म. सा. के सान्निध्य में आयोजित करने का निश्चय किया गया।

इस प्रवास से पूर्व महावीर-जयंती पर जावरा, के खासा, कलालिया, रिंगनोद, धमनार, नगरी आदि का प्रवास भी श्री बोहरा, श्री चोरड़िया, कोठारी व धर्मपाल प्रमुखों ने पूर्ण किया तथा नगरी में श्री कचरमल जैन व सरपंच भैरू लाल जी (भारत स्तर पर पुरस्कृत किसान) सहित ७ सदस्यों की धर्मपाल समिति बनाई गई। चार दिनों का यह प्रवास संघ और धर्मपाल समन्वय की दिशा में महत्वपूर्ण रहा।

२० मई ७७ को संघ प्रमुख श्री सरदारमल जी कांकरिया ने धर्मपाल क्षेत्रों का प्रवास किया। सभी क्षेत्रीय प्रमुखों ने मासिक प्रवास पूर्ण किए।

१९ जून ७७ को पूना में आयोजित आम सभा में संघ कार्य समिति बैठक के अवसर पर धर्मपाल प्रवृत्ति पर चर्चा मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही।

जावरा में १४ अगस्त को तपस्वी श्री सौभागमल जी म. सा. के ३१ की तपस्या के पूर पर सेवावती के अमरा जी ने ४ व ३ की तपस्या की व सजोड़े शीलव्रत लिया। अनेक ने पडिपूण पौषध किया। पंडित रत्न श्री प्रेम मुनि जी म.सा. ठाणा ३ के सान्निध्य में धर्मपालों ने पर्यूषण किया।

६६ दिन का प्रवास : मामाजी श्री चम्पालाल जी पिरोदिया एवं मामी जी श्रीमती धूरी देवीजी ने धर्मपालों के बीच ६६ दिन का प्रवास किया धर्म जागरण और संस्कार निर्माण के इतिहास में यात्राएं सदैव याद की जावेंगी।

चल चिकित्सालय के डॉ. दीक्षित जी ने इन दिनों में २८९ पुरुष, १६८ महिलाओं व ३२९ बालकों की चिकित्सा की।

संघ अधिवेशन पर गंगाशहर-भीनासर में धर्मपाल पाठशा-

-लाओं के एक वर्ष का व्यय और चल चिकित्सालय के कूपन खरीदने की व्यापक घोषणाएं करके संघ-सदस्यों ने प्रवृत्ति के प्रति अपने प्रेम को प्रमाणित किया। उनके श्रावकाचार को सम्मानित किया।

इसी वर्ष मक्षी में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। ३१ जनवरी ७८ से १२ फरवरी ७८ तक मामा-मामी ने फिर पदयात्रा की जिसका समापन संघ अध्यक्ष श्री पी. सी. चौपड़ा की अध्यक्षता में हुआ। इस पदयात्रा में ५०० ने व्यसनमुक्ति स्वीकार की। मई में तीर्थंकर के सम्पादक श्री नेमीचंद जी जैन ने मानवमुनि जी के साथ रुलकी आदि का प्रवासकर धर्मपालों से प्रत्यक्ष चर्चा की।

तृतीय धर्म जागरण पदयात्रा :

अप्रैल ७८ में तृतीय धर्म जागरण पदयात्रा दलौदा से प्रारंभ होकर धुंधड़का, धमनार, आक्यि, नगरी, पेटलावद, धतरावदा, मांडवी नेतावली, रिंगनोद, बनबाड़ा, नन्दावता, रोजाना होते हुए जावरा पहुंची। यात्रा अब तक विचार यात्रा के क्षेत्र में प्रविष्ट हो चुकी थी। □

आचार्य श्री के द्वारा धर्मपाल प्रवृत्ति का जो महान् क्रांतिकारी कार्य प्रारंभ हुआ है, वह भगवान महावीर का सच्चा काम है पतित दलित वर्गों को धार्मिक बोध देकर उन्हें मानव बनाकर सुसंस्कारी बनाना व उन्हें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक उन्नति की विचारधारा से प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य है। इस प्रवृत्ति के प्रति मेरा पूर्ण आशीर्वाद है।

—उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि जी म. सा., वीरायतन
श्रमणोपासक २० फरवरी ७५ से साभार

इस प्रवास से पूर्व महावीर-जयंती पर जावरा, के खासा, कलालिया, रिंगनोद, धमनार, नगरी आदि का प्रवास भी श्री बोहरा, श्री चोरड़िया, कोठारी व धर्मपाल प्रमुखों ने पूर्ण किया तथा नगरी में श्री कचरमल जैन व सरपंच भैरू लाल जी (भारत स्तर पर पुरस्कृत किसान) सहित ७ सदस्यों की धर्मपाल समिति बनाई गई। चार दिनों का यह प्रवास संघ और धर्मपाल समन्वय की दिशा में महत्वपूर्ण रहा।

२० मई ७७ को संघ प्रमुख श्री सरदारमल जी कांकरिया ने धर्मपाल क्षेत्रों का प्रवास किया। सभी क्षेत्रीय प्रमुखों ने मासिक प्रवास पूर्ण किए।

१९ जून ७७ को पूना में आयोजित आम सभा में संघ कार्य समिति बैठक के अवसर पर धर्मपाल प्रवृत्ति पर चर्चा मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही।

जावरा में १४ अगस्त को तपस्वी श्री सौभागमल जी म. सा. के ३१ की तपस्या के पूर पर सेवावती के अमरा जी ने ४ व ३ की तपस्या की व सजोड़े शीलव्रत लिया। अनेक ने पडिपूण पौषध किया। पंडित रत्न श्री प्रेम मुनि जी म.सा. ठाणा ३ के सान्निध्य में धर्मपालों ने पर्यूषण किया।

६६ दिन का प्रवास : मामाजी श्री चम्पालाल जी पिरोदिया एवं मामी जी श्रीमती धूरी देवीजी ने धर्मपालों के बीच ६६ दिन का प्रवास किया धर्म जागरण और संस्कार निर्माण के इतिहास में यात्राएं सदैव याद की जावेंगी।

चल चिकित्सालय के डॉ. दीक्षित जी ने इन दिनों में २८९ पुरुष, १६८ महिलाओं व ३२९ बालकों की चिकित्सा की।

संघ अधिवेशन पर गंगाशहर-भीनासर में धर्मपाल पाठशा-

-लाओं के एक वर्ष का व्यय और चल चिकित्सालय के कूपन खरीदने की व्यापक घोषणाएं करके संघ–सदस्यों ने प्रवृत्ति के प्रति अपने प्रेम को प्रमाणित किया । उनके श्रावकाचार को सम्मानित किया ।

इसी वर्ष मक्षी में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया । ३१ जनवरी ७८ से १२ फरवरी ७८ तक मामा-मामी ने फिर पदयात्रा की जिसका समापन संघ अध्यक्ष श्री पी. सी. चौपड़ा की अध्यक्षता में हुआ । इस पदयात्रा में ५०० ने व्यसनमुक्ति स्वीकार की । मई में तीर्थंकर के सम्पादक श्री नेमीचंद जी जैन ने मानवमुनि जी के साथ रुलकी आदि का प्रवासकर धर्मपालों से प्रत्यक्ष चर्चा की ।

तृतीय धर्म जागरण पदयात्रा :

अप्रैल ७८ में तृतीय धर्म जागरण पदयात्रा दलौदा से प्रारंभ होकर धुंधड़का, धमनार, आक्यि, नगरी, पेटलावद, धतरावदा, मांडवी नेतावली, रिंगनोद, बनबाड़ा, नन्दावता, रोजाना होते हुए जावरा पहुंची । यात्रा अब तक विचार यात्रा के क्षेत्र में प्रविष्ट हो चुकी थी । □

卐

आचार्य श्री के द्वारा धर्मपाल प्रवृत्ति का जो महान् क्रांतिकारी कार्य प्रारंभ हुआ है, वह भगवान महावीर का सच्चा काम है पतित दलित वर्गों को धार्मिक बोध देकर उन्हें मानव बनाकर सुसंस्कारी बनाना व उन्हें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक उन्नति की विचारधारा से प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य है । इस प्रवृत्ति के प्रति मेरा पूर्ण आर्शीवाद है ।

—उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि जी म. सा., वीरायतन
श्रमणोपासक २० फरवरी ७५ से साभार

विकास

श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति की स्थापना

□

परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के पुनीत उपदेशों से प्रादुर्भूत धर्मपाल प्रवृत्ति के विकास का गुरुतर उत्तरदायित्व श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ ने सहर्ष ग्रहण किया। संघ ने इस कार्य को गुरु कृपा के रूप में शिरोधार्य किया। आज से २० वर्ष पूर्व सन् १९६४ के अक्तूबर माह में आयोजित हमारे नवोदित संघ के द्वितीय वार्षिक अधिवेशन की कार्यवाही पर एक दृष्टि डालने मात्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे संघ के तत्कालीन नेताओं ने प्रवृत्ति कार्य के महत्व को भली भान्ति समझ लिया था। तभी तो छगनलाल जी बैद की अध्यक्षता और श्री जुगराज जी सेठिया के मन्त्रीत्व में संघ ने सत्वर निर्णय लेकर श्री सरदारमल जी कांकरिया और श्री नाथूलाल जी सेठिया के प्रस्ताव पर धर्मपाल प्रवृत्ति के कार्य विस्तार और गुणात्मक निखार के लिए श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति की स्थापना की। समिति के लिए ५ हजार रूपये के प्रारंभिक बजट की स्वीकृति दी गई।

इस गौरवशाली प्रवृत्ति के प्रथम संयोजक पद पर शास्त्रज्ञाता, श्रद्धालु व आदर्श सुश्रावक, गूढ़ विषयों के सरस, सरल व्याख्याकार और उज्जैन में सघ के आधार स्तम्भ श्री गोकुलचन्द जी सूर्या आसीन किए गए। श्री सूर्या जी के साथ सर्वश्री हीरालाल जी नांदेचा, खाचरोद, कमलाबेन इन्दौर, शान्तिलाल छाजेड़ इन्दौर, सीताराम जी धर्मपाल जैन नागदा, मयाचन्द जी कांठेड़ नागदा एवं एवं श्री कुन्दनमल जी कांठेड़ उज्जैन को सदस्य मनोनीत किया।

शुभस्य शीघ्रम :

प्रवृत्ति हेतु पृथक से समिति निर्माण के पूर्व भी आचार्य श्री जी के विहार काल में घटित हो रहे तेजस्वी घटनाक्रम पर सघ की दृष्टि थी और बीकानेर में संघ की साधारण सभा की दिं. २१.५.६४ को सम्पन्न बैठक में सर्वप्रथम धर्मपालों को सुसस्कारी बनाने और उन्हीं में से नवयुवकों का चयन कर उन्हें कार्य प्रसार का दायित्व सौंपने पर विचार किया गया था। साधारण सभा की इसी बैठक में यह भी निश्चय किया गया था कि धर्मपाल बन्धुओं को धार्मिक शिक्षण देना अनिवार्य है, जिससे वे प्राप्त संस्कारों का संरक्षण और संवर्धन कर सकें।

इस समिति की स्थापना से पूर्व ही बीकानेर में किये गए वेचार-विमर्श की तत्पर क्रियान्विती हेतु धर्मपालों को धार्मिक शिक्षण प्रदान करने वाली प्रथम पाठशाला ८ अगस्त १९६४ को नागदा में खोली गई। तुरन्त पश्चात् ही दि. १८ अगस्त, ६४ को मक्सी में भी पाठशाला प्रारम्भ कर दी गई।

शिक्षण के महत्व सर्वविदित है, विशेषकर बलाई समाज जैसे पिछड़े, अशिक्षित व संस्कार शून्यवत समाज की उन्नति के सन्दर्भ में तो यह अपरिहार्य आवश्यकता है। अतः धर्मपाल समिति के गतिशील होने से पूर्व ही मालव अंचल के श्रीसघों ने अपने स्तर पर स्वेच्छया संस्कार निर्माण के इस दायित्व को स्वीकारते हुए आसावती, राजीगांव, रियावती आदि में धार्मिक शिक्षा शालाएं प्रारंभ करदी। छात्रों का धर्माभ्यास एवं परीक्षा तथा पुरस्कार की योजनाएं भी साथ-साथ चलती रहीं।

लगभग इसी काल में अगस्त ६५ में धर्मपाल क्षेत्र में कार्य विस्तार को दृढ़ता प्रदान करने और प्रचार को गति देने के लिए प्रचारक रखे गये जिनसे कार्य विस्तार तथा दृढ़ीकरण में काफी सह-योग मिला।

वृहत धर्मपाल सम्मेलनों का जलजला :

नवनिर्मित धर्मपाल-समिति अपना कार्य सुचारू रीति से प्रारम्भ कर चुकी थी। कार्य में सतत प्रगति हो रही थी। इसी बीच धर्मपाल सम्मेलनों के आयोजन द्वारा सामूहिक संस्कार प्रदान व शक्ति और विश्वास जागरण का निश्चय किया गया। दि. १०.८.६५ को पिपलोदा में आयोजित एक वृहत धर्मपाल सम्मेलन में ३० गांवों के १००० धर्मपाल बन्धुओं-बहिनों ने भाग लिया, जिन्हें सर्वश्री गेन्दालाल जी नाहर, फकीरचन्द जी पामेचा, मांगीलाल जी चौपड़ा एवं सीताराम जी धर्मपाल नागदा आदि ने सम्बोधित किया।

इसी प्रकार के सम्मेलन दि. २२.८.६५ को मन्दसौर में एवं ५.९.६५ को सीतामऊ में आयोजित किये गए। इन सम्मेलनों ने धर्मपाल प्रवृत्ति की नींव को मजबूत किया साथ ही धर्मपालों को इतर समाजों में प्रतिष्ठित किया।

कर्मण्य संयोजक श्री नाहर :

संघ की भोपाल बैठक में स्व. श्री गोकुलचन्द जी सूर्या ने एक क्रियाशील उपसमिति का निर्माण किया जिसके संयोजक श्री गेन्दालाल जी नाहर जावरा मनोतीत किये गये। वयोवृद्ध होकर भी मन से युवा श्री नाहर ने धर्मसेवा के इस प्रकल्प को अपने जीवन की अमर साधना वना लिया। श्री नाहर ने जावरा को केन्द्र वना कर प्रवृत्ति के चहुंमुखी विकास की योजनाओं का क्रियान्वयन किया। आज श्री नाहर का पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु उनका यश:शरीर हमारे वीच विद्यमान है। प्रवृत्ति के इतिहास में श्री नाहर का नाम स्वर्णाक्षरों से अंकित है। उनका अमित प्यार भरा नाम आज भी धर्मपालों के मनो को गुदगुदा देता है।

नया मोड़ :

रायपुर में आयोजित तीसरे वार्षिक अधिवेसन में श्रीयुत

गणपतराज जी बोहरा की अध्यक्षता में संघ ने धर्मपाल प्रवृत्ति पर गहन चिन्तन किया । श्री गेन्दालाल जी नाहर प्रतिवेदन और श्री सरदारमल जी कांकरिया के सुझावों पर प्रवृत्ति बजट में वृद्धि की गई । श्री भीखमचन्द जी भंसाली व श्री खुशालचन्द जी गेलड़ा (संघ के भूतपूर्व उपाध्यक्ष जो अब हमारे बीच नहीं रहे) ने श्री नाहर के प्रतिवेदन को उत्साहजनक बताया ।

इसी अवसर पर शालाओं में अध्ययन शिविर लगाने का निश्चय किया गया और सितम्बर ६७ में धर्मपालों का प्रथम अध्ययन शिविर ११ दिन के लिए लगाया गया । प्रवृत्ति कार्यों को द्रुत गति प्रदान करने के लिए श्री गणपतराज जी बोहरा एवं श्री सरदारमल जी कांकरिया के सहयोग से एक जीप उपलब्ध कराई गई ।

दुर्ग सुझाव, जावरा और आबू के शिविर–

संघ की ५, ६ अक्टबर' ६७ को दुर्ग में आयोजित साधारण सभा की बैठक ने समिति हेतु ५ सुझाव प्रस्तुत किये । ये महत्वपूर्ण सुझाव इस प्रकार थे—१. स्वाध्याय संघ गठन, २. प्रचार सुविधाएं जुटाना, ३. शालाओं का नामकरण, ४. व्यापार-उद्योग सिखाना, क्षेत्रीय सम्मेलन बुलाना ।

इन सुझावों पर अमल के प्रयास भी किये गये और दि. १३-१२-६७ को गुराड़िया ग्राम में क्षेत्रीय सम्मेलन बुलाया गया, जिस में ६० गांवों के लगभग ८०० भाइयों ने भाग लिया ।

उक्त सम्मेलन के पश्चात् १९ मई से २० जून ६८ तक जावरा में शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया । इसमें ७५ प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया । इस शिविर को सफल बनाने के लिए श्री गेन्दालाल जी नाहर ने विस्तृत प्रवास किए । आपने एक मात्र १२५ गांवों का दौरा किया । शिविर का उद्घाटन देशनोक–[illegible] सुश्रावक श्री चम्पालाल जी सांड ने किया । इसमें अंतिम [illegible] गांवों के १२५ धर्मपालों ने भी भाग लिया ।

इसके बाद दि. १८ मई से ८ जून '६९ तक आबू में संघ के स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में सम्पूर्ण देश से आये हुए ५५ प्रशिक्षणार्थियों में से १० धर्मपाल बन्धु भी थे।

कार्य-विभाजन

संघ के मन्दसौर अधिवेशन दि. १४-१५ अक्तूबर १९६९ में कार्य-विस्तार को देखते हुए प्रवृत्ति के कार्य-विभाजन पर बल दिया गया। इस समय तक संघ की ६ नियमित शालाओं में १७५ बालक अध्ययन कर रहे थे। इसी अवसर पर आयोजित धर्मपाल सम्मेलन को परम पूज्य आचार्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म. सा. ने भी संबोधित किया। इसी अधिवेशन में श्री समीरमल जी कांठेड़ समिति के नये संयोजक नियुक्त किये गये।

जयपुर अधिवेशन—

संघ के जयपुर में आयोजित दशम् वार्षिक अधिवेशन तक धर्मपाल शालाओं की संख्या ६ से बढ़कर ११ हो गई थीं। इस अधिवेशन में श्री गणपतराज जी बोहरा, बड़ौदा की उदार सहायता का सम्मान करने हेतु प्रवृत्ति का नाम उनके पूज्य पिताजी के नाम पर —"सेठ श्री प्रेमराज बोहरा धर्मपाल जैन प्रचार प्रसार समिति" कर दिया गया। जयपुर अधिवेशन में संघ कार्यकर्ताओं के प्रवास पर बल देते हुए वृहद् सार्थक अधिवेशनों के आयोजनों का भी कार्यक्रम बनाया गया। सहमन्त्री (भंवरलाल कोठारी) द्वारा इस अवसर पर प्रवृत्ति हेतु एक समयबद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई, जिसे क्रियान्वित करने का दायित्व उन्हीं को सौंपा गया।

तूफानी-दौरे नई चेतना का शंखनाद—

मन्दसौर अधिवेशन के बाद प्रवृत्ति का कार्य लगभग डेढ़ साल यथाविधि चलता रहा किन्तु जयपुर अधिवेशन से पूर्व प्रवृत्ति के कार्य में कुछ शिथिलता आ गई थी। जयपुर अधिवेशन में प्रस्तुत

नवीन निश्चित योजना और प्राप्त उत्साह से संघ के सभी कार्यों और विशेषत: इस प्रवत्ति के कार्य में नया जीवन आया। जावरा सम्मेलन की रूपरेखा और उसकी सफलता के लिये श्रीमान् अध्यक्ष महोदय व श्री कांकरिया आदि के प्रवास एवं आगामी महावीर जयन्ती (चैत्र शुक्ला १३, सं० २०३०) के दिन संघ कों साधारण सभा का विशेष अधिवेशन जावरा में ही निर्धारित हो जाने से कार्यकर्त्ताओं में उत्साह की लहर दौड़ गई।

प्रवृत्ति क्षेत्र में तीनों कार्यक्रमों-संघ कार्यकर्ताओं का प्रवास, संघ का विशेष अधिवेशन और जावरा धर्मपाल सम्मेलन को सफल बनाने के लिये कार्यकर्ता जी-जान से जुट गये। प्रवृत्ति-प्रयोजक श्री समीरमल जी कांठेड़ एवं मानवमुनि जी ने तूफानी दौरों द्वारा नई चेतना का शंखनाद कर दिया।

जावरा-सम्मेलन एक नया कीर्तिमान -

जयपुर में निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार दि. १५.४.७३ को जावरा में धर्मपाल सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में ११० गांवों के ९०० से अधिक पुरुषों व १०० महिलाओं ने भाग लिया। सम्पूर्ण भारत से आये हुए संघ के ४२ प्रमुख कार्यकर्ता भी इसमें सम्मिलित हुए। देश भर से इसकी सफलता हेतु शुभ-कामना संदेश प्राप्त हुए। सम्मेलन की एक अन्य प्रमुख विशेषता थी, इसका उद्घाटन-आद्य धर्मपाल श्री धूरजी भाई, गुराड़िया द्वारा होना। इस समय तक २२ शालाओं में ७०० बालक शिक्षण प्राप्त कर रहे थे।

उपलब्धियां-

जावरा में सम्पन्न इस सम्मेलन के महत्वपूर्ण एवं दूरगामी परिणाम निकले। यह सम्मेलन आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन दिशा में एक नव आयाम (बड़ा कदम) सिद्ध हुआ। इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी— (१) सामाजिक परिवेश का विस्तार

असाधारण महत्व और उपलब्धियां–

संघ की दृष्टि में इस शिविर के असाधारण महत्व का मूल्यांकन इसी बात से किया जा सकता है कि देश के मूर्धन्य शिक्षा शास्त्री पद्मविभूषण डा० दौलतसिंह कोठारी, राजस्थान के शिक्षाविद् श्री सत्यप्रसन्नसिंह भंडारी, शिक्षा निदेशक श्री रणजीतसिंह जी कूमट आदि के साथ ही परम पूज्य आचार्य गुरुदेव एवं संत मुनिराजों का जीवन-उन्नायक उद्बोधन भी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ।

शिक्षण शिविर ने धर्मपाल प्रवृत्ति एवं सम्पूर्ण क्षेत्र में नव-निर्माण के नये दौर को जन्म दिया। इस शिविर के परिणाम-स्वरूप प्रवृत्ति के सचालन हेतु तत्क्षेत्रीय तरुण संस्कारित हुए, उनके जीवन में, आचरण में, दैनदिन व्यवहार में परिवर्तन आया-ऐसा परिवर्तन जिसने उन्हें अपने-अपने क्षेत्र में आदर्श जीवन प्रस्तोता, सहज श्रद्धा-स्नेह का पात्र एवं क्षेत्रीय नेता बना दिया।

नानेश नवयुवक मण्डल–

इन प्रशिक्षित नवयुवकों ने क्षेत्रीय नेतृत्व को सम्भाला और "नानेश नवयुवक मण्डल" का गठन किया, जो युवक-संगठन व संस्कार की एक नई योजना सिद्ध हुई। इन प्रशिक्षित शिक्षकों के कारण शिक्षण-शालाओं का विस्तार हुआ, स्तर ऊंचा उठा और संघ को अच्छी सख्या में समर्पित शिक्षक प्राप्त हुए। श्रावक-जीवन का आदर्श अपने व्यवहार से प्रकट करते हुए इन नवोदित नेताओं ने प्रवृत्ति के कार्य एवं क्षेत्र को सर्वस्पर्शी बनाने में महत्त्वपूर्ण योग दिया।

प्रवास –

संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीयुत् गुमानमल जी सा. चोरड़िया, भूतपूर्व अध्यक्ष, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा, कर्मनिष्ठ श्री सरदारमल जी कांकरिया व अन्य कार्यकर्ताओं के प्रवासों का दौर चला। नवम्बर ७३ से जून ७४ तक के ८ माह में अखिल

सम्मेलन की व्यापकता ने सामाजिक परिवेश में अपरिमित विस्तार किया। धर्मपालों को अपनी सामर्थ्य और फैलाव का अनुभव हुआ और उन्होंने धर्मपालों में ही परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने का निश्चय किया ताकि व्यसन-मुक्त समाज का मूलाधार सबल सुदृढ़ बना रहे। (२) श्रावकत्व-व्रतोजीवन:—सम्मेलन की अनेक उपलब्धियों में से दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी- धर्मपालों का व्रती-जीवन की ओर अग्रसर होना। अब वे केवल दुर्व्यसन-त्यागी ही नहीं रहे, अपितु श्रावकत्व का विकास कर सुश्रावक के अधिकारी पद को भी प्राप्त करने लगे।

नई रूपरेखा—

इस समय तक प्रवृत्ति का प्रारम्भिक कार्य सुचारू रीति से चल रहा था। अब प्रवृत्ति के विकास की एक नई रूपरेखा बनाई गई।

यह रूपरेखा थी व्यापक प्रवास-कार्यक्रमों द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्र में नवीन जागरण की लहर फैलाना, समिति के कन्धों पर ही सारा भार न रख कर धर्मपाल नवयुवकों को ही कार्य का दायित्व सौंपना। प्रशिक्षण हेतु आयोजित शिविरों, शिक्षण शालाओं के संचालन, निरीक्षण और परीक्षण की चतुर्मुखी योजना को आधार बनाकर सर्वतोमुखी उन्नति करने के लिये लक्ष्य निर्धारित करना।

धर्मपाल जैन शिक्षक प्रशिक्षण—शिविर —

इस नई रूपरेखा के अन्तर्गत धर्मपाल जैन शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। दि. १२ सितम्बर से २७ सितम्बर तक बीकानेर में आयोजित इस शिविर में २७ धर्मपालों ने शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का व्यस्त कार्यक्रम प्रातः से रात्रि तक चलता था। शिविरार्थियों को प्रतिदिन प्रातःकाल स्वयं प. पू. आचार्य भगवान् का एवं मध्याह्न १ से ४ बजे तक पू. श्री संपतमुनि जी, श्री धर्मेशमुनि जी आदि सन्तों एवं विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त होता था।

असाधारण महत्व और उपलब्धियां–

संघ की दृष्टि में इस शिविर के असाधारण महत्व का मूल्यांकन इसी बात से किया जा सकता है कि देश के मूर्धन्य शिक्षा शास्त्री पद्मविभूषण डा० दौलतसिंह कोठारी, राजस्थान के शिक्षाविद् श्री सत्यप्रसन्नसिह भंडारी, शिक्षा निदेशक श्री रणजीतसिंह जी कूमट आदि के साथ ही परम पूज्य आचार्य गुरुदेव एवं संत मुनिराजों का जीवन-उन्नायक उद्बोधन भी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ।

शिक्षण शिविर ने धर्मपाल प्रवृत्ति एवं सम्पूर्ण क्षेत्र में नव-निर्माण के नये दौर को जन्म दिया। इस शिविर के परिणाम-स्वरूप प्रवृत्ति के सचालन हेतु तत्क्षेत्रीय तरुण संस्कारित हुए, उनके जीवन में, आचरण में, दैनदिन व्यवहार में परिवर्तन आया-ऐसा परिवर्तन जिसने उन्हें अपने-अपने क्षेत्र में आदर्श जीवन प्रस्तोता, सहज श्रद्धा-स्नेह का पात्र एवं क्षेत्रीय नेता बना दिया।

नानेश नवयुवक मण्डल–

इन प्रशिक्षित नवयुवकों ने क्षेत्रीय नेतृत्व को सम्भाला और "नानेश नवयुवक मण्डल" का गठन किया, जो युवक-संगठन व संस्कार की एक नई योजना सिद्ध हुई। इन प्रशिक्षित शिक्षकों के कारण शिक्षण-शालाओं का विस्तार हुआ, स्तर ऊंचा उठा और संघ को अच्छी सख्या में समर्पित शिक्षक प्राप्त हुए। श्रावक-जीवन का आदर्श अपने व्यवहार से प्रकट करते हुए इन नवोदित नेताओं ने प्रवृत्ति के कार्य एवं क्षेत्र को सर्वस्पर्शी बनाने में महत्त्वपूर्ण योग दिया।

प्रवास –

संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीयुत् गुमानमल जी सा. चोरड़िया, भूतपूर्व अध्यक्ष, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा, कर्मनिष्ठ श्री सरदारमल जी कांकरिया व अन्य कार्यकर्ताओं के प्रवासों का दौर चला। नवम्बर ७३ से जून ७४ तक के ८ माह में अखिल

भारतवर्षीय स्तर के तीन महत्वपूर्ण प्रवास हुए । आगे भी प्रवास की योजना चालू रही ।

शाला एवं धार्मिक क्रियाओं के संचालन हेतु धर्मपालों द्वारा स्थान की आवश्यकता अनुभव करने पर संघ ने 'समता-भवनों' का निर्माण शुरु किया । नवम्बर ७३ में श्री गणपतराज जी बोहरा ने गुराड़िया और मक्षी में तथा जून ७४ में श्री गुमानमल जी चोरड़िया ने रुलकी में स्वाध्याय भवनों का शिलान्यास किया । निकट भविष्य में ही धर्मपालों के श्रम और संघ के सहयोग से भारी संख्या में समता भवनों का निर्माण किया जा रहा है ।

कानोड़ में शिक्षण –

संघ के मेधावी धर्मपाल छात्रों को श्री जैन जवाहर शिक्षण संस्था कानौड़ में शिक्षण व छात्रावास सुविधा प्रदान की, जिससे ये बालक सरकारी सेवाओं में पहुंच सकें । प्रतिवर्ष कानौड़ में संघ की ओर से १० धर्मपाल विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती रही ।

मुनिराजों का संसर्ग –

बीकानेर चातुर्मास काल में परम पूज्य आचार्यश्री गुरुदेव के सान्निध्य में आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण शिविर एवं चातुर्मास समिति के पश्चात पूज्य पंडित मुनिश्री सम्पतलाल जी म. सा. का मालवा की तरफ विहार हुआ । उग्र विहारी प० मुनिश्री जी ने कुछ महीनों के अल्पकाल में ही १०० से ऊपर भीतरी गावों में विचरण करके संपूर्ण क्षेत्र में धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित की । अनेक गांवों के हजारों भाई-बहिनों, युवक-युवतियों एवं बालक-बालिकाओं ने प्रथम वार जैन मुनि के दर्शन किये, उनकी कठोर दिनचर्या को देखा, उनके साधनामय जीवन से प्रभावित हुए । ज्ञान-गंगा के प्रवाह ने अज्ञान अंधकार को कुरेद-कुरेद कर साफ करना प्रारम्भ किया और विकारमुक्त होने के साथ-साथ उनमें सुश्रावकत्व के संस्कार दृढ़ बनने लगे । श्रावकत्व का जो बीजारोपण जावरा के विशाल अधिवेशन एवं बीकानेर के शिक्षक

प्रशिक्षण शिविर में हुआ था, वह अब पल्लवित एवं पुष्पित होने लगा । पूज्य श्री सम्पतमुनि जी म. सा. के पश्चात् ही बड़ावदा (मालवा) के जाने-पहचाने पुराने सेठ एवं श्रेष्ठ श्रावक श्री सौभाग्यमल जी, जो अब वंदनीय पूज्य मुनिश्री सौभाग्यमल जी म. सा. हैं, का भी उस क्षेत्र में विचरना हुआ । कुछ ही समय पश्चात् प्रभावी वक्ता पं० मुनि श्री प्रेमचन्द जी म. सा. की सेवा का सौभाग्य भी मालवा प्रांत के धर्मपाल भाई-बहिनों को प्राप्त हुआ । रतलाम में धर्मपाल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ । फिर प्रतिमाह ५-५ शिक्षकों को तैयार करने का कार्य भी कुछ माह तक चला । संतो के विचरण एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण से धर्मपालों में श्रावकत्व का विकास एवं संस्कारों का दृढ़ीकरण हुआ ।

महासतियां जी म. सा. का विहार –

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व महासतियां जी श्री पैपकंवर जी म. सा, व श्री नानूकंवर जी म. सा. ने अपने विहार में १६ गांवों के सैंकड़ों व्यक्तियों को समकित ग्रहण करवाई ।

विस्तृत क्षेत्र : बहु आयामी कार्य –

संघ की विभिन्न गतिविधियां और संत मुनिराजों के सात्विक सम्पर्क से प्रवृत्ति का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत एवं कार्य बहुआयामी बन गया । अब यह कार्य केवल व्यसन मुक्ति आंदोलन ही नहीं रहा, जीवन उत्थान और धर्म जागरण का महान कार्य बन चुका है ।

धर्मपाल रैली –

इस विस्तृत और बहुआयामी कार्य की आंशिक झांकी आप को धर्मपाल नवयुवकों के प्रयाण तथा धर्म जागरण पदयात्रा से प्राप्त हो सकी है । नवम्बर ७४ में १८ से ३० वर्ष की उम्र के [illegible] धर्मपाल नवयुवकों ने उज्जैन से जावरा तक लगभग १००

पदयात्रा १० दिन में सम्पन्न की। नवयुवकों को आज धर्मविमुख कहा जाता है, फिर इनमें तो पिछड़े हुए क्षेत्रों के असंस्कारी युवक भी थे, इन्होंने अपने आचरण से प्रमाणित कर दिया कि आज का युवक यदि उसे सही दिशा-निर्देश प्राप्त हो तो पूर्ण संस्कारी एवं धार्मिक बन सकता है। संयम, नियम, मर्यादा और अनुशासन में रहते हुए, नियमित स्वाध्याय एवं धर्माचरण करते हुए, सफेद कुर्त्ते और सफेद पाजामे की सीधी सादी एक सरीखों वेशभूषा में दो-दो की पंक्ति में कतार-बद्ध चलते हुए, जयघोष एवं धर्मजागरण गीतों को समवेत स्वरों में उद्घोषित करते हुए, दो सौ नवयुवकों की वीरवाहिनी के आत्मशोधक सैनिकों का अमल-धवल यात्री दल के रूप में प्रयाण एक अद्भुत प्रयोग था। जिधर से यह धवल यात्रीदलों का रैला मानवमुनि जी के नेतृत्व में प्रयाण गीत गाता हुआ निकलता था, ग्राम-खेड़ों, खेत-खलिहानों से, स्त्री-पुरुष, बालक बालिकाएं अपने काम छोड़ कर बरबस इनकी ओर आकृष्ट हो जाते थे। अभिनन्दन-वन्दन का क्रम धर्मसभाओं का रूप लेता था और सर्वत्र धर्मजागरण की एक लहर सी फैल जाती थी।

प्रथम धर्मजागरण पदयात्रा –

धर्मपाल नवयुवकों के इस प्रयाण के पश्चात ही आई भारत के धर्मों के इतिहास में अभूतपूर्व ऐतिहासिक जीवन–साधना और धर्मजागरण पदयात्रा, जो दि. २ अप्रेल से ८ अप्रेल ७५ तक मालवा में आयोजित की गई थी। इस यात्रा से धर्मपाल प्रवृति व्यक्तिसुधार से आगे बढ़कर ग्राम-सुधार के क्षेत्र में प्रविष्ट हो गई।

धर्मपाल समिति–

कार्य के इस अप्रतिम विस्तार एवं प्रवृति के बहुमुखी उन्नयन को प्रगतिशील बनाये रखने के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था का पुनर्गठन किया गया। धर्मपाल क्षेत्र के कार्य संचालन हेतु एक ९ सदस्यीय धर्मपाल समिति का निर्माण किया गया, जिसके अध्यक्ष श्रीयुत गणपत-ज जी बोहरा बड़ौदा एवं संयोजक श्री समीरमल जी कांठेड़ जावरा

तथा सभी क्षेत्रीय संयोजक सर्वश्री हीरालाल जी नांदेचा खाचरोद, पूनमचन्द जी चौपड़ा रतलाम, गोकुलचन्द जी सूर्या उज्जैन, कन्हैया-लाल जी मेहता मन्दसौर के अतिरिक्त सर्वश्री मानवमुनि जी, मियांचन्द जी कांठेड़ नागदा एवं धुल्ला जी जैन गुराड़िया सदस्य मनोनीत किये गए। इस समिति की अलग-अलग विभागीय केन्द्रों पर प्रतिमाह एक बैठक रखने एवं श्री मानवमुनि जी द्वारा एक माह में १५ दिन प्रवास करके कार्य को गतिशील बनाये रखने का निश्चय किया गया।

क्षेत्रीय समितियां—

इस समिति के सहयोग एवं कार्य के सुचारू रूप से संचालन हेतु सम्पूर्ण प्रवृत्ति क्षेत्र को ५ भागों में विभाजित किया गया। उन के संयोजक क्रमशः श्री गोकुलचन्द जी सूर्या उज्जैन विभाग, श्री पूनमचन्द जी चौपड़ा रतलाम विभाग, श्री हीरालाल जी नांदेचा नागदा खाचरोद विभाग, श्री कन्हैयालाल जी मेहता मन्दसोर विभाग, श्री समीरमल जी कांठेड़ जावरा विभाग मनोनीत किए गये।

कार्य—

क्षेत्रीय समितियों के कार्यों का भी स्पष्ट निर्धारण किया गया। इन समितियों को अपने-अपने क्षेत्रों में सर्वेक्षण, शिक्षण-प्रशिक्षण-निरीक्षण एवं परीक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कार्य संचालन करने के निर्देश दिए गए।

सर्वेक्षण :

समितियों से अपेक्षा की गई कि वे अपने क्षेत्रों का मानक सर्वेक्षण करावें, जिससे प्रवृत्ति कार्य का प्रामाणिक मूल्यांकन कराने के साथ ही भावी रीति नीति ठोस आधारों पर निर्धारित की जा सके नागदा क्षेत्र के ६७ और मक्सी क्षेत्र के ३७ गांवों का सर्वेक्षण चुका है। ३०० मील के विस्तीर्ण भूभाग के दुरूह अंचलों में

शताधिक गांवों का सर्वेक्षण भी शनैः शनैः कराया जा रहा है।

शिक्षण–

एक और दो धार्मिक शिक्षण शालाओं की प्रारम्भिक स्थिति से चल कर प्रवृति ने इस क्षेत्र में अनेक उतार-चढाव देखें हैं प्रवृत्ति की जवानी में ये शालाए १०० की संख्या को स्पर्श करने लगीं और बढ़कर ऊपर भी चली गई। पुनः कम भी हुई। शिक्षा के दैनंदिन अबाध क्रम को जारी रखना एक अति दुष्कर कार्य है। इसलिए आरोह–अवरोह का आना स्वाभाविक है।

प्रशिक्षण–

शिक्षण को आदर्श बनाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों का होना आवश्यक है। अतः शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिये बीकानेर, रतलाम व मन्दसौर आदि स्थानों पर शिक्षक प्रशिक्षण शिविर लगाये गये।

मन्दसौर आदि ठाणा के शिविर को पंडित रत्न श्री प्रेममुनि जी म. सा. के और बरवाला सम्प्रदाय के मधुर व्याख्यानी श्री सरदार मुनि जी म. सा. का प्रौढ योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

रतलाम में कई महीनों तक क्रमशः अनवरत प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित रखा गया। ये प्रशिक्षण शिविर एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में स्वीकृत हो चुके है। इनके माध्यम से धर्मपाल क्षेत्रों को कुशल शिक्षक और संगठक उपलब्ध होते हैं।

निरीक्षण–

प्रवृत्ति तथा संचालित शालाओं के निरीक्षण हेतु क्षेत्रीय संयोजक प्रति माह कम से कम दो बार प्रवास करें। वे अपने साथ सहयोगियों को भी ले जावें। अपने निरीक्षण से संघ को अवगत कराते रहें। केन्द्रीय कार्यकर्ताओं की टोलियां भी संघ प्रमुखों के नेतृत्व में निरीक्षण के लिये ३ दलों में विभक्त होकर पांचों क्षेत्रों का निरीक्षण करें, जिसमे धर्मपालों के साथ ही क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं का भी उत्साहवर्धन होता रहे।

परीक्षण–

सर्वेक्षण, शिक्षण, प्रशिक्षण और निरीक्षण के माध्यम से कार्य को गति प्रदान करने के साथ ही उचित मूल्यांकन हेतु परीक्षण का प्रावधान किया गया है। धर्मपाल शालाओं के बालक-बालिकाएं भी साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड के माध्यम से परीक्षण की कसौटी पर स्वयं को प्रस्तुत करते हैं। गांवों में प्रवास, रैली और पदयात्रा आयोजनों के अवसर पर भी प्रमुख जन विविध प्रश्नादि के माध्यम से धार्मिक ज्ञान और श्रद्धान का परीक्षण करते हैं।

बजट–

पूर्णरूपेण सुयोजित श्री धर्मपाल प्रवृति विकेन्द्रित व्यवस्था के माध्यम से विकास के अभिनव आयामों को छू रही है। इसी सन्दर्भ में इसका बजट जो सन् १९६४ में ५ हजार था बढ़कर सन् १९७५ के देशनोक अधिवेशन में श्रीगुमानमल जी चोरड़िया की अध्यक्षता में १ लाख तक पहुंच चुका है।

७५ के बाद से प्रवृति में अनेकानेक नए आयाम जुड़ गए हैं, जिन्होंने प्रवृति कार्यो के समान ही बजट को भी विकेन्द्रित कर दिया है।

जवानी की ओर–

इस प्रकार सन् १९६४ में स्थापित यह प्रवृत्ति सन् १९७५ समाप्त होते-होते सहज चित्ताकर्षक किशोरावस्था में प्रविष्ट हो गई। किशोरावस्था विकास और विनाश की देहरी है। सर्वाधिक नाजुक यह अवस्था है। सौभाग्य से संघ को इस समय अत्यन्त यशस्वी नेतृत्व, निपुण योजनाशिल्पियों और कर्मठ क्रियान्वित करने वाले कार्यकर्ताओं की नियुक्ति उपलब्ध थी। इसलिए प्रवृत्ति की किशोरावस्था को अक्षत यौवन में परिवर्तित करने हेतु सूक्षम चिन्तन और दूरदृष्टि-पूर्ण योजना तैयार की गई और उसे व्यवहार के कठोर धरातल उसी सतर्कता और सजगता पूर्वक अवतरित कर दिया गया। प्रवृत्ति के आगामी कुछ वर्षो का इतिहास निपुण शिल्पियों ने निष्णात हाथों से उकेरा। (निर्मित किया)।

कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर :

रतलाम में सभी क्षेत्रों के धर्मपालों का एक दिवसीय शिविर दि. १६. ६. ७८ को हुआ जिसमें ५५ कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। श्री बोहरा की अध्यक्षता, संघ अध्यक्ष श्री चौपड़ा के मार्गदर्शन में सर्व श्री मगनलाल जी मेहता, धीरजमल रतलाम, मन्नालाल जी मेहता धुंधड़का, वीरसंघ प्रमुख श्री गुमानमल जी चोरड़िया, मानवमुनि जी, आदि ने अटूट ध्येयनिष्ठा से प्रवृत्ति को राष्ट्र की पुकार समझ कर आगे बढ़ाने का अनुरोध किया।

क्षेत्रीय प्रवास कर्त्ताओं की संख्या निरन्तर बढ़ती रही और इनमें सर्व श्री सरदारमल जी घड़ीवाल, राजमल जी नाहर, समरथ मल जी कांठेड़, फकीरचद जी मेहता सभी जावरा एवं धर्मपाल सर्व श्री मन्नालाल जी, गंगाराम जी बगदीराम जी व नागुजी भी सामिल हो गए।

संघ नेताओं का एक और गौरवशाली प्रवास :

संघ के अध्यक्ष व मंत्री आदि पदों पर परिवर्त्तन होता रहा। पर प्रवृत्ति के प्रति संघ की नीति अपरिवर्त्तित रही। नव निर्वाचित संघ अध्यक्ष श्री चौपड़ा, मंत्री सरदारमल जी कांकरिया, पूर्व मंत्री भंवरलाल कोठारी आदि प्रवृत्ति अध्यक्ष श्री बोहरा व सहयोगी व कर्त्ताओं के आह्वान पर प्रवासों में आते रहे। दि. ४ दिसंबर ७. १२ तक व्यापक प्रवास किया गया।

उज्जैन में दि. ५. १२ को प्रवासी दल ने तत्र विराजित परम पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म. सा. के दर्शन, वंदन व प्रवचन श्रवण का लाभ लेते हुए उन्हें धर्मपाल प्रवृत्ति की जानकारी कराई।

ताजपुर में सूर्या जलकूप सभारंभ व क्षेत्रीय सम्मेलन :

उज्जैन से प्रवासी दल ताजपुर पहुंचा जहां सूर्या परिवार के कीर्त्ति पुरुष श्री गोकुल चंद जी सूर्या द्वारा २ वर्ष पूर्व घोषित जलकूप बनकर तैयार हो चुका था। जैन शास्त्रों, गीता व रामचरित मानस के अधिकारी विद्वान और मुक्त हस्त के दानी श्री सूर्या जी का इस बीच निधन हो गया था। उनके परिजनों ने कूप निर्मित कराया था, जिसका पूजन कर श्री बोहरा ने धर्मपालों को समर्पित किया।

श्री बोहरा जी ने स्व. श्री सूर्या को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि अखिल भा. साधुमार्गी जैनसंघ के स्तंभ स्वरूप सहयोगी और श्री धर्मपाल प्रचार समिति के प्रमुख संयोजक स्व. श्री सूर्या जी इस प्रवृत्ति के प्रारंभिक स्वरूपकार थे। हमें उनेक आदर्शों को मूल रूप देना है।

स्व. श्री सूर्या जी की उदारमना धर्मपत्नी श्रीमती रतन कुंवर सूर्या व उपस्थित सूर्या परिवार के सदस्यों सहित अनेक स्नेही जनों के नेत्र कोरकों में अश्रुकण प्रकट हो गए।

इसके बाद श्री चोरड़िया की अध्यक्षता में क्षेत्रीय-सम्मेलन प्रारंभ हुआ जिसमें सर्व श्री सरदारमल जी कांकरिया, सोहनलाल जी सुराणा व विजयकुमार मूथा रायपुर, मानवमुनिजी, वीरेन्द्र जी कोठारी मोतीलाल जी पंडा आदि ने विचार व्यक्त किए।

स्व. श्री सूर्या जी के अनुज श्री प्रकाश जी सूर्या ने ताज[illegible] में समता-भवन का पंजीकरण होने पर सहयोग करने का भाव व्य[illegible] किया।

मक्षी :

प्रवासी दल रात्रि में ही मक्षी जा पहुंचा जहां धर्मपाल मौहल्ले में इस क्षेत्र के कार्य में पारस्परिक वैमनस्य से आरही शिथिलता के निवारण हेतु कड़कड़ाती शीत में खुले आकाश के नीचे कार्यकर्त्ताओं की बैठक बुलाई गई और श्री बाबूलाल को प्रमुखता में सर्व श्री रुघनाथ जी, रामूजी, हीरालाल जी, गंगाराम जी, प्रताप जी व मांगीलाल धर्मपाल की समिति बनाई, जिसने दो माह में शाला और सामान्य व्यवस्था में सुधार का विश्वास दिलाया ।

तिलावद :

शाजापुर में म. प्र. शासन के भूतपूर्व वित्तमंत्री श्री सौभाग्यमल जी जैन व श्री केशरीमल जी आदि से प्रवृत्ति संबंधी चर्चा कर प्रवासी दल तिलावद गोविन्दा के क्षेत्रीय सम्मेलन में आ पहुंचा । यहां उमंग और दर्प दीप्त धर्मपालों के स्वागत को देख मक्षी की थकान मिट गई । शोभायात्रा और सम्मेलन को देखकर लगा कि दो वर्ष के अंतराल से प्रवृत्ति में नवजीवन का संचार हो रहा है ।

सरपंच श्री भैरूंबा पटेल व धर्मपालों सर्व श्री नगजी, अमरजी नारायण जी, कालू जी, बनवारी जी, दौलतसिंह जी, श्रीमती उमराव बाई ने अतिथियों की सूत की माला पहनाई ।

मीरां और रैदास के मिलन-सा प्रभावी यह उत्सव देख श्री बोहरा जी, चोरड़िया जी व यशोदा देवी जी बोहरा ने सन्तोष व आनन्द का अनुभव करते हुए कहा कि यद्यपि २ वर्ष बाद हम मिल रहे हैं पर आपका उत्साह हमें उन्नति का विश्वास दिलाता है ।

प्रवासी दल संतुष्ट हो लौटा ।

अन्य कार्य :

[illegible]लकी में बाल दिवस १ जनवरी ७९ को मनाया गया । [illegible] एम. एस. नाहर व मानव मुनि जी ने आशीर्वाद दिया ।

प्रवृत्ति क्षेत्रों में धर्मपालों की हितैषी श्रीमती कमला चौपड़ा रतलाम के असामयिक निधन पर सर्वत्र श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित की गई। श्री पी. सी. चौपड़ा ने इस संवेदना के प्रति सबका आभार माना।

अभिनव आयाम : समाज-रचना :

प्रवृत्ति अब परिपक्वता की ओर अग्रसर हो रही थी। धर्मपालों में सुश्रावकत्व विकसित होकर अपनी महक से वातावरण को सुवासित बना रहा था। परम कृपालु आचार्यश्री जी धर्मपालों के विकास हेतु सदैव सदय थे। उनके आज्ञानुवर्ती संत-सतीवृन्द समय-समय पर क्षेत्र में आते रहे।

दि. २६ फरवरी ७९ को पंडित रत्न श्री धर्मेश मुनि जी म. सा. ठाणा ३ नागदा से उग्रविहार करके गुराड़िया गांव की पावन तीर्थ भूमि में पधारे। व गतिविधियों में आमूल सुधार हेतु प्रेरणा दी दि. २७-२ को मुनि त्रय रठड़ा पधारे जहां इसी दिन धर्मपाल सम्मेलन का भी आयोजन था संघ व प्रवृत्ति प्रमुख तथा निकटवर्ती १७ गांवों के धर्मपाल वहां एकत्रित हुए।

पंडित रत्न श्री धर्मेश मुनि जी ने ओजस्वी वाणी में धर्मपालों से अपनी समाज रचना को व्यवस्थित रूप देने का आह्वान किया व धर्मपाल समाज के ५ नियम प्रतिपादित किये जिन्हें समस्त उपस्थित धर्मपालों ने शपथ लेकर स्वीकार किया। समाज रचना के ये सिद्धान्त थे—

१. धर्मपाल समाज शुद्धिकरण को अपनाए और भविष्य में उन्हीं के साथ सम्पर्क बढ़ावें जो दुर्व्यसनों से दूर हों।

२. विवाह-सगाई आदि में भी दुर्व्यसनी लोगों से सम्बन्ध [illegible] रखा जावे।

३. प्रतिमाह धर्मपाल दिवस पर 'अगता, रखा जावे।

४. गांव-गांव में 'धर्मपाल पंचायत' कायम की जाय।

५. समाज के सुन्दर भविष्य का ध्यान रखकर सब कार्य जैन विधि से किये जावें।

रठड़ा से प्रवृत्ति में एक नये अध्याय का शुभारम्भ हुआ। रठड़ा प्रवृत्ति इतिहास का दीप्तमान नाम है।

प्रथम धर्मपाल पंचायत :

तत्काल प्रथम धर्मपाल पंचायत का भी गठन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से श्री शंकरलाल जी जैन उमरना अध्यक्ष, सीताराम जी नागदा मन्त्री व धूलजी जैन सा. गुराड़िया कोषाध्यक्ष निर्वाचित किये गये।

पदयात्रा—२० से २६ मार्च ७९ को दलौदा से जावरा तक की धर्मजागरण जीवन साधना एवं संस्कार निर्माण पदयात्रा का सफल आयोजन हुआ, जिसका शुभारम्भ मन्दसौर के तत्कालीन विधायक श्री गजा महाराज (अब स्वर्गीय) ने किया। समापन पर जावरा के नगर परिषद अध्यक्ष मिर्जा गफ्फार अली, सांसद श्री लक्ष्मीनारायण जी पांडे श्री जवाहरलाल जी मूणत आदि उपस्थित थे।

श्री प्रेमराज गणपतराज जी वोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीपनगर, रतलाम का भव्य शुभारम्भ :

तृतीय जीवन साधना, संस्कार निर्माण एवं धर्म जागरण पदयात्रा के मध्य ही श्री पी. सी. चौपड़ा ने रतलाम के समीपस्थ दिलीपनगर में एक महत्वपूर्ण भवन युक्त भूमि खंड को धर्मपाल मुख्यालय के रूप में क्रय करने और वहां धर्मपाल छात्रों के

लिए छात्रावास संचालित करने का सुझाव दिया। संघ प्रमुखगण सर्वश्री गणपतराज जी बोहरा, गुमानमल जी चोरड़िया, सरदारमल जी कांकरिया, भंवरलाल जी कोठारी, समाजसेवी मानवमुनि जी, समीरमल जी कांठेड़ आदि ने निर्णय की त्वरा का प्रदर्शन किया और पदयात्रा समापन के बाद सीधे ही रतलाम पहुंच कर भवन व भूमि को देखा व क्रय करने का निश्चय किया। समिति अध्यक्ष श्री गणपतराज जी बोहरा के उदात्त सहयोग से यह भवन और भूमि क्रय की गई। कृषि भूमि, ट्यूबवैल और दो मंजिले भवन से युक्त इस भूखंड का प्रकृति की शान्त गोद में अपना एक निराला महत्व है।

यहां सन् १९७९ की ७ जुलाई को विधिवत धर्मपाल छात्रों के लिए छात्रावास प्रारम्भ कर दिया गया। कक्षा ८ से लेकर कॉलेज स्तर तक के छात्रों के निवास-भोजन और अध्ययन की यहां श्रेष्ठ व्यवस्था है। २० छात्र सहज ही गहपति सहित निवास कर सकते हैं। भवन क्रय के पश्चात् एक भव्य और विशाल सभा-भवन का भी निर्माण कराया गया है।

श्री पी. सी. चौपड़ा छात्रावास संचालन हेतु अपनी सेवायें दे रहे हैं। सर्वश्री मगनलाल जी मेहता, कोमलसिंह जी कूमट, चम्पालाल जी पिरोदिया श्रीमती शांता मेहता, श्रीमती धुरी वहिन पिरोदिया, श्रीमती रोशन देवी खाबिया सहित रतलाम श्रीसंघ के सभी गणमान्य व्यक्ति छात्रावास संचालन में सहयोग हेतु सदैव समुद्यत पाए जाते हैं।

छात्रावास धर्मपाल युवक-युवतियों के अनेक शिविर और एकाधिक धर्मपाल सम्मेलन जैसे उत्सवों के सुखद आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुके हैं। यह छात्रावास धर्मपाल प्रवृति के विकास में एक विशिष्ट महत्व की भूमिका निभा रहा है।

उद्घाटन : धर्मपाल सम्मेलन पूर्वक :

इस विशिष्ट योजना का गौरवशाली समारोह के साथ

७९ को छात्रावास भवन में ही उद्घाटन हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री कोमलसिंह जी कूमट व संयोजक श्री मानवमुनि जी थे। श्री बोहरा ने छात्रावास क्रय, निर्माण व संचालन में श्री कूमट व श्री चौपड़ा की भूमिका को सहयोग का ज्वलंत उदाहरण बताते हुए कहा कि छात्रावास दलित वर्ग के उत्थान की आधारशिला बने, मेरी यही मंगल कामना है।

प्रमुख अतिथि डॉ० बोरदिया जी, श्रीमती यशोदा देवी जी बोहरा, समीरमल जी कांठेड़, भूपराज जी जैन, डॉ० श्री मोहनलाल जी चोरड़िया, मामा-मामी, धूलजी गुराड़िया, सीताराम जी नागदा, रामसिंह जी गूजर, मनोहरलाल जैन पीपल्या, निहालचन्द गांधी, गजेन्द्र सूर्या, श्रीमती सोहन मेहता, मदन जी कटारिया, कनकमल कांठेड़ आदि ने ३५ गांवों के १०० धर्मपाल प्रतिनिधियों व अन्य समाज बान्धवों को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम अध्यक्ष भंवरलाल कोठारी ने कहा कि छात्रावास के माध्यम से निकलने वाले बच्चे प्रवृति से सच्ची शिक्षा प्राप्त कर नर से नारायण बनेंगे, विश्वास है। समाज को इस ज्ञान मन्दिर का सहयोग कर आत्मा के आवरण को दूर करना चाहिये।

समिति बैठक :

आज ही दोपहर में छात्रावास परिसर में समिति बैठक आयोजित कर निम्न निर्णय लिये गये—

१. छात्रावास की नियमावली बनाई गई।

२. शाला निरीक्षण व संघ-प्रमुखों के प्रवास निर्धारित किये गये।

३. पाठशालाओं के नवीन पाठ्यक्रम निर्माण हेतु श्री मगन-

लाल मेहता को मनोनीत किया गया ।

४. पंचेड़ में १६-८, पालखी में १६-६ व धमनार में ७-१० को स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किये जावें ।

५. धर्मपाल समाज रचना के कार्य को द्रुत गति से आगे बढ़ावें ।

समता-भवन :

आज ही सन्ध्या में श्री बोहरा जी के सहयोग से निर्मित डेलनपुर के धर्मपाल समता-भवन को श्री बोहरा ने गांव को समर्पित किया ।

निदान—६ मई को केरवासा स्वा. प्र. शि. में डॉ. खाते, डॉ. गांगे, डॉ. मारु आदि ने २०१ रोगियों की व बरगुंडा में ८० रोगियों की चिकित्सा की गई ।

बढ़े-चलो ! बढ़े-चलो !

मक्सी में श्री ध. प्र. प्र. समिति की दि. ३-६-७६ की बैठक में चातुर्मास काल में मक्सी के अतिरिक्त शेष चारों क्षेत्रों में चार स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित करने का निश्चय किया गया व शिविर ८-७-७६ का डॉ. बोरदिया जी के नेतृत्व में केरवासा में रखना तय किया गया ।

जून में ही डेलनपुर समता—भवन सम्बन्धी विवाद का समाधान और मक्सी क्षेत्रीय प्रवास श्री चोपड़ा व श्री मानवमुनि जी ने पूर्ण किया ।

जुलाई में रतलाम में महासती श्री इन्द्रकंवर जी म. सा.

ठाणा ११ के सान्निध्य में धर्मपाल बालकों ने सामायिक प्रतियोगिता में भाग लिया ।

९ अगस्त को डॉ. प्रेमसुमन जैन ने धर्मपाल छात्रावास का निरीक्षण कर प्रसन्नता अनुभव की ।

धर्मपाल आचार्य श्री जी के सान्निध्य में :

अजमेर में संघ अधिवेशन के अवसर पर सितम्बर १९७९ में महावीर भवन के हाल में प्रभूत संख्या में उपस्थित धर्मपालों का सम्मेलन उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ । आज के सम्मेलन की विशेषता थी धर्मपाल वक्ताओं की बहुलता, जो धर्मपालों की चेतना व स्वावलम्बन का प्रतीक थी ।

सम्मेलन समाप्ति के तुरन्त बाद सभी धर्मपाल भाई-बहिन आचार्यश्री जी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए, तिक्खुत्तों के पाठपूर्वक वन्दना कर भावभीने स्वरों में, ओज, मिठास, चाह, समर्पण व भावावेश के साथ गीत प्रस्तुत किये गये । बहिनों ने गाया—

तरसे तरसे ओ नाना गुरुवर जी !
ये नैना दरसों के बिना !!

तो वृद्धाओं का विगलित स्वर—रखना धर्मपालों की लाज जी, ओ नाना गुरुवर जी । वातावरण को भावावेशित कर दिया ।

करुणामूर्ति आचार्य प्रवर ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि चाहे शरीर से दूर रहूं, मैं विचारों से आपके साथ हूं ।

प्रमुदित मन, आश्वस्त धर्मपाल अपने क्षेत्रों की ओर कार्य-प्रसार का अभिनव संकल्प ले लौटे ।

महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती विजयादेवी सुराणा रायपुर

ने धर्मपाल प्रवृत्ति की प्रगति में विशेष योग प्रदान करने हेतु सदस्याओं से अपील की ।

प्रचार यात्रा—नवम्बर माह में धर्मपाल क्षेत्रों में नव–नियुक्त प्रचारक श्री छोटालाल मोहनलाल अजमेर, व प्रमुख जनों के प्रवास अबाध गति से चल रहे थे । पदयात्रा की पूर्व तैयारी व शाला निरीक्षण हेतु (स्व.) श्री गेंदालाल जी खाब्या सहित प्रचारक दल ने गुराड़िया, धूमायड़ा, मऊ, बोरखेड़ा, मोयना, रतलाम, मक्षी, झोकर, तिलावद-गोविन्द, रूलकी इन्दौर चौसला, गोलवा, ताजपुर के प्रवास में बालकों के संस्कार और गांवों की जागृति पर हर्ष हुआ ।

उल्लेखनीय है कि जोकर में शिक्षक बलदेव जी, तिलावद में बनवारीलाल जी, रूलकी में उमरावसिंह जी शाला चलाते हैं । रूलकी में समता-भवन बन जाने से बड़ा लाभ हुआ है, यहां के कालूजी चैनाजी समाज के अध्यक्ष हैं । चौसला में समाज के चुनाव कराये गये जिसमें श्री हमीरसिंह जी मालवी अध्यक्ष और बलदेवसिंह जी मन्त्री चुने गये । यहां श्री शंकर जी शिक्षक हैं । **शंकर जी धर्मपाल ने अपनी कीमती जमीन का प्लाट 'समता भवन' बनाने हेतु भेंट किया** है । गोलवा में श्री बापूलाल जी समाज के अध्यक्ष हैं और वृजविहारी लाल जी धार्मिक पाठशाला चलाते हैं । ताजपुर में मोतीलाल जी का शिक्षण सराहनीय है ।

इन्दौर में ४-११-७९ को पंडित रत्न श्री धर्मेश मुनि जी म. सा. के सान्निध्य में धर्मपाल सम्मेलन हुआ ।

१४ दिसम्बर ७९ को सेजावता में नन्दराम जी धर्मपाल के यहां ७० गांवों के १००० धर्मपालों की श्रद्धांजली सभा को श्री समीरमल जी कांठेड़ व सुरेश जी कांठेड़ आदि ने प्रेरक सम्बोधन दिया ।

दिसम्बर माह के प्रवास से ज्ञात हुआ कि मोहना गांव में

समाज अध्यक्ष श्री नाथ जी, मूलचंद जी व शिक्षक पीरदान जी, रठड़ा में अध्यक्ष श्री धूल जी, मऊ में अध्यक्ष माधोजी धर्मपाल हैं सहयोगी श्री देवीलाल जी व शिक्षक वक्षीलाल जी व दयाराम जी तथा घूमायड़ा में शिक्षक रणछोड़ जी व नरसिंह जी अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। १५ व १६ दिसंबर को जावरा व नागदा क्षेत्र का प्रवास श्री समीरमल व राजमल जी कांठेड के नेतृत्व में किया गया। दि २३-१२-७६ को बोरखेड़ा में ३३० मरीजों की स्वास्थ्य सेवा की गई। ५ जनवरी ८० को मंदसौर नागदा क्षेत्र का प्रवास किया गया। ३ फरवरी को नगरी में स्वा. प. शिविर आयोजित किया गया जिसमें ४२५ रोगियों की चिकित्सा की गई।

छात्रावास बैठक : नव वर्ष के उषाकाल में दि. २ जनवरी ८० को श्री प्रेमराज गणपतराज जी बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास संचालन समिति की बैठक (दिलीप नगर) में सर्व श्री चौपड़ा, मानवमुनि जी, समीरमल जी कांठेड़, मगनलाल जी मेहता, गेंदलाल जी खाविया, चम्पालाल जी पिरोदिया, कोमल सिंह जी कूमट व सुजानमल जी तालेरा ने भाग लिया। गृहपति नानालाला जी मठ्ठा ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विकास संबंधी महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

क्षेत्रीय-संयोजक– गाण फिर प्रचार पर निकल पड़े। मंदसौर के श्री कन्हैयालाल जी और जावरा क्षेत्र के नव नियुक्त संयोजक श्री फकीरचंद जी पामेचा ने अपने-२ क्षेत्रों का प्रवास कर स्थान-स्थान पर धर्मपाल समाजों का गठन किया। इन्होंने पंचम पदयात्रा की भूमिका भी निर्मित की। भटेरा गांव पूरा ही व्यसन मुक्त पाया गया–राजपूतों व मुसलमानों सहित।

पंचम पदयात्रा : ९ से १४ मार्च ८० तक मोयना से नागदा आयोजित की गई, बीच में दि. १३. ३ को गुराड़िया में समता भवन का उद्घाटन व ध. प्र. प्र. सा. बैठक संपन्न हुई। नागदा में यात्रा डॉ. मंगलसिह सुमन के प्रेरक प्रवहमान भाषण के साथ पूर्ण हुई।

मार्च के अंतिम सप्ताह में श्री चौपड़ा, मुनि जी व कांठेड़

जी ने फिर तूफानी और व्यापक प्रवास किए । १३ अप्रेल को रुलकी में २७५ जनों का स्वा. प. किया गया । कनवास में हिन्दूजी परमार के घर सभा में ४० ने व्यसन मुक्ति की शपथ ली ।

अक्षय तृतीया पर राणावास परमपूज्य आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त साधना की नवसूत्री योजना अपनाने को भी धर्मपाल उत्सुक हुए ।

दिलीप नगर छात्रावास में २२ जून ८० तक आयोजित ४५ धर्मपाल युवाओं के शिविर हेतु सन् १९८० स्मरणीय रहेगा । यहां निर्णय किया गया कि युवक धर्मपाल राणावास में आचार्य जी का सान्निध्य भी प्राप्त करें ।

१८. ५ से २०. ५. ८० तक श्री चोरड़िया जी के नेतृत्व में में त्रिदिवसीय सघ प्रवास में धमनार में समता भवन का शिलान्यास सहित नगरी, खोखरा, कनवासा, भुवासा व खाचरोद आदि में सभाएं की गईं ।

२१ जून को ताजपुर में महिला समिति द्वारा धर्मपाल महिलाओं का सम्मेलन श्रीमती रसकुंवर सूर्या के उद्घाटन व संघ-प्रमुखों के सान्निध्य में सोत्साह सम्पन्न हुआ ।

राणावास संघ अधिवेशन के समय ध. प्र. के संयोजक श्री पी. सी. चौपड़ा ने ३० जून ८० तक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि ६ क्षेत्रीय संयोजकों के सहयोग से कार्य सचालित किया जा रहा है । १६ शालाएं चल रही है । धर्मपाल बालिकाओं का इंदौर शिविर में प्रदर्शन सराहनीय रहा । चल-चिकित्सालय का कार्य सराहनीय है ।

दिसंबर ८० में फिर प्रवास हुए जिनमें उदयपुर के भूतपूर्व सांसद श्री ओंकार लाल बोहरा ने भी प्रवृत्ति-कार्य देखा । ४ जनवरी ८१

समाज अध्यक्ष श्री नाथ जी, मूलचंद जी व शिक्षक पीरदान जी, रठड़ा में अध्यक्ष श्री धूल जी, मऊ में अध्यक्ष माधोजी धर्मपाल हैं सहयोगी श्री देवीलाल जी व शिक्षक वक्षीलाल जी व दयाराम जी तथा घूमा-यड़ा में शिक्षक रणछोड़ जी व नरसिंह जी अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। १५ व १६ दिसंबर को जावरा व नागदा क्षेत्र का प्रवास श्री समीरमल व राजमल जी कांठेड के नेतृत्व में किया गया। दि २३-१२-७६ को बोरखेड़ा में ३३० मरीजों की स्वास्थ्य सेवा की गई। ५ जनवरी ८० को मंदसौर नागदा क्षेत्र का प्रवास किया गया। ३ फरवरी को नगरी में स्वा. प. शिविर आयोजित किया गया जिसमें ४२५ रोगियों की चिकित्सा की गई।

छात्रावास बैठक : नव वर्ष के उषाकाल में दि. २ जनवरी ८० को श्री प्रेमराज गणपतराज जी बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास संचालन समिति की बैठक (दिलीप नगर) में सर्व श्री चौपड़ा, मानव-मुनि जी, समीरमल जी कांठेड़, मगनलाल जी मेहता, गेंदलाल जी खाबिया, चम्पालाल जी पिरोदिया, कोमल सिंह जी कूमट व सुजान मल जी तालेरा ने भाग लिया। गृहपति नानालाला जी मठ्ठा ने प्रति-वेदन प्रस्तुत किया। विकास संबंधी महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

क्षेत्रीय-संयोजक– गाण फ़िर प्रचार पर निकल पड़े। मंदसौर के श्री कन्हैयालाल जी और जावरा क्षेत्र के नव नियुक्त संयोजक श्री फकीरचंद जी पामेचा ने अपने-२ क्षेत्रों का प्रवास कर स्थान-स्थान पर धर्मपाल समाजों का गठन किया। इन्होंने पंचम पद-यात्रा की भूमिका भी निमित की। भटेरा गांव पूरा ही व्यसन मुक्त पाया गया–राजपूतों व मुसलमानों सहित।

पंचम पदयात्रा : ६ से १४ मार्च ८० तक मोयना से नागदा आयोजित की गई, बीच में दि. १३. ३ को गुराड़िया में समता भवन का उद्घाटन व ध. प्र. प्र. सा. बैठक संपन्न हुई। नागदा में यात्रा डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन के प्रेरक प्रवहमान भाषण के साथ पूर्ण हुई।

मार्च के अंतिम सप्ताह में श्री चौपड़ा, मुनि जी व कांठेड़

नाडु के भूतपूर्व राज्यपाल श्री प्रभुदास भाई पटवारी व बम्बई के उद्योगपति श्री चुन्नीलाल भाई ने सम्बोधित किया । परमपूज्य आचार्य प्रवर ने धर्मपालों को मार्मिक उद्‌बोधन प्रदान किया । संयोजन संघ मन्त्री श्री पीरदान पारख व आभार नव निर्वाचित संघ अध्यक्ष श्री दीपचन्द जी भूरा ने प्रकट किया ।

नव वर्ष प्रारंभ होने के साथ ही नव निर्वाचित संघ मन्त्री श्री पीरदान जी पारख एव श्री व श्रीमती कांकरिया के नेतृत्व में संघ प्रमुखों ने दि. २०-१-८३ से २३-१-८३ तक त्रिदिवसीय धर्मपाल प्रवास पूर्ण किया । २५ व २७ जनवरी को मन्दसौर क्षेत्र व सरसी में सम्मेलन किये गये । ग्राम जवासा में ३१ जनवरी को १५० गांवों के ३००० धर्मपालों की श्रद्धांजलि सभा को पुनः मनोनीत प्रवृति के प्रमुख संयोजक श्री समीरमल जी कांठेड़ ने ओजस्वी आह्वान दिया । ३० जनवरी को रीयायन में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वश्री डॉ. निशिकान्त शर्मा, डॉ. वावेल, डॉ वजाज डॉ. कुरैशी, डॉ. पंडित दम्पति व डॉ० पाटोदी की सेवाएं अविस्मरणीय है ।

फरवरी ८३ धर्मपाल का प्रचार मास रहा । घनघोर प्रवास हुए । १२ से १८ जन तक भील विश्रांतिगृह रतलाम में धर्मपाल महिलाओं का शिविर हुआ । इससे पूर्व २२-५ से १२-६ तक धर्मपाल बालकों का शिविर हुआ । आदर्श त्यागी, तपस्वी, मधुर व्याख्यानी श्री रणजीत मुनि जी म. सा. का सान्निध्य मिला ।

दि. २२ से २४ अप्रेल तक ताजपुर और लाहोरी में धर्मपाल दिवस के कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हुए जिनमें संघ-प्रमुखों ने भी भाग लिया । ताजपुर में धर्मपाल समाज के अध्यक्ष श्री सेवाराम जी, उपाध्यक्ष श्री बाबूलाल जी सोलंकी व मन्त्री श्री कन्हैयालाल जी मास्टर चुने गये ।

लाहोरी का शानदार क्षेत्रीय सम्मेलन सरपंच श्री ओमप्रकाश मंडलोई के स्वागत पूर्वक प्रारम्भ हुआ । भारी संख्या में उपस्थित

८१ को नायन में नागदा क्षेत्रीय समिति की बैठक श्री वोहरा के सान्निध्य में हुई व उसी दिन गुराड़िया में धर्मसभा हुई ।

संघ-अध्यक्ष श्री जुगराज जी सेठिया भी धर्मपाल प्रवास पर पहुंचे ।

मन्दसौर से मक्सी तक विस्तीर्ण धर्मपाल क्षेत्रों में दि. ३-४-८२ चैत्र शुक्ला १० को धर्मपाल स्थापना दिवस मनाया गया । कार्यकर्त्ताओं ने एक बार फिर प्रवासों की धूम मचा दी ।

३०-५-८२ को दिलीपनगर में मध्यप्रदेश मेडिकल एसोसियेशन रतलाम के सहयोग से डॉ. शशिकान्त शर्मा के नेतृत्व में डॉ. बोरदिया स्मृति स्वास्थ्य परीक्षण शिविर लगाया गया । स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों की इस मानव सेवी योजना को गंगाशहर के श्री जेसराज जी भंवरलाल जी बैद का प्रशस्त व उदात्त संस्कार प्रवृत्ति इतिहास में सदैव स्मरण किया जावेगा ।

२० मई ८२ को संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष और प्रवृत्ति के कर्मठ कार्यकर्त्ता व नेता सेठ श्री हीरालाल जी नांदेचा के निधन से प्रवृत्ति क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई । सर्वत्र उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।

५ से १२ जून ८३ तक रतलाम में श्री अ. भा. सा. जैन महिला समिति के सहयोग से ५५ धर्मपाल बहिनों का शिविर श्री रणजीत मुनि जी म. सा. की मंगल प्रेरणा पूर्वक सम्पन्न हुआ :

दि. २३ मई से ५ जून तक ४० धर्मपाल छात्रों का भव्य शिविर श्री रणजीत मुनिजी म. सा. के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ । दोनों शिविर विशेष सफल व उत्साहपूर्वक रहे ।

सन् ८२ के अहमदावाद संघ अधिवेशन के अवसर पर धर्मपाल सम्मेलन में २५० धर्मपालों ने भाग लिया । सम्मेलन को तमिल-

नाडु के भूतपूर्व राज्यपाल श्री प्रभुदास भाई पटवारी व बम्बई के उद्योगपति श्री चुन्नीलाल भाई ने सम्बोधित किया । परमपूज्य आचार्य प्रवर ने धर्मपालों को मार्मिक उद्बोधन प्रदान किया । संयोजन संघ मन्त्री श्री पीरदान पारख व आभार नव निर्वाचित संघ अध्यक्ष श्री दीपचन्द जी भूरा ने प्रकट किया ।

नव वर्ष प्रारंभ होने के साथ ही नव निर्वाचित संघ मन्त्री श्री पीरदान जी पारख एव श्री व श्रीमती कांकरिया के नेतृत्व में संघ प्रमुखों ने दि. २०-१-८३ से २३-१-८३ तक त्रिदिवसीय धर्मपाल प्रवास पूर्ण किया । २५ व २७ जनवरी को मन्दसौर क्षेत्र व सरसी में सम्मेलन किये गये । ग्राम जवासा में ३१ जनवरी को १५० गांवों के ३००० धर्मपालों की श्रद्धांजलि सभा को पुनः मनोनीत प्रवृति के प्रमुख संयोजक श्री समीरमल जी कांठेड़ ने ओजस्वी आह्वान दिया । ३० जनवरी को रीयायन में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वश्री डॉ. निशिकान्त शर्मा, डॉ. बावेल, डॉ बजाज डॉ. कुरैशी, डॉ. पंडित दम्पति व डॉ० पाटोदी की सेवाएं अविस्मरणीय है ।

फरवरी ८३ धर्मपाल का प्रचार मास रहा । धनघोर प्रवास हुए । १२ से १८ जन तक भील विश्रांतिगृह रतलाम में धर्मपाल महिलाओं का शिविर हुआ । इससे पूर्व २२-५ से १२-६ तक धर्मपाल बालकों का शिविर हुआ । आदर्श त्यागी, तपस्वी, मधुर व्याख्यानी श्री रणजीत मुनि जी म. सा. का सान्निध्य मिला ।

दि. २२ से २४ अप्रेल तक ताजपुर और लाहोरी में धर्मपाल दिवस के कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हुए जिनमें संघ–प्रमुखों ने भी भाग लिया । ताजपुर में धर्मपाल समाज के अध्यक्ष श्री सेवाराम जी, उपाध्यक्ष श्री बाबूलाल जी सोलंकी व मन्त्री श्री कन्हैयालाल जी मास्टर चुने गये ।

लाहोरी का शानदार क्षेत्रीय सम्मेलन सरपंच श्री ओमप्रकाश मंडलोई के स्वागत पूर्वक प्रारम्भ हुआ । भारी संख्या में उपस्थित

ग्राम प्रमुखों को 'धर्मपाल प्रवृत्ति' को लक्ष्य में रखकर श्री जानकी नारायण श्रीमाली द्वारा लिखे गये उपन्यास 'धर्मपाल' की प्रतियां श्री गणपतराज जी बोहरा ने भेंट की ।

इससे पूर्व श्रीयुत् गणपतराज जी बोहरा के ज्येष्ठ पुत्र संघ के सहमन्त्री व युवा संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री पारसराज जी शाह के आकस्मिक निधन से धर्मपाल क्षेत्र शोक में डूब गये । छठी धर्म जागरण पदयात्रा भी आधा दिन के बाद ही स्थगित करनी पड़ी । किन्तु लोहारी गांव के सामूहिक विवाहों का कार्यक्रम हुआ ।

दिलीपनगर छात्रावास में दि. २३–५ से ५ जून ८३ तक १४ दिन का धर्मपाल जैन शिक्षण शिविर आदर्श त्यागी मधुर व्याख्यानी श्री रणजीत मुनि जी म. सा. ठाणा २ के सान्निध्य में हुआ जिसमें धर्मपालों ने भाग लिया । बाद में विहार के समय में मुनि द्वय नागदा के समता-भवन में भी पधारे ।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों को पद्मश्री डॉ. नन्दलाल जी बोरदिया स्मृति स्वा. परीक्षण शिविर के रूप में चालू रखा गया ।

सन् १९८३ के पर्यूषण पर्व में श्री समता प्रचार संघ उदयपुर के स्वाध्यायी बन्धुओं ने धर्मपाल क्षेत्रों में धर्माराधना करवाकर एक नवीन शुभ कार्य सम्पन्न किया ।

अन्तहीन प्रवास श्रृंखला :

इस प्रकार अन्तहीन प्रवास श्रृंखला के माध्यम से धर्मपालों के उन्नयन हेतु भांति–भांति के संस्कार परक व सहयोग मूलक कार्यक्रम संघ की ओर से आयोजित किये जाते रहे । धर्मपालों ने भी अपनी समाज रचना को सुदृढ़ बनाने और अपनी सामूहिक उन्नति के लिए अनथक श्रम करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी । फलस्वरूप आरोह–अवरोह के स्वाभाविक क्रम से प्रगति का विकास होता

रहा ।

भावी इतिहास हमारा है :

इसी बीच धर्मपालों के आराध्य परमपूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. अपनी शिष्य मण्डली सहित दि. १८-२-८४ को रतलाम पधार गये हैं । धर्मपालों में अपार उत्साह का जागरण हुआ है और उनका यह विश्वास प्रबल हो उठा है कि 'भावी इतिहास हमारा है ।

★

आत्म-शान्ति का मार्ग

□ राज सौगानी

श्रीमद् राजचन्द्र जी ने एक बार एक मनुष्य से पूछा—"यदि तुम एक हाथ में घी का भरा लोटा और दूसरे हाथ में छाछ का भरा लोटा लिए जा रहे हो और कर्म योग से मार्ग में किसी का धक्का लग जाए तो तुम किस लोटे को संभालोगे ?"

मनुष्य ने कहा—"जरूरी बात है घी का लोटा ही पहले संभालेंगे ।"

तब श्रीमद् राजचन्द्र जी ने कहा—

"पर आजकल बात इससे बिल्कुल विपरीत है लोग पहले शरीर को सम्भालते हैं जो कि छाछ के समान है और आत्मा की तनिक भी परवाह नहीं करते जो कि घी के तुल्य है ।"

मनुष्य को श्री राजचन्द्र जी के कहने का अभिप्राय ठीक-ठीक समझ में आ गया कि यदि कोई शान्ति प्राप्त करना चाहता है तो वह शरीर और आत्मा इन दोनों में से आत्मा की पहिचान कर उस ओर ही दृष्टि रखे ।

द्वारा पी. सी. सौगानी
स्टेशन रोड, भवानी मंडी

पर्यूषण पर्व एवं अष्टमी चतुर्दशी आदि के वृत एवं त्याग, प्रत्याख्यान पूर्वक सेवा के क्षेत्र में भी वे अग्रगण्य है। ये आर्थिक क्षेत्र में स्वावलंबन के द्वारा आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर है।

इस प्रकार स्वाध्याय, साधना, सेवा, निवृत्ति, स्वावलंबन, भौतिक व आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में प्रगति की अदम्य आकांक्षा लेकर शताब्दियों से पीड़ित एक पूरे के पूरे समाज का अंगड़ाई लेकर जाग्रत हो जाना और वह भी मात्र १० वर्ष में, उस अवधि में जो किसी समाज जागरण कार्य में नगण्य अवधि होती है, इस युग का एक अविश्वसनीय सा लगने वाला किन्तु पूर्णतः सत्य तथ्य है।

धर्मपालों के निष्ठा और पुरुषार्थ पूर्ण श्रम, श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ के आत्मीय सहयोग तथा समतादर्शन प्रणेता जिन शासक प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की प्रेरक वाणी की त्रियुति धर्मपाल समाज रचना को परिपूर्ण बनावेगी, राष्ट्र के लिए, समाज के लिए एक आदर्श बनावेगी।

३०० वर्गमील क्षेत्र में फैले मालव के इस उर्वर और ऐतिहासिक भूभाग के सैकड़ों गांवों के लक्षाधिक गुजराती बलाई के व्यक्ति-व्यक्ति तक धर्मपाल का सन्देश किसी न किसी रूप में पहुंच चुका है। बलाई समाज के सौराष्ट्री व मालवी लोग भी जिज्ञासु हृदयों से इस क्रांतिकारी परिवर्त्तन को देख रहे हैं उनके अन्तस्तल में इस गंगा में अवगाहन करने की चाह जाग उठी है।

जो कुछ घटित हो चका है वह असंभव और कल्पनातीत सा प्रतीत हो रहा है किन्तु यदि आज के ओसवाल समाज के इतिहास पर ही एक दृष्टि डालें तो हमें धर्मपाल समाज के भविष्य का अनुमान हो सकता है। आज के ओसवाल भी किसी समय क्षत्रिय थे। शिकार व हिंसा उनका सहज कर्म था। आज वे चींटी तो क्या। पेड़-पौधों तक के जीवन की यत्न पूर्वक अभिवर्धना करते हैं।

धर्मपाल समाज भी कालान्तर में पूर्ण अहिंसक, व्यसन मुक्त विकार मुक्त सेवा-व्रती समाज का रूप ग्रहण करेगा। गांव-गांव में अन्यत्ज के स्थान पर अग्रज के रूप में प्रतिष्ठित हो, शेष समाज का मार्गदर्शन करेगा समाज के अन्य अंग भी इस नवोदित प्रेरणा-पुंज से प्रेरणा ग्रहण करेंगे। आज भी हम देख रहे हैं—धर्मपाल प्रवृत्ति

सम्भावनाएं

हमने प्रवृत्ति के गौरवशाली उद्भव और उज्जवल इतिहास का संक्षिप्त विहंगावलोकन किया है, जिससे हमें इसके स्वर्णिम भविष्य का विश्वास मिला है। इस विकसोन्मुख प्रवृत्ति का विकास क्रम भावी के गर्भ में छिपी विकास की असीम संभावनाओं का पुंजीभूत रूप है।

प्रवृत्ति का उद्भव एक प्रेरक उपदेश मात्र से हो गया। क्या यह एक चमत्कार से कम है ? आज उपदेश सुन-सुनकर भारत-वासियों के कान पक गए हैं। उपदेशों का उन पर कोई असर नहीं होता। ऐसी दशा में आचार्य प्रवर के सरल शब्दों में छिपी मंत्र शक्ति और ग्रहणकर्त्ताओं के निर्मल उत्कर्षानुरागी जिज्ञासु मनों की झांकी उद्भव की घटना में सन्निहित दिखाई देती हैं।

प्रवृत्ति विकास के क्रम से स्पष्ट होता है कि गत २० वर्षों में व्यक्ति सुधार, से ग्राम सुधार व्यसन मुक्ति से विकार मुक्ति और अन्त्योदय से सर्वोदय की ओर यह प्रवृत्ति सफलता पूर्वक बढ़ चुकी है। व्यष्टि से समष्टि और ग्राम से राष्ट्र की एकात्मकता प्रवृत्ति विकास के साथ-साथ घनिष्टतर होती चली गई है।

नितान्त असंस्कारी जन मात्र २० वर्षों में पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारित बने जनों से संस्कार के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। प्रार्थना स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण व संत-दर्शन के माध्यम से आध्यात्मिक विकास के द्वार खुल चुके हैं। धर्म साधना क्षेत्र में वैयक्तिक से बढ़-कर सामूहिक साधना को धर्मपाल अपना चुके हैं।

पदयात्राओं व प्रवासों में उन्होंने जिस उत्कृष्ट कोटि की सेवा-भावना का सहज प्रदर्शन किया है, उससे वे वृती श्रावकों के समकक्ष बनते जा रहे हैं।

धर्मपाल पाठशालाओं का जितना लाभ इन सरल ग्रामीणों ने उठाया है, वह उन्हें स्वाध्याय के लिए प्रेरित करने की आधार भूमि के रूप में उल्लेखनीय है।

के प्रवृत्ति के प्रभाव क्षेत्र में राजपूत और मुसलमानों से युक्त गांव भी पूर्णतः व्यसन मुक्त गांव बन चुके हैं। समर्थ और विशाल गूजर समाज ने अखिल भारतीय स्तर पर समाज सुधार के नियम बनाकर क्रियान्वित करने का प्रारंभ कर दिए हैं।

व्यसन मुक्ति, विकार मुक्ति और समाजोन्नति की यह लहर राष्ट्र व्यापी स्पन्दन उत्पन्न कर ग्रामोदय से सर्वोदय के स्वप्न को साकार बनाने की आधार शिला बनेगी उनका विकास इस बात की साक्षी दे रहा है और धर्मपालों के नवीन समाज में इस बात की असीम व क्रांतिकारी संभावनाएं निहित है कि ऊंच-नीच, गरीब-अमीर जाति और वर्ण के भेद तिरोहित हो जाएंगे। विषमता मिट जाय, सत्ता-सम्पत्ति की प्रधानता के स्थान पर गुण कर्म प्रधान व्यवस्था स्थापित होकर समता समाज साकार हो सके।

व्यक्ति-व्यक्ति छल-छद्म कुटिलता से परे रहकर सरल, सहज, स्वाभाविक जीवन जीए, प्रकृति का शोषक नहीं अपितु सहचर बनकर नैसर्गिक जीवन यापन करे, परावलंबी न रहकर स्वावलंबी बने फैसन मुक्त होकर, रोगों और अप्राकृतिक दिखावे से मुक्त होवे, स्वस्थ, संतुलित और सात्विक वातावरण का निर्माण करे, प्रकृति का संरक्षण कर प्रदूषण को रोके, कौटम्बिक वायुमंडल का सृजन कर सभी के सुख-दुख में भागीदार बन कर ग्रामोन्मुखी समाज का निर्माण करेगा।

इस ग्रामोन्मुखी समाज में सबको विकास के समान अवसर मिलें, अन्त्योदय का प्रयास हो, सबमें मैत्री, समन्वय और न्यासी (ट्रस्टीशिप) की भावना प्रादुर्भूत होकर सर्वोदयी समाज की रचना प्रत्यक्ष आकार धारण कर सके।

अत्यन्त हर्ष की बात है कि धर्मपाल उद्धारक आचार्य प्रवर एक बार फिर धर्मपाल क्षेत्रों में अपनी विशाल शिष्य मंडली सहित आ पहुंचे हैं। आपकी उपस्थिति, मंत्रणा और चिन्तना से अनन्त संभावनाओं के द्वार खुलेंगे। धर्मपाल क्षेत्र आज एक सुखद प्रसव वेदना से गुजर रहा है। भविष्य की आशा और विश्वास इस वेदना के गर्भ में छुपे हैं। आचार्य प्रवर के आशीर्वाद और अपने पुरुषार्थ से हम उक्त आदर्श धर्मपाल समाज को इसी देह और इन्हीं आंखों से अर्थात् अत्यंत शीघ्र प्रत्यक्ष देखेंगे।

आनेवाली पीढ़ियां हमारे इस अचल संकल्प को उन्नत-मस्तक स्मरण करेंगी। □

चित्र-वीथिका

धर्मपाल श्री सीताराम जी राठौड़ की श्रद्धा को स्वीकारते हुए संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष, क्षेत्रीय संयोजक धर्मपाल प्रवृत्ति (स्व.) श्री सेठ हीरालाल जी नांदेचा, खाचरोद, समीपस्थ समाजसेवी श्री मानवमुनि जी, मायाचन्द जी कांठेड़
△

दि. [illegible] को इन्दौर में आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुए [illegible] डा. [illegible] जी [illegible]
△
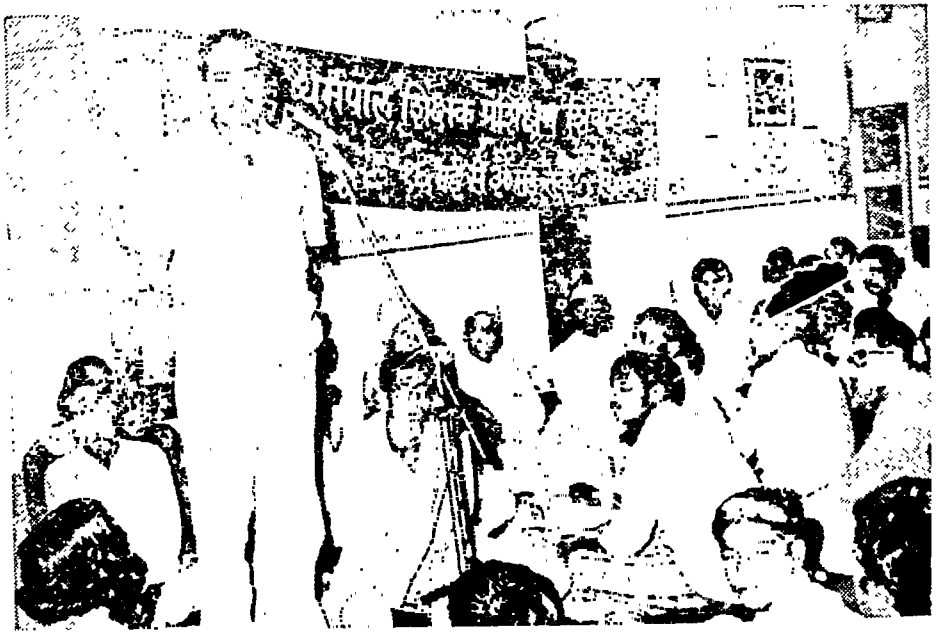
△ मन्दसौर शिविर में विधायक श्री भाचावत

ग्रामीण अंचल में मुक्त चिन्तन के दुर्लभ क्षण △

△ धर्मपाल क्षेत्र में एक धर्मसभा : वक्ता-समाज सेवी श्री मानवमुनि जा
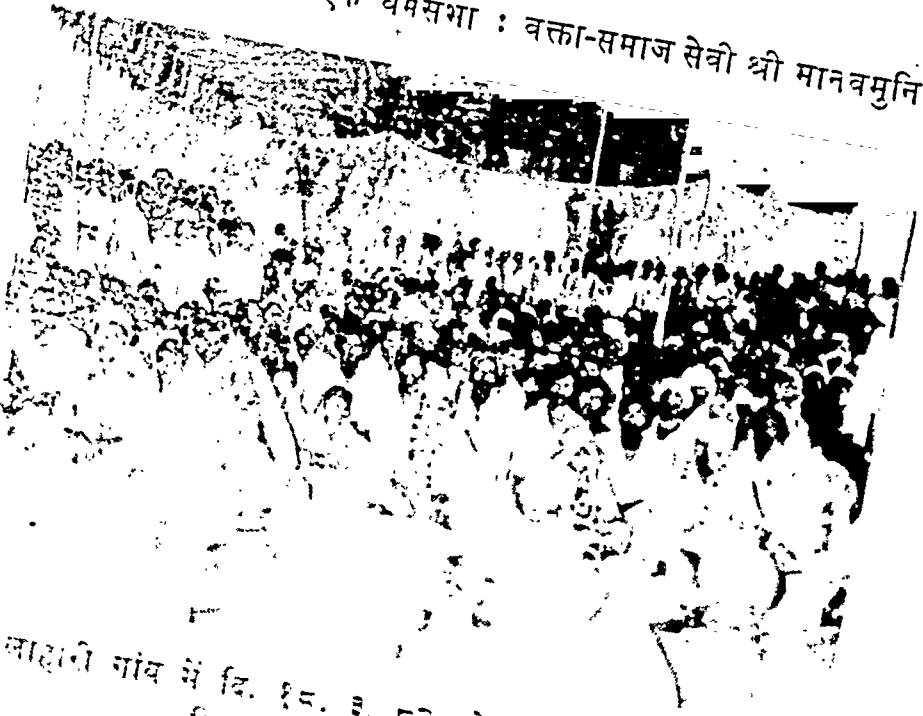
△ साढ़ानी गांव में दि. १८. ३. ८२ को सम्पन्न सामूहिक धर्मपाल विवाहों का एक भव्य दृश्य
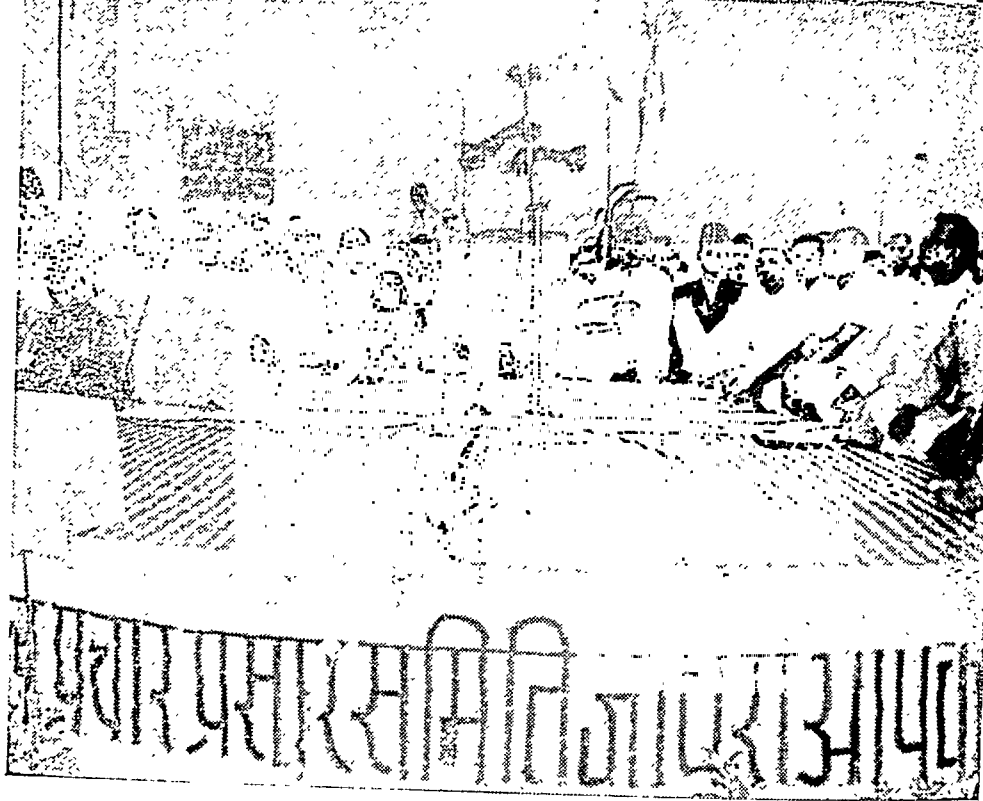
△ जावरा सम्मेलन का एक दृश्य : वक्ता श्री समीरमल जी कांठेड़

△ उज्जैन में प्रथम पदयात्रा समापन समारोह पर मुख्यमन्त्री (अब भारत के गृहमन्त्री) श्री प्रकाशचन्द्र सेठी, श्री गुमानमल जी चोरड़िया व श्री वीरेन्द्र कोठारी

पदयात्रा गांव और नगर में : दो दृश्य
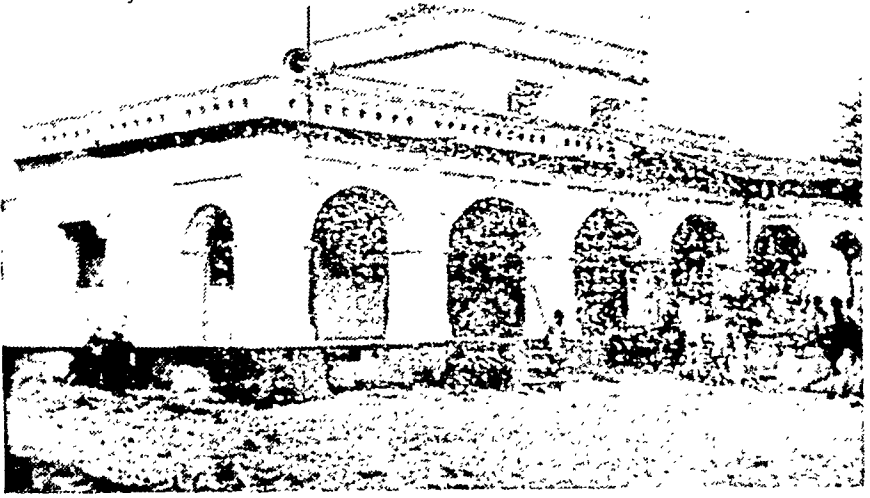
ऊपर : श्री प्रेमराजगणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास दिलीप
△ नगर रतलाम का भव्य भवन

नीचे : छात्रावास में शुभारम्भ और धर्मपाल क्षेत्रीय सम्मेलन
▽ के अवसर पर बोलते हुए समिति अध्यक्ष श्री गणपतराज जी बोहरा
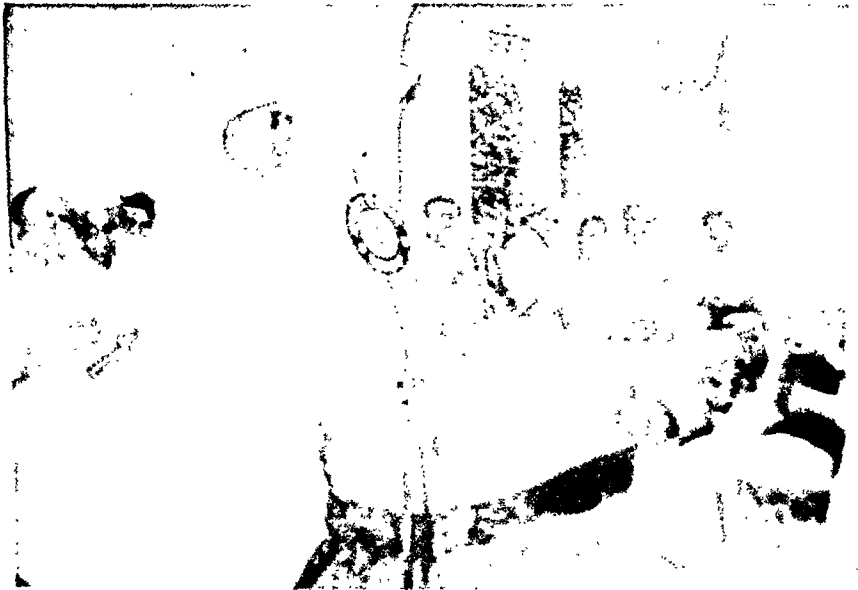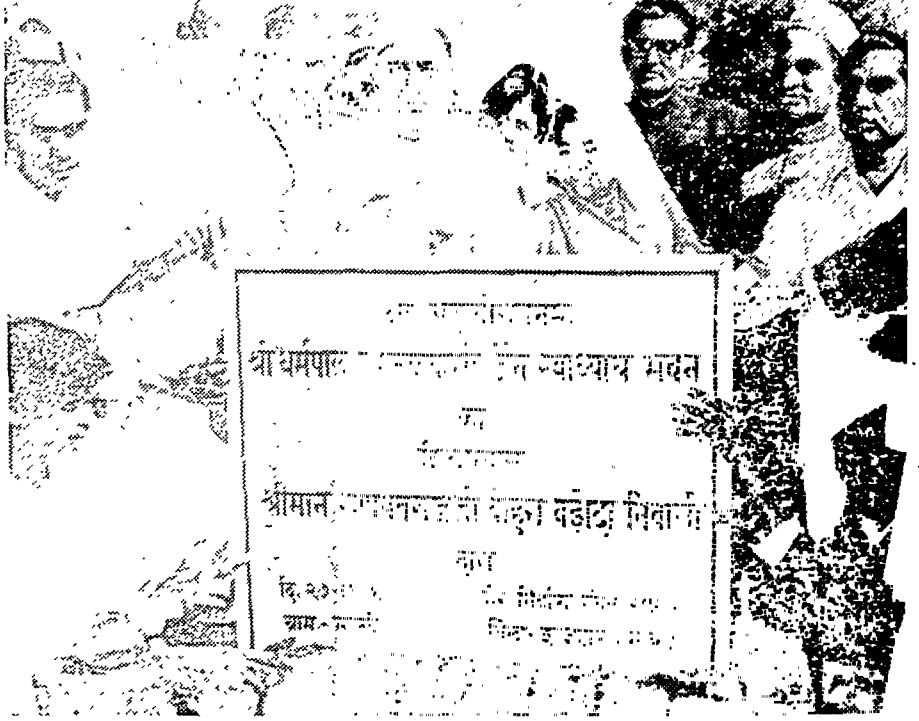
धर्मपाल--तीर्थ मक्सी के समता-भवन का शिलान्यास करते हुए श्री गणपतराज जी बोहरा, श्रीमती यशोदादेवी जी बोहरा, बांई ओर सर्वश्री भंवरलाल जी कोठारी, गुमानमल जी चोरड़िया, समीरमल जी कांठेड़ एवं दांई ओर चुन्नीलाल जी ललवानी, मानवमुनीजी, रामू व हीरालाल धर्मपाल

△

खंड ३
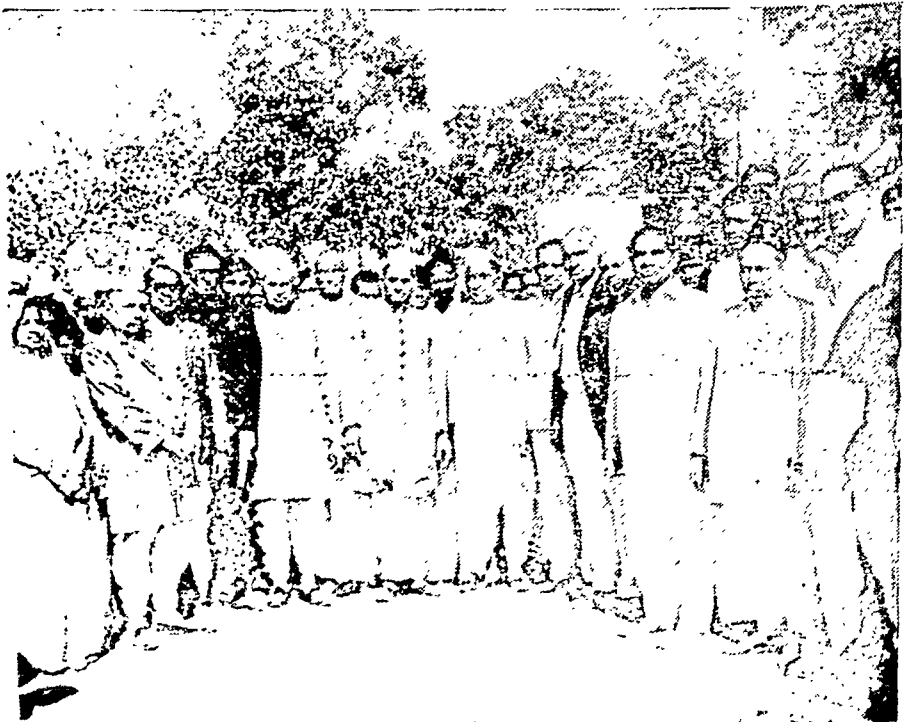
धर्मपाल

संस्मरण

और

अनुभव

समुद्र-मंथन से उपलब्ध रत्न

● श्री भंवरलाल कोठारी
तत्कालीन मंत्री श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ
बीकानेर (राज०)

जीवन को साधते हुए धर्म जागृति की ज्योति जलाने के महत्
द्देश्य से आयोजित धर्मपाल धारिणी मालवा की धर्म-प्रवण धरती
र संघ के क्रियाशील कार्यकर्ताओं की पदयात्रा मानो समुद्र-मंथन
र रत्न प्राप्ति का एक अनूठा उपक्रम था ।

पदयात्रा का पहला उद्देश्य था—संयम, नियम, मर्यादापूर्वक
नुशासन का पालन करते हुए जीवन साधना का अभ्यास करना ।

दूसरा उद्देश्य था—नियमित स्वाध्याय के माध्यम से अपने
न्तर में झांक कर अपने आपको समझने, स्वयं का अध्ययन करने
ा प्रयत्न करना ।

तीसरा उद्देश्य था—सादगीयुक्त, श्रमनिष्ठ, स्वावलंबी शिविर-
जीवन की अनुभूति करते हुए निःस्वार्थ सेवाभाव को जीवन का सहज
स्वभाव बनाना ।

चौथा उद्देश्य था—व्यसन विषय विकारों से मुक्त होने का
संकल्प कर धर्मपालना के लिए उन्मुख धर्मपाल भाई-बहिनों, युवक-
युवतियों एवं बालक-बालिकाओं से संपर्क साधते हुए उनके [illegible]
जीवन से प्रेरणा प्राप्त करना और उन प्रेरक प्रसंगों को [illegible]
में प्रस्तुत कर सर्वत्र धर्मजागरण का वातावरण सृजित करना ।

[illegible] एवं कार्यकर्ताओं की [illegible] थी । [illegible]
[illegible]

सामूहिक प्रार्थना, साढे छः बजे से ५-६ मील की प्रातःकालीन पदयात्रा जन संपर्क एवं धर्मसभा, मध्याह्न २।। बजे से ४।।–५ बजे तक सामायिक पूर्वक सामूहिक स्वाध्याय, सायंकाल ५।। बजे से पुनः ३–४ मील की पदयात्रा सामायिकपूर्वक सामूहिक प्रतिक्रमण अंतर–अवलोकन करके आत्मशुद्धि का प्रयास, रात्रि ८।। से ११–१२ बजे तक धर्म सभा एवं सबको भाव-विभोर तन्मय करने वाले भावनापूर्ण भजन एवं संगीत के कार्यक्रम चलते थे । मध्याह्न एक वक्त का सात्विक भोजन एवं प्रातःकाल नवकारसी अथवा पोरसी के पश्चात एवं सायंकाल सूर्यास्त से पूर्व के अल्पाहार, साधना–परक दिनचर्या में शरीर व मन को रोग विकार–मुक्त रखने में सहायक सिद्ध हुए ।

दिनचर्या एवं कार्यक्रमों को संचालित करने वाले अग्रणी महानुभावों का जीवन अनकहे ही सारी बात कह देता था और साधना की छाप छोड़ता था । अध्यक्ष महोदय का निश्छल, निष्कपट, त्याग–तप से ओतप्रोत, साधना प्रेरक नेतृत्व, ज्ञानमंत्री श्री मोहनलाल जी मूथा का गहन अध्ययन–आधारित ज्ञान–ज्योति प्रज्वलित करने वाला स्वाध्याय संचालन, भजनमंत्री श्री हनुमानमल जी बोथरा के सुमधुर स्वरों से प्रज्वलित होने वाली हृदयस्पर्शी स्वर–तरंगिणी, सेवामूर्ति डा० नन्दलाल जी बोरदिया द्वारा निष्काम भाव से तन्मय होकर हर व्यक्ति की चिकित्सा करते हुए प्रस्तुत सेवाप्रेरक आदर्श, अहिंसा प्रचार मन्त्री श्री चुन्नीलाल जी ललवाणी द्वारा 'यात्रा-वाणी' से विनोदपूर्ण यात्रा संस्मरणों का प्रसारण, मानवसेवी श्री मानवमुनि जी द्वारा धर्मपालों एवं धर्मसाधकों के धर्मभाव को बढ़ाता हुआ पथ संचालन, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी सा. बोहरा एवं धर्मपाल माता श्रीमती यशोदादेवी जी बोहरा का स्नेहसिक्त वात्सल्य, कर्मनिष्ठ श्री सरदारमल जी कांकरिया का संगठन कौशलयुक्त कर्तव्य-बोध, युवक प्रेरणा स्त्रोत युवासाथी श्री महावीरचन्द जी धारीवाल के प्रवचन शैली में विचारोत्तेजक व्याख्यान, राष्ट्रीय रंगमंच पर कर्मयोगी की तरह कार्यरत श्री विजयसिंह जी नाहर, भोपाल राजकीय महाविद्यालय के दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक ज्ञान गम्भीर डा० सागरमल जी जैन एवं अजमेर के जिलाधीश प्रबुद्ध विचारक सात्विक गुण-

सम्पन्न श्री रणजीत सिंह जी कूमट के भाव प्रेरक उद्बोधन, सेवा-निष्ठ, सरल स्वभावी श्री गोकुलचन्द जी सा. सूर्या, कुशल व्यवस्थापक कर्तव्यनिष्ठ श्री चांदमल जी पामेचा एवं धर्मपाल प्रवृति के कर्मनिष्ठ संयोजक श्री समीरमल जी कांठेड़ द्वारा पूर्ण मनोयोग एवं परिश्रम-पूर्वक की गई व्यवस्था यात्री दल के प्रत्येक सदस्य के हृदय पर एक अमिट छाप अंकित कर गई है ।

उपलब्धियां -

यात्रा की उपलब्धियां अविस्मरणीय एवं अनूठी है । प्रवृति में फंसे व्यक्तियों ने निवृति का आनन्द चखा । वातानुकूलित बंगलों में रहने वाले व्यक्ति तपते तम्बुओं में रहे । वाहनों में चलने वाले पैदल चले, पैरों में छाले पड़ जाने पर भी मन में आनन्दानुभूति हुई । सुख-सुविधाओं में भी सदा अस्वस्थ रहने वाले यात्राकाल में पूर्ण स्वस्थ रहे । सभी ने श्रमनिष्ठ. कर्तव्यनिष्ठ साधक बनने का प्रयत्न किया । समभाव की साधना (सामायिक) अंतरावलोकन-पूर्वक आलोयणा (प्रतिक्रमण) एवं स्वयं के अध्ययन (स्वाध्याय) का अभ्यास किया । सभी प्रेम और आत्मीयता की पवित्र धारा में अवगाहन कर गुणसंपन्न बने । दूसरों के प्रति गुण-दृष्टि जगी, दोष-दृष्टि मिटी । सभी को एक अपूर्व सात्विक आनन्द की अनुभूति हुई । यह अनुभूति भाषा तथा हाव-भावों से अभिव्यक्त भी हुई । कभी नहीं बोलने वाले प्रभावी वक्ता बन गए । अपने में सीमित रहने वाले सेवानिष्ठ समाज सेवी बन गए । प्रतिदिन रूढिगत रूप में धर्म क्रियाएं करने वाले भाई-बहिनों ने सामूहिक रूप से आवलोचित धर्माचरण करते हुए, धर्म के मर्म को समझने व उसे जीवन में ढालने का सतत चिन्तनपूर्वक अभ्यास किया । कर्मजात धर्मपाल जैनों के सरल सात्विक श्रद्धा से ओतप्रोत धर्ममय जीवन से जन्मजात जैन श्रावकों को नई प्रेरणा प्राप्त हुई ।

गांव-गांव को स्पर्श कर चलने वाली इस धर्म-यात्रा ने धर्म-पालों एवं सभी ग्राम निवासियों के जीवन को प्रभावित प्रकाशित

किया । धर्म के नाम पर पल रहे ढोंग के कारण धर्म विमुख बने नवयुवकों में भी इस विशुद्ध धर्म साधना-परक जीवन का सात्विक प्रभाव पड़ा । विकारमुक्ति के वातावरण को गति मिली । एक-एक व्यक्ति ने एक-एक गांव को विकारमुक्त करने का संकल्प लिया । धर्मपाल आंदोलन व्यक्ति-सुधार से ग्राम-सुधार की ओर उन्मुख हुआ । इस प्रकार पदयात्रा की उपलब्धियां अपरिमित हैं ।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने भगवान् महावीर के २५०० वें निर्वाण वर्ष को समता-साधना वर्ष के रूप में साधने का संकल्प लिया था । यह पदयात्रा उस जीवन साधना की दिशा में एक अभिनव प्रयास था ।

वीर निर्वाण वर्ष के अन्त में एवं युगप्रवर्तक, युगदृष्टा, युग-सृष्टा आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष के प्रारम्भ में कार्तिक सुदी चौथ सं० २०३२ के दिन 'वीर-संघ' योजना को मूर्तरूप देने के लिए भी संघ संकल्पित है । निवृति, साधना, स्वाध्याय एवं सेवा के मूलाधारों पर अवलंबित 'वीर-संघ' योजना के लिए साधक सदस्य तैयार करने की दृष्टि से यह पदयात्रा एक पूर्वाभ्यास थी ।

जिनशासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, समतादर्शन प्रणेता, परम-पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की भाव धारा के अनुरूप ममत्व से समत्व, असमानता से समानता और विषमता से समता की ओर प्रयाण कर समता समाज रचना के शाश्वत उद्देश्य को साकार करने की दिशा में भी यह पदयात्रा एक प्रारंभिक कदम थी ।

इस पदयात्रा को "एक महान् धार्मिक क्रांति की पूर्व सूचना" बतला कर श्री विजयसिंह जी नाहर ने निश्चय ही सार्थक संकेत किया है ।

भारतीय धर्म दर्शन एवं साधना के इतिहास में यह पदयात्रा एक अविस्मरणीय पृष्ठ है ।

दोष स्वयं का : गुण दूसरों का

○ श्री गुमानमल चोरड़िया, जयपुर
अध्यक्ष—श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ

पदयात्रा के प्रसंग में एक दिन स्वाध्याय की समाप्ति के पश्चात मन्त्री श्री भंवरलाल जी कोठारी खड़े हुए और कहने लगे कि कल नागदा में हम अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा सके, शाम को देर से पहुंचे एवं रात्रि–भोजन निषेध होने पर भी कुछ शिविरार्थियों ने अल्पाहार ग्रहण कर लिया । अतः मुझे प्रायश्चित्त दे दीजिये ।

प्रसंग इस प्रकार बना कि हमारे संयोजक श्री समीरमल जी कांठेड़ ने नागदा में दो जगह स्वागत एवं सभाओं का आयोजन स्वीकार कर लिया था । पदयात्रा का एवं शिविर का प्रथम अवसर था । अतः वे स्व साधना का महत्व पूर्णतया नहीं समझ सके थे । रास्ता लम्बा था । हम शाम को देरी से पहुंचे । प्रतिक्रमण का समय नहीं रहा । दादावाड़ी में जैन संघ की ओर से स्वागत था । वहां कुछ सदस्यों ने अल्पाहार ले लिया । तदुपरान्त नागदा शहर में जैन संघ की ओर से स्वागत एवं सभा का आयोजन था । वह रात्रि को देर तक चलता रहा । सदस्यों को अखरा । वहां से मक्सी जाकर पुनः दूसरे रोज सवेरे से कार्यक्रम प्रारम्भ होना था । मुझे दिल में खेद रहा कि मैं अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा सका । मुझे यात्रा समापन के वक्त प्रायश्चित्त करना है । मैंने तो यह सोचा ही था परन्तु हमारे सरल हृदय उत्साही दूसरों के गुण देखने वाले और दोष अपना मानने वाले मंत्री जी खड़े हुए और विगत दिन की अव्यवस्था के लिए कहने लगे—आप मुझे प्रायश्चित्त दीजिए ।

मैंने निवेदन किया कि संघ की व्यवस्था की दृष्टि से सबसे ज्यादा जिम्मेदारी अध्यक्ष की होती है । मैं इसके लिए प्रायश्चित्त का का अधिकारी हूं । सब सदस्य प्रतिक्रमण नहीं हो सके, [illegible]

किया। धर्म के नाम पर पल रहे ढोंग के कारण धर्म विमुख बने नवयुवकों में भी इस विशुद्ध धर्म साधना-परक जीवन का सात्विक प्रभाव पड़ा। विकारमुक्ति के वातावरण को गति मिली। एक-एक व्यक्ति ने एक-एक गांव को विकारमुक्त करने का संकल्प लिया। धर्मपाल आंदोलन व्यक्ति-सुधार से ग्राम-सुधार की ओर उन्मुख हुआ। इस प्रकार पदयात्रा की उपलब्धियां अपरिमित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने भगवान् महावीर के २५०० वें निर्वाण वर्ष को समता-साधना वर्ष के रूप में साधने का संकल्प लिया था। यह पदयात्रा उस जीवन साधना की दिशा में एक अभिनव प्रयास था।

वीर निर्वाण वर्ष के अन्त में एवं युगप्रवर्तक, युगदृष्टा, युग-सृष्टा आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष के प्रारम्भ में कार्तिक सुदी चौथ सं० २०३२ के दिन 'वीर-संघ' योजना को मूर्तरूप देने के लिए भी संघ संकल्पित है। निवृति, साधना, स्वाध्याय एवं सेवा के मूलाधारों पर अवलंवित 'वीर-संघ' योजना के लिए साधक सदस्य तैयार करने की दृष्टि से यह पदयात्रा एक पूर्वाभ्यास थी।

जिनशासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, समतादर्शन प्रणेता, परम-पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की भाव धारा के अनुरूप ममत्व से समत्व, असमानता से समानता और विषमता से समता की ओर प्रयाण कर समता समाज रचना के शाश्वत उद्देश्य को साकार करने की दिशा में भी यह पदयात्रा एक प्रारंभिक कदम थी।

इस पदयात्रा को "एक महान् धार्मिक क्रांति की पूर्व सूचना" बतला कर श्री विजयसिंह जी नाहर ने निश्चय ही सार्थक संकेत किया है।

भारतीय धर्म दर्शन एवं साधना के इतिहास में यह पदयात्रा एक अविस्मरणीय पृष्ठ है।

दोष स्वयं का : गुण दूसरों का

● श्री गुमानमल चोरड़िया, जयपुर
अध्यक्ष—श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ

पदयात्रा के प्रसंग में एक दिन स्वाध्याय की समाप्ति के पश्चात मन्त्री श्री भंवरलाल जी कोठारी खड़े हुए और कहने लगे कि कल नागदा में हम अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा सके, शाम को देर से पहुंचे एवं रात्रि–भोजन निषेध होने पर भी कुछ शिविरार्थियों ने अल्पाहार ग्रहण कर लिया। अतः मुझे प्रायश्चित्त दे दीजिये।

प्रसंग इस प्रकार बना कि हमारे संयोजक श्री समीरमल जी कांठेड़ ने नागदा में दो जगह स्वागत एवं सभाओं का आयोजन स्वीकार कर लिया था। पदयात्रा का एवं शिविर का प्रथम अवसर था। अतः वे स्व साधना का महत्व पूर्णतया नहीं समझ सके थे। रास्ता लम्बा था। हम शाम को देरी से पहुंचे। प्रतिक्रमण का समय नहीं रहा। दादाबाड़ी में जैन संघ की ओर से स्वागत था। वहां कुछ सदस्यों ने अल्पाहार ले लिया। तदुपरान्त नागदा शहर में जैन संघ की ओर से स्वागत एवं सभा का आयोजन था। वह रात्रि को देर तक चलता रहा। सदस्यों को अखरा। वहां से मक्षी जाकर पुनः दूसरे रोज सवेरे से कार्यक्रम प्रारम्भ होना था। मुझे दिल में खेद रहा कि मैं अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा सका। मुझे यात्रा समापन के वक्त प्रायश्चित्त करना है। मैंने तो यह सोचा ही था परन्तु हमारे सरल हृदय उत्साही दूसरों के गुण देखने वाले और दोष अपना मानने वाले मंत्री जी खड़े हुए और विगत दिन की अव्यवस्था के लिए कहने लगे—आप मुझे प्रायश्चित्त दीजिए।

मैंने निवेदन किया कि संघ की व्यवस्था की दृष्टि से सबसे ज्यादा जिम्मेदारी अध्यक्ष की होती है। मैं इसके लिए प्रायश्चित्त का का अधिकारी हूं। कल सबके प्रतिक्रमण नहीं हो सके, अव्यवस्था

समय की रही, अतः मैं प्रायश्चित्त का अधिकारी हूं। मेरे पश्चात आपकी (मंत्री जी) की जिम्मेदारी है, अतः एक तेले का प्रायश्चित्त मैं लेता हूं, एक उपवास का आपको देता हूं।

यह सुनते ही हमारे सभी शिविरार्थी भाई—बहिनों में आत्म-निरीक्षण की भावना बलवती हो उठी। जिन्होंने अल्पाहार ग्रहण किया था, वे भी प्रायश्चित्त मांगने लगे। उनको भी एक-एक पोरसी का प्रायश्चित्त दिया।

धन्य हैं, हमारे सदस्य जो गुण दूसरों का एवं दोष अपना मानते हैं। यदि समर्पण की भावना इस प्रकार बलवती रही तो निश्चय ही हम भगवान महावीर के अनुयायी कहलाने के अधिकारी हैं। ●

आध्यात्मिक चल शिविर की आनन्दानुभूति

● श्री पी. सी. चोपड़ा, रतलाम

अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण-वर्ष में अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के तत्त्वावधान में आयोजित इस पदयात्रा में सम्मिलित होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इस पदयात्रा में सम्मिलित होने के पूर्व मुझे अपनी पैदल चलने की शक्ति में संदेह था। प्रात: ४ बजे से मध्य रात्रि तक के व्यस्त विभिन्न धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों को देख कर मेरा मन विचलित हो जाता था कि मुझ जैसा साधारण पुरुष इस कार्य-क्रम को तन्मयता से किस प्रकार निभा सकेगा। किन्तु आज मुझे यह स्वीकार करने में तनिक भी संकोच नहीं कि इस आध्यात्मिक चल-शिविर में जो आनन्दानुभूति एवं आन्तरिक शक्ति का आभास मिला, वह कम ही अवसरों पर कुछ ही प्राणियों को प्राप्त हो सकता है।

पश्चिमी बंगाल के भूतपूर्व उपमुख्यमंत्री एवं प्रसिद्ध राजनेता श्री विजयसिंह नाहर के नेतृत्व में इस धर्मयात्रा का शुभारंभ खाचरौद से दिनांक २ अप्रेल ७५ को हुआ। प्रतिदिन ६ मील नियमित पद-यात्रा का कार्यक्रम, प्रात: ४-३० बजे से प्रारम्भ होने वाले दैनिकों का एक महत्वपूर्ण अंश था। एक समय का भोजन व दो समय का अल्पाहार जहां शरीर के लिए पौष्टिक एवं उपादेय बना, वहीं इस नियमित आहार-विहार ने भयंकर गर्मी से उत्पन्न होने वाली सभी व्याधियों से सभी पदयात्रियों को मुक्त रखा एवं यही कारण था कि पद्मश्री डाक्टर नन्दलाल जी बोरदिया को अपने चल-चिकित्सालय उपयोग पदयात्रियों के लिये करने का कोई विशेष प्रसंग नहीं यद्यपि डाक्टर बोरदिया सा. ने इस धर्मयात्रा में जहां-जहां

वहां के रोगियों का परीक्षण एवं औषधि-वितरण निःशुल्क किया एवं लगभग ४-५ हजार रू० की औषधियां निःशुल्क वितरीत की । यही सच्ची मानव सेवा है ।

लगभग सौ धर्म-यात्रियों का यह काफिला विभिन प्रान्तों से आये हुए धर्मनिष्ठ नर-नारियों का एक अद्भुत संगम था । स्थान-स्थान पर ग्रामवासियों एवं धर्मपालों का उत्साह देख कर मन में अपार हर्ष होता था । बड़े-बड़े विद्वानों के गूढ आध्यात्मिक उद्बोधन से जैन-दर्शन की गम्भीर धारा सरल, सलिल-सी बहती थी ।

विभिन्न ग्रामों से होता हुआ धर्मयात्रियों का यह जुलूस ऐतिहासिक नगर उज्जयिनी पहुंचा । वहां मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी ने धर्मयात्रियों का स्वागत कर भगवान् महावीर पर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा प्रकाशित एवं डा. के. सी. जैन द्वारा लिखित ग्रंथ— "लार्ड महावीर एण्ड हिज टाइम्स" का विमोचन किया । उज्जैन में जी गोकुलचन्द जी सूर्या की सेवा-भावना एवं धर्मानुराग अभिनन्दनीय रहे ।

विभिन्न प्रान्तों से आये हुए धर्मयात्रियों ने समता, एकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, अनुशासनबद्धता एवं जीवन-समरसता का जो रस पान किया, वह एक अभूतपूर्व वस्तु है । इस पदयात्रा के इतने अधिक आनन्ददायक संस्मरण है कि इनका वर्णन किसी एक लेख में होना संभव नहीं है ।

मैं तो केवल इतना ही कह सकता हूं कि इस प्रकार की धार्मिक पदयात्रा से अनुशासित आयोजन वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य किये जायें । इस पदयात्रा में सम्मिलित सभी पदयात्रियों के अनुराग एवं प्रेम के लिये अनेक हार्दिक अभिनन्दन ।

अनेरा आनन्द

• श्री गरणपतराज बोहरा, बड़ौदा

जब पदयात्रा का आयोजन किया गया और इसकी रूपरेखा बनाई गई तो इसके व्यवस्था-विस्तार को देख कर प्रारम्भ में मुझे तो यह भय हो रहा था कि ऐसा विशाल आयोजन दुरूह क्षेत्र में सफलतापूर्वक कैसे होगा ? सारा दिन कैसे बीतेगा ? लेकिन जब मूर्त स्वरूप सामने आया तो प्रातः ४।। से रात्रि १२ बजे तक इतने व्यस्त रहे कि समय-बोध ही नहीं रहा । रात को इतनी देरी से सोने पर भी प्रातः ४ बजे उठना मामूली बात लगती थी, थकावट नहीं, यह सब चमत्कार जैसा लगता था ।

सभी पदयात्री एक कुटुम्ब की तरह हिलमिल कर काम करने वाले थे और स्वतः नियमित कार्य करते थे । लगता ही नहीं था कि हम दौरे पर हैं । रात को जिसको जहां जगह मिली, सो गया । एयर-कंडीशन कक्षों से अधिक अच्छी नींद । मैं दंग रह गया कि इसके पीछे कौन--सी शक्ति कार्य कर रही है, जो हर पदयात्री को आनंदित व प्रफुल्लित रखती है ।

आठ दिन इस तरह पूरे हो गए कि हमें लगता था २४ घंटे भी पूरे नहीं हुए । ऐसी यात्राओं में अपने घरेलू कार्यों को और व्यस्तताओं को भूल कर शामिल होते हैं तो ऐसा अनेरा आनन्द आता है कि जिसका वर्णन शब्दों द्वारा नहीं किया जा सकता । जब यात्री लोग पैदल चलते थे तो किसी को ऐसा महसूस नहीं होता था कि पैदल चल रहे हैं । यात्रियों को आनन्दित रखने में श्री चुन्नीलाल जी ललवाणी का विशेष श्रेय रहा है । मन फिर से यही आशा लगाए बैठा है कि ऐसा ही एक मौका और मिले, जिसमें हम कम से कम १५ दिन की यात्रा का आयोजन करें ।

धर्मपाल भाईयों के बीच

● श्री सरदारमल कांकरिया, कलकत्ता

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की कार्यकारिणी की जनवरी की बैठक कलकत्ता में हुई थी। उसमें यह निश्चित किया गया था कि ७ दिन की एक धर्म-जागरण पदयात्रा धर्मपाल क्षेत्र में की जाय। कलकत्ता संघ के भाई-बहिनों में काफी उत्सुकता थी और वे इसमें भाग लेने को भी उत्सुक थे लेकिन कारणवश ज्यादा व्यक्ति तो इस पदयात्रा में नहीं जा सके फिर भी करीबन १२ भाई-बहिन इस पदयात्रा में कलकत्ता के सम्मिलित हुए।

कलकत्ता से जैन समाज के प्रमुख विचारक स्वनामधन्य श्री विजयसिंह जी नाहर भी इस पदयात्रा में एक दिन के लिए सम्मिलित हुए। प्रथम दिन ही बाहर से आये हुए बहुत से गांवों के धर्मपाल भाइयों से नाना प्रकार के प्रश्न पूछ करके वे अत्यन्त प्रसन्न एवं प्रभावित हुए।

शिविर जीवन का मेरा तो यह प्रथम प्रसंग था। सभी भाई-बहिनों में अत्यन्त उत्साह था व आपस में ७ दिन एक साथ रहने से भाईचारे का सम्बन्ध अत्यन्त मजबूत हुआ सच तो यह है कि यात्रा की समाप्ति के दिनों में सब की भावना थी कि यदि यह शिविर ४-५ दिन और चलता तो अच्छा था। इससे अन्दाजा लगा सकते हैं कि पदयात्रा का जीवन कितना आनन्द-दायक था। पदयात्रा के समय बहिनों का सामूहिक भजन "यह संघ चालियो रे हो करवा धर्म प्रचार" विशेष प्रभाव डालता था व भाई ललवाणी जी की रेडियो स्टाइल की कामेन्ट्री विशेष आनन्द-दायक थी।

धर्मपाल भाई-बहिनों के जीवन में धर्म पर जो आस्था व जो सादगी व सरलता देखी, उससे कुछ ऐसा लगा कि इन लोगों ने

थोड़े से समय में कितनी उन्नति करली है। हर गांव में छोटे-छोटे बच्चों से नवकार मंत्र व सामायिक की पाटियों का शुद्ध उच्चारण सुन कर सभी आनन्द का अनुभव कर रहे थे। धर्मपाल बहिनों का धर्म-प्रेम व घर की सफाई रखने की कला तथा पानी को शुद्ध ढंग से छान कर सुन्दर ढंग से रखने की कला विशेष आकर्षित करती थी। धर्मपाल भाई-बहिन जब भजन व धार्मिक गायन में तन्मय होकर मधुर स्वर से गाते थे तो उनको सुनने का एक अलग ही आनन्द था।

घने अन्धकार में रहने के बाद मिली सूर्य की वह किरण

● श्री प्रकाशचन्द्र सूर्या, उज्जैन

धर्मपाल क्षेत्रों में इस निकट सम्पर्क के पूर्व मैं प्रश्नकर्ताओं के इस प्रश्न पर प्रायः निरुत्तर हो जाया करता था कि "एक ओर हम जैनतर लोगों द्वारा मांस-मदिरा के त्याग के लिये प्रयत्नशील हैं, वहीं दूसरी ओर हमारे समाज का युवावर्ग स्वयं इन कुव्यसनों के जाल में फंसता जा रहा है।" प्रश्न वास्तव में गहरी चोट करने वाला था। यही प्रश्न हाल ही में धर्मपाल क्षेत्रों की धर्म-जागरण यात्रा के बाद मेरे सामने एक जाने-माने दर्शनशास्त्री द्वारा पुनः उपस्थित हुआ। परन्तु इस प्रश्न की गंभीरता इस बार मेरे लिये नगण्य थी—क्योंकि निरंतर सिद्धान्तों और तर्कों के परिप्रेक्ष्य में जिसका जवाब मुझे नहीं मिल पाया था, वह मैं धर्मपालों के सान्निध्य में प्रत्यक्ष पा चुका था।

धर्मपालों से मुझ सहित कई लोगों को व्यसन-मुक्ति के बारे में पूछने पर बहुत सीधा, सरल-सा उत्तर प्राप्त हुआ— "अब इच्छा ही नहीं होती इन पदार्थों के सेवन की"। कुछ ने कहा— "घृणा होती है इनसे"। उनके इस सरल-से उत्तर ने मेरी गंभीर समस्या को हल कर दिया था।

वस्तुतः धर्मपाल भाइयों द्वारा कुव्यसनों का त्याग ऊपर से थोपी गई मर्यादा नहीं है बल्कि उनके स्वयं के नैतिक और आध्यात्मिक जीवन-यापन का परिणाम है। उनके जीवन-क्रियाओं में पोषित अच्छे संस्कार स्वतः उन्हें इन कुव्यसनों से दूर ले जा रहे हैं। उनके द्वारा संयम-नियमपूर्वक की जा रही प्रभु की आराधना का ही यह

परिणाम है। दूसरी ओर हमारे समाज का युवावर्ग स्वयं भी इसी सिद्धान्त पर गुमराह है। सिद्धान्त वही है, कारण विपरीत है।

संस्कार अच्छे होते हुए भी नैतिकता और आध्यात्मिकता के धरातल पर युवावर्ग क्रियात्मक रूप से उनका अनुकरण नहीं कर पा रहा है और परिणामस्वरूप कुव्यसनों के जंजाल में फंसता-सा जा रहा है और सत्य तो यही है कि वे ही युवक गुमराह हुए हैं या हो रहे हैं जिनका जीवंत सम्पर्क आध्यात्मिक शाला से नहीं रहा-या जिन्हें संतजनों का सान्निध्य प्राप्त नहीं हो सका है या जिन्होंने कथनी और करनी के अन्तर को देख कर धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक गतिविधियों को महज एक ढोंग मान लिया है।

धर्मपाल भाइयों की अभिरूचि, इन नैतिक संस्कारों के प्रति ज्यादा सक्रिय होने का एक और महत्वपूर्ण कारण है और वह है—वर्षों तक घने अंधकार में रहने के बाद मिली "सूर्य" की वह किरण जिसने उनके गहरे अंधकार को सुसंस्कृति के प्रकाश से भर दिया है। स्वभावत: इस प्रदीप्त मार्ग के मिल जाने से वे उतने ही आल्हादित हैं जितना आनन्दित पथ भूला पथिक सही मार्ग पाकर होता है। वास्तव में धर्मपालों के इस परिवर्तन में कुछ भी कृत्रिम नहीं है-सब उन नैतिक शिक्षाओं का परिणाम है—जो आचार्य गुरूदेव श्री श्री नानालाल जी म. सा. द्वारा इन्दौर, उज्जैन, रतलाम प्रवास के समय उन्हें मिली थी और आज भी संघ के माध्यम से इन्हें निरन्तर प्राप्त हो रही है।

धर्मपाल भाईयों को मिला प्रकाश, उनके स्वयं के संस्कारित आचरण का ही परिणाम है। तभी तो हमारे धर्मपाल भाई कहते हैं—"इच्छा ही नहीं होती व्यसन का विचार करने की।" ❀
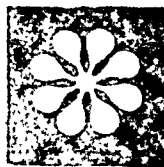
ओ संघ चाल्यो रे करवा धर्म प्रचार

● श्री महावीरचंद धाड़ीवाल, रायपुर

जब कभी हम साथी मिलते, धर्मपाल प्रवत्ति के सम्बन्ध में बातचीत होती। मन में तीव्र उत्कंठा होती—उस प्रदेश में अपने धर्मपाल भाइयों के बीच जाकर, उनके धर्मस्नेह का अवलोकन करने की। अतः मैं श्रीमान् चम्पालाल जी सुराना की कार द्वारा १ अप्रेल की रात को खाचरौद पहुंच ही गया, जहां सेठ हीरालाल जी नांदेजा को मेहमानों की व्यवस्था में व्यस्त पाया। साथ में ही वहां मिल गये राजस्थान के भूतपूर्व मंत्री श्री भूरेलाल जी बया एवं अन्य साथीगण।

२ अप्रैल को प्रातः ही पद-यात्रा का श्रीगणेश हो गया। हाथ में केशरिया ध्वज लिये धर्मपाल भाई, फिर पंक्तिबद्ध पद-यात्रियों का यह अभियान एक अनूठा उत्साह लिये चल रहा था। भाई एवं बहिनों के संयुक्त कंठ से निकला हुआ यह गान ग्राम-ग्राम में गूंज उठा—

ओ संघ चाल्यो रे, करवा धर्म-प्रचार।
नाना गुरु के हम हैं चेले,
सत्यधर्म में हैं अलबेले,
सेवाव्रत लिया धार,
ओ संघ चाल्यो रे, करवा धर्म-प्रचार।

खाचरौद से लेकर उज्जैन तक के इस यात्रा के दौरान जिस ग्राम में भी हम पहुंचे, वहां के निवासियों का धर्म-स्नेह, आचार्य के प्रति दृढ श्रद्धा, देख कर हमारे साथी श्री केवलचंद जी मूथा के

मुंह से सहसा निकल पड़ा कि हम को जो अपने आपको धार्मिक एवं आचार्यश्री के परम-भक्त कहते हैं, आज पुनः आत्म-निरीक्षण का अवसर प्राप्त हुआ है ।

घर-घर में लिखा हुआ—'जैनधर्म की जय' 'जय गुरु नाना, जय गुरु नाना', यह उन धर्मपाल भाइयों की श्रद्धा व विश्वास का अपूर्व प्रतीक था । कौन भूल सकता है, ग्राम में प्रवेश के पूर्व छोटे-छोटे वालकों का विनय मुद्रा में 'जय जिनेन्द्र' कहना, अपढ़ बहिनों के मुंह से संस्कृत के श्लोक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक की गाथाओं का शुद्ध उच्चारण एवं आगत-अतिथियों का हाथ में कुंकुम-थाल लिये हुए मंगल-गान के द्वारा भावपूर्ण-स्वागत ।

पद-यात्रा में जाने के पूर्व जब स्वास्थ्य की ओर दृष्टि जाती थी, वड़ा विकार आता था, परन्तु वह कौन-सी दिव्य-शक्ति थी कि हम निर्विघ्न एवं स्वस्थ चलते ही रहे । हम तीन साथी चले-एक स्थूल, दूसरे का पैर का इलाज चल रहा था और मैं हृदय-रोग का रोगी । परन्तु सभी प्रसन्न चल रहे हैं । हंस रहे हैं, एवं साथ ही चिन्तन, मनन, स्वाध्याय आदि का साधनामय जीवन चल रहा है । जिन्हें हम भूल नहीं सकते वे हमारे इस पद-यात्रा के केन्द्र विन्दु हैं—धर्मपाल । ०
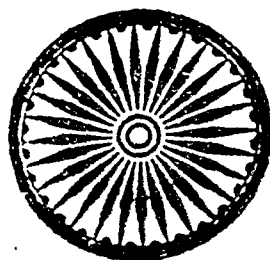
बहुरंगी भावभीने संस्मरण

● श्रीमती शांतादेवी मेहता, रतलाम

पदयात्रा का महत्त्व तो बहुत सुना था अतः उसका वास्तविक, आनन्द प्राप्त करने की इच्छा जागृत हुई। मैंने मन की कमजोरी को दूर करते हुए निश्चय किया कि मुझे भी इस यात्रा में जरूर भाग लेना चाहिये। इसी संकल्प के साथ मैं भी चल पड़ी, आठ दिन के लिये। इस सुखद यात्रा के पश्चात् मुझे अब ऐसा महसूस हो रहा है कि यदि मैं इस पदयात्रा में नहीं जाती तो अपने जीवन का एक स्वर्ण अवसर खो देती। इस पदयात्रा में मुझे जिस आनन्द की अनुभूति हुई है, वह वर्णनातीत है। फिर भी कुछ प्रसंग मैं लिख रही हूं।

झलक एक चलचित्र की :—मैं आजकल सिनेमा बहुत कम देखती हूं, क्योंकि उसके प्रति रुचि और आकर्षण अब नहीं रहा। पर जब मैं इस पदयात्रा के बारे में सोचती हूं तो मेरी आंखों के सामने यात्रा के प्रसंग चलचित्र की भांति एक-एक कर आने लगते हैं। ऐसा लगता है कि इन आठ दिनों में हमने एक महान् धार्मिक और आध्यामिक चलचित्र का निर्माण किया। हमारे इस चलचित्र के प्रमुख नायक थे शांत, धीर, वीर, गम्भीर हमारे अध्यक्ष श्रीमान् गुमानमल जी चोरड़िया और भाई श्री गणपतलाल जी बोहरा और मार्गदर्शिका थी धर्मपाल माता यशोदा मैया (श्रीमती यशोदा बहिन बोहरा)। इसके हास्य-अभिनेता थे भाई श्री सरदार-मल जी सा० कांकरिया। गीतकार थे श्री हनुमान जी, प्रसारणकर्त्ता थे श्री चुन्नीलाल जी ललवानी और हम सब थे सहयोगी कलाकार। दूसरी ओर इसकी प्रमुख भूमिका में थे इसके कहानी लेखक भाई श्री समीरमल जी और श्रद्धेय मानवमुनि जी। डायरेक्टर थे भाई श्री भवरलाल जी कोठारी। यह तो हुआ हमारी इस पदयात्रा का स्पष्ट चित्रण—जो केवल हास्य ही नहीं, एक ऐतिहासिक चित्रण भी कहा जा सकता है।

ऐतिहासिक यात्रा:—यह यात्रा अपने इतिहास की एकमात्र धार्मिक यात्रा रहेगी क्योंकि यह हमारी प्रथम यात्रा थी, जो सेठों के महलों से निकल कर गरीबों की झोंपड़ियों की ओर गयी, धार्मिक भावना से प्रेरित होकर, सुसंस्कारों के निर्माण हेतु बिना किसी ऊंचनीच के भेदभाव के, समानता के आधार पर चली।

सेवा की शिक्षा :—हमारी इस यात्रा के अवसर पर सच्ची लगन और सेवा के अनेक प्रसंग उपस्थित हुए, जिन्हें भूल जाना असम्भव है। सबसे पहले डॉ. बोरदिया सा. को ही लेवें—कहां एक ओर पद्मश्री की उपाधि से विभूषित और कहां दूसरी ओर धोती-कुर्ता पहने सादगीमय जीवन में झोंपड़ियों और तम्बुओं में बैठ कर रोगियों की सेवा।

हमारे अन्नदाता के रूप में मामाजी-मामीजी श्रीमान् चम्पालाल जी एवं धुरी बहिन पिरोदिया की सेवा अद्वितीय थी।

यशोदा मैया का धर्मपालों में घुलना-मिलना, उन्हीं में बैठना-उठना, उन्हें धार्मिक-शिक्षण, सामाजिक-चेतना और नैतिकता का पाठ पढ़ाना एक आदर्श सेवा था।

प्रेमअंकुर :—धर्मपाल बहिनों का प्रेम अद्वितीय था। सुरोलिया गांव में उन्होंने हमें रात्रि के १२ बजे तक नहीं छोड़ा। हमने कहा कि हमें सवेरे ४ बजे उठना है, परन्तु वे कहां सुनने वाली थीं। वे तो कहती थीं—हम रात भर यहीं पर गीत गायेंगे। उनका प्रेम उनकी वाणी के द्वारा प्रस्फुटित हो रहा था। आखिर में फूलकुंवर बहिन को तो पकड़ ही लिया और बैठाये रखा। रूलकी गांव में भी लोगों का अत्यधिक प्रेम रहा। वे बहिनें कहती थीं कि आप लोगों ने हमारे लिए कितना कष्ठ उठाया है। सुरोलिया गांव की ५-६ लड़कियों का प्रेम तो देखने लायक था। मुझे और रोशन बहिन को घेर लिया, क्योंकि हम परिचित थे और कहने लगीं कि हम आपके साथ चलेंगी, पढ़ेंगी और अपना विकास करेंगी।

प्रेम-अंकुर के उद्भव को देख कर चकित रह गई। दो बालिकायें हमारे साथ आईं। उनका नाम सीता और शान्ता है।

एक मेरे पास और एक रोशन बहिन के पास, अभी तक हमारे परिवार के समान रही और अभी कुछ दिनों पूर्व उनके घर से लेने आये तो रोती हुई यह कह कर गई कि हम वापिस आयेंगे।

यात्रा के रूप में एक अनुपम अवसर हमें प्राप्त हुआ था, जब हम सब सांसारिक और पारिवारिक चिन्ताओं से मुक्त रहते हुए अपने स्वयं के बारे में चिन्तन कर सके। इस समय हमें अनुभव हुआ कि हमें अपनी मनोभावनाओं का विकास संशोधन, परिमार्जन करना है और अपने जीवन को आदर्श बनाना है।

संघ-मन्त्री श्री भंवरलाल जी कोठारी द्वारा कहे गये ये शब्द-"उठ भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है" अब भी गूंजते हैं। वास्तव में कितनी भोरें बीत गईं, जीवन कहां है? मन में आया कुछ कर लें, नहीं तो खाली हाथ लौटना पड़ेगा। उनके कहे गये ये शब्द मेरे लिए जीवन में हमेशा प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे। ०
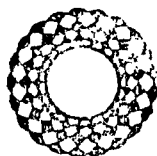
संस्मरण एक चिकित्सक के

● स्व. पद्मश्री डॉ. नन्दलाल बोरदिया, इन्दौर

नवम्बर सन् १९७४ में ही मैंने इस पदयात्रा में सम्मिलित होने का निश्चय कर लिया था और व्यवस्थित ढंग से योजना बना कर इसमें भाग लेने की ठान ली थी। अतः उसकी तैयारियां काफी समय पहले से शुरू कर दी गईं। मैं जीवन भर चिकित्सक ही रहा हूं और यद्यपि धर्म जागरण यात्रा में धार्मिक जीवन, साधना इत्यादि पर अधिक बल दिया जाना स्वाभाविक था परन्तु मैं दूसरों के कष्ट मिटाने में सहायक हो सकने वाली मेरी उपयोगिता का भी लाभ लेना चाहता था। जो-जो वस्तुएं ऐसी यात्रा में उपयोगी हो सकती थीं, उन्हें ले जाना था। साथ ही, जब गांव-गांव पैदल चलना ही था तो

अधिक बोझ उठा कर ले जाने का कोई प्रयोजन नहीं था। पैदल चलते समय प्राय: शहरों में ले जाने की चिकित्सा-पेटी (जिसे हम चिकित्सक मोटर में ले जाते हैं और रोगी के परीक्षण के लिये जो आवश्यक होती है) ग्रामीण क्षेत्र में सुगम नहीं समझी गई और कंधे पर लटका कर ले जाने का झोला लिया गया, जिसमें आकस्मिक घटनाओं के उपचार की सामग्री साथ ली गई। अपनी उपयोगिता को पूरी तरह सफल बनाने के लिये तीन बक्सों में मैंने खासा चिकित्सालय इकट्ठा कर लिया जो एक गांव से दूसरे गांव मोटर में ले जाया जा सकता था। मेरे मन में यह विचार आता रहा कि यात्रा के दौरान किसी भी शारीरिक व्याधि के सामयिक उपचार में मजबूरी महसूस न करना पड़े। जब मुझे आंख में अचानक गिरी कंकरी को निकालने की कला मालूम है तो मुझे ऐसी उपयोगिता से किसी कारण वंचित न रहना पड़े, इस उद्देश्य से सभी प्रकार की औषधियां साथ में ली गईं। साथ में शल्य-क्रिया के उपकरण भी थे।

यात्रा में हमारे सभी मार्ग प्राय: कच्ची पगडंडियों द्वारा ही पार किये जाते थे। यात्रा के पहले ही कुछ यात्रियों के पेट खराब हुए थे क्योंकि यात्रा प्रस्थान स्थल खाचरोद पहुंचने के पहले अपने घरों से आते समय राह में जो उनकी खातिर की गई थी, उसमें भारी भोजन और शायद दूषित पानी रहा होगा। हमारे समाज का यह दोष है कि जब हमारे यहां कोई अतिथि-स्नेही आते हैं तो भोजन में ऐसे व्यंजन, पकवान उन्हें खिलाते हैं कि जो सभी को स्वास्थ्यप्रद नहीं होते। सभी लोग उन्हें पचा नहीं पाते। ऐसा भोजन यात्रा में बाधक होता है। इसलिये जब यात्रा प्रारंभ हुई तो इस बात का पूरा ध्यान रखा गया कि यात्रा में भोजन स्वास्थ्यदायक ही मिले।

पहले दिन की यात्रा के प्रारंभ में गांव की चौकी की सभा में यह सूचित कर दिया गया था कि हमारे साथ सामान्यत: पाये जाने वाले रोगों की चिकित्सा का प्रबन्ध है और ग्रामीण जनता उसका लाभ उठावे। हमने आशा व्यक्त की कि जितनी भी लाई हुई औष-

धियां हमारे साथ हैं हम उन्हें यहीं खर्च कर देना चाहते हैं ताकि उनका पूरा सदुपयोग हो सके और वापिस बोझ उठा कर न ले जाना पड़े। सभा के सम्पन्न होते ही भोजन हुआ और उसके बाद रोगियों की भीड़ जमा होने लगी। मेरे अकेले के लिये रोगियों का रजिस्टर में नाम लिखना, उनकी जांच करना, दवा देना और साथ में औषधि-पत्र भी देना कठिन होता। रोग के बारे में तथा औषधि और पथ्य के प्रयोग के बारे में ग्रामीण जनता को समझाना सरल नहीं होता, पर देखते ही देखते हम यात्रियों में में से ही एक महिला मेरी सहायता के लिये स्वयं आ गई। उसने मुझ से पूछा—"क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूं?' "नेकी और पूछ-पूछ"—मैंने उनकी सहायता सहर्ष स्वीकार की। वे शीघ्र ही अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई। श्रीमती प्रेमलता वहन, अजमेर में अध्यापिका है। उनका रोगियों के प्रति व्यवहार मानवीय, सरल नम्र था। वे उनका नाम इत्यादि लिखतीं, उन्हें औषधियां, गोलियां पुड़िया गिन कर देती और उनको लेना समझाती। रजिस्टर में नाम लिखना तो एक छोटा-सा ही काम था पर अधिक महत्त्वपूर्ण था रोगियों से बात करना और उन्हें उनकी ही भाषा में समझाना। जब तक मैं रोगियों की जाँच करता उतने समय में वे पहले देखे हुए रोगियों को औषधि वितरण कर देती और उनके लेने का क्रम समझा देती। वे जिज्ञासु और समझदार थीं। उन्होंने बहुत जल्दी ही मेरी सहायता करना सीख लिया। उन्हें अधिक कहने या समझाने की आवश्यकता नहीं होती थी, मानो वे नर्सिग कोर्स पास हों।

हम लोग जब कभी गांव में पहुंचते तो वहां पड़ाव के लिये ठहरने की व्यवस्था होते-होते ही अस्वस्थ्य लोग इकट्ठे होने लगते। यद्यपि हमारा यही प्रयत्न रहता कि नियमित समय में ही औषधोपचार हो किन्तु यह सदैव पालन करना कठिन होता। फिर भी मैं जहां भी काम शुरु करता, वे स्वयं मेरे साथ आ जाती मानो यह काम उनका ही था : चिकित्सा—कार्य के दो मुख्य पहलू थे। एक तो बाहर से आये अस्वस्थ यात्रियों की स्वयं की अस्वस्थता की चिकित्सा और दूसरे उन ग्रामीणों की चिकित्सा जो हमारे पड़ाव के गांव या पास के गांवों से आते थे।

अधिक होते हैं। ग्रामीण-जनता पर औषधि भी जल्दी ही प्रभावी होती है क्योंकि वे लोग औषधि के आदि नहीं होते। यदि कभी चार-पांच दिन से अधिक सामान्य व्याधि रह जाय तभी वे पास के चिकित्सा केन्द्र में जाते हैं और कभी-कभी उपचार लेते हैं। कुछ दिन वे सहन करते हैं और कई बार उनकी शारीरिक शक्तियां ही उन रोगों पर बिना औषधि के काबू पाती हैं। हमें इन ग्रामों में प्रायः मलेरिया, पेचिश, बच्चों में आंखों की सामान्य शोथ, फ्लू, दमा, बच्चों में असंतुलित भोजन के दोष ही अधिक मिले, जिनका हम उपचार कर पाये। कुछ बड़े रोग भी पाये गये जैसे कोढ़, क्षय तथा कुछ जन्मजात रोग जिनके लिये मैंने उन रोगियों को लम्बे समय के उपचार की सलाह दो। यहां तक कि ऐसे रोगियों के उपचार की व्यवस्था का आश्वासन दिया कि यदि वे रोगी लगातार औषधियां लेंगे तो संघ के दानी यात्री ५००)-७००) रु० की औषधि की सहायता करेंगे क्योंकि वे रोग जटिल थे, और उतनी ही रकम के बिना उनका ठीक होना आसान नहीं था। उन रोगियों को इन्दौर या उज्जैन जाना आवश्यक था। अई बार रास्ते में जाते वक्त औषधियां तो वितरित की जा सकती थीं किन्तु उनका रेकार्ड रखना व्यावहारिक नहीं था, इसलिये सभी रोगियों के नाम लिखे नहीं जा सके।

हमारे देश की यह एक अजीब विडम्बना है कि जहां शासन नें गांवों में अच्छे स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किये हैं, वहां रोगी उपचार के लिये जाने में डरते व हिचकते हैं और उन केन्द्रों का ठीक उपयोग नहीं कर पाते। गांव के लोगों का इन चिकित्सालयों पर पूरा विश्वास नहीं है और गांवों के चिकित्सक ग्रामीणों के असहयोग की शिकायत करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पिछले २० वर्षों में ग्रामीण जनता पहले से स्वस्थ है। मैंने इन्हीं ग्रामों को २०-२५ साल पहले बी. सी. जी. अभियान के दौरान देखा था, इसलिये मैं ऐसा अनुमान लगा सका।

यह तो संभव नहीं कि हरएक गांव में चिकित्सालय हो पर यह संभव है कि हरएक गांव में एक औषधियों की पेटी रखी जाय,

जिससे सामान्य औषधियों रोजमर्रा की आवश्यकता के अनुसार दी जा सके। ये पेटियां स्कूल के अध्यापक या किसी पढ़े लिखे सामान्य समझदार व्यक्ति के सुपुर्द की जा सकती है। सबसे बड़ी आवश्यकता है ग्रामीणों में स्वास्थ्य-शिक्षा की ताकि माता-पिता अपने बच्चों की देखरेख स्वास्थ्यप्रद तरीकों से कर सकें और संक्रामक रोगों से बचने में शासन का सहयोग लें।

मेरा यह निश्चित मत है कि भारत की ८२% जनता आज भी ग्रामों में रहती है जिनमें शांति, सद्भावना और मानवता मौजूद है और वे आज भी भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण लिये हैं। वे अपनी कठिनाइयों को भाग्य की विडम्बना ही समझते हैं, इसलिये उनमें निराशा कम है। इसके विपरीत ही शहरों में जहां केवल १८% भारतीय जनता रहती हैं, निरर्थक शोरगुल, हतासा और दुःख का अनुभव करते हैं क्योंकि उन्होंने अपने मन में असन्तोष को बढ़ावा दिया है।

अंत में मैं अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इस यात्रा में सम्मिलित करके ग्रामीण समाज के संपर्क में आने का अवसर दिया तथा जीवन-साधना और आत्म-चिंतन को दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग-दर्शन किया। ०

नये सात्त्विक प्रकार का अनुभव

● स्व. श्री अगरचन्द नाहटा

जन-जन से सम्पर्क करने का एक सुन्दर माध्यम है यात्रा। जैन धर्म में इसे सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है।

स्वयं पैदल विहार करते हैं और वर्षाकाल के ४ महीनों को छोड़कर जैन साधु-साध्वी निरन्तर विचरण करते रहते हैं। इसी से विहार के समय रास्ते में पड़ने वाले छोटे-छोटे गांव और वहां के निवासियों से सम्पर्क होने का मौका मिलता है। गांव के लोग सरल जिज्ञासु और धर्मप्रिय होते हैं। इसीलिए उनमें धार्मिक भावना थोड़े समय में अधिक रूप में पनपायी और विकसित की जा सकती है।

भारत में सत्संग को बहुत महत्त्व दिया गया है, क्योंकि अच्छे और बुरे व्यक्तियों के संग से मनुष्य में दुर्गुण और सद्गुण सहज ही में प्रगट हो जाते हैं। संतसमागम मनुष्य में सद्भावनाओं को प्रस्फुटित एवं पल्लवित करता है और इसका दूरगामी सुपरिणाम मनुष्य को चरित्रवान और उच्च स्थिति तक पहुंचाने में सहायक होता है। जैसा वातावरण मिलता है, उसका अच्छा या बुरा असर होना स्वाभाविक है। इस दृष्टि से नये जैन बने हुए धर्मपाल भाईयों को धर्म में दृढ़ बनाने के लिए जो पदयात्रा का आयोजन साधुमार्गी जैन संघ द्वारा समय-समय पर किया जाता है, उसे मैं बहुत ही आवश्यक एवं उपयोगी समझता हूं।

इस बार जावरा से रतलाम तक की पदयात्रा में सम्मिलित होने का मुझे भी अवसर मिला। इस तरह की धर्म-साधना व प्रचार यात्रा में ७ दिन बिताने का मुझे अपने जीवन में पहला ही मौका मिला और इन दिनों में जो अनुभव मुझे हुआ, वह एक नये ही सात्त्विक प्रकार का था।

पदयात्रा की व्यवस्था भी बहुत ही उत्तम थी। उसमें स्त्री और पुरुष दोनों का सम्मिलन था। एक दिन में ही सुबह और शाम दो-दो गांवों में पड़ाव होता। वहां के लोगों से मिलना होता। गांव के लोग बड़े उमंग के साथ स्वागत करते और धर्म सभा में काफी समय तक सम्मिलित होकर लाभ उठाते। साथ ही डा. बोरदिया जी जैसे कुशल चिकित्सक और उनके सहयोगी डाक्टर आदि से ग्रामीण जनता अपने रोगोपचार का भी लाभ उठाती। अच्छे-अच्छे व्यक्तियों के भाषण सुनकर ज्ञानवृद्धि करती। इस तरह ग्रामीण लोगों को एक चहल-पहल के साथ सुसंस्कारित होने की प्रबल प्रेरणा मिलती।

प्रायः प्रत्येक ग्राम में धर्मपाल बंधुओं के लिए विद्याशालाएं भी चलती हैं । अतः अध्यापकों और शिक्षार्थियों में भी काफी उत्साह दिखाई पड़ता है । बालक-बालिकाओं को योग्य वस्त्र आदि देने की व्यवस्था भी बड़ी आकर्षक थी । धर्मपाल लोगों के अतिरिक्त अन्य ग्रामीण जनता भी आयोजनों में सम्मिलित होकर लाभ उठाती । पदयात्री बहनें प्रत्येक गांव के घर-घर में पहुंच कर वहां की स्त्रियों से सम्पर्क स्थापित करती और उन्हें प्रेरणा देती । इस तरह का सुन्दर वातावरण पदयात्रियों को भी उल्लासमय बना देता । पैदल चलने में उन्हें एक सुखद अनुभव होता । यद्यपि मेरे गोडे में दर्द होने के कारण पैदल चलना मेरे लिए संभव नहीं हुआ और डा. बोरदिया जी ने भी छूट दे दी पर जो कुछ मैंने देखा उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा । आराम से जीवन बिताने वाले कई बड़े-बड़े लोग भी इसमें सम्मिलित थे और बड़ी खुशी से वे यात्रा के कष्ट उठाने में तत्पर रहते एवं आनंद का ही अनुभव करते ।

पदयात्रियों के लिए जो नियम रखे गये थे उनसे संयमित और साधनामय जीवन बिताने का अभ्यास बढ़ता है । नियमित समय पर उठना, सामायिक स्वाध्याय करना आवश्यक था । भोजन पदयात्रा आदि सभी कार्य नियमित समय पर होते । प्रातःकाल से लेकर रात तक का सारा समय अलग-अलग कार्यों में विभाजित था ।

दोपहर का सामायिक और स्वाध्याय का आयोजन तो सभी के लिए बहुत ही साधनामय और ज्ञान-वृद्धि का साधन था । पहले 'उत्तराध्ययन–सूत्र' का अर्थ सहित पाठ होता और फिर उस पर कुछ चिन्तन चलता । इसके बाद किसी एक विद्वान का भाषण करवाया जाता । इन भाषणों के लिए कई विद्वानों को बुलाकर लाभ उठाया गया, इससे श्रोताओं को बहुत–सी नयी-नयी बातें जानने को मिली । अनेकों में नयी जिज्ञासाएं उभरी और समाधान पाने के लिए उत्सुकता जगी । मैंने देखा कि सभी लोग बहुत जिज्ञासु थे, वे दिल से चाहते थे कि इस मिले हुए सुअवसर का अधिकाधिक व अच्छा लाभ उठाया जाय । भाषणों में कई विषय तो बिल्कुल नये से थे । इससे जैन धर्म को ठीक से व गहराई से समझने का अच्छा अवसर मिला । कई

स्वयं पैदल विहार करते हैं और वर्षाकाल के ४ महीनों को छोड़कर जैन साधु-साध्वी निरन्तर विचरण करते रहते हैं। इसी से विहार के समय रास्ते में पड़ने वाले छोटे-छोटे गांव और वहां के निवासियों से सम्पर्क होने का मौका मिलता है। गांव के लोग सरल जिज्ञासु और धर्मप्रिय होते हैं। इसीलिए उनमें धार्मिक भावना थोड़े समय में अधिक रूप में पनपायी और विकसित की जा सकती है।

भारत में सत्संग को बहुत महत्त्व दिया गया है, क्योंकि अच्छे और बुरे व्यक्तियों के संग से मनुष्य में दुर्गुण और सद्गुण सहज ही में प्रगट हो जाते हैं। संतसमागम मनुष्य में सद्भावनाओं को प्रस्फुटित एवं पल्लवित करता है और इसका दूरगामी सुपरिणाम मनुष्य को चरित्रवान और उच्च स्थिति तक पहुंचाने में सहायक होता है। जैसा वातावरण मिलता है, उसका अच्छा या बुरा असर होना स्वाभाविक है। इस दृष्टि से नये जैन बने हुए धर्मपाल भाईयों को धर्म में दृढ़ बनाने के लिए जो पदयात्रा का आयोजन साधुमार्गी जैन संघ द्वारा समय-समय पर किया जाता है, उसे मैं बहुत ही आवश्यक एवं उपयोगी समझता हूं।

इस बार जावरा से रतलाम तक की पदयात्रा में सम्मिलित होने का मुझे भी अवसर मिला। इस तरह की धर्म-साधना व प्रचार यात्रा में ७ दिन बिताने का मुझे अपने जीवन में पहला ही मौका मिला और इन दिनों में जो अनुभव मुझे हुआ, वह एक नये ही सात्त्विक प्रकार का था।

पदयात्रा की व्यवस्था भी बहुत ही उत्तम थी। उसमें स्त्री और पुरुष दोनों का सम्मिलन था। एक दिन में ही सुबह और शाम दो-दो गांवों में पड़ाव होता। वहां के लोगों से मिलना होता। गांव के लोग बड़े उमंग के साथ स्वागत करते और धर्म सभा में काफी समय तक सम्मिलित होकर लाभ उठाते। साथ ही डा. बोरदिया जी जैसे कुशल चिकित्सक और उनके सहयोगी डाक्टर आदि से ग्रामीण जनता अपने रोगोपचार का भी लाभ उठाती। अच्छे-अच्छे व्यक्तियों के भाषण सुनकर ज्ञानवृद्धि करती। इस तरह ग्रामीण लोगों को एक चहल-पहल के साथ सुसंस्कारित होने की प्रबल प्रेरणा मिलती।

प्रायः प्रत्येक ग्राम में धर्मपाल बधुओं के लिए विद्याशालाएं भी चलती हैं। अतः अध्यापकों और शिक्षार्थियों में भी काफी उत्साह दिखाई पड़ता है। बालक-बालिकाओं को योग्य वस्त्र आदि देने की व्यवस्था भी बड़ी आकर्षक थी। धर्मपाल लोगों के अतिरिक्त अन्य ग्रामीण जनता भी आयोजनों में सम्मिलित होकर लाभ उठाती। पदयात्री बहनें प्रत्येक गांव के घर-घर में पहुंच कर वहां की स्त्रियों से सम्पर्क स्थापित करती और उन्हें प्रेरणा देती। इस तरह का सुन्दर वातावरण पदयात्रियों को भी उल्लासमय बना देता। पैदल चलने में उन्हें एक सुखद अनुभव होता। यद्यपि मेरे गोडे में दर्द होने के कारण पैदल चलना मेरे लिए संभव नहीं हुआ और डा. बोरदिया जी ने भी छूट दे दी पर जो कुछ मैंने देखा उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। आराम से जीवन बिताने वाले कई बड़े-बड़े लोग भी इसमें सम्मिलित थे और बड़ी खुशी से वे यात्रा के कष्ट उठाने में तत्पर रहते एवं आनंद का ही अनुभव करते।

पदयात्रियों के लिए जो नियम रखे गये थे उनसे संयमित और साधनामय जीवन बिताने का अभ्यास बढ़ता है। नियमित समय पर उठना, सामायिक स्वाध्याय करना आवश्यक था। भोजन पदयात्रा आदि सभी कार्य नियमित समय पर होते। प्रातःकाल से लेकर रात तक का सारा समय अलग-अलग कार्यों में विभाजित था।

दोपहर का सामायिक और स्वाध्याय का आयोजन तो सभी के लिए बहुत ही साधनामय और ज्ञान-वृद्धि का साधन था। पहले 'उत्तराध्ययन–सूत्र' का अर्थ सहित पाठ होता और फिर उस पर कुछ चिन्तन चलता। इसके बाद किसी एक विद्वान का भाषण करवाया जाता। इन भाषणों के लिए कई विद्वानों को बुलाकर लाभ उठाया गया, इससे श्रोताओं को बहुत–सी नयी-नयी बातें जानने को मिली। अनेकों में नयी जिज्ञासाएं उभरी और समाधान पाने के लिए उत्सुकता जगी। मैंने देखा कि सभी लोग बहुत जिज्ञासु थे, वे दिल से चाहते थे कि इस मिले हुए सुअवसर का अधिकाधिक व अच्छा लाभ उठाया जाय। भाषणों में कई विषय तो बिल्कुल नये से थे। इससे जैन धर्म को ठीक से व गहराई से समझने का अच्छा अवसर मिला। कई

बहिनों में भी ज्ञान की बड़ी भूख नजर आयी। उन्होंने मेरे से अपने प्रश्नों के समाधान पाने का भी रुचिपूर्वक प्रयत्न किया। सारे घर-गृहस्थी के कामों से निवृत होकर ऐसे स्वच्छ व सुन्दर वातावरण में रहने से सात्त्विक आनन्द का सहज ही अनुभव होता है।

जो लोग नये-नये जैनी बने हैं, उनमें जैन संस्कारों का बीजारोपण तो हुआ है पर उन्हें दृढ़ बनाने की आवश्यकता है। उनकी भक्ति और सेवा भावना अवश्य ही सराहनीय है पर विवेक जागृत करना आवश्यक है। इस पदयात्रा से उन धर्मपाल बंधुओं को जैन धार्मिक जीवन किस तरह बिताना चाहिये, इसकी अवश्य ही अच्छी प्रेरणा व शिक्षा मिली है। साथ ही पदयात्रियों को भी साधनामय निवृत जीवन बिताने का जो सुअवसर मिला, वह भी कम उल्लेखनीय नहीं है।

पदयात्रा के साथ जो सुव्यवस्थित चिकित्सा की व्यवस्था रखी गयी थी, उससे हजारों व्यक्तियों को स्वास्थ्य लाभ हुआ। यह वास्तव में ही सर्वाधिक उल्लेखनीय सेवा कार्य है। ग्रामीण लोगों को अपने रोगों के इलाज कराने की ऐसी सुविधा अन्यथा मिल ही नहीं पाती क्योंकि शहरों में जाना और वहां इलाज करवाना, अधिकांश लोगों के लिए सम्भव ही नहीं होता। अतः चिकित्सा का सेवादल स्वयं उनके पास पहुंच गया, यह तो मानो उनके लिए घर बैठे गंगा ही आ गयी। डा. बोर्दिया जी जैसे उच्चकोटि के ख्याति-प्राप्त चिकित्सक का सेवाभाव एवं तत्परता तो देखते ही बनती थी।

रतलाम के श्री चोपड़ा जी की मूक सेवाओं से मैं बहुत प्रभावित हुआ। वे और उनके साथी जिस तत्परता से सारे काम समय पर सम्पन्न कर रहे थे, उससे पदयात्रियों को कोई असुविधा नहीं होने पायी। श्री चोपड़ा जी के सुपुत्र का सेवाभाव भी उल्लेखनीय है। मुझे जैन कला पर भाषण देने भोपाल विश्वविद्यालय के आयोजित जैन सेमिनार में २ दिन के लिए सम्मिलित होना था। उस समय मैंने श्री चोपड़ा जी के सुपुत्र की सेवाभावना का परिचय पाकर बड़ी प्रसन्नता अनुभव की। पिता-पुत्र का ऐसा संयोग दुर्लभ-सा है।

श्री गुमानमल जी चोरड़िया की धर्म-प्रेरणा व अनुशासन-व्यवस्था और श्री भंवरलाल जी कोठारी की मिलनसारिता व कार्यदक्षता भी उल्लेखनीय थी। महिलाओं में भी कई विदुषी और सेवाभावी प्रतीत हुईं। उनका उत्साह भी पुरुषों से कम नहीं था। एक दिन महिला सम्मेलन का भी सुन्दर आयोजन रखा गया था। वास्तव में महिला समाज में जागृति लाना बहुत ही आवश्यक है। कई काम तो वे पुरुषों की अपेक्षा भी अधिक अच्छे रूप में कर सकती हैं। धर्म प्रचार में भी उनका ठीक से उपयोग किया जाना आवश्यक है। धर्मपालों में साम्प्रदायिक कट्टरता न बढ़े, इसकी सावधानी रखना जरूरी लगता है। ☆

मेरी यात्रानुभूति

● डॉ. नरेन्द्र भानावत, जयपुर

भगवान् महावीर के २५०० वें परिनिर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ द्वारा अप्रेल १९७५ में मालवा के खाचरोद–उज्जैन क्षेत्र में एक सात दिवसीय धर्म-जागरण पदयात्रा का आयोजन किया गया था। उसमें चाहते हुए भी मैं सम्मिलित नहीं हो सका। जब श्रीमद् जवाहराचार्य जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जावरा–रतलाम क्षेत्र में मार्च, ७६ में पुनः पदयात्रा का आयोजन किया गया तो उसमें सम्मिलित होने की ललक बराबर बनी रही। पूरा अवकाश न मिलने से मैं सम्पूर्ण पदयात्रा का लाभ तो नहीं ले सका, पर अन्तिम तीन दिनों की यात्रानुभूति का लाभ मुझे अवश्य मिला। संघ मंत्री श्री कोठारी जी यह का आग्रह रहा कि मैं अपराह्न में आयोजित स्वाध्याय-गोष्ठी में किसी दिन 'धर्म और विज्ञान' विषय पर अपने विचार रखूं और समापन समारोह के अवसर पर

'श्रीमद् जवाहरचार्य जीवन और व्यक्तित्व' पॉकेट बुक तथा Bhagwan Mahavira and his Relevence in Modern Times' अंग्रेजी पुस्तक का विमोचन कार्यक्रम रखने से पदयात्रा में सम्मिलित होना मेरे लिये आवश्यक कर्त्तव्य-सा हो गया। अतः मैं 'हिन्दुस्तान' दैनिक पत्र के राजस्थान राज्य के प्रतिनिधि डॉ. भंवर सुराणा के साथ २५ मार्च, १९७६ को चेतक एक्सप्रेस से रतलाम के लिये रवाना हुआ। जब हम २६ मार्च को जावरा स्टेशन पहुंचे तो हमें सूचना मिली कि हमें रतलाम न उतर कर नामली स्टेशन पर ही उतरना है।

नामली स्टेशन पर उतर कर हम स्टेशन से थोड़ी दूरी पर ही लगे पदयात्रा केम्प में शरीक हुए। जाकर देखा तो ग्रामवासियों की सभा जुड़ी हुई थी। उसमें इस क्षेत्र के धर्मपाल एवं अन्य भाई-वहिन काफी संख्या में उपस्थित थे। उनमें विशेष प्रकार का उत्साह, आंखों में नई चमक और मुखमंडल पर दृढ़ सकल्प-शक्ति का तेज था। अपने क्षेत्र को व्यसनमुक्त, रूढ़िमुक्त और प्रगति-कामी देखने की उत्कट भावना थी और उसमें सहायक और मार्गदर्शक बन रहे थे—श्री साधुमार्गी जैन संघ के निष्ठावान पदयात्री कार्यकर्ता। इसी स्थल पर दोपहर को मानव मुनी जी के प्रयत्न से पत्रकार-सम्मेलन आयोजित किया गया था। धर्मपाल प्रवृति की प्रगति और उसकी संस्कार-निर्माण की भूमिका तथा रचनात्मक प्रक्रिया का परिचय पाकर सभी पत्रकार अभिभूत हो उठे।

अपराह्न में एक ओर महिला सम्मेलन का आयोजन चलता रहा तो दूसरी ओर सामायिक सहित स्वाध्याय-संगोष्ठी में 'उत्तराध्ययन-सूत्र' का वाचन और विवेचन। महिलाओं में अदम्य उत्साह और समाज को रूढ़ियों से मुक्त करने की दृढ़ संकल्पशक्ति थी। महिला समिति की मंत्री श्रीमती शान्ता देवी मेहता एवं अन्य वहनों के ओजपूर्ण भाषण व समाज-सुधार की दिशा में पारित किये गये प्रस्ताव, नवयुग निर्माण के सूचक थे।

पदयात्रा में खाद्य-संयम पर विशेष वल दिया जाना विशेष महत्व की बात है। इससे आत्मसाधना और आत्मानुशासन में बड़ी

सहायता मिलती है। अतः अपराह्णोत्तर सात्विक स्वल्पाहार के बाद हम सब नामली से तीन मील दूर पंचेड़ के लिये चल पड़े। वहीं रात्रि पड़ाव करना था। तीन मील की यह पद यात्रा मेरे लिये नया अनुभव था। इस दल में ऐसे श्रीमंतों की कमी नहीं थी। जो बिना मोटर-गाड़ी के सामान्यतः कहीं आते-जाते नहीं। पर मैं देख रहा था—यहां बड़े-बड़े सेठ और सेठानियां अपने वैभव और ऐश्वर्य की स्थिति को विस्मृत कर मिट्टी की सहज गंध से साक्षात्कार कर रहे थे। शारीरिक अनुकूलता नहीं होने पर भी कुछ एक भाई-बहिन सबके साथ पैदल चलने में ही आनन्द अनुभव कर रहे थे। सच तो यह है कि यह यात्रा केवल पैरों के चलने की यात्रा नहीं थी। इसके साथ 'यतना' का पूरा ख्याल था। अलग-अलग दलों में विचारों का विनिमय होता था और भाई-बहिनों की अन्त्याक्षरी की आकर्षक होड़ सबको संगीत की मधुरता में रचाये-पचाये थी। बहनों के गीतों और स्तवनों के खजाने कितने समृद्ध और वैविध्यपूर्ण हैं, यह तब जानने को मिला। धार्मिक गीतों में मन को रमाने की कितनी पकड़ है, इसकी गहरी अनुभूति उस समय हुई।

पंचेड़ पहुंचते-पहुंचते अंधेरा घिर—सा आया था। यात्रियों की पदचाप से गांव का कण-कण स्पन्दित हो उठा। गांव के अबालवृद्ध नई चेतना से आत्मविभोर हो, पदयात्रियों के सम्पर्क-सान्निध्य में आये। रात को सभा जुड़ी। उसमें लगा कि नगर और गांव का अन्तर मिट गया है। ग्रामधर्म की ओर जैसे सबका ध्यान आकृष्ट हुआ। गांव को व्यसनमुक्त बनाने की जोरदार अपील की गई। इसके लिये डोक्यूमेन्ट्री फिल्मों का भी सहारा लिया गया। पदयात्रा का एक दूसरा ही उद्देश्य प्रगट हुआ—लोकजागरण और चेतना के विकास का। लोक प्रबुद्ध हो जाय तो धर्म की पालना सहज बन जाय। यह सूत्र हाथ लगा इस कार्यक्रम में।

इधर हम सब लोकजागरण के इस माहौल में थे पर उधर इसके समानान्तर ही चिकित्सा-सेवा का सूत्र सम्भाले हुए थे—प
डॉ. नंदलाल जी सा. बोरदिया। स्वस्थता आवश्यक है, शरी
भी और मन की भी। बीमारी अभिशाप है। इसे दूर कर

पहल भी की गई है उस यात्रा में। आसपास के सैकड़ों लोग रात्रि में भी चले आ रहे हैं स्वस्थ होने, स्वस्थता के नियम जानने और सीखने। पदयात्रा का चिकित्सा-सेवा, एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है, जिससे यात्रा लोकयात्रा बनती है।

२७ मार्च का ब्रह्म मुहूर्त। 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई' की टेर के साथ सब चैतन्य। राइसी प्रतिक्रमण और सामूहिक प्रार्थना का क्रम और पलसोड़ा जाने की तैयारी। मिनटों में सामान लद गया निश्चित वाहन पर और सब चल पड़े गन्तव्य की ओर। किसी ने मौन धारण कर रखी है, कोई दल प्रभाती गाता चल रहा है, कुछ युवक सामाजिक चर्चा में और कुछ कार्यकर्त्ता संघ-संगठन की बातों में रमते-मचलते चल रहे हैं कदम-ब-कदम। मैं डॉ० बोरदिया साहब के साथ हो लिया हूं। ग्रामीण स्वास्थ्य के बारे में चर्चा चल पड़ी है। नेत्र-रोग और युवा-स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भी डाक्टर साहब महत्त्वपूर्ण बातें और जीवन के अनुभव बताते चल रहे हैं। पलसोड़ा आ गया इतना जल्दी कि पता ही नहीं चला। यहां ग्राम पंचायत है। पंचों और सरपंच का अच्छा सहयोग मिला। निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग काफी संख्या में एकत्र हुए। भाई-बहिनों ने यहां के धर्मपालों से, उनके परिवारों से सम्पर्क किया। यह सम्पर्क का नैकट्य इस यात्रा का एक प्रमुख उद्देश्य है। संस्कारी बनने के बाद किसी प्रकार का भेद रह ही नहीं जाता। धर्मपाल भाइयों में स्वाभिमान जगाना और उन्हें स्वावलम्बी बनना संघ यात्रा का लक्ष्य है।

यहां की प्रातःकालीन सभा में धर्मपाल भाइयों ने व्यसन-मुक्ति के बाद जीवन में आये नये परिवर्तनों और अनुभवों को भाव-विभोर होकर रखा। उससे कई लोगों को प्रेरणा मिली और अनेक स्त्री-पुरुषों ने पदयात्रा के प्रमुख श्री गुमानमल जी सा. चोरड़िया के आह्वान पर मद्य, मांस आदि कुव्यसनों के त्याग का संकल्प ग्रहण किया। यह दृश्य बड़ा मार्मिक और हृदय को गुदगुदाने वाला था। लगता था जैसे पापों की कालिमा, सत्संग के जल से धुल रही है, मिट रही है।

अपराह्न की ज्ञानगोष्ठी में जैन विद्या के मर्मज्ञ विद्वान और

साहित्यान्वेषी श्री अगरचन्द जी नाहटा ने जैन दर्शन के विविध पक्षों पर महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिया और मैंने भी धर्म और विज्ञान के सम्बन्ध-सूत्रों और उनकी पारस्परिकता पर अपने विचार व्यक्त किये। समय हो चला था। अतः सात्विक अल्पाहार के बाद फिर हम चल पड़े रतलाम की ओर। रतलाम-नगर के पास ही एक सुरम्य स्थली पर हमारा रात्रि पड़ाव रहा। यह यात्रा का अंतिम पड़ाव था। अतः प्रतिक्रमण के बाद एक विशेष कार्यक्रम रखा गया। इसमें सम्मिलित पदयात्रियों ने अपनी आत्मस्वीकृतियां अर्थात् पदयात्रा के दौरान हुई भूलें-प्रस्तुत कीं। यह दृश्य बड़ा रोचक और भावविभोर कर देने वाला था। छोटी-छोटी भूलों और छोटे-छोटे नियमों की अवहेलना के प्रसंग स्मृति में ला-लाकर, लोग अध्यक्ष के सम्मुख, विनयपूर्वक प्रस्तुत कर रहे थे। यह आत्मस्वीकृति तभी संभव है जब व्यक्ति परिधि से केन्द्र की ओर मुड़ता है, उसकी प्रजा जागृत होती है, उसका अहम् टूटता है—गलता है। यह स्थिति वह स्थिति है जिसे प्राप्त कर साधक साधना की ओर अग्रसर हो सकता है और मैंने देखा कि अध्यक्ष जी सबकी बातें धैर्यपूर्वक सुन रहे हैं और सब उनसे यथायोग्य प्रायश्चित ले रहे हैं। दिल की सफाई का यह तरीका व्यक्तित्व को मांजता निखारता है। अध्यक्षजी यह सुन-सुन कर गद्गद् हो रहे हैं और यह क्या—उन्होंने स्वयं सबसे बड़ा प्रायश्चित्त ले लिया है–एक तेले का। महज इसलिये कि पंचेड़ ग्राम में ग्रामवासियों ने भावविभोर होकर यात्रादल का स्वागत बैण्ड-बाजों से कर दिया था। यह अध्यक्ष जी का कोई निजी दोष नहीं था, पर यात्रादल-प्रमुख के नाते उन्होंने महसूस किया कि व्यवस्था का कोई भी अंग कहीं से भंग होता है तो उसकी जिम्मेदारी उनकी अपनी है।

यह सारा दृश्य बड़ा ही हृदयस्पर्शी और दिल को हल्का करने वाला था। पदयात्रा का यह आत्मस्पर्शी दृश्य अवर्णनीय है। इस दृश्य ने मेरे मन को ही आन्दोलित नहीं किया, वरन् प्रकृति भी आन्दोलित हो उठी। आंधी और तूफान के बीच यह कार्यक्रम चलता रहा। अन्त प्रकृति और बाह्यप्रकृति का यह अद्भुत सामजस्य देखते ही बनता था।

पदयात्रा की फूल-झड़ियां

● श्री कालूराम नाहर, ब्यावर

धर्मपाल-क्षेत्र की धर्म-जागरण पदयात्रा के अनूठे सस्मरण मेरे जीवन की एक महान् उपलब्धि है। मुझे रह-रह कर याद आता है वह दिन, जब हमारी पदयात्रा रैली चौकीग्राम में पहुंची। उस समय एक धर्मपाल भाई के घर में किसी पारिवारिक सदस्य का देहावसान हो गया था परन्तु उनके परिवार वालों ने यह बात किसी को मालूम तक नहीं होने दी और स्वागत में जुटे रहे। उनकी भावना थी कि जो होनी थी, वह तो हो गई। जो गया है, वह तो वापिस आने वाला है नहीं, लेकिन सहधर्मी भाईयों की धर्म-गंगा, जो हमारे गांव में आई है, वह पता नहीं फिर आयेगी या नहीं ?

गजब की थी वह वात्सल्य–भावना ! उनके इस चिर–स्नेह की अमिट छाप मेरे हृदय-पटल पर अंकित रहेगी।

उभरना ग्राम में त्यागमूर्ति अध्यक्ष महोदय अपना त्यागमय धर्मोपदेश दे रहे थे। वहां पर एकत्रित आस-पास के गांवों के अगुओं ने यह प्रण किया कि वे इस वर्ष में हर आदमी एक-एक दो-दो गांवों को सुधारेंगे। उसी समय वहां पर उपस्थित गांव के ठाकुर साहब, जो दिन-रात मांस मदिरा में रत रहते थे, की आत्मा बोल उठी, त्यागी के त्याग के आगे वह हार मान बैठी और उन्होंने भी आजीवन मांस-मदिरा एवं शिकार का त्याग किया। यह क्या था, सिर्फ त्यागी के त्याग का प्रभाव।

मक्षी ग्राम के पड़ाव की छटा तो देखते ही बनती थी। गांव से कुछ दूर सड़क के किनारे एक उद्यान में हमारा कार्यक्रम चल रहा था। उस समय का दृश्य हमें महावीर के समवसरण की याद

दिला रहा था । हमारे बीच उस समय गुरुदेव नहीं थे । परन्तु उनका असली आत्मीय रूप हमें जैन धर्मपाल भाईयों में नजर आ रहा था ।

एक ग्राम में जिसका नाम मुझे इस समय याद नहीं आ रहा है, हमारे धर्मपाल-कार्यकर्ता श्री हीरालाल जी को पुलिस वाले पूछताछ के लिए ले गये । यह बात मां यशोदा (धर्मपाल-माता) को विदित हुई । उनका मातृत्व उमड़ पड़ा और उन्होंने चन्द मुख्य-कार्यकर्ताओं को उनके दरियापत के लिए भेजा । जब तक उनका सही समाचार न मिला, उन्होंने अन्न-पान नहीं किया । जब श्री हीरालाल जी वापस आये, तब उन्हें छाती से लगा लिया । कैसी उनका स्नेह था ! यह स्नेह एक माता का अपने पुत्र को भी दुर्लभ है परन्तु धर्म की ओर अग्रसर धर्मपालों को यह मिल रहा है ।

रुड़की ग्राम में हमारे कवि श्री हनुमानमल जी बोथरा ने अपने भजन से जनता को हर्ष-विभोर करते हुए पूछा—"यशोदा मैया धर्मपाल थारै कांई लागे ?" यशोदा मां ने खड़े होकर कहा—"ये लाल कृष्ण गोपाल लागै ।" क्या ही वात्सल्यपूर्ण जवाब था ! सारी सभा में हंसी का सागर उमड़ पड़ा ।

संस्मरण तो इतने हैं और मन चाहता है कि लिखता ही रहूं परन्तु इस लेखनी में इतनी शक्ति नहीं । फिर भी डॉक्टर साहब नन्दलाल जी बोरदिया के बारे में कुछ न लिखूं तो यह मन मानेगा नहीं । डॉक्टर साहब की अनूठी सेवा का उच्च आदर्श मेरे जीवन में सतत प्रेरणादायी रहेगा ।

जो क्रान्ति का बिगुल भारत में भगवान् महावीर ने २५०० वर्ष पूर्व बजाया था, वही क्रान्ति का बिगुल आचार्य प्रवर १००८ श्री नानालाल जी म. सा. द्वारा आज के युग में मालवा क्षेत्र की बलाई-जाति के उद्धार के लिए बजाया गया ।

आज तथाकथित नामधारी लोग फैशन की आड़ में कु

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

सुसंस्कार और ज्ञान के आराधक धर्मपाल

● श्री दीपचन्द भूरा, देशनोक

वर्तमान अध्यक्ष—श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ

संघ अध्यक्ष बनते समय मैंने संकल्प लिया था कि जो भी श्री संघ मुझे आमन्त्रित करेगा, मैं उनके यहां अवश्य जाऊंगा। आचार्य श्री जी की महान् अनुकम्पा से मुझे अपने संकल्प की पूर्ति का सुयोग मिलता रहा। धर्मपाल प्रचार-प्रसार प्रवृत्ति का आमन्त्रण प्राप्त होने पर मैं वहां भी गया। सच तो यह है कि इस प्रवृत्ति को निकट से देखने की स्वयं मेरी हार्दिक व अन्तरंग कामना थी।

मुझे कुछ धर्मपाल क्षेत्रीय प्रवासों में सम्मिलित होने का अवसर मिला और मुझे इन धर्म के दीवानों के सहज, सरल व निश्छल जीवन को देख कर अपार खुशी हुई।

उस समय तो मैं आश्चर्यचकित रह गया जब जून ८२ में मैंने रतलाम में आयोजित धर्मपाल बालकों के शिविर के समापन एवं बालिका-शिविर के शुभारम्भ समारोह को देखा। इन कार्यक्रमों में धर्मपालों की सुसंस्कार और ज्ञान की आराधना को देखकर बड़े-बड़े धर्म-धुरीणों ने दांतों तले अंगुली दबा ली। भांति-भांति से इनकी परीक्षा ली गई और हर परीक्षा की कसौटी पर ये खरे उतरे। इनके जीवन में इतने थोड़े समय में जो महान् परिवर्तन आया है वह अभिनन्दनीय है।

यह आचार्य गुरूदेव की अमृतवाणी और उस क्षेत्र में रहने वाले हमारे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की श्रम-साधना तथा धर्मपालों के अपार उत्साह के त्रिविध प्रयासों का सुखभरा फल है।

मेरी कामना है कि धर्मपाल-प्रवृति समाज और राष्ट्र उत्कर्ष में इसी प्रकार सहभागी बन कर प्रगति करती रहे।

की ओर अग्रसर हो रहे हैं और जिन धर्मपाल भाईयों को ये लोग नीची दृष्टि से देखते हैं, वे लोग आज कुव्यसनों का त्याग कर अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बना रहे हैं। इनके बच्चों, औरतों में धर्म के प्रति संस्कार इतने गहरे घर कर गये हैं कि देखते ही बनता है। उनकी किसी प्रकार की आर्थिक मांग नहीं है। मांग है तो सिर्फ आध्यात्मिक जीवन को सुधारने के लिए आध्यात्मिक पाठशालाओं की।

हम सात रोज के इस प्रवास में आपस में इतने घुलमिल गये कि समय का पता ही नहीं चला। जब समापन-दिवस आया तो सबके चेहरों पर एक उदासी प्रतीत होने लगी, जैसे "जल बिन मछली" और अन्तर्मन रो पड़ा।

सच्ची क्रान्ति

● श्री विजयसिंह नाहर

भूतपूर्व उप-मुख्यमन्त्री—प० बंगाल

सन् १९७४-७५ की बात है। एक दिन भाई सूरजमल जी बच्छावत हमारे घर पर पधारे साथ में एक सौम्य मूर्ति युवक भी थे। परिचय कराया कि ये बीकानेर से आये हैं। वहां धार्मिक और सामाजिक सेवा का कार्य करते हैं। नाम है श्री भंवरलाल जी कोठारी। तेजस्वी, धीर, धीरे-२ शब्द-शब्द बोलनेवाले युवक को देखकर समझ में आया कि यह सच्चा कार्यकर्त्ता है।

श्री कोठारी जी ने कहा कि "मैं आपको एक निमन्त्रण देने के लिए आया हूं। मालव में व्यसन-विकार मुक्ति का एक महान्

सुसंस्कार और ज्ञान के आराधक धर्मपाल

● श्री दीपचन्द भूरा, देशनोक

वर्तमान अध्यक्ष—श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ

संघ अध्यक्ष बनते समय मैंने संकल्प लिया था कि जो भी श्री संघ मुझे आमन्त्रित करेगा, मैं उनके यहां अवश्य जाऊंगा। आचार्य श्री जी की महान् अनुकम्पा से मुझे अपने संकल्प की पूर्ति का सुयोग मिलता रहा। धर्मपाल प्रचार-प्रसार प्रवृत्ति का आमन्त्रण प्राप्त होने पर मैं वहां भी गया। सच तो यह है कि इस प्रवृत्ति को निकट से देखने की स्वयं मेरी हार्दिक व अन्तरंग कामना थी।

मुझे कुछ धर्मपाल क्षेत्रीय प्रवासों में सम्मिलित होने का अवसर मिला और मुझे इन धर्म के दीवानों के सहज, सरल व निश्छल जीवन को देख कर अपार खुशी हुई।

उस समय तो मैं आश्चर्यचकित रह गया जब जून ८२ में मैंने रतलाम में आयोजित धर्मपाल बालकों के शिविर के समापन एवं बालिका–शिविर के शुभारम्भ समारोह को देखा। इन कार्यक्रमों में धर्मपालों की सुसंस्कार और ज्ञान की आराधना को देखकर बड़े-बड़े धर्म–धुरीणों ने दांतो तले अगुली दबा ली। भांति-भांति से इनकी परीक्षा ली गई और हर परीक्षा की कसौटी पर ये खरे उतरे। इनके जीवन में इतने थोड़े समय में जो महान् परिवर्तन आया है वह अभिनन्दनीय है।

यह आचार्य गुरुदेव की अमृतवाणी और उस क्षेत्र में रह वाले हमारे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की श्रम-साधना तथा धर्मपालों के अपा उत्साह के त्रिविध प्रयासों का सुखभरा फल है।

मेरी कामना है कि धर्मपाल-प्रवृति समाज और राष्ट्र उत्कर्ष में इसी प्रकार सहभागी बन कर प्रगति करती रहे।

की ओर अग्रसर हो रहे हैं और जिन धर्मपाल भाईयों को ये लोग नीची दृष्टि से देखते हैं, वे लोग आज कुव्यसनों का त्याग कर अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बना रहे हैं। इनके बच्चों, औरतों में धर्म के प्रति संस्कार इतने गहरे घर कर गये हैं कि देखते ही बनता है। उनकी किसी प्रकार की आर्थिक मांग नहीं है। मांग है तो सिर्फ आध्यात्मिक जीवन को सुधारने के लिए आध्यात्मिक पाठशालाओं की।

हम सात रोज के इस प्रवास में आपस में इतने घुलमिल गये कि समय का पता ही नहीं चला। जब समापन-दिवस आया तो सबके चेहरों पर एक उदासी प्रतीत होने लगी, जैसे "जल विन मछली" और अन्तर्मन रो पड़ा।

सच्ची क्रान्ति

● श्री विजयसिंह नाहर

भूतपूर्व उप-मुख्यमन्त्री—प० बंगाल

सन् १९७४-७५ की बात है। एक दिन भाई सूरजमल जी वच्छावत हमारे घर पर पधारे साथ में एक सौम्य मूर्ति युवक भी थे। परिचय कराया कि ये बीकानेर से आये हैं। वहां धार्मिक और सामाजिक सेवा का कार्य करते हैं। नाम है श्री भंवरलाल जी कोठारी। तेजस्वी, धीर, धीरे-२ शब्द-शब्द बोलनेवाले युवक को देखकर समझ में आया कि यह सच्चा कार्यकर्त्ता है।

श्री कोठारी जी ने कहा कि "मैं आपको एक निमन्त्रण देने के लिए आया हूं। मालव में व्यसन-विकार मुक्ति का एक महान्

आन्दोलन चल रहा है । इस सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात परम पूज्य आचार्यश्री नानालाल जी म. सा. ने किया है । श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की देखरेख में धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति के इस आन्दोलन द्वारा गांव के गरीब परिवारों के मध्य सेवा कार्य कर उन्हें आदर्श जीवन बिताने की प्रेरणा दी जाती है । उस क्षेत्र में कुछ दिन बाद एक पदयात्रा आरम्भ होने जा रही है । यह पदयात्रा समाज के लोग करेंगे, जिससे समाज-बान्धवों और धर्मपालों के बीच भाईचारा और निकटता हो सके "

भाई सूरजमल जी जाने को तैयार थे । मैंने भी हां भर दी, क्योंकि पदयात्रा में मुझे बहुत आनन्द आता है । जब मैंने पश्चिम बंगाल में सन्त विनोबा जी के साथ भूदान आन्दोलन के लिए पदयात्रा की थी । तब मैंने देखा कि पदयात्रा से गांव के लोगों में नई प्रेरणा जागृत होती थी । वे त्याग के क्रान्तिकारी कार्य देखते-देखते कर दिखाते थे । जनता में कितनी भाव-भक्ति होती है, यह पदयात्रा से ही पता चलता है ।

पूर्व पदयात्राओं की सुखद स्मृतियां संजोए मैं भाई श्री सूरजमल के साथ रतलाम पहुंचा । स्टेशन पर बहुत से व्यक्ति उपस्थित थे । श्री पी. सी. चौपड़ा जी के यहां विशिष्ट जनों से मिलना हुआ । वहां से खाचरौद पहुंचे । स्व. श्री हीरालाल जी नांदेचा के यहां रात्रि विश्राम किया । प्रातः पदयात्रा में सम्मिलित हुए ।

पदयात्रा का पथ-संचालन दृढ़ता के प्रतीक, स्वस्थ, कर्मठता से युक्त और तेजस्वी समाजसेवी श्री मानवमुनि जी कर रहे थे । सभी लोग पैदल चल रहे थे, कुछ अस्वस्थ लोग गाड़ी में थे ।

पहले पड़ाव का गांव 'चौकी' आया । स्वागत के लिए जनता उपस्थित थी । गांव का परिवेश आनन्दमय और शुद्ध था । लोगों में उत्साह था । धर्मपाल आन्दोलन का सात्विक प्रभाव उनके जीवन में स्पष्ट दिखाई दे रहा था । जहां के लोग बराबर [illegible] किया करते

थे, स्त्रियों को मारा करते थे, जहां घरों में खाने का अभाव था, वहां शराब छट गया, परिवार का कलह दूर हो गया । अब रोजगार का सारा धन खाने में और घर की आवश्यकताओं में खर्च होने लगा है। स्त्रियां काफी सुखी प्रतीत होती थीं ।

इस क्षेत्र में सच्ची क्रान्ति हो चुकी है । यहां के लोग मांसाहार छोड़कर शुद्ध शाकाहारी बन गये हैं । मेहनत करते हैं । नवकार मन्त्र का जाप और भगवान महावीर के सिद्धान्तों का नित्य अभ्यास करते हैं ।

मैंने वहां अनेक धर्मपाल भाईयों से बातचीत की । एक भाई से पूछा कि आप लोगों ने यह कैसे ग्रहण किया ?

उसने व अन्य उपस्थित धर्मपालों ने बताया कि हमारे यहां नवकार मन्त्र के जाप से संकट मिट जाते हैं । महावीर के ध्यान से भय और बीमारी भाग जाती है ।

धर्मपाल नाम से प्रसिद्ध इन लोगों के मन में कितना विश्वास हो गया था। ये हम जैनियों से भी अधिक शुद्धाचारी हो रहे थे । एक परिवार में हम लोगों के भोजन का प्रबन्ध था । सचमुच देखा कि कितने प्रेम से वे भोजन बना रहे थे । उस प्रेम का आहार सचमुच कितना स्वादिष्ट लगा था ।

काश ! हमारे और साधु-मुनिराज भी इसी तरह के कार्य करें तो संसार का कल्याण हो जावे । जैन साधु पदाचारी हैं । गांव गांव से पैदल विहार करते हैं, परन्तु अजैन जनता के गहरे सम्पर्क में नहीं आते । इससे उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ।

प्रायः जैन सन्तों के साथ गाड़ी वाले लोग चलते हैं और समाज के लोग इन्हें घेरे रहते हैं । उनके निमित्त कितना खर्च होता है ? यह आचरण कब बदलेगा ?

हम देखना चाहते हैं कि जैन साधु आज के युग में युगोपयोगी क्रान्ति की शक्तिशाली नींव रोपन करें ? हम कूपमंडूक होकर लकीर के फकीर नहीं रहना चाहते । अगर इस विचार और ध्येय से कार्य करें तो सच्ची धर्मसाधना और मानव कल्याण के धर्मपाल प्रवृति जैसे कार्य सम्पन्न हो सकेंगे ।

पहला-पहला अनुभव

• श्री सरदारमल जी ढ़ढ़ा, जयपुर

मैं जीवन साधना, संस्कार-निर्माण एवं धर्मजागरण पदयात्रा में पहली दफा ही सम्मिलित हुआ और पहली बार में ही वहुत प्रभावित हुआ । जव तक यात्रा प्रारम्भ नहीं हुई थी, मैं सोचता जा रहा था कि पैदल कैसे चलते हैं ? यात्रा शुरू होते ही भय भंग हो गया, पता ही नहीं चला और हम चलते रहे । गांव के लोगों का ढोल और रेशमी सूती मालाएं लिए स्वागत के लिए मिलना, कितना सुहावना लगता था । आज भी मेरी निगाहों के सामने वह चित्र है जीवित जागृत ।

इस यात्रा में साधना का आयोजन ऐसा सुन्दर व रोचक था कि मेरी यह भावना वनी कि घर पर भी एकान्त स्थान में वैठकर आत्मा का अवलोकन और स्वाध्याय क्रम जारी रखू । अव सामायिक आदि में विशेप आनन्द आने लगा है ।

यात्रा काल में सावना के समय ऐसा लगता था जैसे समोशरण की रचना हो रही है । भाई श्री भंवरलाल जी कोठारी का योग सावना क्रम, भाई श्री मोहनलाल जी मूथा का उतराध्ययन—सूत्र वांचन तथा विद्वान पंडितों के सरल भाषा में भाषण हमारे लिए नई-नई जिज्ञासाएं पैदा करते थे ।

भाई श्री गुमानमल जीं के नेतृत्व में अनुशासन सीखा । सभी पदयात्रियों के प्रेम और सरल जीवन की याद हमेशा वनी रहेगी । प्रायश्चित लेने का कार्यक्रम तो भुलाये नहीं भुलेगा । ०

आत्मानुशासन और अन्त्योदय

● श्री कृष्णराज मेहता, वाराणसी

आत्महितेरत: और लोकहितेरत: गहराई से देखने पर दोनों अभिन्न हैं और ऊपर से दोनों भिन्न हैं। पदयात्रायें प्रधानतया दो प्रकार की होती हैं—एक आत्महित, दूसरी लोकहित। अधिकांश साधु-साध्वी, संत-सन्यासी की पदयात्रा आत्महित की होती है और उनका उद्देश्य आत्मदर्शन प्राप्त करना होता है तथा सेवकों, शिक्षकों साधकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की पदयात्रायें लोकहित के लिये होती है और उनका उद्देश्य लोकदर्शन होता है परन्तु यह धर्म-जागरण पदयात्रा आत्महित और लोकहित दोनों के सम्मिलित उद्देश्य से हुई थी।

स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री नानालालजी महाराज के प्रेरणापरक उद्बोधनों से ता० २२ से २८ मार्च तक जावरा से रतलाम के ग्रामीण क्षेत्रों में यह धर्म-जागरण-पदयात्रा हुई। इस यात्रा में करीब १५० श्रावक-श्राविकाओं ने उपासना और धर्मपाल प्रवृत्ति को गति देने के लिये सामूहिक प्रयास किया। उपासना तथा स्वाध्याय के साथ मद्य-मांस-मुक्ति, व्यसन त्याग, रोगियों की सेवा और धर्म-जागरण का शिक्षण इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य था। इस पदयात्रा में पदयात्री भाई-वहन भारत के कोने कोने से आये थे। भारत की चारों दिशाओं से मध्य प्रदेश में एकत्रित हुए ये पदयात्री भारतीय एकात्मकता का परिचय देते थे।

धर्मपाल प्रवृत्ति में वलाई तथा अन्य जाति के भाई-बहन और वच्चे मद्य-मांस-मुक्ति का ग्रामसभा में सामूहिक संकल्प लेते थे और संघ अध्यक्ष श्री गुमानमलजी चोरड़िया उन्हें इसके लिये प्रतिज्ञा-वद्ध करते थे। इस प्रकार एक सप्ताह में लगभग ७०० व्यक्तियों मद्य-मांस-परित्याग का संकल्प लिया। ५० महिलाओं ने दहे

लेने-देने का संकल्प लिया । पदयात्री दल के साथ एक चल-चिकित्सालय इंदोर के प्रतिष्ठित डा० बोरदियाजी के मार्गदर्शन में चलता था। उसमें करीब १००० व्यक्तियों का निःशुल्क इलाज हुआ । डा० बोरदियाजी के ज्ञान और संवेदनाशील व्यक्तित्व से ग्रामीणों तथा पदयात्रियों पर उनकी अमिट छाप पड़ी ।

धर्मपाल लोगों के गरीब बच्चों में साक्षरता का प्रचार, संस्कार निर्माण और वस्त्रवितरण आदि की ओर श्री मानवमुनि उत्कटता से ध्यान देते थे और आवश्यक संयोजन करवाते थे ।

ज्यों ज्यों पदयात्रा आगे बढ़ती जाती थी, सहजीवन में पारिवारिकता, हार्दिकता और आत्मीयता बढ़ती जाती थी । दिन में सुबह-शाम दो बार पदयात्रा होती थी और दोनों गांवों में आम सभायें होती थी । जिन जिन गांवों में पदयात्रा पहुंचती थी, गांवों मैं सामूहिक धूम-धाम से उसका स्वागत होता था तथा नारों और गानों से वातावरण-जागृत हो जाता था । जो धर्मपाल बनते थे, उनके साथ समव्यवहार और एक पंक्ति में आहार शुरु हो जाता था । इससे धर्मपाल परिवारों में एक नया उत्साह पैदा होता था उनमें से भी कई भाई-बहन पदयात्रा में साथ थे और गांव गांव में स्वागत व्यवस्था आदि में सहयोग करते थे ।

इस प्रवृत्ति का बलाई जाति के करीब ७०-८० हजार लोगों में अब तक प्रवेश हुआ है । अब उनके शिक्षण, सस्कार, व्यवहार आदि की उन्नति का भी चिंतन और संयोजन हो रहा है । आत्मानुशासन और अन्त्योदय की दृष्टि से स्वाध्यायी साधकों और उपासकों की यह पदयात्रा आकर्षक रही ।
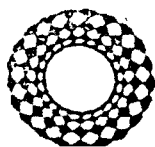
अनुपम आनन्दानुभूति

○ श्री अशोक नवलखा

(वर्तमान में मधुर-व्याख्यानी, तरूण तपस्वी
श्री अशोक मुनि जी म. सा.)

धर्मपाल के हो उद्धारक ;
सुरेन्द्र पूज्य शासनेश ;
हे दीनबन्धु ! समत्व सिन्धु ;
वन्दन कोटि–कोटि नानेश ।।

स्वाध्याय, साधना, शिक्षण-प्रधान पावन पवित्र धर्मपाल पदयात्रा जनमानस पर एक प्रभावी असर डालने में समर्थ हुई । इसमें अतिशयोक्ति नहीं, अपितु वास्तविकता है । मैं भी उस सुनहले अवसर पर उपस्थित रहा । यह मेरा परम सौभाग्य था ।

आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की आध्यात्मिक प्रेरणा से कुसंस्कारों की शिकार बनी हुई घृणास्पद मालव बलाई जाति आज सुसंस्कारित एव सदाचार की प्रतीक बन गई है । उस जाति के नन्हें–मुन्ने बच्चों से लेकर वृद्धों तक में असीम उत्साह, नई उमंग, अनुपम श्रद्धा एवं अद्‌भुत धर्म भावना है, जिसकी अनुभूति मुझे पद–यात्रा के समय हुई । पदयात्रा के समय उनके सरल, सादगीमय धर्म-निष्ठ जीवन की एक अमिट छाप मेरे मानस पर पड़ी और वह मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना बन गई ।

उदाहरण के लिये एक बार धर्म-जागरण पदयात्रा का चक्र किसी ग्राम में प्रवेश कर रहा था । तभी एक गाड़ी में जुते हुए बैल

युगल विक्षप्त चित्त, अहोस्वित, बिगड़े हुए, क्रोधावेश में उछलते हुए वेग से दौड़ते रंभाते पद-यात्रियों के समीप आये। पदयात्री घबराये नहीं। परिणाम हुआ बैल शांत हो गये। कारण यही था कि निवृत्ति-प्रधान जीवन से अलंकृत पवित्र परमाणुओं ने औषधि-मन्त्र या जादुइ असर किया। यह पदयात्रा की आध्यात्मिक शक्ति की देन थी। ०

卐

सेवा और आध्यात्मिकता का संगम

● श्री रिखबराज कर्णावट, जोधपुर

मुझे भाई श्री कोठारी जी ने जावरा से रतलाम धर्मपाल क्षेत्रों में होने वाली पदयात्रा में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया। मुझे भारत जैन महामण्डल के अधिवेशन में हैदराबाद जाना पड़ा जिससे मैं प्रारम्भ में पदयात्रा में सम्मिलित नहीं हो सका किन्तु तीन दिन पदयात्रा में साथ रहा। पदयात्रा का कार्यक्रम सेवा व आध्यात्मिकता से इतना जुड़ा हुआ था कि जीवन आत्म-साधना की ओर अग्रसर हो सके। सभी पदयात्रियों से कुछ न कुछ प्रेरणा जरूर मिलती थी। आध्यात्मिक विषयों पर भाषण व चर्चायें तथा सार्वजनिक सभाओं में मद्य-मांस निषेध के सम्बन्ध में उपयोगी भाषण उस ग्राम में किये गये सफल प्रयासों का विवरण भी बड़ा दिलचस्प रहता था। एक सप्ताह की इस पदयात्रा में पदयात्री एक नये वातावरण में रहे। इस पदयात्रा में सेठ-सेठानियों की संख्या काफी तादाद में थी। उन्हें भी नियन्त्रित व सादा जीवन जीने कला का अभ्यास हुआ। यात्रा के नये परिवर्तित वातावरण में

आनन्द उनको आया, वह तो उनके लेखों या संस्मरणों में प्रकट होगा ।

मुझे लगा ऐसी पदयात्राओं का आयोजन अन्य संस्थाओं व संघों को भी करना चाहिए । मन्दिरमार्गी समाज में सघ निकालने की परिपाटी है । वैसे एकाध संघ में सम्मिलित होने का मौका मुझे भी मिला है । धर्मध्यान का वातावरण तो वहां भी रहता है किन्तु सार्वजनिक सम्पर्क व जनहित के कार्यों का अभी उनमें समावेश नहीं के बराबर है । आचार्यों को उस पर विचार करना चाहिए ।

इस पदयात्रा की सफलता का बहुत बड़ा श्रेय त्यागमूर्ति संघ-अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरड़िया को है जिनके नेतृत्व में यह पदयात्रा आयोजित हुई । श्री कोठारी जी का परिश्रम व व्यवस्था शक्ति भी उल्लेखनीय है । ०
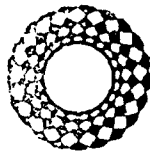
आत्मसाधना का अनुकरणीय आयोजन !

● श्री प्रतापचन्द पालावत, जयपुर

यात्रा स्वयं में ज्ञान की एक खुली पुस्तक होती है और यह तो समता साधना की यात्रा थी और वह भी पदयात्रा । रा में यात्रा प्रारम्भ की पूर्व संध्या में हुई जनसभा से ऐसा ास हुआ था कि यह एक ग्रामीण जन-सम्पर्क यात्रा रहेगी, ् यात्रा समापन पर मैं यह कहने की मन:स्थिति में हूं कि यह

एक सफल आत्मार्थिक, पारमार्थिक एवं सामाजिक सम्पर्क यात्रा थी इस यात्रा की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसका रूप दिन-ब-दिन निखरता ही गया। यात्रार्थियों में हर आने वाला पड़ाव, प्रत्येक अगला दिन एक नई स्फर्ति व उत्साह जागृत करता था। यात्रा में सम्मिलित साथियों में आपसी स्नेह एवं सौहार्द शनैः शनैः यात्रा समापन तक परिवारिक आत्मीयता तक पहुंच गया था। विद्वानों के ओजस्वी एवं सारगर्भित व्याख्यान जीवन के लिये काफी प्रेरणा-दायक थे।

जिन ग्रामवासियों के मध्य हम सब यात्रीगण रहे, उनका सरल व सौम्य व्यवहार, अपनी कुरीतियों अथवा गल्तियों को समझने की चेष्टा, मानने की उदारता एवं उन्हें दूर करने की दृढ़ निष्ठा, हम सबके लिये भी एक मूक प्रेरणा थी।

सप्त दिवसीय सारे कार्यक्रम निश्चित समयानुसार क्रम-वद्धता के साथ जिस सहज भाव से चल रहे उसके लिये संयोजक एवं व्यवस्था समिति के सदस्यगण भूरि भूरि प्रशंसा के अधिकारी हैं। व्यवस्था में कहीं भी किसी भी वस्तु की कमी न आना उनके अथक परिश्रम का ही परिणाम था।

संघ का यह निर्णय कि इस प्रकार के आयोजन भविष्य में भी बराबर होते रहेंगे, अत्यन्त प्रसन्नतादायक है। ०

पदयात्रा का स्वाद: जो चलता है, वह चखता है !

● श्री चम्पालाल पिरोदिया, रतलाम

मुझे पदयात्रा करने का मौका सन् १९५४ से आज तक बराबर मिल रहा है। पहले विनोबा, जयबाबू आदि महापुरुषों के साथ ग्रामदान, ग्राम स्वराज्य, गरीबी कैसे मिटे, जैसे आन्दोलनों में भाग लिया। घर-घर में सुख का राज और परिवार में प्रेम कैसे बढ़े, इसके प्रयोग किये और सफलता मिली।

बारह वर्ष पूर्व पूज्यश्री के साथ गुराड़िया गांव में धर्मपाल प्रवृत्ति की शुरुआत हुई। मुझे यह प्रवृत्ति बहुत अच्छी लगी। मानव उत्थान और सच्चरित्रता की नींव डालने का यह काम कितना अच्छा है। तभी मुझे ऐसा लगा कि पर्युषण तो इन्हीं लोगों के बीच रह कर करना चाहिए ताकि इनके संस्कार मजबूत बनें। नेत्र-शिविरों में व राष्ट्रीय पदयात्राओं में भी हम जाते हैं। उनमें भी संस्कार-निर्माण व दुर्व्यसन-मुक्ति की प्रेरणा दी जाती है।

सरकार कानून बदल सकती है, डण्डे के बल पर उसका पालन करा सकती है पर संस्कारों के निर्माण का काम तो संस्कारी समाज ही कर सकता है। इसी विचार से हमने धर्म-जागरण पदयात्राओं में जाने के लिए कदम बढ़ाये।

धर्म-जागरण पदयात्रा में दोनों ही बार मुझे काम करने का मौका मिला। कई नये लोगों से सम्पर्क हुआ। कई विचार सीखने को मिले और प्रेम का वातावरण बढ़ा। कई नये मित्र बने। हम दोनों पति-पत्नी को इन धर्मपालों के बीच जाने में प्रेम और प्यार मिलता है और खुद को आनन्द आता है।

समतादर्शन का प्रत्यक्ष अनुभव

● श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, जयपुर

धर्म-प्रेमी, साधनारत श्रीयुत् गुमानमल जी सा. चोरड़िया, की प्रेरणा से मुझे पदयात्रा में तीन दिन भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जयपुर छोड़ते ही मार्ग में श्रीमान् चोरड़िया जी के संग में ऐसा अनुभव हुआ कि हम लोग विषय-कषाय व भौतिक चकाचौंध के अत्यंत सघन तनावमय वातावरण से निकल कर समता व शांतिमय वातावरण में हर कदम आगे बढ़े जा रहे हैं।

शिविर में पहुंचते ही ऐसा अनुभव हुआ कि हम जैन धर्म उल्लिखित समता-दर्शन का यहां प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। यहां पर श्री श्रीचंद जी सा. गोलछा, श्री सरदारमल जी सा. कांकरिया, पद्मश्री डा. नंदलाल जी बोरदिया, श्री अगरचंद जी नाहटा, श्री मोहनलाल जी मूथा, श्री भंवरलाल जी कोठारी आदि महानुभाव अपने क्षेत्र के ख्यातिप्राप्त वैभव सम्पन्न तत्त्वचिंतक, लेखक, आदि विद्यमान थे और इन्हीं के बीच में धर्मपाल बंधु। इन सब में परस्पर जैसा गहरा आत्मीय भाव व धर्म-वात्सल्य भाव नजर आ रहा था, उससे ऐसा लग रहा था मानो सब किसी एक ही बड़े परिवार के सदस्य हैं।

भगवान् महावीर के संघ-शासन में सब समान हैं। यहां जाति, कुल, वर्ण, धन आदि से धर्म के क्षेत्र में कोई छोटा-बड़ा ऊंच-नीच नहीं होता है। यह सर्वांगीण-साम्यवाद (समता-दर्शन) का दृश्य इस शिविर में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा था। सभी धर्मपाल बंधु अपने को बड़े सौभाग्यशाली, प्रसन्न व गरिमामय अनुभव कर रहे थे। 'धर्मपाल बंधुओं के जीवन का सर्वांगीण विकास हो' यह भावना इस शिविर में साकार रूप ले रही थी। धर्मपालों के इस बहुमुखी

विकास को देखकर शेष लोगों में भी धर्मपाल बनकर अपना मानव-जीवन सफल करने की प्रेरणा जग रही थी ।

प्रातःकाल ४ बजे से रात्रि के १० बजे तक यम-नियम-मय नियमित जीवन, अनुशासन-प्रियता, इन्द्रिय-निग्रह, त्याग-तप आदि सभी धार्मिक प्रवृतियां अति ही प्रशंसनीय थी । धर्म श्रद्धा, स्वाध्याय, ध्यान, व्रत-प्रत्याख्यान रूप ज्ञान दर्शन चारित्र की त्रिवेणी अजस्र बह रही थी । शिविर की सफलता में श्री भंवरलाल जी कोठारी का योगदान अति महत्त्वपूर्ण था भविष्य में भी शिविर की यह प्रवृत्ति प्रगति पथ पर बराबर आगे बढ़ती रहे, यही शुभ भावना है । ★

पदयात्रा में स्वाध्याय-क्रम

● श्री मोहनलाल मूथा, जयपुर

मेरी इस दूसरी पदयात्रा में स्वाध्याय क्रम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा । पदयात्रा में हम दोपहर २।। बजे से ४।। बजे तक स्वाध्याय करते । सभी पदयात्री सामायिक लेकर बैठते थे । 'उत्तराध्ययन–सूत्र' का वाचन होता था । इस सूत्र की शुरुआत विनय से होती है । विनय यानि शिष्टाचार । गुरुजनों का अनुशासन जीवन में कितना निर्माणकारी है, यह प्रथम अध्ययन में ही मालूम हो जाता है । कैसे बोलना, कैसे बैठना, कैसे सीखना-समझना इत्यादि छोटी-छोटी बातों की भी उसमें काफी गम्भीरता के साथ चर्चा की गई है । आज जो हम राग द्वेष, कलह और द्वन्द्व परिवार में समाज में और राष्ट्र में देख रहे हैं उन्हें यदि मिटाना है तो उतराध्ययन–सूत्र के प्रथम अध्ययन की ३-४ गाथाएं ही निष्ठा के साथ जीवन में उतार लें ।

श्रीमान् भंवरलाल जी कोठारी 'उतराध्ययन–सूत्र' सुनकर गम्भीरता से उस पर विचार करते और अपनी अमूल्य वाणी उसका विश्लेपण करते । उनकी मधुर वाणी से सभी यात्री भाव-विभोर हो जाते ।

आता है तो आने दो, जाता है तो जाने दो।

● श्री चम्पालाल डागा, गंगाशहर

पिछली पदयात्रा के संस्मरण सुनकर, पढ़कर तथा श्री कोठारी जी के आग्रह के कारण मैं भी इस पद यात्रा में सम्मिलित हुआ। हम कुल १३१ पदयात्री थे तथा लगभग इतने ही मेहमान, धर्मपाल बन्धु व स्वयंसेवक आदि मिलाकर थे। पदयात्रा के दौरान मुझे मालूम ही न पड़ा कि ७ दिन कैसे व्यतीत हो गये। कार्यक्रम का निर्धारण इस ढंग से किया गया था कि पांच मिनट का समय भी बेकार नहीं जाता था। इस दौरान जगह-जगह के सैकड़ों धर्मपाल बन्धुओं से मिलना हुआ, उनसे प्रेरणा मिली और मिला ग्राम्य जीवन को नजदीक से देखने का मौका। इसके अलावा जीवन को साधने का भी अवसर मिला। प्रार्थना, सामायिक, स्वाध्याय व प्रतिक्रमण में एक विशेष आनन्द का आभास होता था। पैदल यात्रा करने के कारण रात्रि में इतनी मीठी नींद आती थी कि भोर आभास भी श्री मानव मुनि के भजन "उठ जाग मुसाफिर भोर भई" के कारण होता था।

सबसे ज्यादा मैं प्रभावित हुआ आदरणीय श्री अगरचन्द जी सा. नाहटा के एक पद से कि "आता है तो आने दो, जाता है तो जाने दो, होता है सो होने दो" इस वाक्य से मेरे समान सभी पदयात्री प्रभावित हुए।

यात्रा की अन्तिम रात्रि में प्रतिक्रमण के पश्चात् सब पदयात्रियों ने क्रमशः खड़े होकर, यात्रा के दौरान अपनी होने वाली गल्तियों की श्रीमान् अध्यक्ष महोदय, श्री चोरड़िया के समक्ष आलोचना की व प्रायश्चित लिया। वह दृश्य देखने योग्य था। ★

पदयात्रा : कल्याणकारी व सुधारवादी

● श्री मनोहरसिंह चौहान, पलसौड़ा

जीवन तथा धर्म की प्रक्रिया में इस प्रकार की पदयात्रा सामाजिक दशा को सुव्यवस्थित करने का एक बड़ा उपयोगी साधन है। श्री अ. भा. साधुमार्गी जैनसंघ द्वारा इस युग में जन साधारण में सुधार एवं समता-भाव लाने हेतु जो विशिष्ट मार्ग अपनाया गया है, उससे हम विशेषतः प्रभावित हुए हैं। यह पदयात्रा विशेष कर दलित वर्ग के हित में काफी कल्याणकारी व सुधारवादी सिद्ध हुई है। चूंकि भावों और विचारों के आदान-प्रदान का यह सबसे सरल एवं समर्थ माध्यम है, इससे समस्त धर्मावलम्बियों ने अभीष्ट धर्मोपदेशों को ग्रहण करने के साथ-साथ एक विशेष प्रकार के आह्लाद का भी अनुभव किया। श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ के निर्देशन में यह आयोजन भविष्य में और अधिक सफलता प्राप्त करे, ऐसी हार्दिक कामना करता हूं। ★

शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ

● श्री समीरमल कर्णावट, रतलाम

इस तरह की पदयात्रा का आयोजन अपने आप में ही बहुत ही स्तुत्य है क्योंकि इस में ग्राम्य जीवन की झांकी काफी नजदीक से देखने को मिल जाती है। इसमें परमार्थ, संयम, स्वास्थ्य भी अपने आप सध जाता है। निश्चित ही ऐसे आयोजन काफी कष्टसाध्य होते हैं परन्तु इनसे समाज को भी देखने का अवसर मिलता है। हमारे अपने समाज (जैन समाज) की अनेकों विभूतियों के दर्शन, विचार व आचार देखने को मिल जाते हैं। हमारी अपनी माताओं, बहिनों व बच्चियों को बाहरी वायुमण्डल का अनुभव होता है, इससे निश्चित रूप से ग्रामीण लोगों, धर्मपाल लोगों पर अच्छी छाप पड़ती है। संक्षेप में इस प्रकार के आयोजनों से शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक सभी प्रकार से बहुत लाभ मिलते हैं। ★
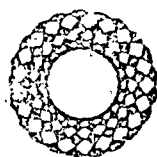
धर्मरूचि वृद्धि

● श्रीमती सुशीला पालावत, जयपुर

मैंने यात्रा में देखा कि धर्मपाल भाइयों व बहनों में प्रेम और आदर की भावना काफी है। जब हम एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव पर पहुंचते थे तो वे बहनें थालों में कुमकुम लेकर खड़ी हो जाती थीं और स्वागत–गीत गाने लग जाती थीं। उनके कंठ बहुत

ही कोमल और मधुर थे । जब वे लोग भजन गाते थे तो ऐसी इच्छा होती थी कि ये गाते ही जायं।

एक दो बार ग्रामीण भाइयों व बहनों के घर जाने का मौका मिला। जब हम लोग किसी भी भाई के यहां जाते तो सभी धर्मपाल भाई और बहिनें आ जातीं। उस समय हम लोग उन से धर्म चर्चा करते थे। कई छोटे बच्चों से नवकार मन्त्र व गुरु वंदना का पाठ सुना तो शुद्ध उच्चारण से सुनाते थे। उन्हीं घरों में एक प्रसंग आया तो एक धर्मपाल बहिन ने कहा कि इन दोनों सास-बहू में रोज झगड़ा होता है, उन्हें आप समझाइये। लेकिन उस समय सास व बहू के मन में कोई अहम् या लड़ाई के भाव उनके चेहरे से प्रगट नहीं हो रहे थे। इससे मैंने यह महसूस किया कि धर्मपाल बहिनों के अन्दर विनय और सहनशीलता है। इनसे ये गुण अपने को भी सीखने चाहिये। धर्म में रूचि लेकर ज्ञान बढाना चाहिये।

इस तरह से छह दिन खुशी से निकल गये लेकिन जैसे ही यात्रा समाप्त होने को आई तो मन में दुःख होने लगा कि इन सब आत्मीय लोगों से बिछुड़ जायेंगे।

★
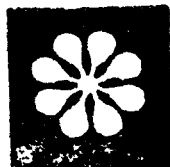
कर्म - सन्देश की प्रबल संवाहक यात्रा

● श्री जवाहरलाल मुणत

अध्यक्ष—श्री श्वेताबंर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस

मैं पदयात्रा के अन्तिम दिन केवल एक दिन ही इस साधना की लीला-भूमि में प्रवेश कर पाया और इससे पहिले इच्छा होकर भी जा न पाया था। केवल एक दिन की पदयात्रा ने ही मुझे चिन्तन, मर्मस्पर्शी जीवन मुल्यों से निकटतम परिचय और अपने परिवेश को नई नजरों से देखने का नितान्त नयापन दे डाला। काश, मैं इससे पहले भी आ सका होता या इसी यात्रा में अधिक दिन पड़ाव डाल सकता।

गतानुगति और आदत की जड़ता को, न तो कोई किताब चलित कर पायेगी और ना ही कोई बाहरी उपादान। इस जड़ता को स्वयं अपना कर्म ही तोड़ने में समर्थ है। पदयात्रा इसी बुनियादी सन्देश की प्रबल संवाहक है—आप न तो किसी दूसरे से आपकी पद-यात्रा करवा सकते हैं, न ही इस यात्रा के अनुभवों को दूसरे के माध्यम से जी सकते हैं। स्वयं अपनों को ही नहीं, अपने आपको जानने पहिचानने के लिए यह सबसे अधिक सरल और सिद्धिदायक रसायन है।

★

पाका हांडै गार नीं लागै पर लाख तो लागे

● श्रीमती प्रेमलता जैन, अजमेर

यात्री-दल खाचरौद से रवाना होकर ग्राम चौकी पहुंचा और अपने निश्चित कार्यक्रम के उपरांत मैं जन-सम्पर्क हेतु गांव में जाने लगी तो कई धर्मपाल भाइयों ने हमें गांव में जाने से रोका। उनके रोकने से मेरे मन में गांव निवासियों से सम्पर्क करने की भावना और अधिक तीव्र हो गई।

भाइयों के मना करने पर भी मैं टेंट के पीछे से गांव के घरों में जा पहुंची। मैं उसी घर में पहुंची, जहां हमारे पहुंचने के एक घण्टे पूर्व ही एक ४२ वर्षीय भाई की मृत्यु हुई थी।

घर में जाकर मैंने जो दृश्य देखा तो दंग रह गई घर के सारे प्राणी पदयात्रियों के स्वागत-सत्कार एवं उनके साथ ज्ञानचर्चा हेतु गए हुए हैं। केवल मृतक की पत्नी एवं वहिन ही घर में शांत-मुद्रा में वैठी थी।

उन वहनों के सामने जाते ही मैं आत्मविभोर हो गई। मेरे पास उन्हें सांत्वना देने के शब्द भी नहीं रहे। लेकिन उन वहनों ने मुझे कहा—वहिनजी, यह दुख तो जव तक हम जीवित हैं, हमें रहेगा ही, लेकिन हमारे गांव में जो धर्म-गंगा आई है, उसमें हम पहले गोता लगा लें तो हमें कुछ ज्ञान हो जायेगा। यदि हम रोने धोने वैठेंगे तो हम इस लाभ से वंचित रह जायेंगे।

देखिए, वे निरक्षर जन कितने वुद्धिमान हैं! कितनी सहन-

शीलता कितना धैर्य है उनमें ! आश्चर्य ! अति आश्चर्य !

इतनी सहनशीलता का एक अनूठा उदाहरण मैंने पहली दफा देखा । इससे मुझे बहुत प्रेरणा मिली ।

एक दिन पदयात्री संध्या समय ग्राम बंडवा पहुंचे । जन-सम्पर्क का कार्य चल रहा था । धर्मपाल माता यशोदा जी बहनों को कुछ सीखने को कह रही थी । उस समय एक भाई ने कहा—"अब कांई पाका हांडै गार लागै ?" उस भाई की बात सुनकर पास बैठी धर्मपाल बहिन निम्माबाई ने तत्काल उपर्युक्त दलील का खण्डन करते हुए कहा— "दादा, पाका हांडै गार नीं लागै पर लाख तो लागै ।" यानि मिट्टी का घड़ा पक जाता है, फिर उस पर कच्ची मिट्टी नहीं ठहरती है । यह तो सच है, पर उस पर लाख तो लग जाती है, अर्थात् वह कहना चाहती थी कि हम लोग उम्र में बड़ी हो गई तो क्या हुआ, हमारे अंदर लगन है तो हम अब भी बहुत कुछ सीख सकती हैं ।

धर्मपाल बहिन के ये शब्द मुझे आज भी जीवन पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं । ★

"यात्रा जो मेरे लिए प्रकाश-स्तम्भ बन गई"

● श्री मांगीलाल धोका, मद्रास

⊙

मुझे इस पदयात्रा में सबसे ज्यादा जो आनन्द मिला है, वह अपने धर्मपाल बन्धुओं के साथ घुलमिल कर अपनेपन को भूल जाना

ही एक मात्र है। क्या उनकी भावना, क्या उनके विचार, क्या उन की खूबियां, क्या उनकी सादगी, क्या उनके खान-पान के तौर-तरीके, क्या उनकी आत्मीयता से निकली आवाज, क्या उनका अति-शय प्रेम, इन सभी ने जिस महान तत्व का दर्शन मुझे दिया, उसका वर्णन निःसंदेह मेरी लेखनी से परे है। सचमुच उसने मुझे कृतार्थ बना दिया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों मैं आध्यात्मिक सागर की गहराई में गोते लगा रहा हूं।

इसके साथ ही संघ-प्रमुखों और उपर्युक्त प्रवृत्ति के संचालकों के आदर्श जीवन को देखकर मेरे मन में यही अभिलाषा जागती है कि इन महान् आत्माओं की कर्त्तव्य-निष्ठा और अनुशासनी बातें सदा मेरे जीवन को आदर्श बनाती रहे और मैं उन आदर्शों के पालन में अपने आपको भूल जाऊं।
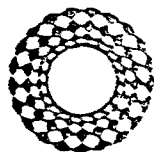
"आत्मानंद की अनुभूति"

● श्री चुन्नीलाल ललवाणी, जयपुर

स्वास्थ्य संघ के सदस्य के रूप में मुझे ८ दिन पर्युषण में जैतारण वेतुल, सवाई-माधोपुर, मावलय, मद्रास में सेवा देने का मौका मिला। उसमें सुबह प्रार्थना, शास्त्रवाचन तथा दोपहर में चौपाई, शाम को सामायिक प्रतिक्रमण आदि क्रिया करते हुए हरी सब्जी व कच्चे पानी के त्याग तथा पौषध व्रत के साथ रहने में जो आनन्द आता है, उसकी मैंने अनुभूति की है। इसी प्रकार इस यात्रा में भी अध्यक्ष महोदय के अनुशासन में सभी भाई-बहिनों को सुबह सामायिक, दोपहर में स्वाध्याय के साथ दो सामायिक तथा

शाम को प्रतिक्रमण करके रात्रि को धर्मपालों के साथ चर्चा व भजन-गायन करके भी आत्मानन्द की उपलब्धि हुई, जिसकी मस्ती मैं आज भी अनुभव कर रहा हूं।

मुझे आचार्य श्री श्री १००८ श्री नानालाल जी म. सा. के व्याख्यान में एक बार फरमाये गये शब्दों की "कि अगर समाज के प्रबुद्ध वर्ग के ८५ भाई-बहिन धर्म-जागरण करने में अपने जीवन का योग देवें तो जैन धर्म सारे देश में फैल सकता हैं" इस पदयात्रा में साक्षात् अनुभूति हुई। इस कार्यक्रम से श्री जवाहरलाल जी म. सा. 'वीर-संघ' की योजना भी इसी वर्ष सफल होती नजर आ रही है। ये ही भाई-बहिन 'वीर-संघ' के सदस्य बन सकते हैं।

इस यात्रा से मुझे यह अनुभव हुआ कि हमें वही बात कहनी चाहिये जो हम अपने जीवन में उतार सकें। पदयात्रा के दौरान प्रेम और भाईचारे का ऐसा वातावरण था जैसे कि हम एक ही परिवार के सदस्य हैं। यह उस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि है। मुझे ऐसा लगा है कि यह यात्रा सामायिक और स्वाध्याय प्रचार का चलता-फिरता मिशनरी का कार्य है। ०
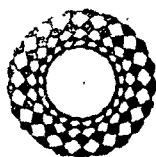
निराले अनुभव

● श्री शांतिलाल धनराज मूणत, रतलाम

धर्मपाल-परिवारों में मैंने पाया कि उनका कठोर श्रम की ओर विशेष झुकाव है। रात्रि को प्रवासी-दल जब सो जाता तो गांवों के श्रमिक धर्मपाल, जो दिन भर मजदूरी करके आते एवं कल पुनः

मजदूरी पर जाने वाले होते, फिर भी वे लोग हमारे सामान की निगरानी करके प्रफुल्लित हृदय पाये जाते। प्रवास में हम जहां भी गये, वहां उन्होंने हमारा भाव-भीना स्वागत किया एवं प्रेमरस बहाया।

शिविर-जीवन की तरह सभी पदयात्री रहा करते थे फिर भी लोगों में कोई झुंझलाहट नहीं, उनके मुखमण्डल पर अपूर्व प्रसन्नता रहती।

आजादी के वाद श्रम या कार्य की पूजा का महत्व देश में लोप होता जा रहा है। ऐसे युग में जब सामायिक तो दूर रही, १५ मीनिट एकांत बैठ कर आत्मचिन्तन या प्रभु स्मरण नहीं कर सकने वाले लोग, शिविर में प्रातः १-२ सामायिक, मध्यान्तर २ एव सायं १-२ सामायिक करने वैठने लगे तो यह आत्मोत्थान की दिशा में महान् क्रान्तिकारी कदम था। जिसे शासन हजारों दण्डों या कानून के वल पर नहीं करा सकता, वह सहज संभव हो गया।

वहां के लोगों का जीवन-परिवर्तन एवं विचार जानकर तो दंग रह गया। हृदय में भावना वनी कि यदि समय एव सम्पत्ति का सही विनियोग करने की कभी इच्छा पैदा हो जाए तो धर्मपाल क्षेत्रों में ही लगना चाहिए। धर्मपाल क्षेत्र के हृदयों की धरती इतनी उपजाऊ लगी कि वहां पर डाला धर्मरूपी दाना वगैर खाद के भी फूलता एवं काफी वृद्धिगत होने जैसा लगा। ०

सोने में सुगन्ध

● श्री फूलचन्द बया, छोटीसादड़ी

ता० १-४-७५ को श्री कोठारी जी, श्री चोरड़िया जी तथा अन्य गणमान्य महानुभावों का जीप कार द्वारा सायं ८ बजे करीव छोटी सादड़ी पधारना हुआ। मुझे बुलाया एवं पदयात्रा में शरीक होने के लिए साथ ही हो लेने को कहा। मैं सहर्ष तैयार हो गया।

ता० २-४-७५ प्रातः प्रारम्भ होने वाली पदयात्रा में हम सभी शरीक हो गये। वहां पदयात्रा में शरीक होते ही मन में एक स्मृति फिर तरोताजा हो उठी। मुझे गांधी जी एवं विनोबा जी के साथ रहने का शुभ अवसर मिला है। गांधी जी एवं विनोबा जी की पदयात्राएं चिरस्मरणीय हैं। उसी तरह मेरी पदयात्रा भी सदैव के लिए चिरस्मरणीय बन गई।

पदयात्रा में अनेकों धर्मप्रेमी भाई-बहनों से मिलना हुआ। स्नेह, प्यार, प्रेम की गंगा हिलोरे लेने लगी।

अनेक व्यक्तियों या जन समूह से नाता जोड़ उन्हें सन्मार्ग पर ला खड़ा करना एक बहुत बड़ा जनकल्याण कार्य है। आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के सद् उपदेशों ने आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाया और इस पदयात्रा ने तो सोने में सुगन्ध ही भर दी।

जहां-जहां भी हमारा यह काफिला गया, वहां का व्यक्ति-व्यक्ति कृत-कृत्य हो उठा। हर जगह अगवानी, हर जगह आवभगत, हर जगह स्वागत, धर्मपालों के समूह के समूहों का उस गांव में आना, धर्मचर्चायें करना, सुनना एवं मनन करना। जो भी व्यक्ति सम्पर्क में आया भाव-विभोर हो उठा।

सन् १९२९ में मुझे गांधी जी के साथ साबरमती आश्रम में एक लम्बे समय तक रहने का सौभाग्य मिला । जो गांधीजी के सम्पर्क में आता, गांधीजी का ही बन जाता । गांधीजी क्षमाशील थे, दूसरों की गलती पर स्वयं प्रायश्चित्त करते । वैसी ही एक घटना एक बार हमारी इस पदयात्रा में घटी । कुछ यात्रियों ने नागदा में सन्ध्या के बाद नाश्ता कर लिया । इस पर श्री अ. भा. सा. जैन संघ के अध्यक्ष श्री गुमानमल जी सा. चोरड़िया ने एक तेले का एवं मंत्री श्री भंवरलाल जी कोठारी ने एक उपवास का प्रायश्चित लिया ।

निश्चित समय के अनुसार हम हर स्थान, हर गांव पहुंच जाते और स्वाध्याय, धर्मचर्चा, जनसेवा, लोकसेवा, अहिंसा धारण करने और शराब का त्याग आदि व्रत करते-कराते जाते । ★
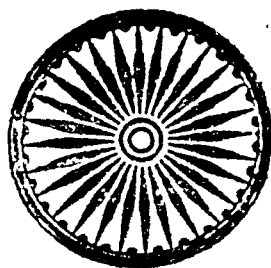
अभिनन्दनीय उपक्रम

● श्री रणजीतसिंह कूमट, अजमेर

पदयात्रा में सम्मिलित होने का जो मुझे सौभाग्य मिला और उसको अभूतपूर्व जो सफलता देखी, उससे मैं बहुत उत्साहित हुआ । श्रेष्ठिवर्ग का उच्च अट्टालिका से निकल कर ग्रामीण जन से सम्पर्क करने हेतु दुरूह पदयात्रा में सम्मिलित होने का उपक्रम अभिनन्दनीय है । दूसरी ओर ग्रामीण जनता से अनौपचारिक

मिल कर बातचीत करने का जो सौभाग्य मिला, वह भी एक नया अनुभव था। पद पर रहते हुए क्षेत्र में दौरा करने से जनता से खुली बात नहीं हो सकती परन्तु अनजान बन कर अनौपचारिक रूप उनके मन की बात ज्ञात कर सकने की सुविधा पदयात्रा में ही मिल सकती है। मैं समझता हूं ऐसे प्रयास और होने चाहिए। संगठन कार्यकर्ताओं ने इसका नियोजन बहुत ही अच्छे रूप में किया और वह भी सफलता का मूल कारण रहा।

०

❀❀❀

अशांति से शांति की ओर

● श्री मगनलाल मेहता, रतलाम

संघ द्वारा आयोजित यह पदयात्रा, धर्मजागरण ही नहीं, स्वजागरण यात्रा भी कही जा सकती है। यात्रा के दौरान पैदल घूमना, खुली हवा में डेरों में रहना, एक समय सात्विक आहार करना और दिन भर यह चिन्तन चलता था कि मैं कौन हूं, मुझे क्या होना चाहिए और मैं क्या हो रहा हूं ? निश्चय ही हमारे जीवन में ये आयोज़न आत्मिक जागृति और स्वचिन्तन का मार्ग प्रशस्त बनाते हैं।

यात्रीदल को चलता-फिरता आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र ही कहना अधिक उपयुक्त होगा। सहयात्री और अन्य जिन-जिन व्यक्तियों के संसर्ग में हम आये, उनसे कुछ न कुछ सीखने को ही मिला। जीवन की सरलता, रहन-सहन की सादगी, ग्रामीण जीवन, सेवा की भावना, ऊंच-नीच का भेद नहीं और व्यवहार में निश्चल प्रेम, जिसकी चाह सबको रहती है, जो हमारा धर्म हमें सिखाता है, इन्हें प्राप्त करने के प्रसंग ऐसे ही अवसरों पर आ सकते हैं। मैं चाहता हूं कि जीवन इस त्रस्तता से निकल कर, हमेशा उसी धारा में बहे-शांत, सरल, स्वचिन्तनयुक्त।

०

अभिनव प्रयोग

● श्रीमती शांतिदेवी मिन्नी, कलकत्ता

अपूर्व आनन्द व उल्लास और उत्साह भरे वातावरण में हमने महावीर स्वामी की जयनाद घोषित करते हुए अपनी पदयात्रा आरम्भ की । यह यात्रा सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की आराधना हेतु संयमित तथा नियमित जीवन बितानें का अभिनव प्रयोग था ।

यात्रा में हमने यह पाया कि धर्मपाल लोगों में धर्म के प्रति विश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है । वहां के छोटे-छोटे बालकों को धर्म के इतने-इतने श्लोक याद थे कि यह देख कर व सुनकर आश्चर्य होता है ।

रात्रि में जब गांव के धर्मपाल बन्धुओं के साथ धार्मिक चर्चा में लीन हो जाते थे तो धर्मपाल बन्धु धार्मिक भावना से विह्वल होकर हृदय से प्रभु-वन्दन में रत रहते थे । कई गांवों में तो यह गोष्ठी रात्रि के एक-एक बजे तक चलती ।

हमारी यह सात दिवसीय यात्रा अत्यन्त सफल रही । हमने इस यात्रा के दौरान बहुत धर्म-लाभ प्राप्त किया । ○
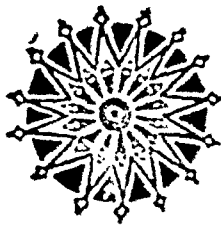
उत्साह, उमंग और सहयोग का वातावरण

● स्व. श्री हीरालाल नांदेचा खाचरौद

रैली का खाचरौद से उत्साहपूर्वक प्रस्थान हुआ। जो व्यक्ति एकत्रित हुए थे, उनमें उत्साह व उमंग थी। पहला पड़ाव ग्राम चौकी से शुरू हुआ। नावटिया, उमरना होते हुए नागदा पहुंचे। वहां पर बिड़ला मिल व श्रावक संघ की तरफ से अच्छा स्वागत हुआ। वहां से मक्षी के लिये प्रस्थान किया। जगह जगह धर्मपाल भाइयों में उत्साह था व स्थानीय लोगों का सहयोग था। भोजन की व्यवस्था मामाजी पिरोदिया जी व चांदमल जी पामेचा ब्यावर वाले के जिम्मे थी, जो व्यवस्थित थी। सभा का कार्यक्रम मुकाम-मुकाम पर व्यवस्थित था। टाइम की बराबर पाबन्दी होती थी। जगह-जगह धर्मक्रिया भी समय-समय पर होती थी। सब लोग उमंग के साथ कूच करते थे। स्वास्थ्य सभी का अच्छा रहा। बेरछा मुकाम पर कतिपय व्यक्ति और सम्मिलित हो गये थे। जयपुर से मूथा जी, चोरड़िया जी आदि पधार गये थे। उदयपुर से पानगड़िया जी भी पधारे थे। बाइयों में भी काफी उत्साह था। उन्होंने पद-यात्रा में बराबर साथ दिया। कहने का मतलब यह कि हमारा कार्य-क्रम उत्साह व सहयोग से बढ़ता ही गया। श्री मानवमुनि जी हमारे साथ थे और श्री समीरमल जी कांठेड़ वक्त-वक्त पर हमें संभाल लिया करते थे। श्रीमान् गोकुलचन्द जी सूर्या की तरफ से हमें काफी सह-योग मिलता रहा उन्होंने हमारे उत्साह में वृद्धि की। सब लोगों की यही भावना रही कि ऐसे कार्यक्रम भविष्य में और बने ताकि हम उत्साह से और भी सेवा कर सकें। ★

एक यात्रा : कृत्रिम जीवन से वास्तविक जीवन की ओर

● श्रीमती रोशनीदेवी खाबिया, रतलाम

मेरा जीवन आज जिस आनन्द, प्रेम और शून्य की विराट नाव में खो गया है, उसके प्रेरणा स्रोत आचार्य भगवान् श्री नानालाल जी म. सा. ही हैं।

उन्हीं आचार्य प्रवर के मार्ग पर हम २ अप्रेल से पदयात्रा पर निकल गये।

मेरी प्रतिदिन विश्राम करने की नियमित आदत बनी हुई है। इसीलिये मेरा मन अन्दर ही अन्दर सामायिक से बचने के लिए तर्क खोज रहा था कि मेरे अन्तर्द्वन्द्व को देख कर अध्यक्ष महोदय श्री चोरड़िया साहब ने पूछा—

"क्या आप सामायिक नहीं लेंगी ?"

और मैं उनके विराट व्यक्तित्व के सामने इन्कार न कर सकी। मैंने सामायिक ले ली और सामायिक में इतना अधिक आनन्द आया कि प्रतिदिन दो सामायिक भी करती तो भी मन नहीं भरता।

इस यात्रा में एक कमी लगी तो आचार्यश्री की—यदि आचार्यश्री का सानिध्य होता तो पूरा समवसरण का आनन्द आता।

धर्मपाल भाई-बहनों का भोलापन और श्रद्धा शब्दों में ... नहीं किये जा सकते और उनके भावपूर्ण भजन आज भी कानों

गूंज रहे हैं। बालकों का उत्साह देख कर लगता है कि स्वर्ग का आनन्द यहीं उतर आया है।

श्रीमान् गरणपतराज जी सा. बोहरा का व्यक्तित्व नन्दबाबा जैसा मौन और गम्भीर है तो यशोदा देवी का यशोदा मैया जैसा आत्मीय।

संक्षेप में यदि लिखूं तो इस यात्रा से शरीर और मन की क्रियाएं संतुलित होने लगी हैं। चित्त भगवत् आनन्द से भर गया। जीवन नित्य प्रति अज्ञात तरंगों से गतिमान हो रहा है।
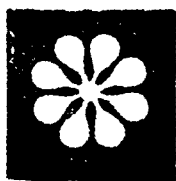
आनंद अनुभव किया जा सकता है, व्यक्त नहीं

● स्व. श्री गेंदालाल खाबिया

दो अप्रेल १९७५ से आठ अप्रेल १९७५ तक की पदयात्रा में जाने का जो अवसर मिला, उसके लिए आयोजकों को बहुत-बहुत धन्यवाद। यात्रा में इतना अधिक आनन्द आया था कि मैंने सोचा खूब जोरदार संस्मरण लिख कर भेजूंगा।

जब कागज पेन लेकर लिखने बैठा तो यात्रा के दृश्य टेली-विजन की तरह मेरी आंखों के सामने घूमने लगे।

एक ओर धर्मपाल भाई-वहनों की श्रद्धा और भक्ति जहां भाव-विभोर करती है तो दूसरी ओर शिविर में आए भाई-वहनों के अनूठे-अनूठे व्यक्तित्व जीवन के विविध रूपों की झांकियां प्रस्तुत करते हैं।

सुवह साढ़े चार वजे से रात वारह वजे तक व्यस्त कार्य-क्रम चलते रहते और इस बीच शायद ही कोई ऐसी घटना घटी हो जो कि लिखने के काबिल न हो। मैं तो बस यही सोचता हूं कि जो आनन्द, जो उत्साह मुझे मिला वह शब्दों में नहीं लिखा जा सकता, केवल महसूस किया जा सकता है और वह आनन्द मैंने महसूस किया है। जो व्यक्ति इस आनन्द से वंचित रहे हैं, उन्हें मेरा सुझाव है कि जब भी यह अवसर आए, इसका लाभ अवश्य उठावें। ०
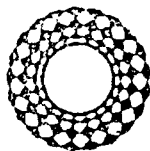
धार्मिक जागरूकता

● श्री कन्हैयालाल नाहर, व्यावर

हमने धर्मपालों के घर पर देखा कि वे पानी को छान कर पीते हैं। यही नहीं, मटकियों से ऊपर कपड़ा तथा परिन्डों के ऊपर चन्दोवा भी रखते हैं ताकि कोई जीव पानी में पड़ कर न मरे। कितनी जागृति आई है, इन लोगों में। वहां के हर वच्चे के मुंह से जय जिनेन्द्र शब्द का उच्चारण वहुत सुन्दर लगता है। हमारे वच्चों में ऐसे संस्कार अभी नजर नहीं आते। धर्मपाल वहिन–भाई व वच्चों के भजन व कंठ–कला से मैं वहुत प्रभावित हुआ। उनके भजन सुन कर मेरा मन हर्ष-विभोर हो उठता था। जी चाहता कि वे गाते रहें। मेरी इच्छा है कि ऐसा आयोजन फिर हो और हम भाग लेवें।

अटूट आस्था

● श्री सोहनलाल श्रीश्रीमाल, ब्यावर

जब हम धर्मपाल क्षेत्रों में पहुंचे तो सर्वप्रथम वहां हर मकान के बाहर व भीतर जय गुरु नाना व भगवान् महावीर की जय के साईन बोर्ड देखने को मिले।

धर्मपाल परिवार में धार्मिक संस्कार इतने गहरे हैं कि जब वे आपको देख लेंगे तो सबसे पहले जय जिनेन्द्र शब्द का उच्चारण करके आपको सम्बोधित करेंगे। मंगलाचरण के रूप में वे धार्मिक श्लोक व भक्तामर के श्लोक इतने शुद्ध बोलते हैं कि हम लोग सुनने वाले, अपने आप में कितनी कमी है, महसूस करते हैं।

अन्त में हम लोगों में आपस में इतना स्नेह हो गया कि जब हमारी पदयात्रा का ५ वां दिन आया तो मन में यही भावना आई कि यह यात्रा कल समाप्त हो जायेगी, सभी व्यक्तियों के चेहरे पर उदासी सी आ गई। यहां हम लोगों को यात्रा में इतने आनन्द का अनुभव हुआ कि उसे व्यक्त करने की मेरी सामर्थ्य नहीं है। ★
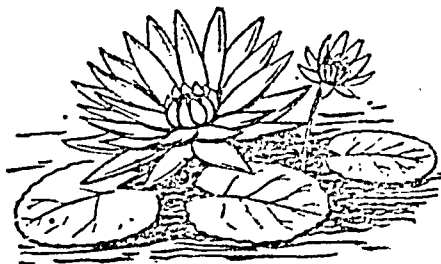
मन म्हारो हर्षायो रे

● श्री हनुमानमल बोथरा, रामपुर हाट

पैदल चल कर सात दिनों तक मन म्हारो हर्षायो रे,
धर्मपालां रे घर घर जाकर, मन म्हारो आनंद पायो रे।
नाम गुमाना, करे नहीं अभिमाना,
संघपति पद पायो रे ॥ पैदल ॥
धर्मपाल की मात जसोदा, जीवन इनका सीधा सादा,
गनपत जी तो 'वा' वन पायो रे ॥ पैदल ॥
सरदार बने कांकरिया सरदार जी, मधुर भाषी है मंत्री भंवर जी,
"मानव मुनि" मन भायो रे ॥ पैदल ॥
पद्मश्री वोरदिया ने धन्य है, कर सेवा मुस्काये मन है,
धन्य संघ इन्हें पायो रे ॥ पैदल ॥
मांस मदिरा के बने ये त्यागी, धर्मपाल वने नाना अनुरागी,
जीवन शुद्ध वनायो रे ॥ पैदल ॥
यह पदयात्रा सफल वनी है, एकता की इक चादर तनी है,
नाना गुरु ने यह वाग लगायो रे ॥ पैदल ॥

★
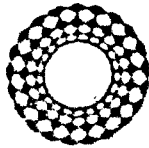
मेरे अनुभव

● श्रीमती धुरीदेवी पिरोदिया, रतलाम

चखे सो याद रखे

इस वैज्ञानिक युग में यात्रा करने के लिये हवाई जहाज, मोटर, रेल आदि साधन उपलब्ध हैं। इस साधन-सम्पन्न काल में यह पदयात्रा कैसी ? सामान्यत: यह प्रश्न उठता है तो मैं कहूंगी कि क्या दिलों को जोड़ने का काम भौतिक साधनों से संभव हो सकता है ? नहीं, कदापि नहीं। इस धर्मजागरण पदयात्रा में अमीरों व गरीबों के दिल से दिल मिले। अमीरों ने एक दूसरे भाई के सुख-दु:ख सुने, समझे व उन्हें दूर करने के उपाय ढूंढे। उन्हें ज्ञान का प्रकाश दिया।

अज्ञान व सत्गुरु के अभाव में सरल श्रमजीवी लोग सह मार्ग भूल गये, वर्षों से वे अज्ञानान्धकार में भटक रहे थे। जिन् हम लोग अछूत कहते हैं, उन लोगों को इस पदयात्रा से नव-प्रका मिला। आज वे लोग हजारों की तादाद में मांस-मदिरा छोड़ क पवित्र जीवन बिता रहे हैं। धर्म के प्रति इन भाई-बहिनों की अट श्रद्धा और विश्वास है, जो देखते ही बनता है।

ग्रामीण सरल हृदय धर्मपाल भाइयों से मिलने का आनन तो जिन्होंने लिया है वही उसे जान सकते हैं। आम को चखने क जो स्वाद है वह तो वही जान सकता है, जिसने आम खाया है वाणी के द्वारा उसका वर्णन करना मुश्किल है। मेरी जड़ लेखन उस आनन्द को व्यक्त करने में असमर्थ है। किसी कवि ने ठीक ह कहा है—

"खाये सो मजा पाये, चखे सो याद रखे।"

मानव का मानव से मुक्त मिलन

यह यात्रा इतिहास के पन्नों पर अमर रहेगी। गरीबों की झोंपड़ियों में जाने के लिये धनपति पैदल चले हों, अछूतों के घरों में जाकर उनके सुख-दुःख की बात जानने के लिये यात्रा निकाली हो, ऐसा पढ़ने में व सुनने में नहीं आया जो इस बार संभव हुआ इस लिये हमारी यह पदयात्रा अनुपम व बेजोड़ है। इस यात्रा में मानव का मानव से मुक्त मिलन हुआ। इससे भगवान् महावीर का दिव्य-संदेश घर-घर, गांव-गांव व झोंपड़ियों में फैला। ★

तीर्थयात्रा की सुखानुभूति

● श्री नेमीचन्द खींवसरा, ब्यावर

हमेशा अत्यधिक कार्यव्यस्तता से होने वाली चिन्ताएं आठ दिन की इस पदयात्रा में प्रथम दिवस से ही समाप्त हो गई। सवेरे तथा शाम का प्रतिक्रमण व धार्मिक ज्ञान-गोष्ठियों तथा दोपहर में दो घन्टे का सामायिकपूर्वक सामूहिक स्वाध्याय व अनेक सद्गुणों से युक्त व्यक्तियों के साथ आठ दिन इस तरह व्यतीत हो गये, जैसे दो घंटे ही व्यतीत हुए हों।

इस यात्रा से वास्तविक तीर्थयात्रा की सुखानुभूति हुई। शारीरिक व मानसिक दृष्टि से भी काफी हल्कापन अनुभव हुआ। रात्रि को थके हुए होने से सयमित व नियमित भोजन के तथा चिन्ता रहित जीवन होने से सोते ही कुछ मिनटों में ही अत्यन्त सुखद निद्रा आ जाती थी। इन आठ दिनों में पीछे मेरे कारखाने में [illegible] पूर्ण रहा और न कोई समस्या आई।

यात्रा : जिसने मुझे अनुशासन का पाठ पढ़ाया

● श्री वीरेन्द्र कोठारी, उज्जैन

पदयात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व मैं यह सोच रहा था कि क्या ये उद्योगपति एवं बड़े-बड़े लोग कभी पैदल भी चल सकेंगे ? लेकिन २ अप्रेल को जब मैंने खाचरोद से पदयात्रा का शुभारंभ देखा तो सोचने लगा कि कहीं मेरी ये निगाहें धोखा तो नहीं दे रहीं ? पर मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि बड़ी-बड़ी मिलों के मालिक, बड़े-बड़े आलीशान वातानुकूलित भवनों में रहने वाले संघ-प्रमुख, कार्यकर्तागण, गगनभेदी नारों का उच्चारण करते हुए पैदल चल रहे थे । पदयात्रा से सम्बन्धित सूचनाएं एवं नियमावली पढ़ी तब तो यह अहसास होता था कि यह सूचनाएं एवं नियमावली तो केवलमात्र कागजी है, लेकिन पदयात्रा के दौरान मेरी जो पूर्व धारणा बनी थी, उसके ठीक विपरीत पाया ।

पदयात्रा के नागदा प्रवेश के समय बिरला ग्रामवासियों द्वारा जो अभिनन्दन किया जा रहा था, वह कार्यक्रम लिलोतरी (बगीचे) के स्थान पर था । हम लगभग सभी लोग उस स्थान पर जाकर बैठ गये । जब कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ एवं अभिनंदनकर्ताओं द्वारा संघ अध्यक्ष श्री चोरड़िया जी का अभिनंदन किया जा रहा था तो वे कार्यक्रम स्थल पर नहीं दिखे । यह देख सभी श्री चोरड़िया जी को ढूंढ़ने लगे । वे दूर सीढ़ियों पर बैठे थे, जहां जाकर अभिनन्दन-कर्ताओं ने उनका अभिनन्दन किया लेकिन मालाएं फूलों की होने से उन्होंने नहीं पहनीं ।

एक बात और उल्लेखनीय है कि चाहे कभी मुझे कोई

बोलने को न भी कहे, तब भी मैं स्वयं बोलने खड़ा हो जाया करता हूं। परन्तु पदयात्रा के दौरान कई स्थानों पर सर्वधर्मी. आलीशान पर भाषण आदि होते रहे, परन्तु उस समय के वातावरण ने मुझे अनुशासन में रहने को प्रेरित किया। मेरे जीवन का यह पहला मौका था, जब मैं अपने आपको वश में रख, अनुशासन में रह, दूसरों से सुन कर कुछ सीख सका।

धर्मपाल-पितामह श्री सेठ गणपतराज जी बोहरा, श्रीमती यशोदादेवी बोहरा, श्री सरदारमल जी कांकरिया, श्री भंवरलाल जी कोठारी, श्रीमती फूलकुंवर कांकरिया, श्री मानवमुनि जी आदि ने मुझे जो स्नेह दिया एवं कार्य करने की प्रणाली समझाई, वह सदैव ही मेरे भविष्य-विकास में सहायक होगी।

इन संघ-समर्पित जनों के जीवन से धर्मपाल भी प्रभावित होकर विकास पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। ०

जंगम विद्यापीठ

० श्री मानवमुनि

भगवान् महावीर निर्वाण-शताब्दी वर्ष में श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ के तत्त्वावधान में धर्मपाल क्षेत्र में पदयात्रा प्रारम्भ हुई। यह क्षेत्र आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की साधना, आध्यात्मिक शक्ति एवं धर्मपाल प्रवृत्ति की तीर्थभूमि है, जो भविष्य में भारत का एक शोध-संस्थान होगी, ऐसी आशा है।

इस पदयात्रा का सबको महत्वपूर्ण लाभ मिला। सहजीवन, सहचिंतन, सामूहिक प्रार्थना, वन्दना सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय के साथ जीवन संयममय हो, यह सबने अनुभव किया।

महिलाओं ने एक विशेष महत्वपूर्ण कार्य महिला-सम्पर्क का किया। पुरुषवर्ग में यह एक अभाव सा रहा कि ये धर्मपाल परिवार के लोगों से व्यक्तिगत चर्चा कम कर सके।

मुझे तो बड़ा आनन्द इस बात से रहा कि सबको माता-बहिनों का व भाइयों का आत्मीय स्नेह मिला। यह सबसे बड़ी उपलब्धि हुई और इससे शक्ति भी मिली।

श्रीमान् डा० नंदलाल जी बोरदिया की प्रत्येक पड़ाव पर जो सेवा हुई, वह चिरस्मरणीय रहेगी। मैं इस यात्रा को एक प्रकार की जीवन-साधना मानता हूं। इसे जंगम विद्यापीठ भी कह सकते है।

★
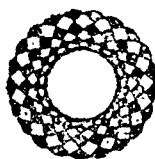
धर्म के प्रति गहरी निष्ठा

● श्रीमती सरलादेवी कांकरिया, कलकत्ता

मानव-जीवन में यात्रा का बहुत अधिक महत्व है। मैंने अपने जीवन में ऐसी बहुत सी यात्राएं की हैं, किन्तु पदयात्रा का यह पहला मौका था। पदयात्रा के मधुर अनुभव मेरे हृदय-पटल पर अंकित हैं।

पदयात्रा का वह मधुर संस्मरण जो धर्म के प्रति गहरी निष्ठा व आस्था का द्योतक बना, वह मैं कभी नहीं भूल सकती। पदयात्रा के आगमन के दौरान भोले-भाले ग्रामवासियों का मधुर व निश्छल प्यार आज भी मेरे मन को उनकी ओर आकृष्ट करता है तथा आते वक्त उन्होंने जो भाव-भीनी विदाई देकर हमें विदा किया, वह क्षण मेरे जीवन का बहुमूल्य क्षण बन गया है।

समय बड़ी तेजी से बीत ही गया और आखिर वह दिन आ ही पहुंचा जब हमें कलकत्ता के लिए प्रस्थान करना पड़ा।

मैं यही कामना करती हूं कि मुझे अधिक से अधिक ऐसी यात्राओं में जाने का सुअवसर प्राप्त हो। ०
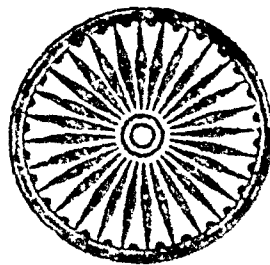
जीवन निर्माणकारी कार्यक्रम

● श्री तख्तसिंह पानगढ़िया, उदयपुर

संघ द्वारा आयोजित जीवन-साधना एवं धर्मजागरण पदयात्रा कार्यक्रम में अल्प समय के लिए ही सम्मिलित होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। काश, मैं पूरे कार्यक्रम में भाग लेकर लाभ उठा पाता। कुछ ही समय के कार्यक्रम ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया कि उस आनन्द की अनुभूति को मैं अपने शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूं। जीवन-निर्माण के लिए ऐसे कार्यक्रम समाज के लिए बड़े उपयोगी हैं।

मंगलमयी प्रेरणापूर्ण यात्रा

● श्री हस्तीमल मूणत, रतलाम

इस मंगलमयी पदयात्रा से हम साथी भाइयों को तथा उन धर्मपाल भाइयों को आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सभी दृष्टियों से लाभ तथा आनन्द की प्राप्ति हुई। पदयात्री भाइयों के धर्माराधन तथा श्रवण-कीर्तन से उन धर्मपाल भाइयों में धर्म के प्रति विशेष जागृति आई। साधनहीन अवस्था में भी संतोष, प्रेम, आतिथ्य-सत्कार और धर्म के प्रति उत्साह को देख कर हमें भी हर अवस्था में यानि सुख-दुख सभी अवस्थाओं में धर्म के प्रति अटल श्रद्धा रखने की प्रेरणा मिली।

सामाजिक दृष्टि से उन भाइयों में मांस-मदिरा आदि कुव्यसनों को छोड़ने से सामाजिक प्रेम-भाव बढ़ा तथा उनका घरेलू जीवन भी सुखी हुआ तथा उनमें बच्चों को शिक्षा दिलाने तथा सामाजिक बुराइयों को छोड़ने की भावना भी जागृत हुई, जिससे उनका जीवन और अधिक उन्नत हुआ।

राष्ट्रीय दृष्टि से जातीयता, प्रान्तीयता तथा ऊंच-नीच और छुआ-छूत की भावना और संकीर्णता कम हुई।

इस मंगलमय यात्रा रूपी सुन्दर बगीचे में अनेक गुणों से युक्त सुन्दर फूलों से सुगन्ध रूपी सत्संग प्राप्त हुआ। किसी में दान-रूपी फूल की सुगन्ध महकती थी, तो किसी में ज्ञान-रूपी गंगा बह रही थी। किसी में सेवा-रूपी फूल की सुगन्ध आ रही थी तो किसी में सबको आनन्द-विभोर कर प्रेम-सूत्र में बांधने की कला दिखाई दी। इस प्रकार अनेक गुणों से युक्त इस पदयात्रा रूपी गुण क्यारी से मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ, वह अवर्णनीय है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, मेरी आत्मा में भी इन सद्‌गुणों की वृद्धि हो।

धर्म के प्रति रुचि जागी

● श्री चांदमल चोरड़िया, ब्यावर

पदयात्रा में पैदल चलने का बहुत आनन्द आता था, हम सभी भजन बोलते हुए चलते थे। जिस-जिस गांव में जाते, वहां के लोगों का प्रेम बहुत अच्छा था। नन्हे-नन्हे बच्चों में जैन-धर्म के प्रति जागरूकता देखी गई। बच्चों में नवकार मंत्र पर अटल श्रद्धा देखने को मिली। उनके आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की जय, श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की जय के नारों में अपूर्व जोश था।

इस यात्रा में सबसे ज्यादा आनन्द आपसी प्रेम व स्नेह भाव में रहा। इस पदयात्रा से मेरी धर्म के प्रति रुचि जागी। ०

आत्म विकास की प्रेरणा

● श्री हंसराज सुखलेचा

श्रद्धा योग्य व्यक्ति के आदेश से पदयात्रा में जाने का प्रसंग [illegible]ा। संयमित, नियमित, मर्यादित दिनचर्या में ६ दिन कैसे व्यतीत [illegible] मालूम ही नहीं पड़ा। सांसारिक झंझटों से दूर प्रकृति की गोद [illegible] गांवों के निकट सरलता के जीते जागते प्रतीक प्रेरणास्पद व्यक्तियों [illegible] बीच बीती घड़ियां आत्मविकास के लिए प्रेरणा देती रहेंगी।

मंगलमयी प्रेरणापूर्ण यात्रा

● श्री हस्तीमल मूणत, रतलाम

इस मंगलमयी पदयात्रा से हम साथी भाइयों को तथा उन धर्मपाल भाइयों को आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सभी दृष्टियों से लाभ तथा आनन्द की प्राप्ति हुई। पदयात्री भाइयों के धर्माराधन तथा श्रवण-कीर्तन से उन धर्मपाल भाइयों में धर्म के प्रति विशेष जागृति आई। साधनहीन अवस्था में भी संतोष, प्रेम, आतिथ्य-सत्कार और धर्म के प्रति उत्साह को देख कर हमें भी हर अवस्था में यानि सुख-दुख सभी अवस्थाओं में धर्म के प्रति अटल श्रद्धा रखने की प्रेरणा मिली।

सामाजिक दृष्टि से उन भाइयों में मांस-मदिरा आदि कुव्यसनों को छोड़ने से सामाजिक प्रेम-भाव बढ़ा तथा उनका घरेलू जीवन भी सुखी हुआ तथा उनमें बच्चों को शिक्षा दिलाने तथा सामाजिक बुराइयों को छोड़ने की भावना भी जागृत हुई, जिससे उनका जीवन और अधिक उन्नत हुआ।

राष्ट्रीय दृष्टि से जातीयता, प्रान्तीयता तथा ऊंच—नीच और छुआ-छूत की भावना और संकीर्णता कम हुई।

इस मंगलमय यात्रा रूपी सुन्दर बगीचे में अनेक गुणों से युक्त सुन्दर फूलों से सुगन्ध रूपी सत्संग प्राप्त हुआ। किसी में दान-रूपी फूल की सुगन्ध महकती थी, तो किसी में ज्ञान-रूपी गंगा बह रही थी। किसी में सेवा-रूपी फूल की सुगन्ध आ रही थी तो किसी में सबको आनन्द—विभोर कर प्रेम-सूत्र में बांधने की कला दिखाई दी। इस प्रकार अनेक गुणों से युक्त इस पदयात्रा रूपी गुण क्यारी से मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ, वह अवर्णनीय है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, मेरी आत्मा में भी इन सद्गुणों की वृद्धि हो।

धर्म के प्रति रुचि जागी

● श्री चांदमल चोरड़िया, ब्यावर

पदयात्रा में पैदल चलने का बहुत आनन्द आता था, हम सभी भजन बोलते हुए चलते थे। जिस-जिस गांव में जाते, वहां के लोगों का प्रेम बहुत अच्छा था। नन्हे-नन्हे बच्चों में जैन-धर्म के प्रति जागरूकता देखी गई। बच्चों में नवकार मंत्र पर अटल श्रद्धा देखने को मिली। उनके आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. की जय, श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की जय के नारों में अपूर्व जोश था।

इस यात्रा में सबसे ज्यादा आनन्द आपसी प्रेम व स्नेह भाव में रहा। इस पदयात्रा से मेरी धर्म के प्रति रुचि जागी। ○

आत्म विकास की प्रेरणा

● श्री हंसराज सुखलेचा

श्रद्धा योग्य व्यक्ति के आदेश से पदयात्रा में जाने का प्रसंग बना। संयमित, नियमित, मर्यादित दिनचर्या में ६ दिन कैसे व्यतीत हुए मालूम ही नहीं पड़ा। सांसारिक झंझटों से दूर प्रकृति की गोद में गांवों के निकट सरलता के जीते जागते प्रतीक प्रेरणास्पद व्यक्तियों के बीच बीती घड़ियां आत्मविकास के लिए प्रेरणा देती रहेंगी।

दोपहर २ बजे से ४ बजे स्वाध्याय का कार्यक्रम, विद्वानों के सहयोग से कितना प्रेरणादायी, आनन्ददायी बन गया । लेखनी से लिखना संभव नहीं है। इसकी सिर्फ अनुभूति ही की जा सकती है। आखिरी दिन पदयात्रा के दौरान हुई गल्तियों के लिए प्रायश्चित्त स्वरूप हुई आलोचना व दण्ड की मांग का दृश्य देखने योग्य था।

पदयात्रा के दौरान उपवास १५, एकासना २१, सामायिक १४४२ का भी बड़ा ठाठ रहा। मेरा यह प्रथम प्रवास मुझे सदैव स्मरण रहेगा। ०
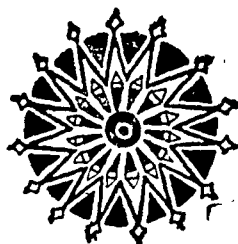
साधना और सेवा का समन्वय

डा० प्रेमसुमन जैन

बहुत दिनों से इच्छा थी कि अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा प्रति वर्ष आयोजित पदयात्रा का मैं भी पदयात्री बनूं। सवारियों पर पदयात्रा करते करते हम आकाश गामी हो गये हैं। धरती से कट गये हैं। धरती से कटना यथार्थ से कटना है। कल्पनाओं और आदर्शों में जीना है। अतः पदयात्रा मानव को सही अर्थ में मानव बना रहने देती है। वह धरातल प्रदान करती है, जहां मानव में अनेक गुण विकसित होने की सम्भावनाएं हैं।

इस सत्र में आयोजित जावरा-पदयात्रा में जब मैं सम्मिलित तो मुझे लगा कि मैं अपने गांव वालों के बीच लौट आया हूं।

और उस धरती पर चल रहा हूं जहां मैं जन्मा तथा जहां मेरा बचपन बीता है। गांव के बच्चे, जवान, बूढ़े सभी पदयात्रियों का जिस स्नेह और आदर से स्वागत करते थे, उससे लगा कि अभी भी भारतीय संस्कृति गांवों में विकृत नहीं हुई है। सभी पदयात्री अपनी साधना और ध्यान से अवकाश पाते ही गांव वालों के साथ घुलमिल जाते थे। उनके साथ मनोरंजन के कार्यक्रमों में सम्मिलित होते थे।

पदयात्रा में डा० बोरदिया केवल धार्मिक साधना ही नहीं करते थे अपितु गांव में पहुंचते ही अपना चिकित्सालय खोल देते थे। सारा गांव उनके पास उमड़ पड़ता था। तब पता चलता था कि गांवों में चिकित्सा सुविधा कितनी दी गयी है और कितनी आवश्यक है। यह निःशुल्क चिकित्सा सेवा का कार्यक्रम पदयात्रा का विशिष्ट आकर्षण था। साधना और सेवा के समन्वय का यह ज्वलन्त उदाहरण था।

सामूहिक गमन, सामूहिक साधना, सामूहिक भोजन एवं सामूहिक चर्चा का जो दृश्य मैंने इस पदयात्रा में देखा, वह बहुत प्रेरणादायक था। यहां के जीवन को देखकर लगता था कि इस पदयात्रा में कोई बड़ा, कोई छोटा नहीं है। सबके लिए समान सुविधा एवं समान नियम। पदयात्री बहिनें साधना, शास्त्रचर्चा, सेवा आदि कार्यों में जिस उत्साह से भाग लेती थीं, उससे लगा कि नारियों के समान अधिकार तो यहां सार्थक हुए हैं।

मुझे स्वाध्याय पर पदयात्रियों से चर्चा करने का अवसर मिला। विचारों का आदान प्रदान हुआ। ऐसा अनुभव हुआ कि पदयात्री न केवल साधन के व्यवहार पक्ष से परिचित थे, अपितु ये अच्छे साधक भी थे। वे इतनी दूर स्वयं अपना अध्ययन करने ही तो आये थे कि हम क्या हैं और हमारा गन्तव्य क्या है? पदयात्रा धर्मपालों के उत्थान में सहायक हुई। ०

पदयात्रा मोक्ष की पगडंडी

श्री मदन जैन, भदेसर

यह पदयात्रा मोक्ष नगर में प्रवेश करने के लिए एक पगडंडी रूप है। प्रकृति की सुरम्य शस्य श्यामला गोदी में घर के झंझटों से, चिन्ताओं से, मुक्त अन्तर्मुखी होने का व स्वआत्मरमण होने का अनूठा स्थान है। प्रखर पंडितों के सान्निध्य से जो ज्ञानरस प्राप्त हुआ उसका वर्णन करना लेखनी की क्षमता में नहीं है। गूंगे का गुड़ ही कह दीजिए।

मैं अपने आपको माइक पर खड़ा करने में झिझकता था, मगर पर्दे में रहने वाली मेरी वृद्धा माताओं ने माइक पर बोल कर जो कमाल किया तो मुझ में भी नया जोश पैदा हुआ कि तू पुरुष होकर भी अपने ही आत्मीय जनों के बीच में बोलने से कतराता है। अरे, एक अबोध बच्चा भी अपनी तुतली भाषा में अपने भाव व्यक्त कर सकता है तो ये सब तेरे बुजुर्ग क्या तेरी अटपटी भाषा को सुन कर भी क्षमा नहीं करेंगे? अवश्य करेंगे।

पदयात्रा से मेरा आत्म विकास हुआ और धर्मपालों के असीम विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

स्तुत्य प्रयास

● पं० श्री शोभाचन्द जी जैन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा गत तीन वर्षों से धर्म जागरण पदयात्रा का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रवृति से परिचित था, पर इसका लाभ लेने का सयोग इस बार ही प्राप्त हुआ।

सचमुच ही पदयात्रा का दृश्य अतीव अह्लाददायक था। सभी यात्री आत्मीयता अनुभव कर रहे थे। दो दिन पदयात्रियों के साथ रहने का अवसर मिला। श्री मानवमुनि जी की अन्तः प्रेरणा, मूथाजी का शास्त्र स्वाध्याय, संघ मन्त्री कोठारी जी का ध्यान के प्रति आग्रह व अनुशासन-प्रियता यह सब कार्यक्रम की रोचकता व आनन्द को द्विगुणित करने वाले पक्ष थे। भूतपूर्व अध्यक्ष शान्तमना श्री गुमानमल जी की कर्मठता व सरलता तो वर्तमान अध्यक्ष श्री चौपड़ा जी का निश्छलता व धर्मप्रेम से समस्त पदयात्री अभिभूत थे।

एक बात और, जिसे भूल नहीं सकता। डा० बोरदिया व उनकी धर्मपत्नि का ग्रामीणों की चिकित्सा का सेवा कार्य सबसे अधिक सराहनीय लगा-इसके पीछे उन्हें न भूख सताती थी, न प्यास। संघ ने इस पदयात्रा में ग्रामीणों को सप्तव्यसन छोड़ने की प्रेरणा दी। स्थान स्थान पर रात्रि व दिन में ग्रामीणों व युवकों के लाभार्थ सभा के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विशेष बात यह भी हुई कि संघ ने पदयात्रा के दौरान प्रतिदिन विद्वानों को आमन्त्रित करने का कार्यक्रम भी वनाया जो स्तुत्य लगा। इससे नवीन पीढी को भगवान महावीर के सिद्धान्तों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझ कर श्रद्धा को परिपुष्ट वनाने का सुयोग मिलेगा।

०

नई अनुभूति

● श्री कल्याणचन्द कांकरिया, कलकत्ता

पदयात्रा मेरे जीवन की एक नई यात्रा थी। यों भी घूमने का शौक रहता ही है। इस बार पदयात्रा का क्रम सुनकर मैं भी नये अनुभव प्राप्त करने के लिए तैयार हो गया। वहां का प्यार भरा वातावरण मुझे बहुत ही पसन्द आया। सभी लोग प्रायः मेरे लिए नये थे परन्तु ऐसे घुलमिल गये थे कि सब अपने लगने लगे।

गांव के मुक्त वातावरण में नित्यक्रिया करने में एक अलौकिक आनन्द मिला। सबसे मजे की बात यह है कि मैंने जीवन में पहले कभी भी सामायिक की क्रिया नहीं की थी, परन्तु वहां का सुन्दर तथा स्वच्छ वातावरण देखकर मन के अन्दर से अपने आप सामायिक करने की भावना प्रकट हुई तथा जहां तक बन सका, क्रिया भी की। विशेष क्या लिखूं ? मुझे तो लिखते लिखते भी वहां का प्यार भरा वातावरण याद आ रहा है।

मेरी तो यह हार्दिक इच्छा है कि ऐसी पदयात्रा हर साल हो। इससे हमें कुछ न कुछ सीखने को तो मिलता ही है। उसके साथ साथ आपस में एक दूसरे के निकट आने का भी अच्छा साधन मिलता है तथा एक दूसरे से आपस में विचारों का आदान प्रदान भी हो जाता है।

★
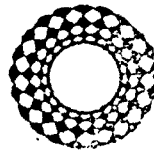
सुखद–प्रसंग

● श्रीमती गायत्री कांकरिया

कई सालों से पदयात्रा का प्रसंग सुन रही थी, हृदय में पदयात्री बनने की कामना भी तीव्रतर होती रही परन्तु किसी अन्तराय कर्म के उदय से ऐसा सौभाग्य पहले न पा सकी। इस बार पदयात्रा में सम्मिलित होकर एक अलौकिक अनुभव प्राप्त हुआ, जो जीवन का सर्वोत्तम, अविस्मरणीय सुखद प्रसंग बन गया।

आज भी स्मृति पर पदयात्रा-काल की छवि चित्रित होने से मन आत्म-विभोर हो उठता है।

पदयात्री पारिवारिक जनों के साथ मिल कर प्रार्थना, सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण तथा नित्यक्रिया करते हुए मन में शान्ति और हृदय में धर्म जागृति प्राप्त हुई। किसी भी प्रकरण का तात्विक अर्थ सुन कर, देखकर, समझ कर श्रद्धा के साथ वैसा आचरण करना यहीं सीख सकी।

अनेक विशिष्ट विभूतियों के प्रवचनों ने जीवन में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित कर दी। इस ज्योति को हृदय में कायम रख सकूं तभी अपने जीवन को सार्थक समझूंगी।

सचमुच हमारी यह धार्मिक टोली आध्यात्मिक उन्नति को बढ़ावा देती हुई धर्म गंगा के नाम से अलंकृत हो गई और मन को पावन कर गई।

शहरी वातावरण से दूर गांव की प्राकृतिक छटा का मन को स्निग्ध कर रहा है। गांव वालों का निष्कपट प्यार ऐसा तरंगित कर गया जिसकी अनुभूति ही संभव है, अ[illegible]।

जिस प्रकार धर्मपाल भाई–बहिन व अन्य ग्रामवासी अपने उत्थान लिए आंखें बिछाए बैठे हैं, वहीं जाकर देखा और जाना जा सक है ।

हमारे साथ चल रहे चल चिकित्सालय के कार्य की जितनी भी सराहना की जाय कम होगी । गांवों में चिकित्सा आवश्यकता और समाज द्वारा उसके प्रति बरती जा रही उपेक्षा हृदय–विदारक दृश्य आज भी मन को झकझोर रहा है । आंखें पथ सी जाती हैं ।

पदयात्रा अनुभव की वस्तु है, जिसे पाने के लिये वहां च कर जाना होगा । धर्म-प्रेमी समाज सेवीयों से मेरा हार्दिक अनुरो है कि ऐसे प्रसंगों को भरपूर बढावा दें, जिससे हमारा जीवन अन मुखी होकर, ज्ञान की ज्योति एवं स्वाध्याय-साधना क्रम से आत्मीय के सूत्र में बंध सके ।

हम 'समता' तथा 'जीओ और जीने दो' के पाठ का सि नारा ही न लगा कर उसे अंगीकार कर जीवन का उत्थान करने सफल हो सकें, यह कामना है ।

प्रेरणास्त्रोत यात्र

● श्री मन्नालाल मेह

हमारे गांव धुघड़का में जब धर्मजागरण एवं जीवन सा पदयात्रो दल पहुचा तो सारा गांव उनके स्वागत को उमड़ पड़

वहां आयोजित सभा में हरिजन व धर्मपाल बन्धु भी सम्मिलित हुए। सभा में संघ मन्त्री श्री भंवरलाल कोठारी ने बहुत ही आकर्षक भाषण दिया। संघ अध्यक्ष श्री चौपड़ा जी एवं यात्रा प्रमुख श्री चोरड़िया जी के सारगर्भित भाषण हुए।

दोपहर के स्वाध्याय में श्री कोठारी जी का समभाव पर प्रवचन और श्री मोहनलाल जी मूथा की अमृतवाणी से हमें बड़ा आनन्द हुआ। हम लोग भी उत्साहपूर्वक पदयात्रा में सम्मिलित हो गए। थमनार में श्री कोठारी जी के सुन्दर गायन से सभी श्रोताओं का मन प्रफुल्लित हो गया।

मार्ग के गांवों में बहुत से अजैन भाइयों के व्यसन छुड़वाए। जगह-जगह श्रीमती फलकंवर कांकरिया ने वस्त्र-वितरण करके धर्म-लाभ प्राप्त किया।

स्वाध्याय क्रम में श्री भानावत जी व डा० श्री छगनलाल जी शास्त्री के प्रवचन बहुत अच्छे लगे। श्रीमती गायत्रीदेवी कांकरिया के समझाने का तरीका बहुत प्रभावी था। रिंगनोद में बड़े रावले सा. श्री जसवंतसिंह जी का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

यात्रा से मेरी समता, नम्रता, सरलता, सादगी, सेवा, त्याग और संयम के प्रति रूचि बढ़ी तथा राग-द्वेश छोड़कर सुचरित्रवान बनने की प्रेरणा मिली। ★
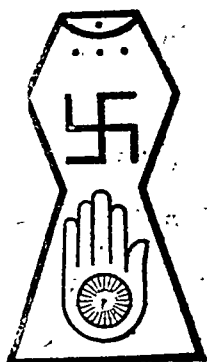
पदयात्रा

● स्व. पं. श्री माधवप्रसाद पराशर

पंच परमेष्ठी आशा मन पूरें ।
भजियां सूं हो जावे संकट दूरे ।।
प्रथम आचार्य श्री को वन्दन ।
प्रवचन सूं काटे भव बन्धन ।।
मालव प्रान्त में पूज्य श्री आया ।
करुणानिधि करुणा सं छाया ।।
मन में एक धारणा धारी ।
धर्मपाल प्रवृति प्रचारी ।।
लाखों मानव हिंसा तज दीनी ।
सत्संस्कारी प्रतिज्ञा लीनी ।।
संघ-एकता रो भाषण दीनो ।
आपस में प्रेम-भाव रंग भीनो ।।
आध्यात्मिक यात्रा अति सुखदाई ।
आनंद सूं रहज्यो सब भाई-भाई ।।
सामायिक साधना दिन दिन बढ़ावो ।
भूलचूक 'माधव' को माफ करावो ।।

भेंटवार्ता

धर्मपालों के मध्य

श्री विजयसिंह जी नाहर, भूतपूर्व उपमुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल एवं सर्वश्री फलचन्द जी बया, सूरजमल जी बच्छावत, भंवरलाल जी कोठारी आदि ने प्रथम पदयात्रा के चौकी गांव में आए विभिन्न गांवों के धर्मपालों से कुछ प्रश्न किए। इस साक्षात्कार से उभरने वाला धर्मपाल प्रवृति का यथार्थ चित्र ज्यों का त्यों आपकी सेवा में प्रस्तुत है।
—सम्पादक

सर्व प्रथम चौकी गांव के श्री गंगाराम जी से वार्ता की तई—

श्री नाहर —सामायिक व्रत आपने धारण किया है। इससे आपको क्या लाभ हुआ ?

श्री गंगाराम—जबसे मैंने सामायिक व्रत धारण किया है, मुझे आज तक बुखार नहीं आया। कभी रास्ते में मेरे साथ धोखा-धड़ी नहीं हुई। सुबह ४ से ७ बजे तक सामायिक करता हूं। चातुर्मास में जूते नहीं पहनता।

श्री नाहर —जूते क्यों नहीं पहनते ?

श्री गंगाराम—जीव जंतु मर जाते हैं। खुले पैरों से जीवों की बचत होती है, इसलिए।

श्री नाहर —आपने रात्रि-भोजन का भी त्याग किया होगा ?

श्री गंगाराम—नहीं, रात्रि-भोजन करता हूं। मेरे को काफी घूमने का काम है।

श्री नाहर —आप उपवास कितने दिन से कर रहे हैं ?

श्री गंगाराम—७-८ वर्ष से।

श्री नाहर —उपवास से पहले और बाद की स्थिति में आपको कोई अन्तर अनुभव हो रहा है ?

श्री गंगाराम—पहले शरीर में बीमारी थी, अब कोई कष्ट नहीं। दीवाली पर तेला व अन्य उपवास, बन सकती है वह सेवा। जैसी रसोई सामने आई, पा लेता हूं।

श्री नाहर —आपको सामायिक से कुछ अनुभूति हुई ?

श्री गंगाराम—सोते समय कभी-कभी मानवमुनि जी, गुरुदेव श्री नानालाल जी म. सा. सपने में आते हैं। उठने के समय पर अपने आप उठ जाता हूं, जैसे कोई हाथ पकड़ कर उठाए।

श्री नाहर —सपने में उन्होंने कोई आदेश दिया ?

श्री गंगाराम—थोड़ा सहारा मिलता है, बस। हम धर्मपाल माता-पिता श्री गणपतराज जी बोहरा व यशोदादेवी जी बोहरा को कभी नहीं भूल सकते।

श्री नाहर —आपके घर में सामायिक होती है ?

श्री गंगाराम—बच्चे थोड़ा कम करते हैं। सरमाते हैं, धंधा करते हैं।

श्री नाहर —क्या आपको व्यवसाय (लकड़ी का) में ईमानदारी से काम करने में कोई दिक्कत आती है ?

श्री गंगाराम—हम व्यवहारिक काम करते हैं और ईमानदारी से काम में कोई दिक्कत नहीं होती।

श्री धूलचन्द जी गरादिया गांव से वार्ता —

श्री वयाजी—आपके क्या कार्य है ?

श्री धुलजी - खेती, ३०० वीघा जमीन है। छह भाई है। जिस दिन से धर्म में आये हैं, जमीन संभलती नहीं।

श्री भंवरलाल जी —आप क्या-क्या धार्मिक क्रियाएं करते हैं।

श्री धुलजी —चौदस, अष्टमी, पर्युषण, दिवाली में तेला।

रतलाम आते, एकांतर उपवास करते ।

श्री नाहर —भाई वरधा जी, आपको प्रेरणा कैसे मिली ?

श्री वरधाजी—मैं इन्दौर चौमासे में गया था । लोगों ने कहा, जाओ । मैंने उसी रोज से १०८ मिणिया गिन कर नाम जप शुरू कर दिया । सामायिक का समय कब होता है मुझे पता ही नहीं लगता । अतः शाम को भी माला फेर लेता हूं । मेरी आयु ६५ वर्ष की है । दो लड़के हैं, एक मास्टर है, एक खेती करता है ।

श्री कोठारी जी—इन्होंने चौमासे में शीलव्रत ले लिया था ।

सोनेड़ा के श्री नानूराम जी से वार्ता—

श्री सूरजमल जी बच्छावत—आप कितने वर्षों से धर्मपाल हैं ?

श्री नानूराम जी—३–४ साल हुए हैं । सरदारशहर गए थे, वहीं प्रेरणा मिली ।

श्री बच्छावत—कितनी जमीन है ?

श्री नानूराम जी—८००–९०० बीघा ।

श्री नाहर —आपका खान-पान क्या है ?

श्री नानूराम जी—२०-२५ साल पूर्व से ही दारू-मांस छोड़ा हुआ है

श्री शंकरलाल जी, गांव उमरना, उम्र ५५ साल, खेती ६५ बीघा जमीन

कबीर पंथी, वर्षों से खान-पान शुद्ध, सारा गांव कबीर पंथी

प्रश्न—आपका खान-पान पहले से ही शुद्ध है, तो आप धर्मपाल प्रवृत्ति में क्यों आए ?

उत्तर—वही मार्ग आगे श्री नानालाल जी म. सा. का हमें मिला कबीर पंथी होने से बलाई का टीका नहीं मिटा । अब धर्मपाल हो गये, बलाई का टीका मिटाने के लिये । अभी ५ साल से इस प्रवृत्ति में आये हैं ।

श्री कोठारी जी—कोई विशेष अनुभव ?

उत्तर—महाराज श्री ने कहा, ११ बार महावीर स्वामी, महावीर स्वामी बोलने से विशेष लाभ होगा, इस बात को मैंने पकड़ लिया और रोज करता हूं ।

क्या भूलूं क्या याद करूं !

● श्रीमती धन कुंवरी कांकरिया

हम आज आये, धर्मपालों के गांव
बहुत दिनों की थी अभिलाषा, पूर्ण हुई है आज पिपासा ।
जिनका जीवन था अंधियारा, चम-चम चमके जैन सितारा ।
नन्हें-नन्हें बच्चों में हैं कैसे धर्म संस्कार । हम आज आये० ।
नाना गुरु ने बाग लगाया, बोहरा जी ने जल बरसाया ।
अध्यक्ष महोदय का त्याग है आला, कांकरिया जी ने कर्तव्य पाला ।
कोठारी जी कोठा भर-भर, करें धर्म का काम ।। हम आज आये० ।
विजया बहिन के गुण मैं गाऊं, बहिन यशोदा के कार्य सराऊं ।
धर्मपालों की माता बन कर, चमकी गगन में आज ।। हम आज आये० ।

धर्मपाल यात्रा में गये मुझे करीबन एक वर्ष होने आया है पर उन दिनों की स्मृतियां आज भी मेरे मस्तिष्क में आती हैं तो मैं समय के इतने बड़े अन्तराल को विस्मृत कर देती हूं ।

मैंने धर्मपाल भाई-बहिनों के बीच अनेक अच्छी-अच्छी बातों का अनुभव किया । उन सब में मुझे उनकी पानी छान कर पीने की आदत बहुत अच्छी लगी । वे माताएं खूब मोटे गाढे कपड़े से पानी छानती हैं । कुंए से पानी भर कर लाती हैं तब वे बड़े विवेक से पानी छानती हैं । मुझे उनके यहां के पानी में जो स्वाद मिला, वह न तो बादाम, काजू की बर्फी में मिलता है, न अन्य पेय पदार्थों में ।

धर्मपाल भाई-बहिनों के कुशल व्यवहार और आध्यात्मिक प्रेम सम्बन्धी अनेक स्मृतियां मेरे मन और मस्तिष्क में उठ रही हैं पर क्या भूलूं, क्या याद करूं ? यही सोच मैं जिनदेव से प्रार्थना करती हूं कि हमारे जीवन में ऐसे अवसर बार-बार आयें । हम उन भाईयों के क्षेत्र में शिविर आदि का आयोजन कर अपने समाज-सेवा और धर्मसेवा के दायित्व को निभाएं । ०

मेरे जीवन का शुभ प्रसंग

● स्व. श्री चांदमल पामेचा

अप्रैल १९७५ की धर्मपाल क्षेत्र की उस पदयात्रा का शुभ प्रसंग मेरे जीवन में भी आया। धर्मपाल भाइयों के अगाध स्नेह को अपनी लेखनी से व्यक्त करने में मैं अपने आपको असमर्थ पा रहा हूं। सचमुच ! कितना प्रगाढ प्रेम था उनके मानस में। धर्मपाल क्षेत्र में जहां-जहां भी हम पहुंचे, अपार जनसमूह हमारे स्वागत के लि उमड़ पड़ता। जगह-जगह स्वागत गान सुन कर हम भाव-विभोर जाते। बालक-बालिकाओं के कलकण्ठ से सुमधुर स्तवन एवं भक्ताम का पाठ सुन तथा अपार जनमेदिनी को देख हमारे मन में प्रभु मह वीर के समवसरण की कल्पना साकार हो उठती।

इस पदयात्रा में धर्मपाल भाइयों के धैर्य और साहस के गुणों से मैं बहुत प्रभावित हुआ।

इस धर्मपाल यात्रा में मैंने संघ प्रमुखों और धर्मपालों में जैसे आदर्श मूल्यों को देखा उनकी स्मृति से दिल आज भी गद्गद् हो जाता है। यात्रा में बहनों ने पैदल चल कर धर्मपाल बहनों में जागृति लाने के लिए जिस प्रकार का कदम उठाया, वह सचमुच बड़ा सराहनीय है।

महान यात्रा का महान फल

● श्रीमती विजयादेवी सुराणा

मालवा क्षेत्र की महान् धर्म-जागरण पदयात्रा में जाने की तमन्ना मेरे से अधिक मेरे पतिदेव की थी । कलकत्ता कार्यकारिणी बैठक में तय होते ही वे हर क्षण, हर सहधर्मी भाई-बहिनों को प्रेरित करते थे कि पदयात्रा में चलिये, एक वक्त चल कर देखिए । मुझे बड़ी चिन्ता थी कि इस भारी शरीर में चल पाएंगे या नहीं । साथ ही यात्रा के १५ दिन पूर्व अचानक गिर जाने से उन्हें काफी चोट भी लगी थी, चलना तो दूर, उठने में भी काफी तकलीफ होती थी । हम लोगों ने कहा— "आप कैसे पद-यात्रा करेंगे," तो उत्तर मिलता था—"कुछ भी हो, हम तो पदयात्रा करेंगे ।" दृढ संकल्प का चमत्कार देखने को मिला, एक सप्ताह में काफी ठीक हो गये और पदयात्रा को चल पड़े ।

उज्जैन में धर्मप्रेमी श्रीमान् गोकुलचन्द सूर्या जी के यहां पहुंचे । विश्रांति के उपरांत वहां से दि० १ अप्रेल की रात्रि को खाचरौद पहुंचे । सभी श्री संघ के दर्शन कर अपार हर्ष हुआ । दि० २ अप्रेल को प्रातः पदयात्रा शुरु हुई । आनन्द का पार नहीं । सूर्य निकलने का समय बड़ा शोभायमान था,जैसे वह पदयात्रा देखने के लिये ही गगनमंडल में निकल आया हो । पदयात्रा का हर क्षण, हर कार्य अनुकरणीय व मनमोहक रहा । उसका लेखन मेरी शक्ति से परे है ।

सिरोड़ी गांव में हमारी वर्तमान अध्यक्षा श्रीमती फूलकुंवर-देवी कांकरिया एवं यशोदा माता तथा हमारी मंत्राणी आदि को ले कर धर्मपाल बहने रात्रि २।। बजे तक बैठी रहीं कि—"आज तो हम रात्रि जागरण करेंगे । देवगुरु के गुणगान करेंगे, आप सभी को हम

सोने नहीं देंगे।" बड़ा आनन्द आया। हमारी सहमंत्राणी कर्मठ कार्यकर्त्री धनकुंवरदेवी पग-पग पर कविता-गायन जोड़ती हुई चल रही थी।

महान पदयात्रा का महान् फल चिरस्मरणीय एवं भव-भव में तारणहार होगा। उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने का सौभाग्य प्राप्त कर हम कृतार्थ हुए। धर्मपालों के अपार उत्साह से हमें गहरा संतोष हुआ।

साथ ही, लौटते समय बालाघाट में समिति की मंत्राणी श्रीमती तारादेवी के घर पर मिलने गई तो देखती हू कि धर्मपाल क्षेत्र यहां पर भी खुला हुआ है। बंगाली कुर्मी, रावत, महाराष्ट्रीयन भाई-बहन सामायिक, सामूहिक प्रार्थना के साथ त्याग प्रत्याख्यान कर रहे हैं। करीब १५ जनों ने उपवास आदि किया तथा करीब २१ जैनेतर बहनें तपस्वनी तारादेवी के साथ ढाई सौ पच्चखान की तपस्या विधि सहित कर रही हैं। करीब ५१ जैनेतर लोगों ने भी शराब-मांस का त्याग किया है। बोलने के शब्दों को कार्यरूप में परिणत देख कर बड़ी खुशी हुई। पदयात्रा के समय धर्मपालों की याद आई। सोचने लगी-यदि इस प्रकार हर क्षेत्र के भाई-बहन कार्य क्षेत्र में कूद पड़ें तो भारतीय संस्कृति पुनः जाग उठेगी। स्वच्छ और शुद्ध वातावरण में प्राणी सुख शांति प्राप्त करेगा एवं पूज्य जवाहरलाल जी म. सा., पूज्य आचार्य श्री व गांधी जी का स्वप्न साकार होगा। यदि सही मायने में आपको भी आनन्द लेना है, तो वीर संघ योजना तथा आगामी पदयात्रा में नाम लिखाइये। ★

काश, दो चार दिन और साथ में बिताते

● श्रीमती फूलकुंवर कांकरिया

तत्कालीन अध्यक्षा

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

कलकत्ता

यों तो मैं धर्मपाल क्षेत्र में पहले भी दो बार जा चुकी हू परन्तु पैदल चलने का यह पहला ही अवसर था। पर गुरुदेव की कृपा से कोई तकलीफ नहीं हुई।

जब मैं धर्मपाल भाई-बहनों के साथ बैठती थी तो मुझे लगता कि अपने ही परिवार में बैठी हूं। जब उन लोगों के भजन सुनती तो इच्छा होती कि सुनते ही जाऊं, उठने की इच्छा नहीं होती थी। इच्छा होती भी कैसे? कितने मधुर स्वर में गाते थे वे लोग? उनके गाने का तरीका ही अलग था।

जब हम लोग उनके घरों में जाते तो देखते कि कितना साफ सुथरा घर है। कहीं भी गन्दगी नहीं, कहीं कोई चीज बिखरी हुई नहीं। पानी इतना शुद्ध कि मटकियों के ऊपर कपड़े का चन्दोवा बंधा हुआ है कि कहीं मच्छर न गिर जाए। वहां भी बहुत सी बातें सीखने को मिलीं परन्तु सब लिखना सम्भव नहीं है।

आज जब मैं अकेली बैठी धर्मपाल यात्रा के बारे में सोचती हूं, तब सारा दृश्य आंखों के सामने घूम जाता है।

ऐसी थी यह अद्भुत यात्रा। मन में आता है बहुत कुछ लिखूं पर क्या लिखूं, क्या नहीं, समझ में नहीं आता।

जब हम लोग प्रथम दिन ग्राम चौकी पहुंचे तो वहां के धर्मपाल भाइयों ने बड़े सुन्दर ढ़ंग से सबका स्वागत किया । ११ चौकियों पर पेंटिंग की हुई थी । सभी यात्रियों को चौकियों पर खड़ा करके तिलक लगा कर मालाएं पहनाई गईं । बहनें मधुर स्वर में बधावा गा रही थीं ।

गुमानमल सा. पधारोनी, अब तो आंखियां खोलोनी ।
धर्मपाल को गले लगावोनी, गुरुदेव के दर्शन कराओनी ।।

इसी तरह वे सब बहनों और भाइयों के नाम ले-लेक गीत गा रही थी । इस तरह उनके जोड़ने की कला देख कर मैं तो दंग रह गई ।

ऐसे ही ये हमारे सेठ साहब मियांचन्द जी सा. उन्होंने खूब सेवा की ।

जब मीटिंग शुरु होती संघ-मन्त्री श्री भंवरलाल जी कोठारी इतने अच्छे ढंग से सबको समझाते कि हम सब भाव-विभोर हो जाते ।

जब यात्रा का समापन हुआ, तब सबसे बिछुड़ने का मन में बहुत दुख हुआ । काश, दो-चार दिन और साथ में बिताते तो कुछ और सीखने को मिलता । यह यात्रा बहुत अच्छी रही ।

★
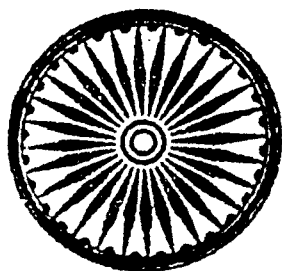
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

● श्रीमती सूरजदेवी चोरड़िया
अध्यक्षा—श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
जयपुर

पूज्य गुरुदेव स्व. आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. के जन्म शताब्दी वर्ष में पुनः आयोजित पदयात्रा का आमन्त्रण मिला। मैं स्वास्थ्य के कारण से हिचकिचा रही थी। प्रसंगवश उन्हीं दिनों डा० बोरदिया जी का जयपुर शुभागमन हुआ। उनके आश्वस्त करने पर मैं यात्रा में चल पड़ी। आज मैं सोचती हू वह जो स्वर्णिम अवसर मिला था, सचमुच बड़ा कीमती था।

प्रथम बार इस यात्रा के दौरान ही मैंने दो-दो, तीन-तीन मील की पैदल यात्रा की पर मैंने एक दिन भी थकान महसूस नहीं की। गांव-गांव में जा जाकर हम जब धर्मपाल भाई-बहनों से मिलते तो हमारे मन में उनके प्रति एक आदर की भावना जागृत होती। बातचीत के दौरान मैंने यह अनुभव किया कि धर्मपाल बहिनों में अब काफी जागृति आ गई है। वे बहिनें बड़े विवेक से अपने घर का काम करती हैं, पानी छान कर काम में लाती हैं, व्रत-प्रत्याख्यान करने का भी उन्होंने नियम ले रखा है। बच्चों को कुव्यसनों से दूर रहने और पति को सन्मार्ग पर चलने की भी वे सलाह देती रहती हैं।

खटीक और बलाई जाति की इन महिलाओं में परिवर्तन देख मैंने एक बहन से पूछा—बहन ! तुम्हें सही चलने की प्रेरणा कहां से मिली ? उसने तपाक से जवाब

बाईसा ! हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले, हम भूले भटके लोगों को राह दिखाने वाले नाना गुरु हैं। उनके उपदेशों से हमारा घर बन गया, जीवन सुधर गया। पहले हमारे घर वाले बीड़ी पीते, दारू पीते, जीव हिंसा करते थे। तब हमारे घर में खाने को अनाज नहीं रहता, तन ढकने को वस्त्र नहीं मिलता, आये दिन घर में बीमारी रहती। पर अब गुरुदेव की कृपा से हमारे घर वाले इन सब बातों से दूर हैं। शरीर भी ठीक रहता है रहने को मकान भी हैं। और आपकी कृपा से खेतीबाड़ी भी है।

बात ही बात में मैंने उनसे पूछा—तुम्हारा धर्म कौनसा है ? तो वह बोली—हम धर्मपाल जैन धर्म को मानते हैं। महावीर भगवान को मानते हैं और आगे बिना मेरे कुछ पूछे ही वे अपनी धार्मिक जानकारी मुझे देने लगीं। उनके जीवनानुभव की ज्ञानयुक्त चर्चा सुन मैं आत्मविभोर हो गई। मैंने मन ही मन गुरुदेव को नमस्कार किया और कहा—गुरुदेव ! आप अंधकार में भटकने वाली मानवता के लिए प्रकाशस्तम्भ हैं, भवसागर में डूबने वाली जीवन नैया को पार लगाने वाले हैं। आप धन्य हैं कि आपने धर्मपाल का उद्धार किया। सच है मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

★

धर्मपाल संपर्क

● श्री कन्हैयालाल बोथरा, रतलाम

धर्मपाल क्षेत्रीय पदयात्रा में सम्मिलित होने से मुझे धर्मपाल के साथ जीवंत सम्पर्क स्थापित करने का सुअवसर मिला। उन घर-गांव और चौपाल पर उन्हीं के बीच बैठ कर चर्चा-वार्ता कर पर हमें यह जानकर हार्दिक खुशी हुई कि उनमें अपूर्व उत्साह है हमारी यात्रा ग्रामीण जीवन की अनुभूति यात्रा थी।

बहुरंगी अनुभूतियां

● श्री नेमीचन्द चौपड़ा, अजमेर

जब कभी मैं संघ के साथियों से मिलता हूं, उस वार्तालाप में धर्मपाल प्रवृत्ति के सम्बन्ध में चर्चा अवश्य होती है। अतः जब धर्मपाल पदयात्रा का आमन्त्रण मिला तो मैं चल पड़ा। वहां मैंने धर्मपाल भाइयों की धार्मिक श्रद्धा को आंखों से देखा और हृदय से अनुभव किया। मैंने देखा कि अनेक धर्मपाल बन्धुओं का चरित्र-निर्माण हुआ है।

यात्रा से अमीर-गरीब का भेद मिट गया। निश्छल प्रेम और व्यवहार की सरलता तथा निःस्वार्थ सेवा के भाव धर्मपालों में प्रत्यक्ष देखने को मिले। यात्रा से समाज और धर्मपाल एकाकार हो गए।

धर्मपाल-परिवारों के बीच

● श्री नेमीचन्द मेहता, ब्यावर

वन्दन योगीराज नानेश को
है जीवन जिनका ललाम
संस्कार दिये प्रभु आपने
धर्मपालों में अभिराम

धर्मपाल पदयात्रा के निमित्त से हम उन धर्मपाल परिवारों

के बीच पहुंचे, जिनमें मैंने धर्म के प्रति जागृति व निर्माण तथा अपने जीवन को प्रशस्त बनाने की प्रबल भावना देखी थी।

वहां के दृश्य देख मन आनन्द से भर गया। धर्मपाल भ्राताओं के स्नेहिल और क्रियाशील जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

आचार्य श्री नानेश द्वारा पल्लवित, पुष्पित एव परिवर्धित इस धर्म-वाटिका में महकते इन चारित्र सुमनों का पराग लेने के लिए किस मधुकर का मन आह्लादित न होता होगा।

हमने देखा कि कितने ही धर्मपाल युवकों ने जैन-दर्शन का प्रशिक्षण प्राप्त किया है और अब वे धार्मिक पाठशालाएं चला रहे हैं। इन लोगों का मिलन हमारे लिए सौभाग्य का विषय था। हम इन्हें अपना वात्सल्य और सम्पर्क प्रदान करें, यही निवेदन है। ०

नित नया उत्साह

श्री वृद्धिचन्द पगारिया, आल

धर्मपाल पदयात्रा ने हमें धर्मपालों के जीवन में झांकने का सुअवसर दिया। जब हम यात्रा के पड़ाव पर पहुंचते तो धर्मपाल भाई-बहिनें उत्कृष्ट भावना लिए, सादे वस्त्रों में, आत्मीयता सहित कुंकुम-ढोल से बधाकर हमें अपने गांव में ले जाते। पूरे समय ग्राम सभा में बैठते और उठते ही फिर सेवा में जुट जाते।

इन भाइयों की सहनशीलता, धैर्य, पावन प्रेमलीला और जागरूकता देखते ही बनती थी। यात्रा से धर्मपालों में नित्य नया आनन्द जागता था। इन व्यसन मुक्त बान्धवों से मिलने का आनन्द अवर्णनीय है। ०

धर्मपालों से प्रेरणाएं

● श्री मदनलाल पीपाड़ा, अजमेर

इस पदयात्रा में मुझे धर्मप्रेमी धर्मपालों में धर्म के प्रति श्रद्धा, संयममय जीवन, उच्च विचार, मांस-मदिरा त्याग आदि के सराहनीय वातावरण को देखने का मौका मिला। आचार्य श्री के उपदेशों ने उनके जीवन का काया पलट ही कर दिया है। संघ कार्य-कर्ताओं ने उनकी बढोतरी के कार्य को प्रोत्साहित किया है।

धर्मपालों के आनन्द-विभोर करने वाले आचरण से हमें भी सहज प्रेरणाएं मिली हैं।

卐

जीवन साधना की यात्रा

● श्री लाभचन्द पालावत, जयपुर

मैं पदयात्रा के आखिरी दो दिनों में गया। आराम से पैदल चल सका. कुछ भी थकान महसूस नहीं हुई। सच में यह जीवन साधना की यात्रा है।

धर्मपालों के जीवन की उन्नति में यात्रा सहायक रही।

सहयोगी धर्मपाल

● श्री रखबचन्द कटारिया, रतलाम

पदयात्रा के दौरान भोजन व्यवस्था का दायित्व मुझे व मेरे साथियों को सौंपा गया था। हमारी व्यवस्था को सफल बनाने में धर्मपालों का भारी सहयोग रहा। इनके सहयोग से हमने सेवा का जो आनन्द लिया, वह अविस्मरणीय है।

नया वातावरण

● श्री सूरजमल मेहर, श्योपुरवाले

जावरा से रतलाम की पदयात्रा में सम्मिलित होने का मुझे भी सौभाग्य मिला। यात्रा की सफलता अभूतपूर्व थी। अलग-अलग प्रान्तों से आये स्वधर्मी बन्धुओं और धर्मपालों में परस्पर जो स्नेह, सम्पर्क व प्यार देखा वह एक नया अनुभव और नया वातावरण था।

इसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

स्नेह दान

● श्री नौरतनमल डेडिया, ब्यावर

संघ द्वारा आयोजित धर्मपाल क्षेत्रीय पदयात्रा स्वधर्मी बन्धुओं और धर्मपालों के बीच पारस्परिक स्नेह दान की यात्रा थी। धर्मपालों का बढता हुआ उत्साह और आत्म विश्वास हमारी बहुत बड़ी सफलता है।

चहुं ओर सुगन्ध ही सुगन्ध

● श्रीमती कोमल मूणत, रतलाम

पदयात्रा में चारों ओर आनन्द ही आनन्द था। जिस प्रकार चन्दन की लकड़ी काटने और जलाने पर भी सुगन्ध ही देती है। उसी प्रकार पदयात्रा में चहुं ओर सुगन्ध ही सुगन्ध थी। यह धर्मपालों के साथ हमारे धर्म-प्रेम की सुगन्ध है, यह सुगन्ध समाज जीवन को सुवासित करे, यही शुभकामना है।

नई चेतना और स्फूर्ति

● श्री केवलचन्द नाहर, ब्यावर

मैं पदयात्रा में इसीलिए सम्मिलित हुआ कि मुझे धर्मपालों को निकट से देखने की लालसा थी। धर्मपालों को पास से देखकर अपने ७५ वर्ष के जीवन में मैंने पहली बार अनुभव किया कि बलाई जाति के दलित माने जाने वाले लोगों में कितनी गहरी धर्म आस्था और श्रद्धा है। उन्होंने लगन और निष्ठा के साथ कुव्यसनों का त्याग किया है और गुरुदेव द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर बराबर आगे बढ रहे हैं।

मेरी भावना है कि धर्मपाल का यह वटवृक्ष निरन्तर फले-फूले। ०

धर्मपालों की आर्थिक उन्नति के दर्शन

★ श्री प्रेमराज सोमावत, ब्यावर

इस प्रकार की पदयात्रा द्वारा हमें गरीब जनता के घर–घर जाने और उनकी सम्भाल लेने का अवसर प्राप्त होता है। सच्चे अर्थों में यही मानव सेवा है।

१३० पदयात्री और १२५ स्वयंसेवकों के समूह में ब्यावर संघ के भी पन्द्रह सदस्य पहुंचे। हम वहां पहुंच कर अपने घर तथा व्यापार धन्धों के प्रपंचों को भूल गए। प्रकृति के शान्त वातावरण में हम गांव-गांव व घर-घर जाकर लोगों को संस्कारशील बनने की

प्रेरणा देते । इस प्रयास में हमने कभी थकावट महसूस नहीं की ।

मालव क्षेत्र में संघ द्वारा ७० पाठशालाएं चलाई जा रही हैं व उनमें प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा धर्मपाल बच्चों में पूर्ण जागृति लाई जा रही है । बच्चों को शुद्ध-प्रतिक्रमण, नवकार मन्त्र और थोकड़े आदि सिखाये जाते हैं । संघ ने हर समय इस क्षेत्र में धर्म प्रचार किया और इनकी समस्याओं को सुलझाया । इसी का फल है कि आज इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगी है । गांव की गृहणियों को भी संघ की महिलाओं व भाइयों ने सब तरीके से समझा कर धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी है । इससे बहुत सी महिलाओं का हृदय-परिवर्तन हुआ है और हजारों बहनों ने त्याग प्रत्याख्यान लिये हैं ।

धर्मपाल क्षेत्र में धर्म-जागरण पद-यात्रा का दैनिक कार्यक्रम अति व्यस्त और क्रमबद्ध था । जनता पर इस धर्म-गंगा का सच्चे माने में असर पड़ा और इसलिए धर्म-जागरण पदयात्रा को प्रति वर्ष अनिवार्य करने के निमन्त्रण आने लगे हैं । ०

प्रगाढ धर्म-श्रद्धा

★ श्रीमती सोरभकंवर मेहता, ब्यावर

हमको भी पदयात्रा में जाने का सुअवसर मिला । सभी धर्मपाल भाई-बहिनों से भेंट हुई । उनकी हमने अति धार्मिक रुचि देखी । उन धर्मपाल भाइयों के छोटे-छोटे बच्चों के मुंह से 'जय गुरु नाना' के नारे निकल रहे थे । सभी बच्चों ने महावीर की प्रार्थना व नाना गुरु की प्रार्थना गा गाकर सुनाई । सामायिक की पाटियां भी

उन्होंने सुनाई। इस प्रकार उनके दिल में धर्म के प्रति बड़ी श्रद्धा भक्ति देखने को मिली। 'सरसी' गांव में तो एक छोटे से बच्चे ने बहुत सुन्दर ढंग से नवकार मन्त्र का उच्चारण व भगवान महावीर की प्रार्थना सुनाई, जिसे सुन कर सभी दंग रह गये।

रघुनाथपुरा में तो 'भैरू जी' नामक धर्मपाल की इतनी धर्म पर श्रद्धा हुई कि उन्होंने अपना मकान भी समाज को भेंट कर दिया।

इस प्रकार उनका सम्पर्क पाकर अनुपम आदर्श की झलक हमें मिली। वस्तुतः इनका जीवन सुसंस्कारित बन रहा है। इनकी धर्म श्रद्धा बड़ी प्रगाढ़ है।

मैं पाठक भाई-बहनों से भी प्रार्थना करूंगी कि आप भी धर्मपाल भाई बहिनों के सन्निकट पहुंच कर उनके धार्मिक जीवन की श्रीवृद्धि में पूर्ण सहयोगी बनें। ०

धर्मपाल भाई-बहिनों से सम्पर्क

● श्रीमती गुलाबदेवी मूथा, जयपुर

मैं जब जयपुर से चली तब मन में सोचा था कि पदयात्रा में कैसे चल पाऊंगी? मगर पदयात्रा के दौरान मैं रोजाना ७-८ मील की पदयात्रा कर लेती। पता ही नहीं चलता, कोई थकान भी नहीं होती। यात्रा में हम धर्मपाल भाई-बहिनों के घर जाते। वहां जाकर कई बहनों व बच्चों से सम्पर्क साधते। उनके घरों में नाना गुरु की गूंज थी। उनके मन में यह तमन्ना थी कि हम आगे बढ़ें। उन्हें आगे बढ़ाने के लिए हमने कई व्यावहारिक व धार्मिक बातें बताईं जिससे वहां के भाई-बहन व बच्चे बड़े खुश हुए। ०

पदयात्रा के वे स्वर्णिम दिन

● श्रीमती सरोज खाबिया, रतलाम

मैंने अपने जीवन में बहुत सी यात्राएं कीं लेकिन पदयात्रा का मेरा यह पहला ही अवसर था तथा पदयात्रा के अनुभव आज भी मेरे हृदय पर अंकित हैं। मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मैं कभी पदयात्रा करूंगी, लेकिन वह स्वर्णिम अवसर मेरे हाथ लग ही गया।

धर्मपाल क्षेत्र की धर्म-जागरण पदयात्रा के वे स्वर्णिम दिन मेरे जीवन की एक महान् उपलब्धि है। यात्रा का अन्तिम रात्रि-पड़ाव रतलाम के बाहर था। तब प्रतिक्रमण के पश्चात् सभी ने प्रायश्चित्त लिए। यह देखकर तो मुझे अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि जो व्यक्ति, अपनी सत्य बात संत मुनिराजों के सामने कहने में सकुचाते हैं, वहां त्यागमूर्ति अध्यक्ष गुमानमलजी चोरड़िया के समक्ष प्रत्यक्ष खड़े होकर अपनी गल्तियां बताने व उनका प्रायश्चित मांगने लगे। सचमुच ! "आहा" कैसी अद्भुत बातें थीं वे।

सबसे ज्यादा आनन्द की अनुभूति तो सायंकाल ३-४ मील की यात्रा में 'अन्त्याक्षरी' करते हुए होती थी। किस तरह ३-४ मील हम चल लेते, इसकी अनुभूति हमें नहीं होती। समय बड़ी तीव्र गति से वीत गया और आखिर वह दिन आ ही पहुंचा जिस दिन हमें ब्यावर के लिए प्रस्थान करना पड़ा।

कैसी थी वह पदयात्रा जिसका चित्र मेरी आंखों के साम अब भी घूमा करता है, मेरे स्मृति पटल से एक मिनिट के लिए नहीं हटता। मैं तो यही सोचती हूं कि वापिस कब उस स्वर्णि पदयात्रा के दिन आएं और मैं सम्मिलित होकर उसी आनन्द व चरम सीमा पर पहुंच सकूं।

धर्मपाल नवयुवकों की द्वितीय पदयात्रा रैली

(दि. ३ जनवरी ७८ से ८ जनवरी ७८)

करोदा

से

जावरा

आज से ६ वर्ष पूर्व सम्पन्न इस रैली की एक झलक पाठकों को धर्मपाल क्षेत्र के 'नींव के पत्थरों' 'धर्मपाल-युवकों' की मनोदशा, उत्साह, साहस, कर्मण्यता और समर्पण के मनोहारी यथार्थ से परिचित करा सकेगी, इसी विश्वास के साथ उस समय छापे गए विवरण का संशोधित रूप प्रस्तुत है। रैली से संबंधित 'चित्र-वीथी' में देखिए।

मालवा के धर्मपाल क्षेत्रों में ११० धर्मपाल नवयुवकों की पांच दिवसीय साधना, सेवा और ग्राम सुधार पदयात्रा का आयोजन दि. ३ जनवरी ७८ से ८ जनवरी ७८ दलोदा से जावरा तक श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति प्रवृत्ति के तत्वावधान में किया गया था।

पदयात्रा में पांचों धर्मपाल क्षेत्रों के क्रमशः मक्सी के २२, नागदा-खचरोद के ३३, रतलाम के १५, जावरा के २७ एवं मन्दसौर के १४ इस प्रकार कुल ११० धर्मपाल नवयुवकों ने पांच टोलियों में अपने नायकों सर्वश्री रामरतन जी, मन्नालाल जी, शंकरलाल जी, गणपत जी व बगदीराम जी के नेतृत्व में यात्रा में भाग लिया।

ये युवक शुभ्र वेश में पंक्तिबद्ध होकर अनुशासित रीति से प्रयाण-गीत गाते और समाज सुधार के नारे लगाते हुए जब गांव-गांव से गुजरते थे तो युवाशक्ति का एक अभिनव स्वरूप जन-जन के मन में साकार होता था। हृदय आनन्द से उल्लसित होते थे।

इन युवकों ने ५ दिनों में ११ गांवों में १४ पड़ाव किए और प्रातः मध्याह्न रात्रि में प्रार्थना सभाएं, ग्राम सभाएं, भजन संगीत सभाएं, चर्चा-वार्त्ता एवं स्वाध्याय कार्यक्रमों के द्वारा स्वयं के जीवन का आदर्श उपस्थित करते हुए ग्राम्यजीवन में परिवर्तन की प्रेरणा प्रदान की।

रैली-शुभारम्भ व धुंधड़का प्रवेश दि. ३.१.७८

दलोदा की शुगर फैक्टरी के विशाल प्रांगण में संसद् सदस्य श्रीयुत् डा. लक्ष्मीनारायण जी पांडेय के शुभाशीषमय प्रेरक उद्बोधन से यात्रा प्रारम्भ हुई।

इस अवसर पर श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्रीयुत् पी. सी. चोपड़ा, जावरा श्रीसंघ के अध्यक्ष तथा जावरा एवं मन्दसौर क्षेत्रीय धर्मपाल प्र. प्र. समिति के संयोजक महोदयों तथा शुगर फैक्टरी के मैनेजर सा. ने भी सभी का उत्साह बढ़ाया।

धुंधड़का ग्राम में प्रवेश करते ही श्रीयुत् मन्नालाल जी भटेवरा के नेतृत्व में ग्रामवासियों ने यात्रियों का स्वागत किया। ग्राम भ्रमण के पश्चात् सभा प्रारम्भ हुई जिसमें मामाजी एवं मामीजी के सदुपदेशों व प्रयासों से उपस्थित जनों में से ४४ लोगों ने शराब त्यागने का संकल्प ग्रहण किया।

समाजसेवी श्री मानवमुनि जी ने भी सभी से कर्त्तव्यपालन के लिए संकल्पित रहने का अनुरोध किया।

घमनार व नगरी दि. ४.१.७८

रैली के घमनार ग्राम में पहुंचने पर श्रीयुत् हीरालालजी सा. के नेतृत्व में गांववासियों ने स्वागत किया। यहां रात्रि विश्राम और प्रात:कालीन प्रार्थना व स्वाध्याय के पश्चात यात्रीदल ने आगे बढकर नगरी में प्रवेश किया। ग्राम भ्रमण के पश्चात् शाला प्रांगण में सभा प्रारम्भ हुई। ग्राम प्रमुखों ने रैली को आशीर्वाद प्रदान किया।

नगरी की शासकीय माध्यमिक शाला के आचार्य महोदय ने रैली के शुभागमन को सौभाग्य मानते हुए नई प्रेरणा प्रदान करने के लिए आभार प्रकट किया।

पेटलावद और घतरावदा दि. ५.१.७८

पेटलावद में प्रात: प्रार्थना और स्वाध्याय के पश्चात् अपने संक्षिप्त प्रवचन में मानवसेवी श्री मानवमुनि जी ने राजा हरिश्चन्द्र का उदाहरण देते हुए सत्यवादिता अपनाने और महाभारत के महा-विनाश का उदाहरण देते हुए 'जुआ' जैसे दुर्व्यसन छोड़ने का अनु-रोध किया।

उन्होंने उपस्थित जनों से अत्याचारों का अहिंसापूर्वक विरोध करके वीरता अपनाने का आग्रह किया। आपने किसानों को 'गोसेवा' के महत्व से भी अवगत कराया।

माण्डवी और रोला में समारोह

रोला ग्राम में रात्रि ८ बजे रिंगनोद के ठाकुर सा. के सान्निध्य में पदयात्री नवयुवकों के सम्मान में एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया। श्रीयुत् हीरालाल जी मकवाना ने मंगलाचरण एवं श्रीयुत् कालूराम जी धर्मपाल ग्राम रठड़ा ने मधुर गीत सुनाए।

प्रमुख संयोजक श्रीयुत् समीरमल जी सा. कांठेड़ ने कहा कि प. पू. आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. ने दलितों को गले लगाने का जो सन्देश दिया है, आइये हम सब मिल कर इसे मूर्त रूप प्रदान करें।

श्री कांठेड़ ने बस्ती के निवासियों को उत्साह भरे अच्छे व्यसनमुक्त वातावरण का निर्माण करने के लिए हार्दिक बधाई दी।

उन्होंने श्रीमद् जवाहराचार्य चल-चिकित्सालय के गांव में आने पर उससे पूरा-पूरा लाभ उठाने का भी अनुरोध किया।

देश को ऊंचा उठावें

प्रमुख अतिथि पद से बोलते हुए रिंगनोद के ठाकुर सा. ने कहा कि दलितों को ऊंचा उठाकर हम देश को ऊंचा उठावें। उन्होंने धर्मपाल प्रवृत्ति को समझकर इसके पूरे सहयोगी बनने का अनुरोध किया।

गांव कैसे सुखी हों ?

श्रीयुत् भट्ट सा. ने कहा कि हमारे चिन्तन का मूल बिन्दु यह है कि-गांव कैसे सुखी हों ? मुझे इस प्रश्न का समाधान धर्मपाल प्रवृत्ति में मिल रहा है जो कुप्रथाओं और दुर्व्यसनों के उन्मूलन को प्रयत्नशील है। मैं समिति की सफलता की कामना करता हूं।

श्रीयुत् नाहटा जी व डा. श्री पारस जी ने भी ग्रामवासियों से बुराइयां छोड़ने का अनुरोध किया ।

यहां नौ हरिजन बन्धुओं ने शराब व जुआ आदि बुराइयां छोड़ने का संकल्प किया ।

इससे पूर्व माण्डवी ग्राम में नशाबंदी पर व्यापक चर्चा की गई ।

धर्मपालों के अनुभव रिंगनोद व बनवाड़ा दि. ६.१.७८

श्री कालुराम जी के मंगलाचरणपूर्वक दोपहर में ग्राम सभा प्रारम्भ हुई ।

गुणग्राहकता

आज श्रीयुत् समरथमल जी सा. डागलिया रामपुरा ने आत्मदर्शनपूर्वक सद्गुणों को ग्रहण करते हुए चारित्र निर्माणपूर्वक गुणग्राहकता को अपनाने का अनुरोध किया ।

उन्होंने अपने मधुर ओजस्वी स्वरों में दो गीत भी सुनाए । मक्सी के श्री रामुजी धर्मपाल ने भी अपना गीत प्रस्तुत किया ।

गुरुदेव की देन

प्रमुख संयोजक श्रीयुत् समीरमल जी सा. कांठेड़ ने कहा कि धर्मपाल प्रवृत्ति प. पू. आचार्य गुरुदेव की देन है । उन्हीं की कृपा से प्रवृत्ति और उसके कार्यकर्ता साधनारत हैं ।

उन्होंने धर्मपाल नवयुवकों से यात्रा के दिनों का पूरा लाभ उठाने का भी अनुरोध किया ।

इसके बाद पदयात्री धर्मपाल नवयुवकों ने भी इस अवसर

पर अपने अनुभव सुनाए ।

श्रीयुत् तुलसीराम जी ने कहा कि रैली से हमें भारी लाभ मिला है । मैं इस लाभ को सर्वत्र फैलाने का भरसक प्रयत्न करूंगा।

श्रीयुत् गणपत जी ने कहा कि हमें रैली से मानवता और उदारता की भावना प्राप्त हुई है ।

धमनार के श्रीयुत् शंकरलाल जी ने कहा कि रैली से मुझे अच्छी प्रेरणा मिली हैं और पूज्य गुरुदेव के उपदेशों का मर्म प्रत्यक्ष अनुभव करने का अवसर मिला है ।

छुआछूत मिटाव

विश्वविश्रुत ओजस्वी सन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी के हरिजनोद्धार सम्बन्धी कार्यों का स्मरण कराते हुए श्री रामलाल जी ने छुआछूत मिटाने का अनुरोध किया ।

बनवाड़ा ग्राम में आयोजित रात्रि सभा श्रीयुत् कालूराम जी रठड़ा के मंगलाचरण से प्रारम्भ हुई । प्रमुख संयोजक श्रीयुत् समीरमल जी सा. कांठेड़ ने धर्म की सेवा में बलिदान होने का आह्वान किया ।

श्रीयुत् डा. जोशी ने सामूहिक गुरुवंदन कार्यक्रम पर विशेष प्रसन्नता प्रकट की ।

टूटे न माला प्रेम की

मामा श्री पिरोदिया जी ने प्रेम की इस कड़ी को आगे जोड़ कर माला बनाने का आग्रह किया । उन्होंने चेतावनी के स्वरों में कहा कि सावधानी रखिए 'टूट जाए न माला कहीं प्रेम की ।'

प्रातः प्रवचन

इसी ग्राम में प्रातः प्रार्थना के पश्चात् प्रवचन करते हुए मानवसेवी श्री मानवमुनि जी ने आत्मशोधन पूर्वक पवित्र शांतिमय सुसंस्कारित जीवन-निर्माण करने की अपील की ।

नदांवता—दि. ७-१-७८ मधुर गीतों की गूंज

आज बीकानेर से संघ के सहमन्त्री श्री हंसराज जी सुकलेचा एवं वैरागी श्री जितेश जी भी पदयात्रा में सम्मिलित हो गए थे । सभा का प्रारम्भ दोनों सुधी गायकों के सुमधुर गीतों से हुआ । श्री जितेश जी ने "तुम भी बोलो जय प्रभु की" तथा सहमन्त्री जी ने "गुरुदेव तुम्हें नमस्कार बार-बार है" नामक गीत प्रस्तुत किये ।

प्रमुख संयोजक श्री समीरमल जी कांठेड़ ने सहमन्त्री श्री
लेचा जी के पधारने व श्री मानवमुनि जी द्वारा यात्रा के सुसंचा-
के लिए आभार प्रकट किया । उल्लेखनीय है कि युवकों को
ोपांत श्री मानवमुनि जी सत्संस्कारों की ओर उन्मुख करते

श्री कांठेड़ ने पदयात्रियों के विनय पर संतोष और हर्ष
रते हुए कहा कि मैं यथाशक्ति आपके सहयोग को तत्पर हूं
गा ।

र

ी मानवमुनि जी ने पदयात्री नवयुवकों व ग्रामवासियों से
रखने का अनुरोध किया । उन्होंने कहा कि हमें प्रगति के
पर पहुंचना है । इसके लिए नम्रता और विवेक

ी सुव्यवस्था और श्री धर्मपाल प्रचार प्रसार प्रवृत्ति

की अपनी पूर्ण क्षमताओं से सेवा करने के लिए श्री समीरमल जी सा. कांठेड़ का अभिनन्दन भी किया ।

जावरा के द्वार पर

यहां से पदयात्रा रैली जावरा नगरी के द्वार पर पहुंची । जहां 'ताल नाका' में विशिष्ट जनों द्वारा अगवानी की गई । इस अवसर पर सर्वश्री पी. सी. चौपड़ा, गणपतराज जी बोहरा, हंसराज जी सुकलेचा, सुरेश जी कांठेड़, मांगीलाल जी रांका, विरमावल ने अपने विचार व्यक्त किये व रैली की अगवानी की ।

सर्वश्री शंकर जी, कालूराम जी, हीरालाल जी, सीताराम जी व गणपत जी धर्मपाल ने गीत व अनुभव सुनाए ।

रतलाम और जावरा श्रीसंघों के प्रतिनिधिजनों ने भी विचार प्रकट किए ।

भव्य समापन समारोह

धर्मपाल नवयुवकों के मनोहारी नगर प्रवेश के दृश्य को जावरा वासियों ने उत्साहपूर्वक देखा । यात्रीदल जब पीपली बाजार पहुंचा तो जुलूस सभा में परिवर्तित हो गया ।

स्वागत

सर्वप्रथम प्रमुख अतिथि श्रीयुत् डा. लक्ष्मीनारायण जी पांडे संसद सदस्य, संघ अध्यक्ष श्रीयुत् पी. सी. चौपड़ा, समापन समारोह के अध्यक्ष श्रीयुत् गणपतराज जी बोहरा सर्वश्री डा. नंदलाल जी बोरदिया माणक भाई तथा मामाजी श्री चम्पालाल जी पिरोदिया का क्षेत्रीय संयोजकों, जावरा संघ के पदाधिकारियों तथा जावरा की विभिन्न सस्थाओं तथा नानेश नवयुवक मंडल, राजेन्द्र युवक मंडल, वर्धमान नवयुवक मंडल एव धर्मपाल प्रतिनिधियों श्री मूलजी भाई, सीताराम जी व शंकर जी द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया ।

मंगलाचरण के पश्चात् श्री पी. सी. चोपड़ा एवं प्रमुख स
जक श्री समीरमल जी कांठेड़ ने अपने भाव भरे भाषणों से अतिथि
का स्वागत करते हुए प्रवृत्ति की विशेषताओं का भी परिचय दिया

बटोरें नहीं, बांटें

डा. श्री नंदलाल जी बोरदिया ने धर्मपाल प्रवत्ति को हजारों
वर्ष बाद प्रारंभ हुई एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति बताते हुए आग्रह किया
कि हम बटोरने के स्थान पर बांटने का, त्याग का भाव धारण करें।

कमजोरों की मदद

जावरा नगर परिषद के अध्यक्ष मिर्जा गफ्फारअली जी ने
समाज के कमजोर वर्गो की मदद करने का आह्वान किया।

जैन एक अनूठा दर्शन

भूतपूर्व संसद् सदस्य श्री माणक भाई अग्रवाल ने जैन दर्शन
को अनूठा दर्शन बताते हुए धर्मपाल प्रवृत्ति को अपने निकट से देखे
व अनुभव किए गए कार्यो के आधार पर एक बड़ी महत्त्वपूर्ण योजना
बताया।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा

संसद् सदस्य व प्रमुख अतिथि डा. लक्ष्मीनारायण जी पाण्डेय
त्याग और भोग की दो प्रवृत्तियों की चर्चा करते हुए भारत की
कृति को त्याग प्रधान बताया। त्याग का लाभ दलित वर्ग को
ाने का अनुरोध और सभी के सुखी होने की कामना करते हुए
पाण्डे ने सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि
तु मा कश्चिद दुःख भाग् भवेत्' को आत्मिक एकाग्रता से अप-
का अनुरोध किया।

मूक प्रदर्शन

श्री गुमानमल जी चोरड़िया, जयपुर ने रैली को चरित्र का महान् प्रभाव डालने वाली मूक यात्रा बताया। उन्होंने मालवा के इस महान कार्य को शीघ्र पूर्णता प्रदान करने का निवेदन किया।

ये यात्राएं

संघ मन्त्री श्री भंवरलाल जी कोठारी ने कहा कि इन पदयात्री धर्मपाल नवयुवकों का मैं हृदय से स्वागत करता हूं। यह दल मालवा की इस भूमि पर जो नए युग की नई तीर्थ भूमि है एक मिशन लेकर चला था। यह मिशन था अन्त्योदय से सर्वोदय। इतिहास का नया निर्माण करना। जीवन विकास का अनवरत अभिनव प्रयास करना। संघ इसके लिए वर्षों से प्रयत्नशील है और आपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के हमारे प्रयासों को गति दी है। श्री कोठारी जी ने कहा कि ये पदयात्राएं व्यसनमुक्ति से विकारमुक्ति की यात्राएं हैं। धार्मिक जीवन और सदगुणों को धारण करने की यात्राएं हैं। जीवन को बदलने की अभ्यास-यात्राएं हैं, केवल दिखाने की यात्राएं नहीं।

अपने अनुभूतिजन्य शब्दों से यात्रीदल के मार्ग-संचरण का दृश्य साक्षात् की भांति श्रोताओं के मानस पर साकार करते हुए मन्त्री जी ने कहा कि कतारवद्ध धवल पदयात्रीगण जव बगल से निकलते थे तो आसपास के गांवों के लोग उनका अभिनन्दन करने आते थे। यात्रीगण समवेत स्वर में प्रयाण गीत संस्कार गीत गाते हुए आगे वढते थे। इस प्रकार धर्म के मूल तत्त्वों को जीवन में उतारने की ये यात्राए हैं।

इसी मार्ग पर हम भी अनुसरण करने वाले हैं। हम भी पदयात्रा के आचरणपूर्वक जीवन वदलनेका प्रयास करेंगे। संघ उद्देश्यों को साकार करने आगे वढेंगे। इसी क्षेत्र में धर्मजागरण, जीवन साधना और संस्कार निर्माण पदयात्रा में आप सभी से पुनः साक्षात्कार का विश्वास है।

विचार का स्वागत

श्री मानवमुनि जी ने आज के सभी धर्मों के स्वागत को धर्मपाल प्रवृत्ति के उदात्त विचार का स्वागत बताया ।

प्यार की जरूरत

श्रीमती यशोदादेवी जी बोहरा ने कहा कि धर्मपालों को केवल शिक्षा और प्यार की जरूरत है, हमें इन तक प्यार पहुंचाना चाहिए ।

मानव सेवा प्रभु सेवा

अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्रीयुत् गणपतराज जी बोहरा ने मानवसेवा को ही सच्ची प्रभु सेवा बताया । उन्होंने लालसाओं से अलग रह कर कर्त्तव्य भाव से काम कर पिछड़े भाइयों को आगे ला कर देश को ऊंचा उठाने का आह्वान किया ।

आभार

श्री वीरेन्द्र कोठारी ने गायत्री परिवार तथा समस्त सहयोगी जनों के प्रति आभार प्रकट किया ।

जयघोषों के साथ यात्रा सम्पन्न हुई ।

समता की अमर प्यास ने धर्मपाल बनाया

● श्री सीताराम धर्मपाल, नागदा

[श्री सीताराम राठौड़ ने प. पू. आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के रतलाम चातुर्मास में उनसे अपने बलाई समाज की ओर से सर्वप्रथम भेंट की थी। दर्शन-प्रवचन का लाभ लेते हुए हृदय में सहसा फैले ज्ञान के प्रकाश से उनके जीवन में आए युगान्तर-कारी परिवर्त्तन की सत्य कथा उनके भावों में यहां अंकित है। उल्लेखनीय है कि श्री सीताराम जी धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति, के स्थापना काल में ही सदस्य रूप में मनोनीत हो चुके हैं। आज भी प्रवृत्ति के प्रमुख कार्यकर्ता हैं —सं.]

मेरी जवानी के दिन थे। घर में लकड़ी का व्यापार था। भगवान की दी हुई दाल-रोटी बड़े मजे से मिलती थी। एक बार मैं अपने पिताजी के साथ व्यापार के काम से तिमरनी गांव में अपने आढ़तिये के यहां गया। हमारे प्रात:कालीन भोजन हेतु चौके में आगत-स्वागतपूर्वक दरी और पाटी बिछाई गई। सम्मानपूर्वक भोजन कर हम दुकान पर आ बैठे। वहां हमारे आढ़तिये ने मेरे पिताजी से पूछा-तमीं कुण जात ? उन्होंने सहज भाव से जवाब दिया – बलाई। हमारे चतुर व्यापारी आढ़तिये के चेहरे पर अनेक रंग आए और चले गए।

सायंकाल हम फिर भोजन के लिए घर पहुंचे। जहां जूते खोले जाते हैं, वहां फटे टाट के टुकड़े बिछा कर हमें भोजन परोसा गया। मैंने पिताजी से कहा यहां तो कुत्ते भी बैठना पसन्द नहीं

करेंगे। रहीम के ये शब्द मेरे कानों में गूंज उठे–'मान सहित मरिबो भलो' मैं पत्तल फाड़ कर उठ खड़ा हुआ।

मेरे मन में जहर घुल गया था। एक ही प्रश्न– 'तमी कुण जात ? और उत्तर 'बलाई'–मुझे पागल बना रहा था। बलाई शब्द के साथ जुड़ी हुई, युग–युग की घृणा साकार हो चुकी थी। घृणा की गठरी का बोझ मेरे लिए असह्य हो उठा। जी ने बार-बार चाहा मर जाऊं।

विचार आते जिस 'समाज में इतनी घृणा और विषमता है, जो दुत्कारता है, उससे क्यों चिपटूं ? कभी जी चाहता ईसाई बन जाऊं, मुसलमान बन जाऊं, बहाई बन जाऊं। मेरी जाति के अनेक लोग विधर्मी बन भी गए पर प्रबल संस्कारों ने मेरे पग बांध रखे थे। मैं असहाय सा विकल और छटपटाता व्यक्तित्व लिए जी रहा था।

तभी आचार्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म. सा. का रतलाम चातुर्मास हुआ। मैं भी वहां गया। उनकी समता की बातें मेरे जले मन पर मरहम जैसी ठंडक पहुंचाती थी। मैं उनकी चरण–शरण में मस्तक टिकाकर रो पड़ा। आचार्य श्री ने स्नेह और समता का विश्वास दिलाया। जैन समाज को भी हमारे सामने ही हमें अपनाने के कर्त्तव्य का ज्ञान कराया।

आज मैं धर्मपाल बन कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूं। मैं धर्मपाल बनने से पहले भी व्यसनमुक्त था और आज भी व्यसनमुक्त हूं किन्तु अब मेरे जीवन को समता की अमर और अतृप्त प्यास को मिटाने वाली समतामयी वाणी का नया सहारा प्राप्त हो गया है। जीवन में फिर से आशा और विश्वास जाग उठा है। ०

सोने रो सूरज

● श्री धूलजी भाई धर्मपाल, गुराड़िया

[गुराड़िया ग्राम के धूलजी भाई अपने समीपस्थ क्षेत्रों में 'जैन साब' के उपनाम से विख्यात हैं। इन्हें प्रथम धर्मपाल बनने का सौभाग्य प्राप्त है। ये धर्मपाल प्रवृत्ति के प्रमुख स्तंभ और समिति सदस्य हैं। प्रस्तुत है आप द्वारा विभिन्न सभाओं में दिए गए मालवो भाषणों का मूलभावयुक्त सरस हिन्दी अनुवाद। —सं.]

वह दिन आज भी मुझे भली भांति याद है, जिस दिन मेरे गांव की कांकड़ में परमपूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. पधारे थे और हमारे गांव में सोने का सूरज उगा था। हम दीन-हीन दलित लोगों को स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि इसी जनम में हमारा 'जमारा' सुधर जावेगा।

पहले दिन दिनांक २२ मार्च १९६४ को जो व्याख्यान सुना उससे हमारे दिलों में एक अजीब हलचल मच गई। दूसरे दिन हम सभी की प्रार्थना पर आचार्यश्री जी फिर गुराड़िया पधारे और हम लोगों को सात कुव्यसन छोड़ने और आचरण सुधारने का सदुपदेश दिया। इस पर मैंने कहा कि 'कैणो म्हारो यो है अन्नदाता कै, अमैं गामड़ा का गमार हां। म्हांनै धर्म रो सरल मारग बतावो"।

परम कृपा पूर्वक आचार्यश्री जी ने हमें उद्बोधन दिया और धर्मपाल नाम से संबोधित करके हमारे माथे से कलंक भरा बलाई का टीका मिटा दिया। हम लोग आज भी उसी राह पर मजबूती से चल रहे हैं। हमारी उन्नति में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का जो सहयोग है, वह भूला नहीं जा सकता। संघ के प्रमुख लोग हमें सम्हालने के लिए प्रवास करते हैं। स्थायी देखभाल

हम जिनधर्म के उपासक

❀ श्री रुघनाथ जी धर्मपाल, मक्षी

[मक्षी के नवनिर्मित समता-भवन ने छोटे से ६ वर्ष के कालखंड में अनेक उतार-चढ़ाव देखे है। कभी धर्मपालों की सामूहिक साधना और प्रार्थना के सहघोष से उद्घोषित तो कभी निर्जन सा प्रतीत होकर शांत और चुप, यह भवन श्री रुघनाथ जी की अविच्छिन्न साधना का मूक साक्षी है। पूरे मक्षी में इसी साधना के बल पर श्री रुघनाथ जी समाज के सभी वर्गों के आदर और स्नेह भाजन हैं। पढ़िए उनके विचार। —सं.]

आजादी के लिए गांधी जी की लड़ाई चल रही थी। लड़ाई में आदमी सब कुछ भूल जाता है पर गांधी जी लड़ाई में भी हरिजनों को नहीं भूले। उन्होंने दलितों के उत्थान और हरिजनों के उद्धार को लड़ाई का एक हिस्सा बना दिया। हम लोग बलाई से हरिजन बन गए। तब भी गांव-गांव में कांग्रेस वाले आते थे। स्वराज और हरिजन की बातें समझाते ये। हमने ऊंचे उठने की कोशिश की पर सबने और एक साथ नहीं की। हम ऊंचे नहीं उठ सके।

हमारे इस मक्सी में ईसाई धर्म के प्रचारक आए। समता की प्यास लिए मेरे बहुत से भाई ईसाई बन गए। बहाई आए अनेक बहाई बन गए। आर्य समाजी आए उन्होंने ईसाई-बहाई को फिर से शुद्ध बनाकर 'आर्य' बना दिया। अनेक गुरुद्वारे में जाकर दाढ़ी और बाल बढाकर सिख बन गए। ये बदलाव और पीढी के भटकाव मेरी बूढ़ी आंखों ने प्रत्यक्ष देखे हैं, पर समाज को बदलते नहीं देखा।

तभी 'जयगुरु नाना' का नारा भी सुना। नित नए नारे सुनते सुनते नारों से मोह टूट चुका था, किन्तु जिस दिन श्री राजेन्द्र

लाल जी दलाल के मकान के दालान में स्वयं आचार्य प्रवर श्री नाना लाल जी म. सा. पधारे और उनके मुखारविन्द से सामाजिक समता की बात सुनी। मन में हलचल मची। उनके शब्दों में कोरा आश्वासन नहीं था। था एक आह्वान। व्यसनमुक्त, उच्च व आदर्श जीवन से ही समाज में उच्च स्थान प्राप्त होगा, प्रतिष्ठा व समता मिलेगी। सब बात समझ में आ गई।

तब का दिन और आज का दिन है। **बीस वर्षों में ऐसा एक दिन भी नहीं बीता कि सामायिक न की हो।** सामायिक तो रोटी पानी से भी बढकर जीवन की मूल जरूरत बन गई है। परिवार के सुधरे संस्कार आज प्रत्यक्ष फल दे रहे हैं। मेरे बच्चों में जो विनय, शिक्षा और अनुशासन है, वह पूरे मक्षी और आसपास के समाजों, यहां तक कि उच्चवर्णीय समाजों के मुकाबले भी गौरवमय है। यह सामायिक साधना इसी जीवन में सफल हो गई। अब परलोक सुधरने में कोई सन्देह नहीं।

हमारे समाज में परिवर्तन की कसमकस से गूजर समाज भी आन्दोलित हुआ। उन्होंने भी व्यसनमुक्ति की २९ सूत्री योजना प्रसारित की।

जो धर्मपाल समय की कसौटी पर अपने आचरण की परीक्षा देकर खरे उतर चुके हैं, उनसे आज हमारी मक्सी के वैष्णव भी छुआछूत नहीं मानते। इसलिए मेरा तो मेरे अपने बलाई समाज से निवेदन है कि सच्चे अर्थों में धर्मपाल बन आओ।

जब नानागुरु खेवनहार हैं
तो भय काहे का।

❀

हम धर्मपाल ध्वज के धारक

❀ श्री मोतीलाल पंडा, ताजपुर

[**श्री मोतीलाल पंडा इस क्षेत्र के जाने-माने सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ता हैं। आप इसी सुरक्षित सीट से विधान सभा का चुनाव भी लड़ चुके हैं। ओजस्वी वक्ता और संस्कारी शिक्षित परिवार के मुखिया श्री पंडा अति उत्कृष्ट धर्मपाल पाठशालाओं के संचालक और धर्मपाल प्रवृत्ति के निपुण प्रचारकर्ता हैं। भारत के वर्तमान गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी की उज्जैन से ताजपुर तक की पदयात्रा में आपने उनके समक्ष धर्मपाल प्रवृत्ति का तेजस्वी चित्र सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया था। निम्न पंक्तियों में पढ़िए उनके विचार। —सं.]**

हम ताजपुर के बलाई पीढ़ियों से कबीर पंथी हैं। पीढ़ियों से हम में से अधिकांश व्यसन मुक्त हैं किन्तु समाज में हमें समता नहीं मिली। हम खेती करते हैं। हम शिक्षित भी हैं। खुद मेरा सगा भाई शिक्षक है, शासकीय माध्यमिक शाला में। इतना कुछ होने पर भी हमें समाज से समता नहीं मिली।

स्वयं मेरा व्याकुल मन कितना तड़पा है। मैं खुद समता की चाह लिए क्या-क्या न बना? आज विगत जीवन पर दृष्टि डालता हूं तो उस रंग-बिरंगे जीवन पर स्वयं मुझको ही आश्चर्य होता है। आप सभी तो शायद मेरी कथा की सचाई पर भरोसा करने में भी कठिनाई अनुभव करें।

मैं वही मोतीलाल हूं जो एक दिन अपमान से आहत होकर मुसल्मान बनने पर उतारु हो गया था। मैंने वहाई आचरण को

हम दीवाने फिर मचल उठे

● श्री हीरालाल मकवाना, मक्षी

● श्री रामलाल धर्मपाल, मक्षी

[मक्षी क्षेत्र में दिन को दिन और रात को रात न समझते हुए, आंधी-तूफान की भांति विचरण कर धर्मपाल पाठशालाओं का जाल बिछाने, धर्मजागरण पदयात्राओं के स्वयंसेवक दलों का नेतत्व करने, धर्मपाल युवकों की रैलियों का आयोजन करने से लेकर संघ प्रमुखों के समक्ष धर्मपालों की समस्याओं को दृढ़ व मुखर भाव से प्रस्तुत करने में अग्रणी मक्षी के इन दो युवाओं के विचार पढ़िए वस्तुतः ये विचार समग्र क्षेत्रों के धर्मपाल युवकों की ओर से हैं :
— सं.]

शरीर पहले जैसा था, वैसा ही आज भी है, बल्कि उन जवानी के दिनों में अधिक ही बलवान था। पर मन में विचार की प्रेरणा नहीं थी। सत् संस्कारों के बीज नहीं थे। उन्नति की चाह थी पर दिखती कोई राह नहीं थी : परमपूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. मक्षी पधारे। हममें जो शक्ति निहित थी, उन्होंने हमें उस शक्ति की अनुभूति दी। हमारे पैरों में पंख लग गए। समता के सन्देश को गांव-गांव, खेड़े-खेड़े पहुंचाने के लिए हम आतुर हो उठे। श्री अ. भा साधुमार्गी जैन संघ ने हमें सहयोग दिया और साथ चल कर रास्ता बताया।

रात को रात और दिन को दिन न मानते हुए हमने गांव-गांव में घूम-घूम कर धर्मपाल पाठशालाएं खोलनी प्रारंभ की। पाठशालाओं के भवन नवकार मन्त्र के सामूहिक गान से गूंज उठे। धर्मपाल क्षेत्रों की १०० से अधिक धार्मिक पाठशालाओं से हजारों

छात्र, गांव की महिलाएं व प्रौढ़ तथा युवा जुड़ गए। सर्वत्र धर्मपाल की खुसबू फैल गई। इन शालाओं के विद्यार्थी भी धर्मपाल, शिक्षक भी धर्मपाल।

प्रौढ़ों में धर्माराधना बढ़ी। धर्म की प्यास बढी और संघ के दानीमानी महानुभावों ने सामूहिक धर्माराधना हेतु समता-भवनों का जाल बिछाना प्रारम्भ किया। इस क्षेत्र में फैले ये समता-भवन हमारे धर्मपाल समाज के, उत्कर्ष की प्रबल चाह और साधुमार्गी जैन संघ के आत्मीय उदात्त सहयोग के जागृत प्रतीक हैं।

श्री गणपतराज जी बोहरा द्वारा अपने अनुज स्व. श्री सम्पतराज जी बोहरा की स्मृति में प्रदत्त श्रीमद् जवाहराचार्य चल चिकित्सालय के साथ भी हम गांव-गांव घूमे। हमने युवकों की रैलियां और पदयात्राएं आयोजित करने हेतु संघ योजनाओं को मूर्त रूप प्रदान करने में स्वयं को भुला दिया, खपा दिया।

आचार्यश्री जी की प्रेरणा का विद्युत प्रवाह और संघ का सहयोग हमें कार्योन्मुख और उन्मत्त बना चुका था। किन्तु तभी शनैः नैः आचार्यश्री जी के, शिष्य समुदायों और संघ-प्रमुखों के विहार व ावास कम होने लगे। सम्पर्क के अभाव में हरा भरा लहलहाता ागीचा सूखने सा लगा। हम चिन्तित हो उठे।

सौभाग्य का विषय है कि संघ ने फिर धर्मपालों की सुधि ोर-शोर से लेने की ठानी है और महान् सौभाग्य की बात है कि ्मारे आराध्य आचार्य श्री नानेश स्वयं हमारे क्षेत्रों की ओर आ ्हे हैं।

हम धर्मपाल युवक एक बार फिर धर्मपाल प्रवृत्ति के पतझड़ को वसन्त में बदलने को मचल उठे हैं। फिर से वही तराना, जिसे हमारे नाना' को मुक्त गगन में गाने को स्वर थरथरा रहे हैं।

हमारे समाज का भविष्य उज्जवल है। धर्म के पथ पर चलने वाले सब भाई-भाई हैं। धर्मपाल समाज रचना को मूर्त स्वरूप प्रदान करने को हमारा पुरुषार्थ समुद्यत है। आइये स्वप्न को धरा पर साकार करें। ०

साधना सफल करें

❀ श्री जुगराज सेठिया

भूतपूर्व अध्यक्ष
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ
बीकानेर

[धर्मपाल गांव रानी-पीपलिया में जून ८१ में संघ अध्यक्ष के नाते प्रवास करते हुए श्री जुगराज जी सेठिया पधारे। उस समय दिए गए उनके प्रवचन का सार-संक्षेप प्रस्तुत है : यह धर्मपाल प्रवृत्ति के स्वरूप का अधिकारिक विश्लेषण है। यह सरल और संवादशैली का हृदयग्राही भाषण है। —सं.]

आदरणीय धर्मपाल बन्धुओ व बहिनों !

बड़ी खुशी है कि आप इस गरमी व धूप में भी यहां पधारे। आज सत्यनारायण जी की कथा हुई। प्रश्न यह है कि क्या सत्यनारायण जी को मांस-मदिरा चढ़ाई जाती है ? नहीं, दूध-दही-घी-शहद। तो फिर आप लोग क्यों खाते हैं ?

समाज के और आपके बीच दुराव ऐसी आदतों के कारण हुआ है जो सामान्यतः हेय मानी जाती है। आप ऐसी आदतों को छोड़ेंगे, तभी दुराव समाप्त होगा। सच तो यह है कि भारत में जाति प्रथा कभी नहीं रही। सभी भारतीय रहे। केवल मुसलमान आए जो विलीन नहीं हो सके, अन्यथा भारतीय संस्कृति समुद्र के समान सभी को समाहित करती रही। प्राचीन भारत में वर्ण थे पर वे जन्म पर नहीं, कर्म पर आधारित थे। जैन धर्म भी जाति प्रथा में विश्वास नहीं करता।

आपने जैनत्व को स्वीकार किया है पर आप सच्चे अर्थों में

जैनी तभी बनेंगे, जब सप्त कुव्यसन छोड़ कर अपने पैरों पर खड़े हो जावेंगे । तभी शेष समाज से एकत्व हो सकेगा । आप एकत्व प्राप्त करने को आतुर हैं, पर मैं आपको सलाह दूंगा कि इस कार्य में समय लगेगा, अतः अधीर मत होइये ।

आप अपना स्तर सुधारते जाइये कुछ समय में वैश्य बन जायेंगे, जैसे कि हम बन गए । सभी को मालूम है कि हम ओसवाल पहले राजपूत थे । आप भी इसी प्रकार धर्मपाल वैश्य हो जाएंगें । आपका और हमारा अन्तर मिट जाएगा ।

इस प्रवास में मैंने अनेक धर्मपाल भाइयों से बात की है । बहुत लोगों को अपने उद्धारक नानागुरु के विषय में पर्याप्त जानकारी नहीं है, ऐसा मुझे लगा । हम तीर्थ के पास हैं फिर भी उससे अपरिचित हैं । आप अपना आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ाइये ।

हम नानागुरु के अनुयायी हैं । उन्हीं की पुनीत प्रेरणा से धर्मपाल प्रवृत्ति चला रहे हैं । आपसे हम केवल प्रेम चाहते हैं । भ्रातृभाव चाहते हैं ।

जहां तक अनेक वक्ताओं ने तहसील स्तर पर छात्रावास खोलने की बात की है तो मेरा यही कहना है कि गंगा शिव के मस्तक से निकली और गंगा का जल लेकर फिर से शिव के मस्तक पर चढ़ाया जाता है । समाज की उन्नति के लिए रूपया भी समाज से एकत्र किया जाता है । अब आपका धर्मपाल समाज बन चुका है । आप स्वयं अपने स्तर पर पहल करें, हम भी भरसक सहयोग करेंगे ।

अन्त में यही निवेदन है कि जीवन उन्नत बनाने हेतु गुरुजी द्वारा बताए मार्ग पर दृढता और श्रद्धा से बढ़ते जाइये । ❀

जय जिनेन्द्र !

卐

इन से सीखें

• श्री केशरीचन्द सेठिया

★

भारत एक कृषि और धर्म प्रधान देश है। यहां अनेक ऋषि मुनि, मनीषी हुए हैं, जिन्होंने समकालीन परिस्थितियों के गहन चिंतन मनन के पश्चात् समाज और देश में फैली विषमताओं एवं सामाजिक कुरीतियों, वुराइयों को समाज से हटाने के लिए क्रान्तिकारी कदम उठाये।

जैनाचार्य श्री जिनदत्त सूरीश्वर जी ने एक लाख से भी अधिक लोगों को सुसंस्कृत किया। उन्हें जीने की कला सिखाई। मातृ जाति का आदर करना सिखाया। अहिंसा के सिद्धांत का महलों से झोपड़ों तक प्रचार किया। उसी श्रृंखला में जैनाचार्य श्री हीरविजय सूरी हुए जो मणिधारी के नाम से प्रख्यात हुए जिन्होंने आम जनता के अलावा अकबर जैसे प्रतापी सम्राट को भी अपने उपदेश से उपकृत किया। इन्हीं का प्रभाव था कि 'आइने अकबरी' में पोर्चुगीज पादरी ने अपने पत्र में लिखा था "अकबर जैन धर्म का अनुयायी है।"

उसी श्रृंखला में महान् आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. का नाम आता है। वहुत पुरानी वात नहीं, मार्च १६६४ की वात है। आप अपनी शिष्य मण्डली के साथ पदयात्रा करते हुए मालवा क्षेत्र के नागदा ग्राम में पधारे। उनकी यह एक ऐतिहासिक यात्रा रही। इसलिए नहीं कि जैन संत या जैनाचार्य का इस ओर कोई प्रथम विहार हुआ हो। जव आचार्यश्री को पता चला कि यहां पर वलाई जाति के लोग काफी संख्या में वसे हुए हैं। आर्थिक स्थिति से ग्रस्त वे सस्ते से सस्ता पेय, मनोरंजन के लिए, विस्मृति के लिए

ताड़ी और चरस प्रतिदिन पीते हैं। अन्ध विश्वास के शिकार देवो–देवताओं पर मूक पशुओं की बलि चढ़ाते हैं, नशे में धुत मार-पीट, गाली-गलौच, औरतों को पीटना आदि अनेक बुराईयां जिनमें घर कर गई हैं। अपने ही आप कुल्हाड़ी मार कर अपनी भली सी गृहस्थी को नरक से भी बदतर बनाए हुए हैं। यह सब सुन कर उन का हृदय द्रवित हो गया। दुर्लभ मनुष्य भव इस तरह निष्फल जाय, यह गवारा नहीं हुआ। किसी अदृश्य प्रेरणा ने इनको व्यसन-मुक्त करके जीने की कला सिखाने की प्रेरणा दी।

आपके उपदेश एवं प्रवचनों में जहां संस्कारी लोगों को वैराग्य की ओर मोड़ने की अद्भुत चुम्बक सी आकर्षण शक्ति है वहां असंस्कारी, पिछड़े लोगों में संस्कार, आत्म-विश्वास जगाने की भी चमत्कारिक शक्ति है। आपके प्रवचन में जहां उच्च जाति के लोग इक्कठे हुए, भील एवं बलाई जाति के लोग भी शामिल हुए। प्रभावकारी प्रवचन ने कुछ ऐसा जादू किया कि करीब सात सौ लोगों ने तत्काल कुव्यसन-शराब-मांस एवं शिकार आदि का त्याग किया। लोगों की हृदय से की गई विनती एवं महान् उपकार को देखकर आचार्यश्री के चरण आगे नहीं बढ़ सके। गुराड़िया गांव आदि के लोग धन्य हो गये। उनका हृदय खुशी से बांसों उछल रहा था। वे उल्लास से विभोर हो उठे। उनके नयनों से अश्रुओं की धारा बह चली। दोनों हाथ जुड़े के जुड़े रह गये। मस्तक श्रद्धा से झुक गया। ग्रामीण परिवेश की शोषित, दलित औरतें तो-निहाल हो गईं, लगा कोई उनके जीवन में सुख-शांति फैलाने के लिए मसीहा आ गया है।

वे व्यसनमुक्त हुए, लेकिन उच्च जाति के लोग उन्हें बलाई नाम से सम्बोधित करते थे। उन्हें हीन दृष्टि से देखते थे। उनकी परछाई से परहेज करते थे। उन्होंने जब अपनी व्यथा बताई कि उनके साथ बहुत अन्याय हो रहा है तो आचार्यश्री के मुख-मण्डल पर गम्भीर रेखाए खिंच गई, उनका यह दर्द सच्चा दर्द था। उनकी यह

प्रार्थना सच्चाई से ओतप्रोत थी । आचार्यश्री के मुख से निकला-तुम अपने को आज से "धर्मपाल" सम्बोधित करो । ध्यान रहे, इस नाम की सार्थकता तुम्हारे हाथ है । नाम क्या मिला उन्हें तो वरदान मिल गया । उपस्थित लोगों की आंखें चमत्कृत हो गईं । आनन्द और उल्लास छा गया । लोगों को लगा जैसे कहीं से देवदुंदभी बजी है । 'धर्मपाल' 'धर्मपाल' 'धर्मपाल' ।

धीरे-धीरे सैंकड़ों हजारों लोगों ने अपने को 'धर्मपाल' कहना प्रारम्भ कर दिया । नाम क्या मिला, परिवर्तन की एक जीवंत दिशा मिल गई । गुरुचरणों में नत-मस्तक हो बोल उठे- "गुरू गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूं पाय । बलिहारी गुरू आपकी, श्री गोविन्द दियो बताय ।,

व्यसनों को त्यागते ही उनके स्वास्थ्य में परिवर्तन आने लगा । ठर्रे से भीगी मांस-पेशियों में फिर से स्पंदन होने लगा । मुख पर कार्य करने की भावना तरंगित होने लगी । नया जीवन जीने की भावना जाग उठी । दो समय खाने को तरसते बच्चों को थोड़ा दूध भी मिलने लगा । औरतों के जेवर छूटकर आ गये । टूटी-फूटी हांडियों का स्थान धातु कीं तपेलियों ने ले लिया । शराब और ताड़ी में खर्च होने वाला पैसा घर गृहस्थी में खर्च होने लगा । बच्चे स्कूल जाने लगे । शोषण और अत्याचार से मुक्ति मिली । वे नित्य अपने आराध्य की माला फेरने लग । नवकार महामन्त्र का जाप और सामायिक करने लगे । यह सब परिवर्तन किसी जादू की छड़ी से नहीं हुआ । एक महान् साधक की साधना का फल था कि जिसकी वाणी हृदय के अंतस्थल को छू गई ।

उनके जीवन में तो क्रान्ति आ गई । गुरु कृपा से वे तो सुधर गये । उनमें सर्वांगीण सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक चेतना आ गई ।

१४ तुलसीगम स्ट्रीट, मद्रास—६०००७६

सचित्र-धार्मिक कथाएं

दामनक-कथा

□ श्रीमती सुधा खाब्या

△

राजगृह में एक धनाढ्य सेठ रहता था। उसके दामनक नामक एक पुत्र था। दामनक के आठ वर्षीय होने पर उसका परिवार महामारी की चपेट में आ गया। नागरिकों ने यह देखकर रोग फैलने के भय से उसके घर को चारों ओर से बन्द कर दिया। जिससे सभी परिवार-जन मृत्यु को प्राप्त हो गये किन्तु दैववशात् नामक किसी प्रकार वहां से निकलने में सफल हो गया तथा भीख मांग कर पेट भरने लगा।

एक रात वह तीव्र सर्दी में एक दूकान के बाहर सोया हुआ था उसी समय दूकान का मालिक सेठ सागरदत्त वहां आया और दामनक पर दया करके उसे अपने यहां नौकर रख लिया। दामनक ने भी मेहनत एवं ईमानदारी से सेठ को पसन्न कर लिया।

एक वार दैववशात् दो साधु उधर से निकले और दामनक को लक्षित कर कहा कि 'यह बालक जो आज एक रोटी के लिए टुकर-२ देख रहा है, वही कुछ दिनों में इस घर का मालिक बनेगा।' मुनि के इन वचनों को सागरदत्त ने सुन लिया तथा अनेक विचारों में लीन हो कर सोचने लगा मैं अपने पुत्र को छोड़ कर इसे गृहस्वामी नहीं बनाऊंगा। ऐसा विचार कर एक चाण्डाल को बुलाकर दामनक को मारने की आज्ञा देकर कहा—कि—जंगल में ले जा कर इसका वध कर दो तथा इसकी आंखें निकाल मुझे दो।' यह आदेश प्राप्त कर चाण्डाल दामनक को जंगल में ले गया किन्तु उसकी भोली मुखाकृति को देखकर उसे दया आ गयी और उसने उसे छोड़ दिया तथा सेठ को हिरण की आंखें ले जाकर बता दी। जिससे सेठ ने सन्तुष्ट होकर उसे इनाम दिया।

इधर दामनक चलता २ एक जंगल में पहुंचा । वहां ए गोपालक ने उसे देखकर उसका परिचय पूछा । तब दामनक ने उसे कहा कि मैं अनाथ हूं । उसके वचनों को सुनकर गोपालक ने मित्रवत् अपने पास रखा ।

कई वर्षों बाद एक बार सेठ सागरदत्त उस गांव में आ और युवक दामनक को देखकर उसका परिचय पूछा । तब लोगों बताया कि 'यह अनाथ है तथा हमें जंगल में मिला था । गोपाल ने इसे प्रेमपूर्वक पाल पोसकर बड़ा किया है ।' यह सुनकर सेठ को व घटना याद आ गई और उसे विश्वास हो गया कि यह वही दाम है जिसको मैंने मरवाया था किन्तु यह किसी प्रकार बच गया है लेकिन अब यह नहीं बचेगा ।' तब सेठ ने एक पत्र लिखकर गोपाल को दिया और कहा कि 'मैं अपने घर एक वस्तु भूल आया हूं । आ यह पत्र लेकर इस को मेरे घर भेज दो जिससे यह वह वस्तु

आएगा । रहस्य से अनभिज्ञ गोपालक ने यह पत्र दामनक को दिया और दामनक उसे लेकर नगर की ओर चल पड़ा ।

नगर के समीप पहुंच कर वह एक उद्यान में थकान के कारण विश्राम लेने रूका और ठंडी २ हवा में उसे नींद आ गई ।

इसी बीच सेठ सागरदत्त की पुत्री विषा देव पूजा के निमित वहां आई और दामनक को देखकर मोहित हो गई । वह उसका परिचय प्राप्त करने के लिए उसके जागने की प्रतीक्षा में वहीं बैठ गई । वहां बैठे २ अचानक उसकी दृष्टि दामनक के हाथ में पकड़े पत्र पर गई जिसे देखकर जिज्ञासावश उसे खोलकर पढ़ा । पत्र पढ़ते ही उसने सोचा कि 'इसे तो पिता ने मेरे भाई के पास मेरे घर भेजा है किन्तु यह क्या ? इस पत्र में तो पिता ने भाई को आदेश दिया है कि इसे तुरन्त विष दे देना । अब क्या करूं ? जिसका मैंने मन से वरण किया है उसे मरने नहीं दूंगी ।

इस प्रकार काफी सोच-विचार के बाद उसने बड़ी कुशलता से 'स्वागत सत्कार कर भोजन कराकर विषा दे देना' के स्थान पर 'स्वागत सत्कार कर भोजन कराकर विष दे देना' लिख दिया । ऐसा करने के पश्चात् वह तुरन्त घर चली गई ।

नींद से जागने पर दामनक पत्र लेकर सेठ के घर गया तथा पत्र श्रेष्ठी-पुत्र को दे दिया जिसे पढ़कर श्रेष्ठी-पुत्र प्रसन्न हुआ और शीघ्र ही बड़ी धूमधाम से अपनी बहिन विषा का विवाह उसके साथ कर दिया ।

इधर जब सेठ घर आया तो यह विपरीत कार्य देखकर बहुत दुःखी हुआ । दामनक के जामाता बन जाने पर भी सेठ अपनी पुत्री के वैधव्य की चिन्ता न कर उसे मारने के उपाय सोचने लगा । अन्त में काफी सोच-विचार के बाद बहुतसा धन देकर नौकरों से कहा कि मौका मिलते ही इसे मार देना ।

एक बार दामनक अपने मित्र के यहां नाटक देखने गया । वहां से आधीरात को लौटा तो दरवाजा बन्द देखकर उसने सोचा कि

'अभी सब की नींद खराब करने से अच्छा है मैं इस पलंग पर ही सो जाऊं।' ऐसा सोचकर वहीं लेट गया किन्तु खटमालों के कारण उसे नींद नहीं आई। अतः वह पुनः अपने मित्र के यहां नाटक देखने चला गया।

उसी समय दैववशात् सेठ का पुत्र नाटक देखकर आया और वहीं सो गया। दामनक को मारने की फिराक में रहने वाले नौकर ने उसे देखकर तथा उसे दामनक समझकर मार डाला। सुबह उठते ही शोर मच गया कि श्रेष्ठी-पुत्र को किसी ने मार डाला है। लोगों ने राजा से शिकायत करने को कहा किन्तु सेठ चुप रहा क्योंकि गल्ती उसी की थी।

कुछ दिनों बाद पत्नी से परामर्श कर दामनक को गृह-स्वामी बना दिया। तथा दामनक विषा के साथ आनन्द पूर्वक दिन बिताने लगा।

एक बार अपने भवन में आमोद—प्रमोद में लीन दामनक एक नाटक देख रहा था। उसी समय नर्तकों ने एक गाथा पढ़ी जिसे सुनकर दामनक को पूर्वजन्म का स्मरण हो गया। अतः प्रसन्न होकर उसने एक लाख स्वर्ण-मुद्राएं उसे दी। नर्तक ने प्रसन्न होकर पुनः वह' गाथा पढ़ी तो दामनक ने पुनः एक लाख स्वर्ण-मुद्राएं दी। तीसरी बार भी वैसा ही करने पर वहीं बैठे राजा ने उत्सुक होकर उसका कारण पूछा तो उसने कहा कि इस गाथा ने मुझे पूर्वजन्म का स्मरण करा दिया है। राजा के पूछने पर उसने अपना पूर्वजन्म सुनाया—

किसी समय गंगातट पर मछुए रहते थे। मैं भी वहीं रहता था। मैं हमेशा मछलियां पकड़कर अपना व अपने परिवार का भरण पोषण करता था।

एक बार भयंकर सर्दी में मैं मछलियां पकड़कर घर जा रहा था कि मार्ग में एक ध्यानस्थ मुनि को देखा। ऐसी सर्दी में उन्हें निर्वस्त्र देखकर मैंने उन्हें अपना जाल ओढ़ा दिया। रात भर मैं मुनि के बारे में सोचता रहा। सुबह जब मैं गंगातट पर पहुंचा तब भी वे उसी तरह खड़े थे। मुनि द्वारा ध्यान पूर्ण करने पर मैंने

श्रद्धावनत होकर प्रणाम किया। मुनि द्वारा पूछे जाने पर मैंने कहा कि मैं मछुआरा हूं। रात में आपको यह जाल सर्दी से बचाव के लिए ओढ़ा कर गया था। यह सुन साधु ने धर्मोपदेश दिया तथा प्राणिवध के दुष्परिणाम बताये जिसे सुनकर मेरे मन में हलचल मच गई तथा मैंने जीव हिंसा को त्यागने का निश्चय किया। मेरे निश्चय को सुनकर मुनि ने कहा कि 'यह तुम्हारा धन्धा है। अतः दृढ़ निश्चय करके नियम लो क्योंकि नियम ले कर तोड़ना अच्छा नहीं। तब मैंने कहा कि अब मैं यह घृणित कार्य नहीं करूंगा।' तब मुनि ने नियम दिला दिया और मैं जाल को फैंक कर घर आ गया। दो दिन बाद पत्नी ने मछली न पकड़ने का कारण पूछा तो मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उसे सुना दिया। जिसे सुनकर वह अत्यन्त क्रुद्ध हुई। उसकी आवाज सुनकर सभी स्वजन एकत्रित हो गये और मुझे समझाने लगे किन्तु मैं अपने नियम पर अडिग रहा।

अन्त में सभी लोग मुझे जबरदस्ती तट पर ले गये और गंगा में जाल डलवाया। विवश होकर मैंने तीन बार जाल डाला और ढीला छोड़ दिया जिससे मछलियां निकल गई। इस प्रकार जीवदया की भावना से मैंने मनुष्य आयु का बन्ध किया और यहां जन्म लिया। तीन बार मछलियों को छोड़ने से इस भव में तीन बार मेरी मृत्यु टली।

तत्पश्चात् दामनक ने जन्म का समस्त वृत्तान्त राजा को बता दिया। अहिंसा के प्रभाव को देख सभी चकित रह गये। अन्त में विरक्त होकर दामनक ने मुनिधर्म स्वीकार किया तथा वहां से मरकर देवपद प्राप्त किया।

★

सहायक आचार्य
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग, उदयपुर वि० वि०

करुणा :

दया की परीक्षा

□ श्री कमल सौगानी

△

सोलहवें तीर्थंकर भगवान् श्री शान्तिनाथ अपने पूर्व भव में मेघरथ नाम के राजा थे। एक दिन राजा मेघरथ सोने के सिंहासन पर बैठे थे कि इतने में एक शिकारी के डर से उड़ता हुआ सफेद कबूतर राजा की गोद में आ बैठा। पीछे-पीछे शिकारी राज भवन में आ पहुंचा और राजा से अपने शिकार की मांग करने लगा।

राजा ने कहा—'कबूतर तो मेरी शरण में आ चुका है, अब नहीं दिया जा सकता।'

यह सुनते ही शिकारी बोला—महाराज ! आप न्यायी होकर भी मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। दूसरे को वस्तु हड़प लेना कहां का न्याय है ? मेरा कबूतर दे दें, या फिर उतना ही मांस कहीं से लाकर दें।

राजा से उसके बदले में अपने शरीर का मांस देना स्वीकार कर लिया। एक तराजू के पलड़े पर कबूतर रखा गया और दूसरे पलड़े पर राजा ने अपने शरीर का मांस चढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। शरीर का बहुत सा मांस कट जाने पर भी पलड़ा बराबर नहीं हो रहा था। उसी समय शिकारी के स्थान पर एक देव ने प्रकट होकर कहा—महाराज ! मैं तो आपकी दया की परीक्षा कर रहा था। मुझे क्षमा प्रदान करें।

राजा का शरीर पहले जैसा हो गया। ०

स्टेशन रोड, भवानी मंडी—३२६५०२ (राज.)

जीवदया :

आत्म-चोट

□ श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

△

संसार में कई आदि जातियां है। ये आदिवासी अनपढ़, विज्ञान की दुनियां से दूर, जागरण के प्रकाश से पृथक' अपनी ही रूढ़ियों, परम्पराओं व धर्मों को जीते हैं।

ये अपनी बात के पक्के होते हैं।

चूंकि ये अज्ञान के अंधकार से ग्रस्त हैं इसलिए कई बार बड़ी-बड़ी गलतियां कर देते हैं।

भीखू में भी अज्ञान के एक नहीं, हजारों अंधेरे थे। जाति का भील था वह शराबी, कबाबी और निर्मन था।

वह सदा सुबह तीर-कमान लेकर घर से निकल जाता था और दिन भर घनघोर जंगलों में भटकता रहता था। शाम तक किसी न किसी जंगली जानवर को मार कर ले आता था और उसे पका कर खा जाता था उसमें उसकी पत्नी और तीन लकड़े भी शामिल होते थे ! कभी-कभी वह इतने पक्षी मार लाता था कि फिर दूसरों को बाटता था।

उसके पड़ोसी धर्मपाल हरखू को यह अच्छा नहीं लगता था। वह बार-बार भीखू को समझाता था कि "भीखू ! इन निर्दोष पक्षियो को मत मारा कर' · · अरे ! इन्हें जीवित पकड़ कर बाजार बेच आया कर, · · · उससे तुम्हारा पेट आसानी से भरा जायेगा।' · · · जीवहत्या पाप है · · · उनका आत्माएं तुझे दुराशीष देगी।"

भीखू हरखू को डांटते हुए बोला "मुझे वामण की तरह उपदेश मत सुना · · · · मैं पहले पक्षियों को जिदा पकड़ूं। फिर ...जार में बेचूं फिर धान लाकर पिसवाऊं·······मुझसे यह सब नहीं

होता ! आखिर भरना तो पेट ही है।'

"पेट राक्षस की तरह न भरकर तूं आदमी की तरह भर।"

मगर भीखू ने हरखू की बात को अनसुना कर दिया। वह जानबूझ कर हत्या करने लगा। हिंसा जैसे उसके जीवन का अंग बन गयी।

एक बार वह पक्षियों के छोटे-छोटे बच्चों को पकड़ लाया। बच्चे रोने लगे उन बच्चों के मां-बाप पक्षी उसकी झोंपड़ी को कर अत्यन्त ही मार्मिक करुण क्रन्दन करने लगे। चारों ओर कुरलाहट फैल गयी।

लोग बहुत सारे इकट्ठे हो गये। हरखू व अन्य जनों ने समझाया कि बच्चों को छोड़ दो भीखू ! देखो, वे कितनी पीड़ा से कुरला रहे हैं। इनके मां–बाप भी क्रन्दन कर रहे हैं।"

भीखू ने भड़क कर कहा—"मैं एक भी बच्चा नहीं छोड़ूंगा। यदि ये ज्यादा कुरलाएंगे तो मैं इन्हें भी मार डालूंगा।

क्रन्दन बढ़ता गया।

भीखू को क्रोध आ गया। उसनें तीर कमान निकाला। एक पक्षी को निशान बनाया और तीर छोड़ दिया। सनसनाता तीर चला।

एक जोर की मानवी अर्न्तनाद हुई। पक्षी उड़ गये।

भीखू लपक कर ऊपर गया। उसने देखा उसका तीर उसके बड़े लड़के के सीनें में धंस गया था और तीर दिल को चीर कर पीठ की ओर से निकल गया था। लड़का शांत हो गया था। उसके प्राण पखेरू उड़ गये थे।

भीखू चिल्ला कर उसकी लाश पर गिर गया और जोर-जोर से रोने लगा। उसकी पत्नी भाग कर आयी। वह अपने पुत्र को मरा हुआ देखकर सिर पीट-पीट कर रोने लगी।

देखते-देखते भीड़ इकट्ठी हो गयी।

लोगों ने भीखू को उठाया। पड़ौसी ने पूछा "क्यों रोते हो भीखू ?"

देख नहीं रहे मेरा बेटा मर गया है।" वह झल्लाया।

"अब सोचो भीखू ! तुमने कितने पक्षियों के बेटों को मारा है। देख-दूसरों की हत्या करते-करते आखिर तूने अपने बेटे को भी मार डाला न ?.......अब भी समझ ....ज्ञान की आखें खोल ताकि तेरा सर्वनाश न हो। जीव हत्या पाप है, हिंसा अपराध है।.......

और उसी दिन के बाद भीखू ने कभी भी जीव हत्या नहीं की।.......वह मजदूरी करने लगा बल्कि वह दूसरों को शिकार करने के लिए रोकने लगा।

जो आदमी दूसरों को मारता है, दरअसल वह स्वयं को भी मारता है। ०

—आशा लक्ष्मी, ईदगाह वारी के भीतर,
नया शहर, बीकानेर—३३४००१

जीवन-मूल्य :

मांस का चस्का

□ सुबुद्धि गोस्वामी

△

एक राजा था जिसे मांस खाने का बड़ा चस्का लगा हुआ था कोई दिन ऐसा नहीं जाता था जिस दिन उसके भोजन में मांस नहीं पकाया गया हो जो मांस वह खाता जीवित और स्वस्थ जीवों का होता था ।

राजा के मन्त्री को यह जीव हत्या पसन्द नहीं थी । वह नित्य कोई न कोई युक्ति सोचता कि किस तरह वह राज घराने में मांस का भोजन बन्द करे ।

एक दिन मंत्री ने अपने मन में साहस बटोर कर राजा से कहा 'महाराज, आखिर प्रतिदिन की यह जीव हत्या कब बन्द होगी ? वह दिन कब आयेगा जब यहां मांस पकना बन्द होगा ? अन्नदाता, मांस बहुत कीमती चीज है । उसे इस तरह लुटाना नहीं चाहिये ।"

मंत्री की यह बात सुन कर राजा हंसा । बोला—'मंत्रीवर ! मांस के बिना भोजन में स्वाद नहीं आता और फिर ऐसी मुश्किल भी क्या है ? हमारे राज्य में किस बात की कमी है ?"

"महाराज स्वेच्छा से मांस देना कोई पसन्द नहीं करता । मांस का भी वही मूल्य है जो हमारे जीवन का । क्षमा करें तो एक एक बात कहूं ।" मंत्री ने कहा !

हां, कहो—राजा बोला ।

'भगवान न करे यदि आप बीमार पड़ जायें और मरणासन्न हो तब भी दूसरों की तो बात छोड़िये आपके परिवार के लोग भी

आपको दो तोला मांस आपका जीवन बचाने के लिए नहीं दे सकते। यदि आपको विश्वास नहीं हो तो मैं यह बात आपको सिद्ध करके बतला सकता हूं।'

'हमें मन्जर है, मगर सिद्ध नहीं कर सके तो तुम्हें देश निकाला दे दिया जावेगा।' राजा ने कहा।

'मुझे मन्जर है महाराज! किन्तु इसके लिए आपको कुछ दिनों के लिए झूठ-मूठ ही बीमार बनना पड़ेगा। मंत्री ने कहा।

राजा ने मंत्री की वात मानली। दूसरे दिन राज-घराने में राजा की बीमारी की बात फैला दी गई। दूर-दूर से राजा के रिश्तेदार देखने आये।

वैद्यजी के अतिरिक्त किसी को भी बीमार राजा से मिलने

क्षमा :

दादू की क्षमा

□ डॉ. भैरूंलाल गर्ग

△

सन्त दादू एक बार नई जगह पहुंचे । नगर से दूर जंगल में ठहर गये । ज्यों-ज्यों लोगों को पता लगा त्यों-त्यों वे जंगल में आकर ही प्रभु-भक्ति का अमृत पीने लगे । शहर के कोतवाल ने भी सन्त दादू के आने की बात सुनी । उसके मन में आया कि चल कर इस महात्मा के दर्शन करूं जिसकी प्रशंसा कितने ही लोग करते हैं । अपने घोड़े पर चढ़कर कोतवाल महोदय जंगल की ओर चल दिये । काफी दूर आ गये तो भी दादू महाराज का पता नहीं लगा । कुछ दूर जाने पर एक व्यक्ति दिखाई दिया—दुबला-पतला शरीर, केवल एक लंगोटी पहने वह झाड़ियों को साफ कर रहा था । कोतवाल ने उसके पास जाकर पूछा, "ओ भिखारी ! तुझे पता है कि सन्त दादू कहां रहते हैं ?"

उस व्यक्ति ने कोतवाल की ओर देखा परन्तु बोला नहीं । कोतवाल ने समझा यह बहरा है, चिल्लाकर बोला, "अरे मूर्ख, मैं पूछता हूं दादू कहां रहता है ?"

इस बार उस व्यक्ति ने कोतवाल की तरफ देखा भी नहीं झाड़ियों को काट कर फेंकता रहा ।

कोतवाल को क्रोध आया । जिस चाबुक से वह घोड़े को चलाता था उसी से उस व्यक्ति को मारने लगा । चाबुक से उस व्यक्ति के शरीर पर नीले-नीले निशान पड़ गये । इससे भी वह व्यक्ति नहीं बोला तो कोतवाल ने चाबुक का डण्डा उसके सिर पर दे मारा और चिल्लाकर कहा, "मूर्ख की औलाद ! हां या ना भी नहीं कह सकता ?"

परन्तु वह व्यक्ति फिर भी नहीं बोला उसके सिर से रक्त बहने लगा । उसकी ओर भी उसने ध्यान नहीं दिया ।

खून देखकर कोतवाल रूका, समझा यह व्यक्ति गूंगा और बहरा भी नहीं, पागल भी है। घोड़े को लेकर वह आगे बढ़ा थोड़ी ही दूर गया था कि एक व्यक्ति दूसरी ओर जाता हुआ मिला। कोतवाल ने उससे पूछा, "ओ जाने वाले ! तुझे पता है इस जंगल में सन्त दादू कहां रहते हैं ?"

उस व्यक्ति ने कहा, "आपको इसी मार्ग पर पीछे दिखाई नहीं दिये ? मैं तो अभी उन्हें देखकर आया हूं।"

कोतवाल ने पूछा, "कहां है वह ?"

उस व्यक्ति ने कहा, "इस रास्ते पर पीछे तो थे। लंगोटी पहने मार्ग की कांटेदार झाड़ियां काट रहे थे जिससे मार्ग में चलने वालों को कष्ट न हो।"

कोतवाल ने आश्चर्य से मुंह फाड़कर कहा, "कौन ? वह लंगोटी वाला दुबला-पतला-सा व्यक्ति ?"

यात्री ने कहा, "वही तो। वही महात्मा दादू है। आपने शायद उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, उन्हें पीछे छोड़ आये।"

कोतवाल ने जल्दी से घोड़ा मोड़ा। वापस उस व्यक्ति के पास पहुंचा जिसने अपने सिर पट्टी बांध ली थी। उसके पास जाकर बोला, "आप, आप क्या दादू हैं।"

उस व्यक्ति ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा, धीमे से बोला, "इस शरीर को दादू भी कहते हैं।"

कोतवाल जल्दी घोड़े से उतरा और उनके पैरों पर जा पड़ा। पश्चाताप भरी आवाज में बोला, "क्षमा कर दो महाराज ! मैं तो आपको गुरु धारण करने के लिए आया था।"

दादू ने उसे प्यार से उठाया, बोले, "तो फिर यह दुःख किस

लिए ? व्यक्ति साधारणतय घोड़ा खरीदने के लिए जाता है तो उसे ठोक-पीटकर देखता है कि वह कच्चा है या पक्का । तुम तो जीवन का मार्ग दिखाने वाला गुरु चाहते थे । तुमने यदि गुरु को ठोक-

पीट कर देख लिया इसमें हर्ज क्या है ? थोड़ी देर ठहरो । मैं यह झाड़ी परे फेंक लूं, फिर बैठकर बातें करेंगे । ये झाड़ियां और इनके कांटे मार्ग चलने वालों को बहुत कष्ट देते हैं ।"

जेल रोड, झालावाड़-३२६००१ (राजस्थान)

सहनशीलता :

गार्ग्य की सहनशीलता !

☐ कल्पना आंचलिया

△

एक बार महर्षि बोधायन अपने शिष्यों को लेकर वन विहार के लिए गये। अनेक प्रकार फल-फूल और प्रकृति के आनंदमय वातावरण का आनंद लेने के बाद सभी शिष्य थक कर चूर-चूर हो गये। कुछ जलपान करके घने वृक्षों की छाया में विश्राम करने के लिए वे महर्षि के पास आ बैठे। महर्षि उन्हें कथा कहते-कहते बौद्धिक ज्ञान की बातें बताने लगे। अनुशासन, शालीनता, नैतिकता, दृढ़ता तथा चरित्र की श्रेष्ठता के विषय में अनेक प्रकार की कथाएं सुनाते हुए महर्षि अपने शिष्यों का मनोरंजन करने लगे। धीरे-धीरे शिष्यों को नींद ने आ घेरा। सभी शिष्य इधर-उधर वृक्षों के तले छांव देख-कर विश्राम करने लगे। स्वयं महर्षि भी विश्राम करने लगे। दिन ढल आया तो महर्षि जागे और उन्होंने अपने शिष्यों को जगाया। तपोवन लौट चलने के लिए सभी शिष्य एकत्रित हो गए। लेकिन एक शिष्य गार्ग्य का अभी तक कहीं पता नहीं था। सभी शिष्य उसे खोजने लगे। महर्षि भी उसे खोजते हुए एक पेड़ के पास पहुंचे। वहां उन्होंने देखा कि गार्ग्य आराम से लेटा हुआ है लेकिन वह सो नहीं रहा था उसकी आंखें खुली थीं। महर्षि पास जाकर बोले—उठो गार्ग्य दिन ढल गया है। हमें आश्रम लौट चलना चाहिए।

गार्ग्य ने लेटे हुए कहा, "कैसे उठूं भगवन्, एक बड़ा-सा सर्प मेरे पांवों में लिपट कर सो रहा है। यदि मैं उठा तो [illegible] उठ जायेगा और उसकी नींद खराब हो जायेगी, इसलिए [illegible] वह स्वयं उठकर चला नहीं जाता, मेरा इसी प्रकार [illegible] है। अब तक अन्य शिष्य भी वहां आकर यह [illegible] कोई उसे साहसी कहता तो कोई शक्तिशाली। [illegible]

जागा, और पास ही एक झाड़ी में अपने बिल की ओर चला गया। गार्ग्य उठा तो महर्षि बोधायन ने उसे गले से लगाते हुए कहा—गार्ग्य एक दिन तुम्हारे शील की चर्चा विश्व के कोने-कौने में सुगंध की तरह फैल जायेगी। एक विषधर जीव के साथ भी तुम्हारा यह मानवीय व्यवहार प्रकट करता है कि तुम मानव के प्रति निश्चय ही शीलवान और दयावान रहोगे।'

शिष्यों ने बात सुनी तो आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। एक शिष्य मैत्रायणि ने तो पूछ ही लिया - "यह तो साहस का कार्य था भगवन्! आप गार्ग्य के साहस की प्रशंसा क्यों नहीं करते? इसके शील व दया का प्रश्न ही नहीं उठता।

महर्षि ने मैत्रायणि को समझाते हुए कहा—"वत्स, बिना

शील के साहस हो ही नहीं सकता । जिन मनुष्यों में शील और दया है, उनमें साहस पहले ही विद्यमान रहता है । यदि गार्ग्य शीलवान न होता तो भयभीत होकर सांप पर हमला कर बैठता और संभवतः उसकी हत्या भी कर देता । लेकिन भयभीत नहीं हुआ कारण कि उसमें साहस तो था ही, इसीलिए शील भी था । शीलवान होने के कारण ही अपनी शक्ति को उसने सहन करने में व्यवस्थित किया ।

०

—११६ देवाली, उदयपुर-३१३००१

व्यसन-मुक्तिः

सुबह का भूला

□ श्री कृष्णमोहन जोशी

△

किसी समय अवन्तिकापुरी में एक राजा शासन करता था। नाम था, 'शीलनिधि'। किन्तु नाम बड़े और दर्शन खोटे वाली बात है। उसमें शील का नितान्त अभाव था। सभी प्रकार के व्यसन उसमें घर किये हुए थे। शिकार का बड़ा शौक था महीने में लगभग १५ दिन वह शिकार के लिए इधर-उधर जंगलों में भटकता रहता। और तो और, साथ में उसका लवाजमा भी रहता जिसमें कई नर्तकियां रहती। शाम को थका हारा राजा शराब पीता तथा नर्तकियों के नृत्य का आनन्द लेता था। शेष १५ दिन वह शिकार में मारे गये पशुओं का मांस खाता था तथा राजमहल में वेश्याओं के रंग में डूबा रहता। सुरापन के दौर चलते। इस प्रकार वह व्यसनों से घिरा हुआ था।

किन्तु जब विपत्ति आती है तो कह कर नहीं आती। हुआ यों कि एक दिन नगर के मध्य से साधुओं की एक टोली गुजर रही थी जिसमें कुछ साध्वियां भी थीं। राजा महल की खिड़की से देख रहा था। अचानक एक सुन्दर साध्वी पर उसकी नजर पड़ी और वह कामातुर हो उठा। उसने अपने सैनिकों द्वारा उसे महल में बुला लिया और दुर्व्यवहार करने का प्रयत्न किया। साध्वी तपोबल युक्त थी। उसने राजा को शाप दिया कि एक महीने के भीतर-भीतर तुम्हारा राजपाट छीन जाएगा और वहां से चली गई।

कुछ दिनों बाद दिपावली आई। राजा का प्रारब्ध देखिये। राजा ने आड़ोस-पाड़ोस के सामंतों तथा पाड़ौसी राजाओं को आमन्त्रित किया। दीपावली के दिन राजा व सभी आमन्त्रित व्यक्ति जुआ खेलने लगे। शराब के नशे में उसने अपना राजपाट दाव पर लगा दिया

तथा पासे उल्टे पड़ने से वह हार गया। इस प्रकार उस साध्वी का शाप रंग लाया और वहां का राज्य रामसिंह ने, जो कि जुए में जीता था, संभाल लिया। राजा को दीपावली के दूसरे दिन राजपाट छोड़कर निकलना पड़ा किन्तु उसके मन का मैल अभी भी मिटा नहीं था। आदतें अभी भी वही थीं अतः वह उन आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से बड़ा दुखी रहने लगा।

एक दिन वह राजमहल में चोरी करने के इरादे से घुसा किन्तु इस कला में निपुण न होने से पहरेदारों द्वारा पकड़ लिया गया व राजा के सामने पेश किया गया किन्तु भूतपूर्व राजा होने के कारण उसे यातना नहीं दी गयी अपितु देश निकाला देकर छोड़ दिया गया भूखा-प्यासा, भटकता हुआ राजा दूसरे राज्य में पहुंचा। रास्ते के कांटों से उसके कपड़े तार-तार हो चुके थे। वह दूसरे राज्य में मजदूरी करके जीवन-यापन करने लगा। यहां का राजा दुर्जन सिंह

था । नाम भले ही दुर्जन सिंह हो, पर था वह गुणों की खान । उसके राज्य में सभी सुखी थे । कहीं चोरी या डाका नहीं पड़ता था । उसके राज्य में प्रजा भी धार्मिक स्वभाव वाली थी । कहा भी गया हैं "यथा राजा तथा प्रजा ।"

दिन बीतते गये शील निधि के मन का मैल धुलनें लगा । वह धर्म में रूचि लेने लगा । तभी पर्यु षण पर्व आया । सारे नगर में उन दिनों काफी चहल-पहल रहती थी । लोग स्थानक-उपाश्रम जाते थे और धर्म श्रवण करते थे उन दिनों वहां जैन साधुओं का संघ आया हुआ था । उसमें साधु थे । ये साधु प्रतिदिन व्याख्यान देते थे। धार्मिक भाव उदय होने से शीलनिधि भी व्याख्यान सुनने जाने लगा। उसने क्षमा, मार्दव, आर्जव, संयम, तप, त्याग, ब्रह्मचर्य आदि पर व्याख्यान सुने उसे ऐसा लगा कि अब तक जो जिंदगी व्यतीत हुई, वह व्यर्थ चली गई । अहो, घोर दुर्भाग्य है, ऐसा सोचकर वह पछताने लगा । और उस दिन उसनें जैन धर्म अंगीकार कर लिया क्योंकि जैन धर्म के गुणों से वह बहुत प्रभावित हुआ था ।

अब वह प्रतिदिन धर्म श्रवण करता तथा धर्म को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करता । वह आध्यात्म की प्रतिमूर्ति बन चुका था । इधर अवंतिकापुरी में महामंत्री और शीलनिधि की रानी ने मिलकर जो राजा रामसिंह वहां शासन कर रहा था, उसे भगा दिया तथा अपने राज्य को स्वतंत्र करा लिया । राज्य स्वतंत्र होते ही महामत्री ने चारों ओर दूत दौड़ा दिये और दूतों द्वारा भूतपूर्व राजा शीलनिधि की खोज प्रारंभ हुई जो कि धर्म का ही प्रभाव था । दूत घूमते-घामते दुर्जन सिंह के राज्य में भी आये । उस समय शील-निधि व्याख्यान सुन रहा था । व्याख्यान समाप्त होने पर दूतों ने उससे चलने का आग्रह किया किन्तु राजा शीलनिधि तो नश्वर राज्य से भी एक वड़ी सम्पत्ति प्राप्त कर चुका था, धर्म की सम्पत्ति । और जिस व्यक्ति के पास यह सम्पत्ति होती है, उसे छोटी-मोटी सम्पत्ति की परवाह नहीं होती है । खैर....

राजा ने दूतों को यह कह कर लौटा दिया कि उसे अब

राज्य की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह सबसे बड़ा राज्य प्राप्त कर चुका है, धर्म का राज्य । दूत चले गये । किन्तु फिर उसने सोचा कि भूतपूर्व राजा होने के नाते मेरा राज्य के प्रति कुछ कर्त्तव्य है । मुझे राज्य को विधिवत् पुत्र के हाथों सौंप और पुत्र का राज्याभिषेक कर फिर तप मार्ग का आलंबन लेना चाहिये । अतः वह राज्य की ओर चल पड़ा ।

राजा के पुनः आने पर राज्य में खुशी की लहर छा गई । उस रात सारे नगर में खूब रोशनी हुई क्योंकि राजा भी एक नई रोशनी प्राप्त कर चुका था । सारे नगर में घी के दिये जलाये गये । दूसरे दिन राजा ने मुहुर्त निकलवाया अक्षय तृतीया के ही दिन राजकुमार का विवाह भी दुर्जन सिंह की पुत्री के साथ हो गया ।

राजा के सभी कर्त्तव्य पूरे हो चुके थे, अतः वह तप के लिए जाने लगा । रानी भी उसके साथ चली गयी । वे दोनों अध्यात्म-साधना के लिए जा रहे थे । एक नये मार्ग पर....

और एक नये सूरज के साथ एक नवीन युग का उदय हो रहा था । सच ही कहा है—सुबह का भूला यदि शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते । ०

—४/८८५ हिरण मगरी,
उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१

मानवता का माहात्म्य

□ डॉ. आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'

Δ

मेरे प्रतिवेशी प्रसिद्ध उद्योगपति थे : उनके एक ही लड़का था। लाड़, प्यार में पला था वह। उसमें शराब की लत थी। अहर्निश पिए रहता। भोजन के बिना तो रह लेता लेकिन शराब के बिना जीवन उसे दुश्वार लगता। एक व्यसन के सहारे सारे व्यवसन उसमें आ लिए थे। सान्निध्य शराबियों का जो था।
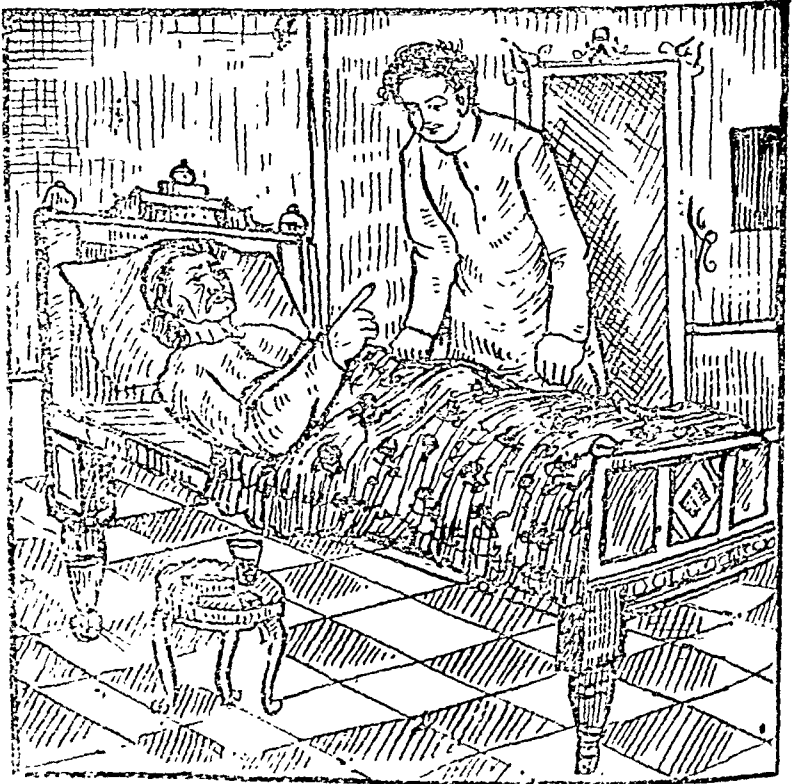
प्रतिवेशी मेरे मरणशय्या पर थे। उन्होंने अपने घर के चिराग शराबीपुत्र को बुलाया और बोले—"मेरे बेटे! मैं अब कुछ समय का

मेहमान हूं। इस संसार से कूच करने वाला हूं। मेरी अंतिम इच्छा को क्या तुम साकार करोगे ?"

शरावी पुत्र भय खा रहा था कि कहीं पिताजी शराब तजने की बात न कह दें। वह संकोच का सत्कार करते हुए बोला --"पिताजी ! शराव छोड़ने के अतिरिक्त आप जो चाहेंगे मैं सब कुछ करने को तैयार हूं।"

प्रतिवेशी वात्सल्य की बावड़ी में डुबकी लगाते हुए बोले—"मेरे बच्चे ! मेरी मृत्यु के बाद तू घर-बार तथा मेरे सभी कारोबार का अधिकारी होगा न, इसलिए यह 'अधिकार पत्र' बड़े धूम-धाम से आयोजन के साथ नगर के सबसे बड़े शरावी कर-कमलों के से लेना। यह मेरी अंतिम इच्छा है।"

पिता की अंतिम इच्छा सुनकर शरावी पुत्र प्रमुदित हुआ। पिता ने उसके मन के अनुकूल बात जो कही थी। प्रसन्नता के पर्वत पर चढ़ते हुए वह पिता को आश्वस्ति का शर्बत पिलाने लगा—"मेरे अच्छे पिताजी ! आपकी इच्छा मैं अवश्यपूर्ण करूंगा।"

समय पाकर प्रतिवेशी का मरना हुआ। सस्कार कर्म का सम्पन्न होना हुआ। एक माह बाद 'अधिकार-पत्र' प्राप्त्यर्थ आयोजन की तिथि सुनिश्चित की गई। नगर के नामी-गिरामी सभी शरावियों को आमंत्रित किया गया।

निश्चित तिथि पर एक नहीं अनेक शरावी एकत्रित हुए। शरावी पुत्र ने अपने मित्रों से कहा—"बन्धुओं ! आप आज के इस आयोजन के उद्देश्य से भली प्रकार वाकिफ है। अब आप में से जो सबसे बड़े शरावी हों, वह मुझे 'अधिकार पत्र' विधिपूर्वक प्रदान कर कृतार्थ करें।"

अभ्यागतों में से एक उठे और अधिकारपूर्ण भाषा में कहने लगे—"साथियों, आप जानते हैं कि मेरे पिता इस नगर के लक्षाधिपति

सेठ थे पर मैंने अपनी सारी पैतृक सम्पत्ति शराब देवता के चरणों में में समर्पित कर दी है। सिर पर कर्ज का बोझ भी चुका हो है लेकिन चिर साथी शराब का साथ नहीं छोड़ा है। अनुदिन भर-भर जाम पीता हूं। लाओ कुंकुम, रोली आदि जिससे अपने प्रिय साथी को उसको अधिकार दिलाकर शराब की शोभा का वर्द्धन करें।"

अनन्तर में दूसरे बन्धु खड़े हुए और अस्पष्ट भाषा में कहने लगे—"मित्रों ! मैंने तो अपने पिता की करोड़ों की जायदाद ही नहीं, अपनी पत्नी के सारे गहनों को भी शराब के शौक में तिलांजलि दे दी है लेकिन शराब अब भी मेरा हमदम है। मित्र के अधिकार दिलाने का अधिकारी तो मैं हूं।"

तदनन्तर में तीसरे ने तेजी से दावे के साथ कहा—"दोस्तों! मैंने अपना सारा वैभव तथा अपनी पत्नी को भी बेच डाला है लेकिन मेरे जीवन के संजीवन शराब का संग मैंने नहीं छोड़ा है। खूब पीता हूं और मजा लेता हू। जुएं का भी दाव लगाता हूं और उसमें जो जीत जाता हूं तो फिर एक पत्नी की तो बात ही क्या अनेक पत्नियों का संसर्ग प्राप्त कर लेता हूं। मैं सबसे बड़ा शराबी हूं।"

अन्त में चौथे आगत अतिथि ने रोमांच से भरे अपने जीवन के इतिहास के पृष्ठों को पलटना शुरु किया—"मेरे जाने जिगरों ! इस परम सिद्धि शराब के लिए मैंने अपने सारे ऐश्वर्य का स्वाहा ही ही नहीं किया अपितु इज्जत भी चौराहे पर नीलाम की हुई है। अब जान लेवा कैन्सर रोग से पीड़ित हूं। इससे बड़ा उत्सर्ग और क्या हो सकता है और कौन हो सकता है मेरे से बड़ा शराबी ? जिगरी दोस्त को 'अधिकार पत्र' देने का अधिकारी सहीमायनें में मैं ही हूं।"

शराबी पुत्र की आंखें अब खुल गई थी। शराब की महिमा से उसका परिचित जो होना हुआ था। पिता की सारगर्भित युक्ति ने उसे शराब से मुक्ति के लिए शक्ति प्रदान कर दी थी। वह खड़ा हुआ और निश्चय के स्वरों में कहने लगा—"मेरे शुभचिन्तकों !

आपने यहां पधार कर जो कष्ट फरमाया है उसके लिए मैं आभारी हूं। मुझे 'अधिकार-पत्र' मिल ही गया है। मैंने हमेशा के लिए शराब तजने का संकल्प कर लिया है। मुझे अधिकार मिलें चाहे न मिलें, लेकिन मानवता का माहात्म्य मुखर हो जाए, बस इसे अपना सौभाग्य समझूंगा। नमस्कार।"

शराबी पुत्र ने ड्राइंगरूम में टंगे पिताश्री के तेल चित्र के समक्ष प्रणाम किया और भावना के दरिया में बह गया। ०

मंगलकलश ३९४, सर्वोदयनगर, आगरा रोड,
अलीगढ़-२०२००१ (उत्तरप्रदेश)

बंकचूल-कथा

☐ श्रीमति सुधा खाव्या

∆

विमल नामक प्रतापी सम्राट के पुष्पचूल एवं पुष्पचला नामक पुत्र एवं पुत्री थे। राजकुमार पुष्पचूल व्यवसनी एव तस्कर-कला में निपुण था। पुष्पचूला भी उसे इस कार्य के लिए प्रेरित करती थी। अतः प्रजाजन इन्हें बंकचल एवं बंकचला के नाम से पुकारने लगे।

एक बार बंकचूल के इन कार्यों से परेशान प्रजाजनोंने राजा से शिकायत की जिससे क्रुद्ध राजा ने बंकचूल को उसकी पत्नी व बहिन सहित घर से निकाल दिया। चलते-२ वे एक भील-पल्ली में पहुंच गये तथा उनके साथ डाका डालने लगे। कुछ समयोपरान्त पल्ली पति के मर जाने पर वह पल्लीपति बन कर स्वतंत्र रूप से डाका डालना लगे।

एक बार चन्द्रयश आचार्य अपने शिष्यों सहित मार्ग भूलकर उस भील पल्ली में पहुंच गये तथा वर्षा प्रारम्भ होने से बंकचल से चातुर्मास व्यतीत करने के लिए आश्रय एवं आज्ञा मांगी। बंकचूल ने उपदेश न देने की शर्त पर आवास प्रदान किया। आवास की आज्ञा प्राप्त कर चार मास का निराहार रहकर चातुर्मास पूर्ण होने पर जब आचार्य आवास की आज्ञा लौटाने बंकचूल के पास पहुंचे तब उनके तप-त्यागमय जीवन से प्रभावित वह उन्हें विदा देने कुछ दूर आया। तब विदा के समय बंकचूल की स्वीकृति पर आचार्य ने धर्मोपदेश देते हुए चार नियम दिलाए—१. अनजान फल न खाना, २. प्रहार के समय सात-आठ कदम पीछे गये विना प्रहार न करना, ३. राजा की पटरानी को माता के समान मानना, ४. कौए का मांस न खाना।

बंकचल चारों नियम ग्रहण कर प्रसन्नता पूर्वक वापस लौ

गया । एक बार वह किसी गांव को लटने गया किन्तु गांव वालों को पता लग जाने से उसे खाली हाथ लौटना पड़ा । उस समय भूख के कारण जंगल में फल आदि की खोज करते हुए भीलों को सुन्दर एवं सुगन्धित फल दिखाई दिये । वे उन्हें लेकर वंकचल के पास पहुंचे किन्तु अनजान फल होने से उसने उन्हें नहीं खाया । उसके मना करने पर भी अन्य भीलों ने उन्हें खा लिया तथा मृत्यु को प्राप्त हुए । यह देख वह नियम-पालन में सजग हो गया ।

तदुपरान्त वह अपने साथियों के शस्त्र लेकर रात्रि के समय घर पहुंचा । वहां अपनी पत्नी को किसी पुरुष के साथ सोया देख कर उस पुरुष को मारने को तैयार हो गया किन्तु नियम याद आने पर वह पीछे हटा और अचानक तलवार दिवार से टकरा गई । उस आवाज को सुन पुरुष वेशधारी उसकी बहिन जाग गई । तब वंकचल ने

द्वारा पुरुष वेश धारण करने का कारण पूछने पर उसने कहा कि 'आपको यहां न जानकर राजा के गुप्तचर नट-वेश में आये थे। अतः मैंने आपका वेश धारण कर नाटक देखा जिससे उन्हें शक नहीं हुआ। तथा रात अधिक हो जाने से मैं वैसे ही लेट गई। यह सुन वह नियम-पालन के प्रति पूर्ण रूपेण श्रद्धावान होगया।

एक बार वह उज्जयिनी में चोरी करने गया। विभिन्न स्थानों पर घूमते हुए अन्त में राजमहल में चोरी करने गया। अन्दर जाने पर राजमहिषी ने उसे देखा और उस पर मोहित हो काम-याचना की किन्तु उसके इन्कार करने पर राजमहिषी ने अपने वस्त्र फाड़कर तथा शोरमचाकर उसे पकड़वा दिया। राजा यह सब देख रहा था। सुबह राज सभा में उसे पेश किये जाने पर वास्तविकता को जानते हुए भी राजा ने सारा वृत्तान्त पूछा और कहा कि 'तुम सत्य बोल रहे हो अतः रानी तुम्हें देता हूं।' तब बंकचूल ने कहा कि 'रानी मेरी मां है।' राजा द्वारा मृत्यु भय बताने पर भी वह रानी को लेने को तैयार नहीं हुआ। तब राजा ने प्रसन्न होकर उसे अपना पुत्र घोषित किया तथा रानी को निकाल दिया।

इसके बाद वह पत्नी व बहिन के साथ वहीं रहने लगा। एक बार आचार्य के वहां आने पर उसने श्रावक के बारह व्रत धारण किये तथा उसकी जिनदास से प्रगाढ़ मैत्री हो गई।

एक बार कामरूप देश के राजा ने उज्जयिनी पर आक्रमण कर दिया। अतः बंकचूल युद्ध युद्ध करने गया तथा विजयी होकर लौट ही रहा था कि पीछे से जहरीला बाण आकर लगा। नगर में पहुंचने पर राजा ने वैद्य से उपचार कराया किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त में एक अनुभवी वैद्य ने कहाकि अगर इन्हें कोए का मांस खिलाया जाय तो ये ठीक हो सकते हैं। किन्तु बंकचूल ने कौए का मांस खाने से तत्क्षण इन्कार कर दिया। राजा, मन्त्री आदि द्वारा समझाए जाने पर भी वह कोए के मांस का भक्षण करने को तैयार नहीं हुआ। अन्त में राजा ने जिनदास को बुलाया। जिनदास को मार्ग में रोती हुई स्त्रियां मिली। रोने का कारण पूछने पर उन्होंने

कहा कि 'हम सौ धर्म कल्पवासी देवियां हैं । यह भी वही देव बनेगा किन्तु आपके कहने से अगर मांस खा लिया तो उसका पतन हो जाएगा ।' तब जिनदास ने कहा कि 'मैं उसका पतन नहीं होने दूंगा ।'

राजमहल में पहुंचने पर उसने राजा से कहा कि 'इसकी मृत्यु निकट है अतः नियम भंग न कराकर इसे अधिकाधिक धर्म करने दें ।' यह सुन बंकचूल अत्यन्त प्रसन्न हुआ और जिनदास द्वारा धर्म सुनता हुआ शुभ ध्यान से मृत्यु को प्राप्त हुआ तथा मांस भक्षण न करने से बारहवें देवलोक में देवपद प्राप्त किया । ०

—उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर

दृढ़ अहिंसक

□ राज सौगानी

△

एक रईस व्यक्ति बहुत दयालु और धर्म प्रेमी था। एक बार किसी अंग्रेज कलेक्टर ने शिकार खेलने के लिए इससे हाथी मांगा अंग्रेजी राज्य में अंग्रेजी ऑफिसरों की धाक किसी राजा से कम न थी, किन्तु रईस व्यक्ति ने स्पष्ट कह दिया—

सरकार मैं एक अहिंसक जैन हूं। मैं शिकार खेलने के लिए अपना हाथी कभी भी किसी को नहीं दे सकता।"

यह सुनकर क्लेक्टर ने उसे बहुत धमकियां दी और अन्त में यहां तक कह दिया कि समझते हो। इसका परिणाम तुम्हारी जमींदारी के लिए क्या हो सकता है ?

व्यक्ति ने धीरज के साथ कहा—

"समझता हूं, यही कि कोई अपराध प्रमाणित हो जाने पर जमींदारी हाथ से चली जाएगी, इससे अधिक और क्या हो सकता है ?"

इस उत्तर को सुनकर वह अंग्रेज बड़ा प्रभावित हुआ। उसने मन ही मन सोचा—कैसा व्यक्ति है जो दूसरों के प्राण बचाने के लिए अपने सर्वनाश की चिन्ता भी नहीं कर रहा और एक मैं हूं जो महज शौक पूरा करने के लिए मिनटों में दूसरों की जान लेने में भी नहीं हिचकता।

इस घटना के बाद लोगों ने देखा कि शिकारी क्लेक्टर एक 'अहिंसक' बन गया।

द्वारा—पी. सी. सोगानी, [illegible]
भवानी मंडी-[illegible]

धूम्रपान निषेध

मुझे तंबाकू नहीं खानें वालें पापा चाहियें।

□ श्री राजमल डांगी

△

'बाप पर बेटा और सवार घोड़ा, उक्ति सुनी थी पर महाविद्यालय मन्दसौर के प्रोफेसर रतनलाल जैन के घर जो घटित हुआ, वह अद्भूत ही समझना चाहिये। घटना इस प्रकार से है।

उनके बेटे विश्वास को युनिवर्सिटी द्वार पुनः मूल्यांकन करने पर ६ अंक गणित में अधिक प्राप्त हुए तो विश्वास फूला नहीं समाया। वह अति उत्साह में विह्वल होकर पापा प्रोफेसर रतनलाल

जैन के पास बैठा गया। बड़ी आस्था के साथ उस विश्वास का अंतरंग चहक उठा और बोला-पापा, युनिवर्सिटी द्वारा प्राप्त इन छः अंकों की उपलब्धि से मैं अब प्रथम श्रेणी में सर्वाधिक अंक वाला विद्यार्थी हूं। मुझे आपकी ओर से कुछ मिलना ही चाहिये।

प्रोफेसर जैन ने सहज भाव से मुस्कुराते हुए कह-क्या चाहता है बेटा ? अभी तो तू काश्मीर यात्रा से लौटा ही है। अभी कुछ बजट का भी प्रश्न है।

विश्वास बड़े विवेक से बोला—पापा मुझे जो चाहिये उसमें ५ पैसे का भी खर्च नहीं है।

प्रोफेसर जैन ने वायदा किया—अब तो तू जो मांगेगा वो दूंगा। विश्वास ने पुन: वायदा पक्का करवाया और बड़े स्नेह व विवेक भाव से मांग बैठा-'पापा, अब आप तंबाकू नहीं खा ओगे।'

विद्वान् प्रोफेसर हृदय से गद्गद् हो उठे। कुछ भोचक्के भी हो गये। उनकी आंखें शर्म से गड़ सी गई। अपने प्रिय पुत्र को बाहुपाश में जकड़ कर गद्गद्-कंठ से स्वीकृति दे दी। पास में पड़ी तम्बाकू की पुड़िया सड़क पर फैंक दी। एक विद्वान पिता ने बौद्धिक पुत्र को पचा लिया। तंबाकू खाने वाले प्रोफेसर अब तंबाकू नहीं खाने वाले पापा बन गये। ०

—राम टेकरी, मदसोर

रात्रि भोजन निषेध :

हंस-केशव-कथा

□श्रीमती सुधा खाब्या

∆

किसी समय कुण्डपुर नामक नगर में यशोधर नामक व्यापारी रहता था। उसकी पत्नी का नाम रम्भा था। उनके हंस व केशव नामक दो पुत्र थे। एक बार दोनों भाईयों ने उद्यान में एक मुनि को देखा। वे श्रद्धापूर्वक मुनि को प्रणाम कर उनके पास बैठे। उन्हें योग्य पात्र देखकर मुनि ने रात्रि-भोजन से होने वाले अनर्थों को विस्तार से बताया। जिसे सुनकर दोनों भाईयों ने रात्रि-भोजन न करने की प्रतिज्ञा की। तब मुनि ने उन्हें नियम को दृढ़ता से पालने की प्रेरणा दी। उनके सत्संग से प्रसन्नमना वे उन्हें प्रणाम कर घर आये।

सूर्यास्त की वेला समीप जान कर उन्होंने माता से भोजन मांगा। वे हमेशा रात्रि-भोजन करते थे अतः मां ने आश्चर्य से जल्दी भोजन मांगने का कारण पूछा। तब दोनों ने रात्रि-भोजन त्याग के नियम के बारे में बताया। जिसे सुनकर वह क्रुध हो गई और उन्हें बहुत फटकारा तथा भोजन नहीं दिया।

रात्रि में भोजन के समय पिता ने उन्हें भोजन के लिए कहा तो उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा की बात बताकर भोजन से इन्कार कर दिया जिससे पिता भी क्रुद्ध हुआ किन्तु वे व्रत पर दृढ़ रहे। दूसरे दिन भी उन्होंने भोजन नहीं किया तब माता-पिता ने उन्हें समझाया किन्तु वे व्रत-त्याग को तैयार नहीं हुए। तब पिता ने उन्हें भोजन देने की मनाही कर दी।

इस प्रकार पांच दिन व्यतीत हो गये किन्तु माता-पिता को दया नहीं आयी। छठे दिन माता-पिता के कहने पर हंस ने केशव को

और दयनीय दृष्टि से देखा जिससे केशव समझ गया कि हंस विचलित हो गया है। तब उसने माता-पिता से भोजन करने से इन्कार कर दिया। उसके वचनों को सुनकर क्रुद्ध पिता ने उसे घर से निकलने को कहा। तब केशव हंस के साथ जाने को उद्यत हुआ तो पिता ने हंस का हाथ पकड़कर बिठा दिया और भोजन करा दिया। तब केशव अकेला ही घर से निकल गया।

नगर के बाहर जाने पर उसने यक्ष पूजा में संलग्न लोगों की भीड़ देखी। केशव को वहां आया देखकर वे प्रसन्न हुए तथा भोजन करने को कहा किन्तु केशव ने स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया। जिससे क्रुद्ध लोगों ने कहा कि तुम भोजन नहीं करोगे तो हम भी भोजन नहीं करेंगे। तुम हम सबको भूखा रखोगे।

वे लोग यह कह ही रहे थे कि सहसा यक्ष प्रकट हुआ और कहने लगा कि 'तुम्हारे भोजन न करने से मेरे भक्त भूखे रहेंगे। अतः

रात्रि भोजन निषेध :

हंस-केशव-कथा

□श्रीमती सुधा खाब्या

△

किसी समय कुण्डपुर नामक नगर में यशोधर नामक व्यापारी रहता था। उसकी पत्नी का नाम रम्भा था। उनके हंस व केशव नामक दो पुत्र थे। एक बार दोनों भाईयों ने उद्यान में एक मुनि को देखा। वे श्रद्धापूर्वक मुनि को प्रणाम कर उनके पास बैठे। उन्हें योग्य पात्र देखकर मुनि ने रात्रि-भोजन से होने वाले अनर्थों को विस्तार से बताया। जिसे सुनकर दोनों भाईयों ने रात्रि-भोजन न करने की प्रतिज्ञा की। तब मुनि ने उन्हें नियम को दृढ़ता से पालने की प्रेरणा दी। उनके सत्संग से प्रसन्नमना वे उन्हें प्रणाम कर घर आये।

सूर्यास्त की वेला समीप जान कर उन्होंने माता से भोजन मांगा। वे हमेशा रात्रि-भोजन करते थे अतः मां ने आश्चर्य से जल्दी भोजन मांगने का कारण पूछा। तब दोनों ने रात्रि-भोजन त्याग के नियम के बारे में बताया। जिसे सुनकर वह क्रुध हो गई और उन्हें बहुत फटकारा तथा भोजन नहीं दिया।

रात्रि में भोजन के समय पिता ने उन्हें भोजन के लिए कहा तो उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा की बात बताकर भोजन से इन्कार कर दिया जिससे पिता भी क्रुद्ध हुआ किन्तु वे व्रत पर दृढ़ रहे। दूसरे दिन भी उन्होंने भोजन नहीं किया तब माता-पिता ने उन्हें समझाया किन्तु वे व्रत-त्याग को तैयार नहीं हुए। तब पिता ने उन्हें भोजन देने की मनाही कर दी।

इस प्रकार पांच दिन व्यतीत हो गये किन्तु माता-पिता को दया नहीं आयी। छठे दिन माता-पिता के कहने पर हंस ने केशव को

गल जायेंगे ।' तब मैं तुझे खोजने के लिए चल पड़ा और आज तुझसे मिला हूं । आज ही एक माह पूर्ण हुआ है । अब पता नहीं वह जीवित है या नहीं ?

यह सुनकर केशव भाई की याद में मग्न हो गया तथा उसे चिन्ता होने लगी कि सौ योजन दूर इतनी जल्दी कैसे पहुंचूं । तभी वह्निदेव ने तत्क्षण ही उन्हें हंस के समीप पहुंचा दिया । हंस के गलित शरीर में से तीव्र दुर्गन्ध आ रही थी । उसकी वैसी दयनीय दशा देख कर केशव चिन्तित हो गया । उसी समय देव ने उसे अपने वरदान की याद दिलायी । तब केशव ने उसी समय अपने पैर का अंगूठा धोकर उस जल के छींटे हंस के शरीर पर दिये जिससे हंस तत्क्षण स्वस्थ होकर उठ बैठा ।

यह चमत्कार देखकर रोग-पीड़ित हजारों नागरिक उस जल के प्रयोग से रोग-मुक्त हो गये तथा केशव सभी परिवार—जनों के साथ रात्रि भोजन का त्याग कर तथा राज्य में रात्रि-भोजन न करने की घोषणा कर संयम-पूर्वक सुख से राज्य करने लगा । ★

—उदयपुर

या तो भोजन कर या मरने को तैयार हो जा।' यह सुनकर सोच-विचार कर केशव मरने को तैयार होकर ध्यान में लीन हो गया। उसे अविचलित देखकर यक्ष ने मायावी धर्मघोष मुनि बनाये और उनके द्वारा केशव को प्रतिज्ञा भंग करने को कहलाया किन्तु केशव उसे यक्ष-माया समझकर अडिग रहा। तत्पश्चात् अनेक प्रकार के प्रयत्न किये जाने पर भी वह अपने नियम पर अडिग रहा।

कुछ समयोपराण्त सब कुछ शान्त हो गया तथा केशव ने उस स्थान को जन-शून्य देखा। उसी समय उस पर पुष्प-वर्षा होने लगी तथा उसकी दृढ़ता से प्रसन्न एक देव ने उसे वर मांगने को कहा। तब केशव ने कहा कि 'मुझे कुछ नहीं चाहिये। व्रत पर दृढ़ रहने का ही आशीर्वाद दीजिये।' यह सुन देव ने प्रसन्न होकर उसे वर दिया कि 'जो तुम्हारे पैर के अंगूठे को धोकर पीयेगा वह रोग-मुक्त हो जाएगा तथा कष्ट के समय तू जो सोचेगा वही होगा।' ऐसा कह कर देव ने उसे साकेत पहुंचा दिया।

वहां उद्यान में उपदेश देते हुए आचार्य को देखकर केशव भी वहां गया। वहां के राजा धनंजय ने आचार्य से अपने स्वप्न के बारे में पूछा। तब आचार्य ने केशव की ओर संकेत कर कहा कि 'वह्निदेव ने इसकी नियम-दृढ़ता से प्रभावित होकर इसे राज्य देकर तुझे संयम-पालने की प्रेरणा दी थी'

राजा धनंजय ने तत्काल केशव का राज्याभिषेक किया तथा दीक्षा ग्रहण की। एक दिन राजमहल के गवाक्ष में बैठे केशव ने अपने पिता को दीन-हीन दशा में आते देखा। उन्हें देखकर उसने शीघ्र ही उन्हें बुलवाया तथा प्रणाम कर पिता से कुशलक्षेम पूछते हुए हंस के बारे में पूछा। तब रोते हुए पिता ने कहा कि 'जिस रात तुम घर से निकले उसी रात छत पर स्थित नाग के मुख से गिरी विष-बूंद मिश्रित भोजन करने से उसके शरीर में विष फैल गया। बहुत उपचार किया किन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। अन्त में मन्त्रिकों ने कहा कि 'यह एक माह तक जीवित रहेगा फिर विष के प्रभाव से इसके अ
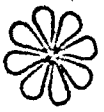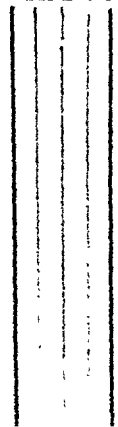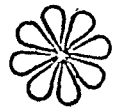
विज्ञापन

'चारित्र समभावो' अर्थात्

समभाव ही चारित्र है।

— भ. महावीर

श्री राजमलजी गोलछा

परिवार

जयपुर

शक्ति और सम्मान का स्रोत जब गुण न रह
कर धन बन जाता है तो सांसारिक जीवनमें
सभी धन के पीछे दौड़ना शुरू करते हैं एक
गहरा ममत्व लेकर ।
—भ० महावीर
शुभकामनाओं सहित—
फूसराज पूरणमल
६५, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता—७
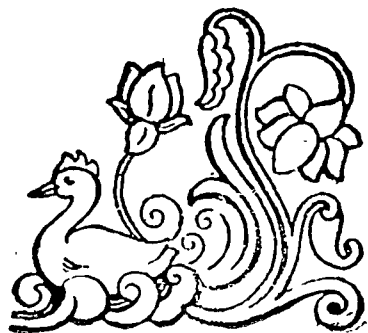
"मनुष्य का अनुमान कभी भी उसकी त्रुटियों से नहीं लगाना चाहिए। मनुष्य में जो महान् सद्गुण होते हैं वे उसके हैं। किन्तु उसकी त्रुटियां मानवता की सामान्य दुर्वलताएँ हैं, अतः उसके चरित्र के मुल्यांकन में उनका कोई महत्व नहीं होना चाहिये।"

—विवेकानन्द